

हिन्दी अनुसंधान ग्रन्थमाला—२

अक्षय रस

[गुजरात के महान् संतकवि ज्ञाना की हिन्दी—बाणी]

सम्पादक

श्रीमन्मन्मथसिंह

भाषार्थ तथा सम्पादन,

हिन्दी विमला

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, यवोदा ।



महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, यवोदा ।

प्रकाशक—

हिन्दी विभाग,
महाराजा सराफ़ीराज विश्वविद्यालय,
बड़ौदा ।

प्रथम संस्करण सन् १९६३ ई०

प्रति संख्या ५००

मूल्य पंद्रह रुपया

प्राप्ति स्थान

युनिवर्सिटी पुस्तक विभाग
महाराजा सराफ़ीराज युनिवर्सिटी प्रेस
राजमहल दरवाजे के पास राजमहल रोड
बड़ौदा ।

भी व्यवस्थापक रंगा फार्म आर्ट प्रेस ३६ सादृश राड सूरानक, मे
पेस १-३०६ और भूमिगत १ से ८० तक भी अरविंद भ पालेकर
जायति प्रि. प्रेम रावपुरा बड़ौदा ने युनिवर्सिटी प्रेस की ओरने
पुस्तक दिया । प्रकाशक : सुवर चंद्रप्रकाश सिंह, आचार्य एवं
अध्यक्ष हिन्दी विभाग, महाराजा सराफ़ीराज विश्वविद्यालय,
बड़ौदा ।

विषय सूची

१	प्रस्तावना	पृष्ठ
२	भी एफ़्लुएन्स रमणी	१ से ८० तक
३	सुंइतिवा	१
४	सुभावा	३
५	अकड़ी	१०
६	झल्ला	१२
७	मनलीमन	५३
८	मलात्री के पत्र	८५
९	मजद	९१
१०	संग्रहिया	११
११	साक्षिणी	१३७
		१७१

निवेदन

कई संतानियों के पूर्व विराजमान के परात् नका को हिंदी के संत कवियों के बीच प्रतिष्ठित करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। नका गुजराती काव्य के अग्रगण्य धार हैं, वे गुजरात के अग्रगण्य रसज्ञ माने जाते हैं। गुजरात में उनकी रचना हिंदुधर्म एवं जनसाधारण दोनों में समानरूप से सदाव्युक्त है। गुजरात में नकाओं की रचनाओं की असाधारण लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण यह है कि जब हिन्दी प्रदेश में नका की हिन्दी रचनाओं के अस्तित्व की खोजना भी किसी को नहीं थी, उन दिनों भी गुजरात में उनकी वे रचनाएँ बड़े चाव और मनोरंजन के साथ पढ़ी और सुनी जाती थीं। नका की भाषा के गुजराती समूहों में उनकी कई हिन्दी रचनाओं का समूह मिलता है। उनको मध्यम मुझे उनकी हिन्दी रचनाओं के अन्वेषण, संकलन और संपादन की प्रेरणा मिली। नका के विभिन्नलिखित हिन्दी ग्रंथ उनके गुजराती के 'नकानो वाणी' शब्द से किये गये हैं।—

१. नकानोवा ।
२. नकानो के पर ।
३. संतानिया (छायायी प्रकरण)

इसके अतिरिक्त विभिन्नलिखित चौथे ग्रंथ 'अप्रतिष्ठित नकानोवा' अर्थात् 'नकाकाव्य काव्यो माग २' से मिल गए हैं। इस ग्रंथ का समूह नकानोवा के आत्मन के जी संपादनकी महाराज ने किया है और इसके टीकाकार तथा संपादक प्रसिद्ध संत भी धामर महाराज हैं।—

१. एकलक्ष रसनी ।
२. अंतर्निधिया ।
३. नकानी ।
४. सुकाना ।
५. मज्जा ।

इन ग्रंथों की इसलिखित प्रतियाँ मुझे प्राप्त नहीं हो पाई, हैं इसलिये उनमें पाठभेद नहीं दिये जा सके। ~~गुजराती~~ किये के दोनों के कारण को शब्द का अक्षर अक्षर धारणा धारण नहीं प्रतीत हुए, उनमें कहीं-कहीं सुधार अवश्य किया गया है।

अन्नाजी की साखियों की कुछ पुरानी महत्वपूर्ण इस्तख़ि़त प्रतियों मुझे दो स्थानों पर देखने को मिल गईं जिनमें मैंने प्रतिस्तिथियाँ करवाईं और तम्हीं के आधार पर साखी भाग का संपादन किया गया । जो इस्तख़ि़त प्रतियाँ मुझे प्राप्त हुई, उनमें तीन फ़ार्मस मुस्तफ़ाज़म बाग़द़ाद़ से मिलीं । उक्त मुस्तफ़ाज़म से इन प्रतियों की संख्या २६० (२१ तथा २४०) है । उन प्रतियों के अंत में तिलि का नाम और तिलिफ़ास नहीं दिया गया है । प्रयोगों में कोई कम पाया है, कोई-कोई अंध मुद्रित भी है । सभी प्रतियों में साखियों का अंशक्रम एक जैसा नहीं है । एक ही अंश की साखियाँ सभी जगह नहीं हैं, कुछ दूसरे दूसरे अंशों में भी संकलित हो गई हैं । यह भी है कि उही अंश की साखियाँ दूसरी प्रतिस्तिथि में संख्या में भी अधिक है, जैसे इस्तख़ि़त प्रति से २४० में का 'होशम को अंश' दिये गए हैं, एक में २२ साखियाँ हैं और दूसरे में केवल ५ । इसी प्रकार मुकर्रात विद्याभमा अहमदाबाद में भी मुझे साखियों की दो प्रतियाँ प्राप्त हुईं । इनमें से एक प्रति तो पूरी है और दूसरी अंशित । व दोनों प्रतियाँ मुकर्रात विद्याभमा के इस्तख़ि़त प्रयोगों के २२१३ संख्यावाले भाग में मिली हैं । किसी में भी तिलिफ़ नै तिलिफ़ास नहीं दिया है । अतएव मुद्रित एवं सभी इस्तख़ि़त प्रतियों में जो साखियाँ मुझे एक कैली मिलीं मैंने उनको यथावत् प्रकाश कर लिया है और उनमें किसी प्रकार का पाठभेद नहीं दिया है । छठ साखियों में नये पुरानी कटीत होवेवाले प्रति की ही आधार माना है । बदलि तिलिफ़ास का उल्लेख मुझे किसी प्रति में नहीं मिला पर मुझे शर्क की प्रतियाँ अधिक प्राचीन लगीं ।

सालीभाय के संपादन में मिल तीसरी महत्वपूर्ण इस्तख़ि़त का उपयोग किया गया है यह छापर महाराज के हाथ की मिली हुई है । यह मुझे छापर महाराज के पुत्र डॉ॰ बोधीन्द्र जयभाय त्रिपाठी महोदय से प्राप्त हुई । छापर महाराज की प्रति की ही आधार मानकर अन्नाजी के प्रसिद्ध अम्बानी डॉ॰ वेणकटराम टकर ने 'अन्नाजीजी साखियों' नाम का मुकर्राती-हिंदी साखी संग्रह प्रकाशित करवाया है । इसकी मैं मैंने भ्रम से देखा । इसमें और छापर महाराज की इस्तख़ि़त में कई विरोध अंतर आ होने के कारण मैंने छापर महाराज की इस्तख़ि़त प्रति से ही पाठभेद किया है । पाठभेदों के संकेत इस प्रकार हैं—

१ फ़ार्मस मादमेरी काई की प्रति—(४)

मुकर्रात विद्याभमा प्रति —(५)

१. गुजरात विधानभा संकलित प्रति — (गु. सं.)

२. सायर महाराज की हस्तप्रति — (सा)

५. अन्नाजी साहिब — (अ)

इस समय में अन्नाजी का 'संतप्रिया' नाम का एक महत्वपूर्ण हिंदी ग्रंथ भी संकलित है। यह ग्रंथ 'अन्नाजीजी बाबा' नाम के गुजराती समूह में प्रकाशित है जिन्हु मुख्य संतप्रिया की एक पुरानी प्रति फावस सायमेरी में मिली जिसकी दस्तत हुए 'अन्नाजी बाबा' में संकलित 'संतप्रिया' अपूर्ण है। 'अन्नाजी बाबा' में प्रकाशित 'संतप्रिया' में केवल 'सर्वांगी प्रकरण' के १०० छंद हैं, फावस बाबा प्रति में कुल मिमाकर १३८ छंद हैं। इसका फरक यह है कि इसमें 'सर्वांगी प्रकरण' के अतिरिक्त दूसरा 'अन्वय व्यतिरेक प्रकरण' भी है। 'संतप्रिया' का 'अन्वय व्यतिरेक प्रकरण' मस्तुन ग्रंथ में पहले-पहल प्रकाशित हो रहा है। फावस बाबा प्रति को साधारण भाव से मैंने इस ग्रंथ में संकलित 'संतप्रिया' के १०८ छंदों तक अन्नाजी बाबा से मिमाकर पाठभेद दिखे हैं। जिस समय इस समय का 'संतप्रिया' नामा भस छप चुका था वहाँ दिखे बड़ीदा विश्वविद्यालय के गुजराती विभाग के विद्वान् प्राध्यापक डॉ. योगेन्द्र जयदास त्रिपाठी की 'संतप्रिया' की एक की इसी प्रति भी प्राप्त हुई जिसमें सर्वांगी प्रकरण के साथ 'अन्वय व्यतिरेक' प्रकरण भी है। डॉ. त्रिपाठी की 'संतप्रिया' की प्रति में कुल १३५ छंद हैं पहले सर्वांगी प्रकरण '१०६ छंदों तक चलता है और दूसरे 'अन्वय व्यतिरेक प्रकरण' में कुल २९ छंद हैं। यह छंद संख्या १०० से आरम्भ हमर १३५ पर समाप्त होता है। यह प्रति बर्ह की फावस सायमेरी बाबा प्रति की अपेक्षा अधिक अच्छी दस्तत में है, भिन्न भी साफ और सुन्दर है। 'संतप्रिया' छप जाने के पश्चात् डॉ. त्रिपाठी की यह प्रति बेचने को मिली इसलिये पाठभेद की दृष्टि से उसका उपयोग नहीं किया जा सका। अपने संस्करण में इस सामग्री का समुचित उपयोग अवश्य किया जाना। वहाँ तक मी जानकारी है 'सुभाषा' नाम का अन्नाजी का हिंदी ग्रंथ भी इस समय में पहले-पहल प्रकाशित हो रहा है। साधन एवं समय की सीमाओं के कारण अन्नाजी के दर्शन में हमारा काम बहुत-कुछ पैसा ही आरम्भिक मात्रा का 'सकता है जैसा हमारे पुष्पश्लोक गुह्येव आचार्य स्वामिंदरदास जी ने कबीर प्रभावमी को प्रकाशित करके हमारे क संस्करण में किया था। जिस प्रकार 'कबीर प्रभावमी' ने कबीर के अप्यवन के अनेकानेक मात उत्पटित

दिने उसी प्रकार मुझे विवश है भक्ता की कृतियों का यह हिंदी संभव भी प्रोपकृतीओं और अभेदाओं के लिए सीरीर अभ्यसन की पुस्तक सामग्री प्रस्तुत करेगा। मैंने जल्दी दुष्टों की प्रस्तावना में भक्ता के अभ्यसन की महत्वपूर्ण समस्याओं का विचार दिया है। भक्ता की बानी का यह संभव हिंदी साहित्य की श्रीष्टि करेगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

मैं गुजराती के इस बौद्ध विद्वान् के हृदय से आभार स्वीकार करता हूँ जिसने प्रेमों को पढ़कर मैंने भक्ता के महत्व की समझ पायी है। इनमें सर्व म म मैं गुजरात के बहादुर एवं सीम्बलीक कवि भी समारोह को भी इस हृदय से आभार मानता हूँ। हमारे भिन्न का जोरदार जगजाग त्रिगुटी जो मे आनी सब सामग्री सुलभ बनाकर जिस सुखमाय और सीधारे से मेरी समय समय पर सहायता की है उसके प्रति धरती द्वारा कृतज्ञता-संगम करने में मैं समर्थ नहीं। भक्ता के साहित्य के मर्म को समझने के लिए मैंने गुजराती के भिन्न विद्वान् की कृतियों का स्वाग्राह किया है, उन सब का भी मैं हृदय से आभारी हूँ। मैंने प्रस्तावना में उनके नामों का यथामान हस्तक्षेप किया है।

अंतमें अपने सहयोगी का महनयोगाल गुप्त के प्रति आभार प्रकट करना भी करना परम कर्तव्य समझता हूँ। यदि तेरी से जगकर अंतम मूक तक के संशोधन में उन्होंने विनयाग भग्न किया होता तो इस माय के सुदिन होकर प्रकाश में जाने में जमी कम से कम एक वर्ष और लग जाता। मैं जग्न इन सब बंधुओं और सहयोगियों का भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने इस कार्य में मेरी छोटी-बड़ी सभी प्रकार की सहायता की और ब्यावसर साहित्य सहयोग किया।

हमारी योजना की सफलता हमारे उपकुलपति का ज्योतीन्द्र मेहता तथा व उपकुलपति डॉ० अनुपमार् पटेल के द्वारा सहयोग और संरक्षण पर अवलम्बित रही है। मैं उनका हृदयसे आभारी हूँ।

—कुंवर चंद्रमकाश सिध

प्रस्तावना

(१)

व्यापारिक दृष्टिकोण से देखने पर हमें गुजरात के लिए सनहरी सताहरी ऊपर से समृद्धि का युग^१ आग पड़ती है। इसमें संदेह नहीं कि सूरत और अहमदाबाद जैसे व्यापारिक केन्द्रों में कम-मान्य का बाहुल्य था। विदेशी पर्यटकों एवं भारतीय इतिहासकारों ने इन नगरों की व्यापारिक समृद्धि की भूरि भूरि प्रशंसा की है।

परंतु सांस्कृतिक दृष्टि से देखने पर हमें स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि भारत के अन्यत्र प्रवेशों के समान ही गुजरात का भी विकास निरुद्ध हुआ था।^२ जिस भौतिक उन्नति के अभाव से इतिहासकार गुजरात के लिए सनहरी सताहरी का सति का युग मानते हैं, उसकी जड़ें खोजनी भी और इनमें लोनी कम चुड़ी भी। उर्जुक्त तथाकथित समृद्धि के कारण समाज में एक कठमता, अलग अलगता तथा नैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिगत छत्ती का रही थी। समाज की विपत्ति भ्रष्टता एवं स्वभाव पर इतिहासकार की दृष्टि नहीं पड़ी। जीवन में व्याप्त खेद भय श्रेय, विवाद और विरोध अस्मिता पर अंतर्दृष्टि सती ने ही दिखाए किना, इतिहासकारों ने नहीं।

- 1 As a province of the Mogal Empire it (Gujrat) settled existence and grew prosperous once again. The people succeeded in confining political influences to limited spheres, and stiffened social barriers so as to secure contentment and happiness within narrow grooves (page 173, *Gujrat and its literature* by K. M. Munshi)
- 2 During this period men were being driven into progressively narrowing communities social barriers were stiffened, the individual was sacrificed to the group, untouchability came into existence K. M. Munshi—*Gujrat and its literature* page 147

किये उही प्रकार मुझे विश्वास है भगवा की कृतियों का वह हिंदी संघ में होपवर्तमानों कीर भवेताओं के लिए यमीर अभयन की पुस्तक सामग्री प्राप्त करेगा। मैंने अस्सी वृत्तों की प्रस्तावना में भगवा के अभयन की महत्वपूर्ण समस्याओं का विवरण दिया है। भगवा की वाणी का यह संघ हिंदी साहित्य को जीवित करेगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

मैं गुजराती के इन श्रेष्ठ विद्वानों का हृदय से आभार स्वीकार करता हूँ किन्हे सबों को बचकर मैंने भगवा के महत्व की प्रत्यक्ष वाणी है। इनमें सर्व प्रथम मैं गुजरात के वराहसी एव सीम्यसोत कवि श्री ब्रह्मचर्य बोरी की का हृदय से आभार मानता हूँ। हमारे विमल ब्रह्मचर्य ब्रह्मचर्य ब्रह्मचर्य की ने अपनी यह सामग्री मुझसे बचकर विमल मुत्तमाल कीर बोहाइ से मेरी समय समय पर सहायता की है जबकि प्रति पाठों द्वारा कृष्णार्थ ज्ञान करने में मैं समर्थ नहीं। भगवा के साहित्य के मर्म को समझने के लिए मैंने गुजराती के विमल विद्वानों की कृतियों का स्वागता किया है, जब जब का मो मैं हृदय से आभारी हूँ। मैंने प्रस्तावना में उनके नामों का उल्लेख किया है।

अंतर्गत अपने कहानी में महत्त्वपूर्ण गुण के प्रति आभार प्रकट करना भी अपना परम कर्तव्य समझता हूँ। यदि मेरी से बचकर अंतर्गत प्रकट तब के संशोधन में उन्होंने विमल भयन किया होता तो इस प्रयत्न के सुविध होकर प्रकाश में अपने में असी कम से कम एक वर्ष कीर बन जाता। मैं अपने इन सब बंधुओं कीर सहयोगियों का भी हृदय से आभारी हूँ, किन्हेने इस कार्य में मेरी छोटी-बड़ी सभी प्रकार की सहायता की और बधावसर साहित्य सहयोग किया।

हवाई संशोधन की सहायता हमारे उपाध्यक्षों श्री ज्योतीन्द्र मेहता तथा श्री. उपाध्यक्षों डॉ॰ चतुर्भाई पटेल के द्वारा सहयोग और संरक्षण पर अवलम्बित रही है। मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

प्रस्तावना

(१)

व्यापारिक दृष्टिकोण से देखने पर हमें गुजरात के लिए सत्रहवीं शताब्दी
 ऊपर से समृद्धि का युग^१ मान पड़ती है। इसमें संदेह नहीं कि सूरत और
 अहमदाबाद जैसे व्यापारिक केन्द्रों में धन-धान्य का बाहुल्य था। विदेशी
 पर्यटकों एवं भारतीय इतिहासकारों ने हम नक्सों की व्यापारिक समृद्धि की
 भूमि भूमि प्रशंसा की है।

परंतु सांस्कृतिक दृष्टि से देखने पर हमें स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि
 भारत के अम्याम्य प्रदेशों के समान ही गुजरात का भी विकास निकल चुका
 था।^२ जिस भौतिक उन्नति के अभाव से इतिहासकार गुजरात के लिए सत्रहवीं
 शताब्दी का उन्नति का युग मानते हैं, उसकी जड़ें खोखली थीं और उनमें
 खेती लग चुकी थी। उन्मुख तथाकथित समृद्धि के कारण समाज में एक
 कठबंदा, अलग अलगता तथा भैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से छठी का
 रही थी। समाज की विपन्नता सुस्पष्ट एवं व्यवसाय पर इतिहासकार की
 दृष्टि नहीं पड़ी। जीवन में व्याप्त संदेह भय, संदेह, विवाद और निर्धार
 अज्ञान पर कांतरा सत्ता ने ही विचार किया, इतिहासकारों ने नहीं।

- 1 As a province of the Mogal Empire it (Gujrat) settled existence and grew prosperous once again. The people succeeded in confining political influences to limited spheres, and stiffened social barriers so as to secure contentment and happiness within narrow grooves (page 173 *Gujrat and its literature* by K. M. Munshi)
- 2 During this period men were being driven into progressively narrowing communities, social barriers were stiffened, the individual was sacrificed to the group, untouchability came into existence K. M. Munshi—*Gujrat and its literature* page 147

किये इसी प्रकार मुझे विश्वास है कि आधी कृतियों का यह द्विती संवत् भी शोषकर्मों और अभेदात्मों के लिए संगीत अभ्यस्य की पुष्पक कामगी प्रस्तुत करेगा। मैंने इसी धृष्टों की प्रस्तावना में आधा के अभ्यसन की महत्वपूर्ण समझाने का विवरण दिया है। आधा की वाणी का यह संवत् द्विती साहित्य की चौद्वि करेगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

मैं गुजराती के उन बड़े-बड़े विद्वानों का हृदय से आभार स्वीकार करता हूँ जिनके संबंधों को बचकर देने आधा के महत्व की समझ पानी है। इनमें सर्व म मैं गुजरात के सबसे बड़े एवं सीम्बलीक कवि भी समझकर मोक्षी जी का हृदय से आभार मानता हूँ। हमारे मित्र डॉ० सीम्बलीक जबकाब त्रिपठी जी ने अपनी सब कामगी सुलभ बनाकर जिस सुखभाव और शोहरत से मेरी समय समय पर सहानुता की है उसका प्रति शब्दों द्वारा कृतकृता ज्ञान करने में मैं समर्थ नहीं। आधा के साहित्य के सर्व को समझने के लिए मैंने गुजराती के जिन विद्वानों की कृतियों का स्वागत किया है, उन सब का भी मैं हृदय से आभारी हूँ। मैंने अस्तावना में उनके नामों का बचानान उल्लेख किया है।

अंतमें अपने सहयोगी डॉ० यदनयोगाध गुप्त के प्रति आभार प्रकट करना भी अपना परम कर्तव्य समझता हूँ। बहि मेरी से कलकर अंशेय रूप तक के संशोधन में उन्होंने दिव्यत भगवत् किया होता तो इस प्रसंग के मुनि होकर प्रकट में अपने से कभी कम से कम एक वर्ष और कम जाता। मैं अपने उन सब संयुक्तों और सहयोगियों का भी हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य में मेरी छोटी-बड़ी सभी प्रकार की सहानुता की और बचावकर हार्दिक सहयोग किया।

हमारी शोषकर्मों की सकलता हमारे अपकृतकृति डॉ० ज्योतीन्द्र देहा तथा डॉ० अपकृतकृति डॉ० अतुरमाई पटेल के सहार सहयोग और संरक्षण पर अवलम्बित रही है। मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

प्रस्तावना

(१)

व्यापारिक दृष्टिकोण से देखने पर हमें गुजरात के लिए सत्रहवीं शताब्दी ऊपर से समृद्धि का युग^१ जान पड़ती है। इसमें संदेह नहीं कि सूरत और अहमदाबाद जैसे व्यापारिक नगरों में धन-धान्य का बाहुल्य था। विदेशी पर्यटकों एवं भारतीय इतिहासकारों ने इन नगरों की व्यापारिक समृद्धि की भूरि भूरि प्रशंसा की है।

परंतु सांस्कृतिक दृष्टि से देखने पर हमें स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि भारत के अन्यत्र प्रदेशों के समान ही गुजरात का भी दिवाला निकल चुका था।^२ जिस भौतिक उन्नति के अभाव से इतिहासकार गुजरात के लिए सत्रहवीं शताब्दी का सर्पित का युग मानते हैं, उसकी जड़ें जासूसी की और उनमें सोनी कम चुकी थी। उर्ग्रुण तथाकथित समृद्धि के कारण समाज में एक कठमता, अलग अलगमर्भता तथा नैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिता छली जा रही थी। समाज की विपन्नता सुम्भता एवं व्यवसाय पर इतिहासकार की दृष्टि नहीं पड़ी। जीवन में व्याप्त संदेह मय, उद्वेग, विचार और निर्भीक शक्तता पर कातरप्रा सभी ने ही विचार किया, इतिहासकारों ने नहीं।

- 1 As a province of the Mogal Empire it (Gujrat) settled existence and grew prosperous once again. The people succeeded in confining political influences to limited spheres, and stiffened social barriers so as to secure contentment and happiness within narrow grooves (page 173 *Gujrat and its literature* by K. M. Munshi)
- 2 During this period men were being driven into progressively narrowing communities, social barriers were stiffened the individual was sacrificed to the group untouchability came into existence K. M. Munshi—*Gujrat and its literature* page 147

दिने उही प्रकार मुझे विश्वास है जका की कृतियों का यह हिंदी संग्रह भी खोजछाँवों और जखेताओं के लिए सैमीर जप्यजन की पुण्य सामग्री प्रस्तुत करेगा। मैंने बरसी पृष्ठों की प्रस्तावना में जका के जप्यजन की महत्वपूर्ण समस्याओं का विवरण दिया है। जका की बानी का यह संग्रह हिंदी साहित्य की भीषणि करेगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

मैं गुजराती के उच्च बाल्य विद्वानों का हृदय से आभार स्वीकार करता हूँ जिनके प्रेमों को पढ़कर मैंने जका के महत्व की समझ पायी है। इसमें सर्व म म मैं गुजरात के बसन्ती एवं सीम्यहीन कवि भी समझकर जोड़ी की का हृदय से आभार मानता हूँ। हमारे दिन का योवीन्द्र बगलाच त्रिपाठी जी ने अपनी सब सामग्री गुजरात बगलाच जिस सुकमाय और सीहार्द से मेरी समय समय पर सहायता की है उसके प्रति शक्यों द्वारा कृपया-ज्ञान करने में मैं समर्थ नहीं। जका के साहित्य के सर्व को समझने के लिए मैंने गुजराती के जिन विद्वानों की कृतियों का स्वाग्राह किया है, उन सब का भी मैं हृदय से आभारी हूँ। मैंने प्रस्तावना में उनके नामों का बखानवान उल्लेख किया है।

अंतमें अपने सहयोगी डॉ. यदनमोपाल गुप्त के प्रति आभार प्रकट करना भी अपना परम कर्तव्य समझता हूँ। बरि मेरी से कयाकर अंशम प्रकृ तक के संशोधन में उन्होंने दिनरात प्रयत्न किया होता तो इस प्रयत्न के सुविन होकर प्रकाश में आने में अभी कम से कम एक वर्ष और कम बाता। मैं अपने उन सब संयुक्तों और सहयोगियों का भी हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य में मेरी छोटी-बड़ी सभी प्रकार की सहायता की और बखानसर हार्दिक सहयोग किया।

हमारी शोधयोजना की सफलता हमारे उपकुलपति डॉ. प्योटीन्द्र मेहता तथा म उपकुलपति डॉ. बसुरामाई पटेल के उचार सहयोग और संरक्षण पर अवलम्बित रही है। मैं उनका हृदयसे आभारी हूँ।

प्रस्तावना

(१)

व्यापारिक इतिहास से देखने पर हमें गुजरात के लिए सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में समृद्धि का युग^१ मान पड़ती है। इसमें संदेह नहीं कि सूरत और अहमदाबाद जैसे व्यापारिक केन्द्रों में धन-वाण्य का बाहुल्य था। विदेशी पर्यटकों एवं भारतीय इतिहासकारों ने इन नगरों की व्यापारिक समृद्धि की भूरि भूरि प्रशंसा की है।

परंतु सांस्कृतिक दृष्टि से देखने पर हमें स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि भारत के अम्बान्त्य प्रदेशों के समान ही गुजरात का भी विकास निरुद्ध हुआ था।^२ जिस मौलिक उन्नति के अभाव से इतिहासकार गुजरात के लिए सत्रहवीं शताब्दी का सीधे का युग मानते हैं, उसकी जड़ें साक्ष्यों की और उनमें भीनी भूमि खुदी थी। उन्मुख तथाकथित समृद्धि के कारण समाज में एक कठोरता, अक्षम असमर्थता तथा भैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिवा छाती बंद रही थी। समाज की विपन्नता सुस्पष्ट एवं स्पष्ट पर इतिहासकार की दृष्टि नहीं पड़ी। जीवन में व्याप्त संदेह भय, श्रेय विवाद और निर्वाप अज्ञान पर अंधाधुन्य धरो ने ही विचार किया, इतिहासकारों ने नहीं।

- 1 As a province of the Mogal Empire it (Gujrat) settled existence and grew prosperous once again. The people succeeded in confining political influences to limited spheres, and stiffened social barriers so as to secure contentment and happiness within narrow grooves (page 173 *Gujrat and its literature* by K. M. Munshi)
- 2 During this period men were being driven into progressively narrowing communities, social barriers were stiffened the individual was sacrificed to the group untouchability came into existence K. M. Munshi—*Gujrat and its literature* page 147

किये वही प्रकार मुझे विवरास है अन्धा की कृतियों का यह हिंदी संघ भी घोषणाओं और अभ्येताओं के लिए गंभीर अध्ययन की पुस्तक सामग्री प्रस्तुत करेगा। मैंने बस्ती पृष्ठों की प्रस्तावना में अन्धा के अध्ययन की महत्वपूर्ण समस्याओं का विवरण दिया है। अन्धा की बानी का यह संघ हिंदी साहित्य की भीष्टि करेगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

मैं गुजराती के उन बौद्ध विद्वानों का हृदय से आभार स्वीकार करता हूँ जिनके प्रयत्नों से अन्धा के महत्व की जानकारी है। इनमें सर्व प्रथम मैं गुजरात के बसन्ती एवं लोम्वहीन बौद्ध भी बमालेंकर मोदी जी का हृदय से आभार मानता हूँ। हमारे मित्र डा. लोम्वहीन जनकाय त्रिपाठी जी ने अपनी सब सामग्री सुकन बनाकर जिस पुस्तकालय और सौहार्द से मेरी समय समय पर सहायता की है उसके प्रति कश्चों द्वारा कृतज्ञता-वाचन करने में मैं समर्थ नहीं। अन्धा के साहित्य के वर्ग को समझने के लिए मैंने गुजराती के जिन विद्वानों की कृतियों का स्वाभ्यास किया है, उन सब का भी मैं हृदय से आभारी हूँ। मैंने प्रस्तावना में उनके नामों का सघनानाम उल्लेख किया है।

अंतर्गत अपने सहयोगी डॉ. मदनमोहन गुप्त के प्रति आभार प्रकट करता अपना परम कृतज्ञ समझता हूँ। यदि मेरी से लगाकर अंतिम मूल तक संशोधन में उन्होंने विमलात जय न किया होता तो इस ग्रन्थ के सुनिश्चित प्रकाश में आने में अभी कम से कम एक वर्ष और लग जाता। मैं अपने इन सब बंधुओं और सहयोगियों का भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने इस कार्य में मेरी छोटी-बड़ी सभी प्रकार की सहायता की और बचावसर हार्दिक सहयोग किया।

हमारी घोषणाओं की सफलता हमारे उपपुस्तकालयों को पब्लिशिंग मेहता तथा प्र उपपुस्तकालय डॉ० चतुर्माई पटेल के उद्धार सहयोग और संरक्षण पर अवलंबित रही है। मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

—कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह

प्रस्तावना

(१)

व्यापारिक दृष्टिकोण से देखने पर हमें गुजरात के लिए सत्रहवीं सताब्दी ऊपर से सभ्यता का युग^१ मान पड़ती है। इसमें संदेह नहीं कि सूरत और अहमदाबाद जैसे व्यापारिक केन्द्रों में धन-धान्य का बाहुल्य था। विदेशी पर्यटकों एवं भारतीय इतिहासकारों ने इन नगरों की व्यापारिक सभ्यता की भूरि भूरि प्रशंसा की है।

परंतु सांस्कृतिक दृष्टि से देखने पर हमें स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि भारत से अन्यत्र प्रदेशों के समान ही गुजरात का भी दिवालाना निम्न युग था।^२ जिस नीतिगत व्यवस्था के अन्वय से इतिहासकार गुजरात के लिए सत्रहवीं सताब्दी का सृष्टि का युग मानते हैं, उसकी जड़ें काकसी की भीतर हमें खोजनी पड़ेगी। जड़बुद्धि तथाकथित सभ्यता के कारण समाज में एक कर्मकांड, अक्षम अक्षमभेदा तथा भेदिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिगत छद्मता छाती जा रही थी। समाज की विपन्नता क्षुब्धता एवं व्यथा पर इतिहासकार की दृष्टि नहीं पड़ी। जीवन में व्याप्त संदिग्ध भय, अज्ञान, विचार और निर्दोष भ्रमता पर कोटारुपा खोने में ही विचार किया इतिहासकारों ने नहीं।

- 1 As a province of the Mogal Empire it (Gujrat) settled existence and grew prosperous once again. The people succeeded in confining political influences to limited spheres, and stiffened social barriers so as to secure contentment and happiness within narrow grooves (page 173 *Gujrat and its literature* by K. M. Munshi)
- 2 During this period men were being driven into progressively narrowing communities social barriers were stiffened the individual was sacrificed to the group, untouchability came into existence K. M. Munshi—*Gujrat and its literature* page 147

विशेषतः मध्यकालीन इतिहासकारों ने तो केवल बाणबाहों को साहसीयुद्ध और
 युद्ध-समृद्धि ही देवी अत्याचार पीड़ित जनता की दुरवस्था नहीं। परित्या
 के प्रधानन द्वारा पदस्थित भरती की भाव-भराव यदि किसी न सुनी तो
 इन छंदों ने ही। इसका सबसे अच्छा प्रमाण हिंदी साहित्य से दिया जा
 सकता है। इतिहासकारों ने अकबर और जहाँगीर के शासनकाल के जो
 विवरण प्रस्तुत किए हैं उनमें पुष्टि इन्हीं के सामान्यिक प्रायःकदरी गोस्वामी
 टनसीबाहों की बाणी से नहीं होती—

फिरभी किसान कुछ बहिक मिचारी, मजदूर
 बाहर बसत नट बोट, बार केरकी।
 पैर को पड़त गुन पड़त, बड़त गिरि
 अदत गहन बन महन मकेरकी।
 कंस नीचे करम बरम अबरम करे,
 पैर ही को पड़त बेचत केरा केरकी।
 तुम्ही कुसाद एक राम पनस्याम हीरे
 जाधि बहवाणि हैं बही है जाधि पैर की प

तथा,
 केरी न किसान को मिचारी को न मीक बहिक
 बहिक को बहिक न बाहर को बाहरी।
 बीविका बिहीन कोम लीसमान सोन बस
 बहिक एक एकन ही बहिक जाई का करी।
 बैरह पुरान बहिक कोनहू बिबोदित
 होकरे सबै है राम राबरे ह्या करी।
 बारिब बसानन बहिक दुनी, बहिकपु,
 दुसित बहन बैहिक तुम्ही बहिकरी प

इन छंदों में गोस्वामी टनसीबाहों ने केस और समाज की दुरवस्था का
 जो चित्र उपस्थित किया है, मुकरात उसका अन्वय नहीं जा। वस्तुतः यह
 अवरुध उत्तरोत्तर विषमता ही जा रही थी। अतएव अन्त में अपने देश
 समाज और बाल को प्रायः देसा ही पाया होया जसा गोस्वामीजी ने उसे
 देखा था।

अन्धकारमय समाज में मनीति और पुनीति के कारण जनसाधारण में न तो दीक्ष्य रह गया था और न स्वाग भोग का पराक्रम बरत उत्पन्न हो गई थी एक निम्न स्तर की दरबारी चाटुकारिता । सपाकथित समृद्धि के ठिठानेदारों की दिपलियाँ थी हतपराक्रम, हतवीर्य, हतस्वाभिमान बने । कर मनोपार्जन का सूत्र जोड़े रखना । सासुर्छों का कृपा माग्न बने रहना और इसके लिए मनोतिथी बनाना हो उनकी आध्यात्मिक और आर्थिक उन्नति का बरमेक्षण था । यही थी पुंसलहीन समाज की घनस्नेहपता अथवा इतिहासकारों द्वारा प्रशंसित लोक की ध्रुव-संज्ञा और समृद्धि । वही इतिहासकारों ने जीवन साधना का प्राचुर्य देखा, आर्थिक समृद्धि देखा, वहाँ संतों ने घन स्नेहपता, मनोपार्जन के अतिरिक्त अन्य सभी क्षेत्रों के प्रति सासुर्छों की सशरीरता भी देखी । संतों ने यह भी देखा कि समाज भोग और पराक्रम दोनों में ही यक्षों के असमर्थ अनुकरण की ओर मुक रहा है । धर्म के प्रति उत्तरेवायित्वविहीन आसक्ति का कुरितत परिणाम भी संतों ने अच्छी तरह सोच लिया था । उन्हें मनोमूर्ति विहित था कि पौडपट्टीन अर्क्षम और दुर्बलताजन्य अपपात दोनों एक हैं ।

संत अन्ध के समय की राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों का आकलन करते समय हमें स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि १७ वीं शताब्दी प्रच्छन्न रूप से इन सभी क्षेत्रों की असमर्थता की कहानी है । इस शताब्दी के समाज में मौलिकता और विरासिता कुछ गई थी । व्यक्तिगत आचरण मित्र-हता की ओरि तक पहुँच गए थे । वहाँ तक कि ब्रह्महत्या का भी दुरूपयोग किया जाने लगा था । समाज का बुद्धिजीवी वर्ग भी घनस्नेहपता में डूबा हुआ था शिक्षित वर्ग में अध्ययन-स्वाध्याय के प्रति उदासीनता उत्पन्न हो गयी थी । पुत्र-कन्या के विवाह पर हाथ जोड़ कर धन का अपमान करना सामाजिक प्रतिष्ठा का मानवन्ध माना जाने लगा था । लोगों ने अग्रयासित रूप में यह धारणा बना ली थी कि पेट वास्ती के लिए ईर्ष्ये मीथे अथवा अच्छे घुरे सभी प्रकार के कार्य क्षम्य हैं । भूमिधार, रिश्वत, हत्या, चाक्रेवनी और विधासपात की बातें सुनकर लोग चौंकते नहीं थे, एक प्रकार से वे सहज अभ्यस्त हो चुके थे । गुजरात पूर्वतवा मुगल-साम्राज्य का अंग बन चुका था ।

मान पड़ता है कि धर्म ने भी उस समाज काचित् लोकधर्म का स्वरूप छोड़कर व्यक्तिगत साधना का स्वरूप के लिया था । अवैष्णवीय धर्म भी मात्रा

में किसी प्रकार कम न थे। भाषा प्रचार के मयों के कारण संपूर्ण कार्य मत इमानि की मूल भावना तिरोंहित हो चुकी थी और उसके स्थान पर पात्राङ्गसंयुक्त मत की भाँति का प्रसार होता जा रहा था। आभ्रमचर्माविहीन वर्णमयवस्था एवं यमी की अशुद्धि मर्वाश की ओ झरेका रूप पकड़ती जा रही थी, बड़ी के कारण स्वेच्छानुसार अज्ञानीय पंथ मत और मार्ग बनते जा रहे थे त्रिन पर चलने के लिए व्यक्तिगत पाठपोट दिखावे बिना कोई मति ही न थी। समाज अपने बुद्धि विकास और भाँत मनकी सर्वसहिष्णुता की दमकृता का आस्थापन देता था, किन्तु व्यक्ति लावन, यंत्र संन बल, कथन भाँति के प्रति ही अधिक आस्था प्रकट करता था। राजनीतिक सुरमिसंघियों, बह्वेशों और व्यवहारों के परिणामस्वरूप वह आन्यता जनताधारण में भर करती जा रही थी कि जीवन के समस्त वैयर्थ, भोग एवं सांसारिक संबंधों की अपेक्षा पानी का मुक्तमुक्त कही अधिक स्वासी है। एक अक्षर का उत्पारन छत्रकेट में लोक-मापक को अभिपूत करने लगा था। अतः उत्पन्न की बकट त्रिवली होती थी, वे बहुत कम से नीचे झिरकर छत-विछत होन की विनीतिधर से प्रस्त हो उठे थे।

बह करने की भावनाकला नहीं कि वह सुखकण्ड आनन्द रूप से आनन्दता सम्भवता और अमुरका का युग जा। अतः व्यक्ति के व्यक्तिगत संघर्षों को सीमित-संकुचित करके समाज में सुख-साँति की प्राप्ति के प्रबल क्रिये मने। अलंघ्य बरमासिनी और उनके कठोर अनुशासन के अनुसार नियम बालविवाह, छुपाकृत भाँदिक असहिष्णुता आँति देवी कुछ कुरीतियों उत्पन्न हो गई जो उत्पन्ननेन परैरिबधियों में अकम्प नहीं थी। अय-मास और ईमान की नमुरता जब काल की एक बहुत मामूली बात थी।

दिल्ली में जित अक्षर महान् के शासनकाल को गुजरात के लिए मुक्त शासन का स्वर्णिम युग माना है, वह बुधवार १९ अक्टूबर सन् १९०५ ई. को ४९ वर्ष के लम्बे शासन के बाद दिवंगत हो गया। अक्षर के जाँचें मंत्र करते ही दक्षिण में अहमदनगर के सिद्ध सम्राट् के अभिभावक यमिक अक्षर के इराद में गुजरात की नकनरवासीन भी समुद्रि का अयदरन करने की भावना जाग्रत ॥॥। एक बड़ी सेना एकत्र कर सन १९०९ ई. में मलिक भंवरने गुजरात पर चढ़ाई करके बड़ीश और सूरत को लूट लिया। गुजरात क लिए वहाँ से संचर का समक आरंभ हुआ। १९ चढ़ाई और छत्राट के

मार्ग के गीब के गीब सजाव दिये गए, खेती बरा ली गई। लोग अपना जीवन बचाने के लिए दर-दर की छेकरी खाने लगे।

समझी छत्री के भारंभ से ही जिससियों में विशेषकर अंग्रेजों का गुजरात में अभ्युदय आरंभ हुआ। जङ्गल के समय की सन् १५७३ ई की संधि के अनुसार सूरत के व्यापार के शाहशाह पुतलाकी थे। परम व्यापारिक बुद्धि की सीढ़ी-साड़ी पुतलाकी नादि अपनों के लिए सगदालू सिद्ध हुई। परिणाम स्वरूप सन् १६१२ ई में कैप्टेन वेस्ट के नेतृत्व में इंग्लैण्ड से चार बहादुरों ने आकर पुतलाकियों को परास्त कर सूरत के व्यापार पर अधिकार का दावा किया। जहाँगीर ने जिसको का पक्ष ग्रहण कर डरवायी सन् १६१३ ई में सूरत, कमाठ, गोवरा और अहमदाबाद में अंग्रेजों को बसवाने बोलने तथा व्यापार करने की आज्ञा दे दी।

जङ्गल की धरतु के पश्चात् सन् १७०३ ई. तक गुजरात पर मुगल हुकूमत के बावसराय शासन करते रहे। इन बावसरायों में शाहजहाँ और औरंगजेब भी थे, जो आगे बचकर छिन्नी के शाहशाह बने। बावसराय अपने मातहत हाकिमों द्वारा शासन और मनोपार्जन करता था। इन लोगों का काम ही नहीं था कि व्यापारी बर्ग से जन का अपहरण कर भविष्य के लिए संभल करे। बावसराय के मातहत बड़े से छेकर छोटे तक सभी अधिकारी लोगों हाथों से जन बढोरने के फेर में रहते थे। जनता में यह साहस नहीं था कि वह शाही शासन के अदना से अदना आदमी को भी अपसक्त कर सके। अज्ञाचार बही तक बढ़ा हुआ था कि अधिकारियों को प्रसन्न करने के लिए नारीय तक का अपमान कर दिया जाता था। ऐसी परिस्थितियों में बावसराय एवं पक्षी जैसी कुटीरितियों जल्मी किनसे तस्काबोन समाज को निश्चित रूप से लम ही प्रतीत हुआ होगा। तपनों के लिए गुजरात के बावसराय मुरादबख्श ने सूरत के गवर्नर और बेगम कादवी को बावसराय पीछी ताकत छेकर छुड़ किया था। अहमदाबाद के बड़े बड़े छेठों से श्रम के लम पर उसने लंबी लंबी रकमें वसूल की थी और नहीं तक कि गुजरात के कुछ किस्में की वसूली तक येन रखकर उसने जन एकत्र किया था। बावसरायों को जन लोभप्रता का इच्छे बङ्गल और बसा पराहरण हो सकता है।

जहाँगीर के प्रसन्नतामानजन अंग्रेज एकदम दूधरी ही बैसमूया और संस्कृति केन्द्र गुजरात में कीचुल्ल का कारण बने हुए थे। सूरत शीघ्र ही पश्चिम

भारत का प्रमुख व्यापारिक स्वाम बन गया था। से पारस की काढ़ी का व्यापार निरन्तर बहुत दिनों तक होता रहा। सूरत के गवर्नर को प्रसन्न करना अनेक अपना कर्तव्य समझते थे। इस प्रकार व्यापारिक उद्यमता का एक ऐसा महित आदर्श है देश के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे थे जो पट्टी की सांस्कृतिक परंपरा की जड़ों पर कुलराज्य करता था। सूरत का गवर्नर भी कीमती की मित्रता का हम भरता था। जब से सन् १६१५ ई. में कुस्तुनिया के दरबार से वृत्तनीति में नार्दक होकर सर कामस रो दिस्ली दरबार में दो वर्ष तक राजवृत्त रहकर कीट बना था, सूरत के गवर्नर की नजरों में अनेक का आदर बना हो गया था। सब मित्राकर इन बाह्यराज्य गवर्नर कीदरार और विदेशी व्यापारियों के सम्मिश्रित प्रभाव से समाज की कितनबारा की दिशा ही परिवर्तित हो गयी थी। कड़ीगौर काहजहाँ केते दिस्ली मुगल सम्राटों के समय में गुजरात की सहायि की कते दिन कयी थी। १६२६ ई. में काहजहाँ दिस्ली का बाह्यराज्य बना। अनेक सूरत के बाह्यराज्यों ने प्रया के अनुसार बदन मकाबा, और अपने अपने क्षेत्र से कयी कयी रकमें भेज कर नगर-निवास किया। सन १६३१-३२ गुजरात में इतिहासप्रसिद्ध सत्याग्रिया अकाल पडा। मकाक की मीनकता इसी से प्रकट होती है कि कयी-कयी में मनुष्यों की कयी पट्टी छली की ओर कीये-कते सगै वही नोन नोन कर काठ छते थे। मकाक के दुष्परिचाल और मद्रसराओं की मनकोसुफता और कियारी से गुजरात में अराजकता उत्पन्न हो गयी। जनसाधारण कया कते कतों तक के कुछ कन्द का मिशाला नहीं रहा। १६३५ ई० में आक्रमका ने परिस्थिति पर कए पाने के किए प्रबल किए। उसने कियों की मरम्मत करवाई, सेना और हथियारों की ओर ध्यान दिया। उसने सन् १६३० ई० में नवानगर के नाम पर कवाई करके उसके बीच बसूक की। परंतु मुसलमानों की विधायक पर सन् १६३२ में सते हथकर सूरत के गवर्नर निर्मा इसाखाई का को बाह्यराज्य बनाया गया।

बाह्यराज्य ही कया, वरा हथियारों कासनकाक में लोटे से केकर कते तक सती अधिकाारी बह जानते थे कि कने कार्यकाक की कोई निमित्त कयनि नहीं है। उपर कनता के सामने लुठ करने के किए अधिकाारियों की कोई निमित्त कया नहीं थी। यन की क्रांति से आत्मन्य और विकासप्रियता का प्रखर दुषा, विरुध प्रभाव बन साधारण पर भी पडा। बह को कुलकिय धाय था कि मुसलमानों को दिष्ट अधिधर प्राप्ति का गौरव मिलना चाहिए। किना कोई किये

योग्यता दिखावे या बगैर किसी प्रकार का परिश्रम किए ही, राज्य के ऊंचे ऊंचे ओहदे मुसलमानों के लिए खुले थे। दुर्भिक्षों, कुष्ठियों और बचन्य अश्वरों में आर्सेनिकमिश्रित से खासक खुले आम जन समुदाय को इच्छानुसार दबाते और उन पर अन्याय कर रहे थे। इस्लाम के अनुयायियों को छोड़कर शेष जनता पशुओं का या जीवन व्यतीत करने के लिए पागल थी। अपने खासों के घर पानी भरना और सफ़ाई पीरना ही जो अपने प्रारम्भ का एक माग बैठे थे, वे भस्म निहृष्ट कोटि की चादुखारी, चापलूसी और नाम्नाई दिखाने में क्यों हिचकिचाते? उनका पतन हो गया था और उनमें ऐसी ऐसी कुंठाओं से भर कर किया था जिनमें आदमी का व्यक्तिगत सम्पन्न नष्ट हो जाता है। यही कारण है कि सर्वत्र हिंदुओं के सामाजिक और धार्मिक जीवन में अनां छनीय क्षयित प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो गईं। इन सामाजिक परिस्थितियों में किसी भी तरह आदमी का मानसिक विकास संभव नहीं हो सकता है। और जब थोड़ा बिचार नहीं उत्पन्न होते हैं, जब मनुष्य विकेक-भविष्य का अंतर भूल जाता है, तभी उसके सामने अंधकार आ जाता है— एक ऐसा सर्वमाही अंधकार जिसमें न चाहत हुए भी उसको समा जाना पड़ता है। अतः अंधकार के बाद सत्रहवीं सताब्दी में येर मुसलमानों की प्लेवति वृद्धि या समानता का दावा इस्लाम के आधारभूत सिद्धांतों के हिसाब से एकदम मान्यमान था। इसलिए एही दशा में राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक अदृष्टा का निर्वात अस्वादी और अनिश्चिततापूर्ण होना अनिवार्य था।

परवर्तता को आरम्भ करने की चेष्टा में अपने धर्म के प्रति अनिश्वास नास्तिकता अथवा निरुत डेकर ठाकुरजी को प्रसन्न करना हीनों एक ही बातें हैं। सद्वर्तों की संख्या में लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार करके अपने को मनुष्य के सामान्य अनिष्टों से बेधित न होने देने का कर्तव्य प्रमाण भी किया। राजनैतिक असमानता ही उनकी इस अयोग्यता का मूल कारण थी। दबते दबते वे इतना दब गये थे कि उनकी आत्मा में अन्याय का विरोध करने की शक्ति ही नहीं रह गई थी।

१ ऐसे अनेको हिंदू जो गड़ कर (गजिबा) नहीं वे सच्चे वे कर वसूल करने वालों द्वारा किए गये जाके अपमानों से छुटकारा पाने के लिये मुसलमान हो गए। —इतिहासकार मनुजी

सन १६२३ ई में शाहजादा औरंगजेब गुजरात का ब्राह्मण बनाया गया। उसी वर्ष उसने सहासपुर के वितामनि^१ के जैन मंदिर को बर्बाद कर देन की आज्ञा दी। हिंदू मुसलमान के बीच को खाई तय्य हो गई थी औरंगजेबने उसे चौड़ा करके सागर का स्वरूप दे दिया। दो वर्ष औरंगजेब गुजरात में ब्राह्मण रहा। सन १६२६ ई में उसकी बग़्द साहस्तावा ब्राह्मण नियुक्त हुआ। इसी दो वर्ष के समय में सिवा और मुस्लिमों के बीच झगड़े पारंगत हो गए। इस्लाम का कहर अनुयायी औरंगजेब मुसलमानी राज्य में वार्षिक सहनशीलता को कानून और कुरानसम्मत मठ के दिव्य समसता था। उसकी कठोर आज्ञा थी कि सखी क साथ इस्लाम और कुरान की नीति का पालन हो। औरंगजेब की संपूर्ण शक्ति मुसलमान सैनिकों की तबवारों और कुरान की आज्ञा पर निर्भर थी। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ श्री बलुनाथ सरकारने औरंगजेब में लिखा है, '... वेर मुसलमानों की बुद्धि और वज्रति तथा उनका निरंतर बना रहना ही मुसलमानी राज्य के आचारमूल सिद्धांतों की दृष्टि से सर्वथा असंगत था। फिर ९ अंग्रेजों को उसने एक आम हुक्म दिया कि कश्चितों के सब शिक्षात्म्य और मंदिर विना दिए जमी तमा उनको वार्षिक प्रभावों को इबादा करे।'^२ औरंगजेब के शासन काल में हिंदुओं को राज्य की ओरसे जीवन-वापस के विविध ही पर्य मुद्रिका के बदले कर देना पड़ता था। इस्लाम के प्रवर्तक मुहम्मद ने अपने समानुवाहियों को आदेश दिया था कि जो लोग इस्लाम के इस सचने मठ को म प्रण करे उनसे तब तक कुछ को जब तक वे शीनता पूर्वक अपने ही हाथों कजिवा न कुछ वे। (कुरान ९, २९)। गुजरात मज्ज से सन्तनते मुगलिया को कजिवा कर से कममन पांच आका रूप वार्षिक आय होती थी। वहां वह बात विरोध रूपसे उल्लेखनीय है कि अपने शासन कालमें सम्राट् ज़रुवर महान ने राजनैतिक असमानता के इस प्रतीक कजिवा कर को लयमन हटा दिया था। श्री बलुनाथ सरकार तात्कालीन परिस्थिति के संबंधमें लिखत है^३ —

१ सन १६२३ ई में जब वह गुजरात का मुखेदार था, तब उन्होंने अहमदाबाद में तत्काल ही अपने हुए वितामनि के हिंदू मंदिर में गो हत्या करवा कर उसे भूत करवा दिया और बाद में उस मस्जिद में बदल दिया। उसी समय उसने गुजरात के और भी हिंदू मंदिरों को बिरबावा था।

डा. बलुनाथ सरकार = औरंगजेब डू १९६

२. वही पृष्ठ १९३

३. वही पृष्ठ १९५

‘ मारने के अतिरिक्त अन्य सारे मीशनों से मीथन असाधारण बिना किसी कारण के अन्य धर्मावलम्बियों पर इसीलिए किये जाने लगे कि वे अपना धर्म छोड़कर इस्लाम को ग्रहण कर लें । अभिया कर देने और रहन-सहन तथा वस्त्राभूषण की रोक टोक के साथ इन अन्य धर्मावलम्बियों को कई इसी भाषा में तथा डर मी दिखाए जाते थे । हिंदूधर्म छोड़ देने वालों को घन अवस्था सरकारी नौकरी दिये जाने का प्रलोभन दिया जाता था । हिंदू धर्म और समाज के नेताओं पर एकाग्र दृष्टि व्यक्त था, जिससे वे किसी भी प्रकार की धार्मिक शिता न देने पावें । हिंदुओं के धार्मिक झुझों और सम्मेलनों पर प्रतिबंध था कि उनमें किसी भी प्रकार का संघर्ष न हो सके तथा उनमें कहीं आतोंय एकता की भावना न उत्पन्न हो जाये । न तो कोई नया मंदिर बनाया जा सकता था और न पुराने मंदिरों की मरम्मत ही की जा सकती थी । एवं कुछ समय बाद सारे हिंदू मंदिर एकबारगी ही मिट जायेंगे । यह एक अदृश्यभावी बात थी परंतु इस पर भी कई एक अधिक कटुतर इस्लामी भावना वाले मुसलमान समय से पहले ही मंदिरों का सर्वनाश करने के लिए उन्हें अवर्धस्ती भिरा डेते थे । ” १

उपयुक्त कथन से स्पष्ट हो जाता है कि इस में परिस्थिति कितनी संकटपूर्ण अवस्था तक पहुँची हुई थी । औरंगजेब के शासनकाल में गुजरात शांति से दोनों दूज बना गया था । ईर और तुर्कवाक में गठबन्ध आरंभ हो गया, मात्रा और मीनापुर में नबी अवनिर्वा बनाई गई । तुर्कवाक भी गुजरात की सीमा में मिछा किया गया और उसका नाम इस्लामाबाद कर दिया गया । तुर्कवाक क्षेत्र में क्या गुजराती होनी इसका अनुमान भी गडुनाथ सरस्वर के इस कथन से हो सकता है,— ‘ अपने राज्य से बाहर अनेक जाकमन और युद्ध में हिंदुओं की हत्या करना और उनका मंदिरों का विनाश करना एक पुण्यदायक कार्य माना जाता था । इस प्रकार मुसलमानों में एक ऐसी विचारधारा उत्पन्न हो गई जिसके कारण वे स्थापना से ही लड़ मार और मानक हत्या को पवित्रतम धार्मिक कार्यों में गिनत लगे । ” २

अब की सामयिक परिस्थितियों का विश्लेषण करते समय हमने देखा कि तन्त्रात्मक समाज में असुरक्षाग्रस्त भय जनता का आकाम्य कर रहा था । समाज-विज्ञान तथा भुविज्ञान के अध्येताओं ने सभी तरह के अवधिधासों के

मूल में सब की परिस्थिति स्वीकार की है। व्यवस्था भी सब से उत्पन्न होती है और पुनरावृत्ति के माध्यमों का मूल भी सब ही है। सबवस्तु ही कभी कभी ऐसी भी परिस्थिति बन जाती है जब मनुष्य किसी अन्तर्दीन के विराम से बाधायें डू करके की सम्पत्ति करने लगता है। अतः साह-पूक लेने-डोरेके का बाजार मम हो जाता। वंश टापीय बनाने और सैकड़ सत्कार की मजार पर बाहर बज्रबले वाले सुभादिर भी माल मारने लग्य। जोगी अवबूत सिद्ध अपोती भाषि अवमिधित धरदा अनोर कर घोड़े होने लगे। वन तम दूर एवं मम मीमी व्यक्ति देवताओं की तरह पुजने लगे। उनका धाम का हाथ की रैकालो से ममा कर सौरमंडल शिवत नवग्रहों तक की पूरी पूरी खबर लेकर आदमी का आधन संघट से निस्तार करना। मूढ़ पूँक और बुद्ध की मूर्ती अफवाहों का अयन हित के लिए प्रचार करना। इनमें एक ने बज्रकर एक सम्पन्न, पूर्ण और बुद्धिमान व्यक्ति भी वे जो जगत् हित के लिए समाज को रक्षित की ओर के जाने के प्रसूने बाँटा करते थे।

जबका ने यह सब कुछ जोखो देखा और अंतर्मुखी होकर किसी मूल विचार की अभिव्यक्ति में लीन हो गए। साधना के किनो निष्ठिष्ठ ऊपर या नीचे का उद्घाटन उन्होंने नहीं किया ही। अद्वैत वेदांत में उन्हें शक्ति मिली और उन्होंने उसके द्वारा अपने का आत्मप्रवचन से मुक्त अनुभव किया। उन्हें समाज की पतनन की प्रकृति से अवगतोय हुआ और इनकी कठना इतना केंद्रन की विस्तार जान पड़ा। उन्होंने अपने अतिरिक्त न तो अपने ही वचन एक न आत्मिक सुखस्वप्न। इनकी सामाजिक चेष्टना ने मनुष्य ने अभिव्यक्ति दिखाई और उन्होंने समाज की पतनन की प्रकृति को बाबरीय का अतीतिव्रता का रूप प्रदान नहीं किया। तात्त्विकता के उनके गरीब दृष्टिकोण ने अनेक व्यावहारिक प्रश्न उठाये जिनका विवरण और समाधान भी उन्होंने तात्त्विक दृष्टि से ही किया।

देवधाम के अभिप्राय का पालन रखते हुए अजाने वर्चन और उजाना से प्रस्त सामाजिक चेष्टना को उबारने की चेष्टा की है और हम यह कहते हैं कि एक हद तक वे सत्य लिए सही समाधान तोत्रने में समर्थ रहे हैं। अद्या ने देखा था कि जो भी कुछ दिखाई पड़ता है वह परीक्षितम्ब विवृति है। हासोमुक्त समाज के धर्मों के जीवे की मूर्ति पर सुगत सूचितों की विस्तारिता की कार्य जगो हुए है। मोय और देवधर्म के प्रस्त पदसजों को आदय मानकर जगत् वाले पैर विवृत विवृत जात हैं। वास्तव में समाज

निर्जीव हो गया है जो दिवारों को गलीन स्तुति और प्रेरणा देने में असमर्थ है। अनुशात एवं अर्धवैदग्ध्य कुरसा के हाथों कठपुतली बन कर खेचरहा बूठ बैठ रही है। यही सब देखकर अकाले अनुभवविद्य मूर्त और सत्यान्वेदी उद्भाषनाएँ सत्तार के समस्त प्रस्तुत थीं। समाज ने उन्हें किस रूप में और किस सीमा तक ग्रहण किया वह देखने के लिए आज भी स्वान स्वान पर अन्धा मगल के भजन गाते हुए अदृष्ट नेत्रों को देखना आवश्यक है।

अन्धा के दृष्ट्य में पूर्णरूप से सत्कालीन परिस्थितियों को छाप हमें मिलती है। बहुत से कवियोंने अपने समय की सामाजिक दुर्वृत्ता का वर्णन अन्वेषितशो द्वारा किया है। कमी उन्होंने पशु-पक्षियों को संशोधित करके कहा है, कमी मरी पक्ष आदि के माध्यम से। कमी कमी कछिपुष का वर्णन के माध्यम से उन्होंने अपना अवलोकन प्रकट किया है। परंतु कबीर और अन्धा ने जो कुछ उन्हें कहा था चाक चाक और सीधे सीधे कहा है। पंडित, मौलवी, साधु-सठ, सुधारक, विचारक और जनसामान्य किसी से भी वे डरे नहीं हैं, न अपनी बात कहने के लिये उन्होंने किसी कठोपि की ही आवश्यकता अनुभव की। इस प्रकार जो कुछ उन्होंने कहा है उनके को खोद पर नि संभव होकर कहा है। तभी उन दिव्यात्मा की वाणी काव्य और व्याकरण के नियमों से निभन्न होते हुए भी पत्थर की मूर्ति बन कर रह गई है। इतिहासकारों का साथ अधिकांशों के भोज या लक्ष्यारों के भय से यहाँ निर्वर्ण हो गया है यहाँ कबीर, तुलसी और अन्धा जैसे सर्वस्व स्वागी फलनों की वाणी का सहारा पाकर वह भी सा ठठा है।

[२]

भारतवर्ष के इतिहास की पंखड़ी सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियों में देश में बिदेसी आक्रमण और विषयी संस्कृति से अपनी रक्षा के लिए अपना सांस्कृतिक नवनिर्माण और अविश्वारी पुनर्गठन भी किया। सत्रहवीं शताब्दी में जिन महापुरुषोंने देश के इस सांस्कृतिक आगमन के विरुद्ध आंदोलन का नेतृत्व किया, उनमें गुजरात के महान संत अन्धा का नाम अग्रगण्य है।

हमारे इतिहास की सत्रहवीं शताब्दी एक ऐसा कालखण्ड है जिसमें गुप्त की वरमन्वेष्टा और गुप्त का साथ देनेवाले दोनों तरफ कुछ इस प्रकार एक दूसरे से गुप्ते हुए हैं कि इस सम्पूर्ण सी वर्ष के गुप्त में जीवन की अनेकानेक

साधारण-महासाधारण कृमयी- शरती तथा फूली-सुखती दिखाई देती हैं। प्यास में रहने पर वह उबन-पुपन भीतिक ही नहीं आध्यात्मिक स्तर पर भी समान रूप से उद्विग्न होती है। कहीं ज्ञान की दृष्टि समावृत्त होती है कहीं भक्ति की। कहीं चेष्टा शेष बचते हैं कहीं अगोचर नाच घुमाई पड़ता है। मोक्ष जगोचर होता है और अगोचर मोक्ष। एक ओर हिंदुओं पर बड़े से बड़े धार्मिक अत्याचार हो रहे हैं, उनके मंदिर और देवमूर्तियाँ तोड़ी जा रही हैं इनको अपने प्राण तक के लिए बलिबा नास का हेतु बना पड़ रहा है, तो दूसरी ओर मिर्चा रसखान^१ और देवय तान^२ जैसे कुलीन मुसलमान दुश्म और जो हिंदुओं के देवताओं के प्रति अपनी भावना व्यक्त कर रहे हैं।

काम्य के अनुशीलन में कवि-जीवन का महत्व इस देश के कवियों ने स्वीकार नहीं किया है। वे जीवन की सभी सीमाओं को अधिकान्त करनेवाले सत्य की अभिव्यक्ति को ही सच्चा काव्य मानते रहे हैं। इसीलिए साम्प्रदायिक आस्था से लगाकर हुए तुलसी और जसा तक हमारे कवियों का जीवनवृत्त अगोचर में हुआ पड़ा है। फिर भी कविजीवन को अनपेक्षित नहीं माना जाता चाहिए। क्योंकि हमारे आचार्यों में कृति का एक स्वतंत्र व्यक्तित्व मानकर उसीको समस्त की चेष्टा में अपने कर्म्य की इतिमी मापी है तो भी ओझैया किमी न किसी रूप में कृतिकार का जीवन-रूप घुसकर (वही रही है। इन परम्परागत संस्मरणों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जननी बनवा किर्दरी क्या जाता है। पर उन्हें एकदम अश्रामात्मिक मानकर अनात्म घोषित करनेसे हम सत्य के सर्वथा निकट भी नहीं रह पाते।

देती ही किर्दरियों में हों जसा के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का वृत्तांत मिलता है। उनमें तर्क और तथैक से बैठकर असल बात का पता लगाया असम्भव तो नहीं ही क्या जा सकता है। इन जनमुक्तियों में सत्य का गुण जो भी कमसा जाय वही है कि ऐतिहासिक सन्-संवाद की सीमा में न बैठकर वे सार्वकालिक रूप ग्रहण कर लेती हैं। सागर लोक-मेधा अपने महाशय उपघारी को अपनी बीजकर सत्यजीवी नहीं बनाया चाहती।

लेख कवि जसा भी अन्य लोगों की तरह अपने संघर्ष में मीन है। अपने निवास स्थान के संघर्ष में उनका बहना है—

१ जेम देव की छविहि कवि भये मिर्चा रसखान।

२ तान नाच प्यारे हिंदुवासी है रहुपी में। —ताम।

बाबा हम सोही नगर के बासी ।
 उयाँ सुख हुआ नहीं भवस
 उयाँ दुःख नहीं समझैस । बाबा
 काल, धर्म की लड़ाई गत नाहि
 कुरम नहीं को साध्व
 करत उपाय यह नगर है म्पारा
 कैसा पद दुःसाध्य-बाबा हम सोही नगर के०

अन्यत्र भी अनेकाने जीवन संबंध में इसी प्रकार की बात कही है—

जनम मरण होय सब भागी ।
 जब मेरी सुरता सुमलै लागी ।
 ना कहु प्रभु-छेड़ै कहा स्वागी ।
 सहजे हूँ मेरा अनुरागी ।
 जनम मरण सब सचकागी ।
 ना मैं गुन न उबक कहावुं ।
 ना करूँ पूजा न तिर्थ नहावु ।
 ना मैं प्याली के प्यास समारुं ।
 ना मैं जाली के ज्ञान बिचारुं । जनम मरण० ।
 ना मैं बहुर के मूर्ख बनाना ।
 ना मैं वैदित ज्ञान बुझाना ।
 ना मोहो पाप-पुण्य ना भाई ।
 ना मैं बीजुं ना मैं हाई । जनम मरण० ।

अन्ना ने अपने संबंध में जो कुछ कहा है, उसका आशय यह है कि उन्होंने अनिनाशी जीवन का वरण कर लिया है। आशीर्षिति प्राप्त कर ली है। इसलिए उषर्भेगुर जीवन का उनकी दृष्टि में कोई महत्व नहीं। वह लौकिक जीवन असत् और क्षणभेगुर तो है ही अविद और समधि दोनों ही भूमिकाओं पर अद्यान्तिपूर्ण और अनेतिक भी है। इसलिए आत्मनिष्ठ अन्ना जनरम की सामूहिक गतिविधि का ही समर्थन करते हैं—

इस नयरी में ना पुछे सोना ।
 नित मीने बीर नित होय रोना ।
 जिस नयरी का राखा नईया
 सर्वे लोक नके पाप रीया
 कज मवासी निहा सो सुते
 पाते कोट रखाओ लुटे ॥
 साज सरा ये रहे अरुणा
 बहीर स्वर्ण न बाके सुखा—इस नयरी०
 शाहबोक सुपा रहे साना
 बिरे नगर में लोक गुमाना
 दुज कपता काय पेर नयेरा ।
 करे केसमव तु नित्य नयेरा—इस नयरी ॥
 भाप समेट रहे ठू पूरा
 दुजको नवा जो कावे खरा ।
 बाके बचा हम किया बिचारा
 नगर अविनाशी किया अवचारा—इस नयरी ॥

x

x

x

पिह पिह परलीति माने
 सो दि मूढ़ नर ।
 नर करे बिरबार
 जीवन दि के बेह को
 साबरति में कार
 समुदाये बेह छेद को
 सपकत निनसत काय
 प्राये पिह को हे परम
 ये तो इमिरन मुमाव
 अपि तो पद है परम
 ऐसो जानत है बचा ।
 बेह छते ही बेह पर
 पिह पिह परलीत माने
 सोदि मूढ़ नर ।

जीव अपने अज्ञान मान बैठे हैं मिथ्या,
मिथ्या बहुत हैं मान, काम गुरुज्ञान न आयेगी
भयो ना भूष उघोत उघोति आरम नहि आवगी
भय्या भुवन सो तीन कीन्ही नहि कबहु विचार,
में तो कीम कवन सो ये है पिछ जलधन द्वारा,
बिना वस्तु विचार जका दखन बहु पैसा
जीव अपने अज्ञान, मान बैठे हैं मिथ्या

धिर भी जका की रचनाओं में कुछ ऐसे पर मिलते हैं, जिन्हें निरिपत रूप से उनकी जाति का सूचक माना जाता है—

भवाजी की जकड़ी में आये हुए शब्द 'सोनाप' से जनश्रुति द्वारा स्वीकृत उनके सोनार होने की पुष्टि होती है।

(पर संख्या - १०, भवाजी की जकड़ी)

मिठे सोनाप चाह भंतर से

(पर ११-भवाजी की जकड़ी)

'तो बहुत जका सोनारे बकि से भी बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि जका सोनार थे। वही नहीं, उनके अन्य अनेक पदों में भी सोनार शब्द आया है। कदापि हिन्दी में 'भवाजी सोनारी का अर्थ मूर्ख' बहुत होता है पर वहाँ हम जमिया द्वारा ही जका सोनारा ग्रहण करेंगे, क्योंकि लोक-कृत निदर्शपूर्णक उनकी जाति सोनार ही बोधित करता है।

जका कर्म में पूर्ण वीतराग है। संत तो वे वे ही जकाने ऐसे किसी कारण का कहीं उल्लेख नहीं किया है जिससे संसार के प्रति उनकी उदासीनता सहसा उत्पन्न हुई हो। संसार से अनासक्ति उत्पन्न होने के अनेक कारण हो सकते हैं, परन्तु उन कारणों का आरोप तो बाध उपादान हैं,—अनुरक्ति विरक्ति का हम आध्यात्मिक प्रेरणावस्तु तत्त्व मानते हैं। जका के अतर्क में भी इस अनासक्ति का खोत छिगा हुआ रहा होगा जो बाह्य सांसारिक प्रतिकूल परिस्थितियों की खोट खाकर वह निकला।

लोकमत इसकी पुष्टि करता है। इस सम्बन्ध में भी जनश्रुति में सुरक्षित जीवन की सफलता को ग्रहण करना हमारा कर्तव्य है। जका ने अपने जनक

एवं अन्तरात्म के सम्बन्ध में भी स्वयं तो कुछ नहीं कहा है, हाँ गुजराती साहित्य के विद्वानों में उन्हें अहमदाबाद से १० मील दक्षिण जेठपुर निवासी रहिबास सोनार का पुत्र माना है। कवि की माता के कुछ विशेष लक्षणों के विशेष प्रयोग के आधार पर उनके जेठपुर के निवासी होने के लोच-विश्राम की पुष्टि कुछ विद्वानों ने की है।

अन्ना के पिता अन्ना और अन्ना की बहिन को केवल जेठपुर से अहमदाबाद को रेलसाईरोंक में आ बसे थे। उस समय अन्ना की आयु १५ वर्ष ही बतलाई जाती है। अन्ना ५ वर्ष बाद रहिबास का स्वर्णवास हो गया। उसके कुछ समय बाद अन्ना की बहिन भी वहाँ बसी। अन्ना का नाम अन्तराम और अन्तराम भी सुन्न में आता है।

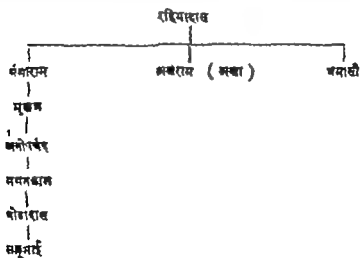
वास्तविक में ही अन्ना का विवाह होना भी माना गया है। पुनर्विवाह में पदार्पण करते करते पत्नी भी कम बची। अन्नामात्र के लिए कहा जाता है कि अन्ना ने पुनर्विवाह किया परन्तु दूसरी पत्नी भी धीरे-धीरे इहलोक छोड़कर चर गई। वह भी कहा जाता है कि अन्ना की पत्नी कलहारी थी, पर वह नहीं कहा जा सकता है कि पहली पत्नी या दूसरी।

इन घटनाओं से वह भी निश्चित होता है कि अन्ना की माता अहमदाबाद जाने से पहले ही स्वयं विचार चुकी थी। अन्ना माता, पिता, बहिन और हाँ दो पत्नियों के निधन से उनके गर्म को मर्यादित हुआ आचार्य भी उनके हृदय में कष्ट के प्रति उदासीनता उत्पन्न करने का कारण माना जा सकता है। अन्ना की दुःख से पुनर्विवाह करने पर भी अन्ना का सुंदर न चेहरे लम्बा कभी की मृत्यु हो जाने से उन्हें निश्चित रूप से निराशा हुई होगी। लेकिन केवल इन घटनाओं को ही उनके जीवन का विधान और बोधक रूप में उनका ही ठहराना एकतरफा दृष्टि नहीं मान लें। वास्तविक में ही अन्ना कभी भी प्रकृति के शक्तिशाली एवं आध्यात्मिक सारभर-संपन्न व्यक्ति रहे होंगे। उनकी लौकिक जीवन के आधारों से उनका निश्चित प्रबुद्ध हो गया। इन लौकिक जीवन में आपात कितनी नहीं लगती किन्तु अन्ना जैसे संत बन जान का लौकिक कितनों को प्राप्त होता है।

प्रायः हमें पर माँ की एक बात और मिलती है कि अन्ना का वास्तविक निराशावादी नहीं है। केवल की अनिश्चिता आदि की बात से अन्ना का

तबकान ही कोठा दिखाई पड़ता है न कि उनका पुत्रवाद। अतः निर्दिष्ट रूप से 'गाने सुने यह सम्प्रति नाहीं' कोठि के संस्थापक अथवा कभी नहीं कहे जा सकते हैं।

गुजराती के ग्रन्थिद कवि और विद्वान् श्री रामाक्षर जोशी ने लिखा है कि अहमदाबाद के आदिमानों में बौन्दुर्वाई के पैसा के पास 'कुंभाबाना बाबा' में आज भी 'अबानो ओरडो' अर्थात् अन्धा का ज़मरा कहा जाता है। (अन्धो—एक जल्पवृत्त, पृष्ठ ११)। 'अन्धा कुतः आम्हो' शाय १ पृ ३ पर हमने सम्पादक नर्मदाशंकर वैद्यकर ग्रंथों ने लिखा है 'अमराबादमा आदीमाना वैद्यार्थी पोस्वामी हजरा बा रणछोडमाळ छोटामाळ अण्णा सर बिन्दुवाई ना मखन पालेना कुंभाबाना बाबायां हर्तु। अने जे ओरडामां ते भिवास करी रझो हतो, तेने अण्णाणि अबानो ओरडो कहे छै।' वर्तमान समयमें बड़ी रहनेवाले लखवाई पोडावाल लोगर अन्ते ओ अन्धा पर बंधन बताते हुये अपनी बंधावली इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं—



अन्धो—एक जल्पवृत्त' के विद्वान् वैद्यकर भी रामाक्षर जोशीने इस बंधावली पर उचित धंका की है। उनका कहना है कि पोडवामी गोकुलनाथजी श्री मढ़ी में मङ्गल से अब तक बाहर उतरादिहायी हो गये किंतु अन्धा के भीर उनके वर्तमान बंधन सम्भूमर्त्य के बीच कैदल आर ही पीठियां व्यतीत हुई हैं। अन्धो ने गुजरी में 'गोकुलनाथ,' कह कर स्वीकार ही किया है कि उन्होंने गोकुलनाथ

चोस्वामी से सीखा भी थी। जन्मा का जन्म १९१५ ई० में तथा निधन १९७५ ई० में स्वीकार किया जाता है। जब तक जन्म किसी सन्त संघत का प्रमाण न मिले, हम इसी को सत्य मानेंगे। अतः इस विचार से आज से २८१ वर्ष पहले तक वे जीवित थे। अनेक बात का अपवाद भी होता है। अतः अक्षरार्थ का बलन यदि कोई मानना ही चाहे, तो उसे विविध अपवाद के रूप में मानने में भी कठिनाई हो सकती है।

जन्मा आदिबुद्धि से संपन्न व्यक्ति थे। उन्हें जन्मा 'बठ' भी कहा जाता था। विद्वन्मयी है कि एक महिला ने जन्मा के पास टीनटी रुपये की पाठी रखी थी। इससे भी सिद्ध होता है कि रुपये के लेनदेन का कार्य भी जन्मा करते रहे होंगे। वह महिला जन्मा की चर्ममणिनी भी थी अतः सील संश्लेषण करतबिल स्पष्ट रूप से रुपये व मणि चुनने के कारण ही रुपये जन्मा से कहा जाता कि जन्मा उसे कोई आभूषण बना दें। इससे यह भी सिद्ध होता है कि जन्मा सुनारी का काम भी करते थे। चर्ममणिनी के संश्लेष को अनुभव करके ही जैन-धर्म की बहुविधता से उत्तर उठान के लिए उन्होंने विद्वान् रुपये उक्त महिला का उनके पास था, उससे कहीं अधिक शीघ्रता का आभूषण उसे बना दिया। पर कुछ महिला जन्मा पूरी रक्म धोती है या नहीं यह जानने के लिए वह आभूषण दूसरे सोनार के पास पड़ताल के लिए के गई। बहावत है कि सोनार अपने घर से गने व्यक्ति का भी आभूषण बनात समय कुछ न कुछ माफ़ बोरी अवश्य कर देता है। परीक्षण के समय उससे भी वह आभूषण से बोझ या सोना कम मिला और बताया कि वह आभूषण को धान की अनाम बार ही रुपये स्वयं का था।

जन्मा की चर्ममणिनी ने ही वह आभूषण ले जा कर जन्मा को दिखाना था। जन्मा को उक्त बूझरे सोनार से जब वह माफ़ का पता चलता तब उन्होंने वह महिला से आभूषण मंगवा कर देका। इससे पर पता चलता कि बहुरूप कुछ भेद कहा हुआ था। जो भी है। जन्मा को इससे उक्त अवश्य पड़नी। संसार में कोई किसी का विश्वास ही नहीं करता है क्यों? क्या समाज में सब एक दूसरे के प्रति संश्लेषण ही रहते हैं? ऐसे प्रश्न उनके मन में अवश्य उठे होंगे। पूछने पर, कहा जाता है कि जारम्भ में वह महिला ने आभूषण को चूहे द्वारा कुरा मसा बताया पर स्पष्ट पूछे जाने पर उसे स्थिति के साथ सब घटना बताती पड़ी। जन्मा ने उसी दिन से अपने बने की अन्तिम नमस्कार कर लिया।

मन में शोक होने पर व्यक्ति यदि संवेग के लिए न सही, तो कुछ समय के लिए उन परिस्थितियों से अलग हो जाना ही चाहता है, जिससे उसके मनमें ठिंकाता उत्पन्न हो जाता है। सम्भवतः अपने पथ में काम करने वाले शौमारों को कुछ में फँक कर यात्रा के लिए पर्याप्त धन लेकर अपना मन में बैठ रही शोक की लहरी को शांत करने के लिए भ्रमण के लिए निकल पड़े। किसी और प्रवाग भारत के सभी भागों के निवासियों के लिए भद्रा के केन्द्र रहे हैं। अन्तर्गत भी वहीं के लिए प्रस्थान किया।

कहा जाता है, चलते चलते मार्ग में जबपुर के मोस्वामी गोकुलनाथ के मंदिर में अन्तर्गत लगे। वहाँ वैष्णवधर्मोन्मुखि विद्यालयाचार्यना के आश्रमियों को उन्होंने देखा और यथेष्ट सत्कार पाना।^१ 'गुरु कीर्ति में गोकुलनाथ' से स्पष्ट होता है कि उन्होंने वहीं उनसे सीखा भी सीखी होगी। यहाँ पर इस संबंध में पूर्व संवेग नहीं है क्योंकि कुछ विद्वानों ने यह मतना जबपुर की न मान कर गोकुल की मानी है।

गोकुलनाथ सम्बंधी एक और किंवदंती का उल्लेख करके हम इस कथन की सत्यता पर विचार करेंगे। कहा जाता है कि वहाँ से विद्या के कर अपना कभी गए। वहाँ एक दीवान की आज्ञा में छिर कर उन्होंने शांकर अद्वैत मत पर किसी संन्यासी का अवलोकन सुना। कदाचित् अनधिकारी को वैद-वैराग्य सम्बंधी ज्ञानात्मक का निवेद्य होने के कारण ही उन्हें छिपकर यह अवलोकन सुनना पड़ा होगा। कभी से शांकर अद्वैत से पूर्ण अनुमन कर छोड़ते समय मार्ग में वे फिर मोस्वामी गोकुलनाथजी के वहाँ गए। वहाँ पर यह बताया जाता है कि शांकर अद्वैत से प्रभावित हो कर अन्तर्गत पाठ के समस्त धन का परिष्कार कर दिया था। अतः जब वे मोस्वामी गोकुलनाथ के द्वार पर पहुँचे, तब विष्णुकुल मिश्रक सहज कम रहे थे। द्वारपाल ने उन्हें भीतर नहीं जाने दिया। नाम पूछने पर कम उन्होंने अपना छेठ 'बताया, तो वह किंचित विस्मित हुआ और भीतर का कर उसने सब ज्ञात बता कर उन्हें जाने देने का न देने की अनुमति माँगी। कहते हैं मोस्वामीजी ने स्वयं किसी वातावरण से जाँच कर उन्हें फाटक पर लगे देखा और पहचानने से हर्षित करके आनेकी पनाही कर दी। कहा जाता है वहाँसे अपना अहमदाबाद वापस लौट आये और वैष्णव धर्म के विशेषी हो गए।

१ गुरु कीर्ति में गोकुलनाथ, परमा बल्लभ से धारणी नाथ;
धन हरे बोधो नव हरे, वे गुरु कल्याण शुं करे।

यहाँ पर कुछ बातें निश्चित रूप से संदिग्ध हैं। जबपुर में योद्धाणाथ जी का मंदिर और गोस्वामी योद्धाणाथ जी का निवास यह दोनों बातें कभी तक प्राप्त जगन्नाथी के आधार पर असम्भव प्रमाणित होती हैं।

जी. ए. ए. मुम्बई में 'गुजरात एण्ड इस्ट इन्डिया' में लिखा है कि अन्ना छाही टकाल के प्रधान थे और किसी ने अहमदाबाद के शासक से जगन्नाथ विद्यालय की भी कि कन्होंने छाही सिक्कों में निम्नवत् की है। इस अभिलेख में उन्हें जेल में भी रखा गया था परन्तु जेल में अभिलेख प्रमाणित न होने पर उन्हें मुक्त कर दिया गया था। छूटने पर अन्ने और आर. कुर् में फँस कर वे शांति की खोज में चल दिए। मुम्बई की वे भी योद्धाणाथ गोस्वामी से अन्ना की मंड जबपुर में न जान कर जोड़न में स्वीकार की है। श्री जगन्नाथ योद्धाणाथ छद्म ने अपनी पुस्तक 'मार्क स्टीन इन गुजराती इन्डिया' के प्रथम संस्करण में जबपुर और द्वितीय संस्करण में जोड़न स्वीकार किया है। अनुपम से यही जान पड़ता है कि यदि अन्ना की मंड आचार्य बल्लभ के पीछे गोस्वामी योद्धाणाथ से हुई तो यह जोड़न में ही हुई थी।

यहाँ पर जबपुर के सम्बंध में स्वतंत्र विचार करने की आवश्यकता है क्योंकि जबपुर नगर अहिर राज्य की राजधानी के रूप में अर्धसिद्ध द्वितीय द्वारा सन १७२८ ई में बनाया गया है। पहले पहले श्री जगन्नाथ इच्छाणाथ बैसाई ने इस समय की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। इसी आधार पर चौबान जबपुर जगन्नाथ योद्धाणाथ छद्म ने अपनी पुस्तक 'मार्क-स्टीन इन गुजराती इन्डिया' के द्वितीय संस्करण में जोड़न किया और अन्ना-योद्धाणाथ मंड का स्थान जबपुर के स्थान पर जोड़न स्वीकार किया। विचार करने से जान पड़ता है कि जबपुर की स्थापना होते ही जबपुर नगर इसकी प्रकृति या क्या था कि अहिर राज्य से सम्बंधित पुराने इलाकों में भी जबपुर का ही उल्लेख किया जाने लगा। जबपुर से सम्बद्ध करके कुछ किसी संदर्भ पर बकाय माना गया था, उस पर कतिपय जगहों ने बराबर यह विचार नहीं रखा कि जबपुर की स्थापना ई. स. १७२८ की ही घटना है। यदि यह कहा जाय कि जबपुर एक आधुनिक स्थान के रूप में पहले से ही रहा होय और १७२८ ई में उसे अहिर की राजधानी बनाने के कारण प्रकृति मिली तो यह असंगत होगा क्योंकि महाराज अर्धसिद्ध द्वितीय के नाम पर ही इसका

‘जयपुर’ नामकरण दिया गया था। अतः हम कह सकते हैं कि सन् १७१८ ई. से पहले के प्रक्षेप में जहाँ कहीं भी जयपुर का उल्लेख किया गया है, वह वास्तव में जावेर के ही संदर्भ में आया है। परन्तु अन्धा से योक्तुत्वाय की ही मूर्खता को स्पष्ट ‘जयपुर’ नाम से किर्तितियों में बताया गया है, वह जावेर नहीं है। इसलिए हम लोकमत के हवाले में जयपुर को अतिशय स्वीकार करते हुए योक्तुत्वाय में ही अन्धा और गोरक्षानी योक्तुत्वाय की ही मूर्खता समझते हैं।

मर्मदासदास देवदेव देवता ने ‘गुरु कर्मा’ में योक्तुत्वाय—जयपुर मन में पाखी नाथ’ पाठे सामाजिक स्वीकार किया है। ‘अहमदाबाद पुस्तक बन्धन कारदार संस्कृत’ की ओर से सन् १८५२ ई. में प्रकाशित पुस्तक में भी यही पाठ मिलता है। प्रथम पाठ जिसमें ‘बरका बरय मे बाप्पी नाथ’ तथा ‘यन छ के मोरी नव हरे न गुरु कर्माण्डु करे’ कहा गया है, निश्चित रूप से अन्धा द्वारा रखा गया नहीं जान पड़ता। कदाचित् इसी पाठ से भ्रम में पड़कर उन्हें वैष्णव विरोधी तक स्वीकार कर लिया गया। हो सकता है, किसी वैष्णव विरोधी ने इस प्रकार की तुच्छवर्गी अन्धा के नाम से कुछ कर उसके द्वारा जयपुरा मतस्य साधा हो। इस छन्दे में अन्धा ने स्पष्ट स्वीकार दिया है कि अपने निर्दय मन का नाथ पड़ाने के लिए बर्बाद अपना संस्कार करने के लिए उन्होंने गुरु किया था। तत्कालीन समाज में गुरु करना इतना प्रचलित था कि अन्धा ‘गिरुरा’ नहीं रह सके। इसीलिए अन्धा ने योक्तुत्वाय प स्वाधी जैसे जाने मन्ने मन्ने और विद्वान् को गुरु किया, पर वह गिरुरा मन जिसका संस्कार करने के लिए ही उन्होंने ‘सगुरु बनो’ कहा है ‘गिरुरा’ का और फिर भी ‘गिरुरा’ ही रहा। यहाँ वह ज्वलना स्पष्ट है कि छन्दोमय मत की मान्यताओं और उसके विस्थापन स्वतन्त्रता के इरादे पर संकट नहीं हो सके। अन्धा की आत्मा योक्तुत्वायकी द्वारा दीक्षित वैष्णव-दीक्षा पर अविम न रह सही, जिससे अन्धा अपने मन ही पर असंतुष्ट हुए होने कि तु ‘गिरुरा’ या और गुरु करने के बाद ‘गिरुरा’ ही रहा क्योंकि उसे गुरुवचन में भ्रमा उत्पन्न नहीं हुई। संभवतः इच्छागुप्तार मन को मोचन होने की स्थिति में ही मैं करती हूँ। यहाँ लांछन अर्थात् से उनके विद्वान् मन को मोच प्राप्त हुआ। अन्धान्द को उन्होंने गुरु किया, विद्वान् ने ऐसा नहीं उभरी रचनाओं से विद्वान् है। काशी से अहमदाबाद के लिए बीटवे समय योक्तुत्वाय आकर गुरु योक्तुत्वाय से मंड करने के पहले ही सम्भव है कि गोरक्षानी की कीर्तने

बताया हो कि भवा सोनार ने जो आपस बीछा केकर तथा वा, काशीमें गझानंद
 स पुनरा बीछा ली है। यदि यह सच है कि कौड़ते समय गोकुलनाथजी ने
 भवा से मिलने से इनकार कर दिया था तो उसका कारण यह भी हो सकता है कि
 गोस्वामीजीने अनुमान लगाया हो कि भवा की बुद्धि जरिबर तथा विशुद्ध समय
 है। जिस व्यक्तिने उनसे बीछा केने के उपरांत बिना कारण बताये वा बिना
 सूचना दिये दूसरा गुह कर लिया है, उससे मिलकर समय नष्ट करना अनुचित
 समझते हुए यदि गोस्वामी बाबुलनाथ ने उन्हें पहचानने से इनकार कर दिया
 हो तो आश्चर्य की बात नहीं। संभवतः उन्हें मूलमूल कारणों का तो ज्ञान था
 नहीं। फिर भी भवा ने न तो गोस्वामी गोकुलनाथजी की बिदा की है, न
 बप्पय मठ की। अतएव वे वैष्णवधर्ममें हटकर वैद्यनाथमत के अनुयायी
 हो गए थे।

श्री नर्मदासेकर देवदेकर मेइला भवा का जीवनकाळ सन् १९१५-१९७५
 ई. मानते हैं। उनके पीछा^१ के रचना संवत् का बोधा^२ हमें बताता है कि
 इसकी रचना संवत् १७५५ वि. में हुई थी। उस समय तक भवा परिपक्वा
 वरणा को प्राप्त हो चुके थे। जीवन महानुर धी हृदयवाक सदैवी ने श्री भवा
 का जन्म ईस्वी सन् १९१५ स्वीकार किया है। श्री अम्बाकाक बुलाबीराम
 जानी ने अपनी पुस्तक भवा भक्त भवे तनी कविता^३ में भवा के 'प्राप्ति
 भव की जो वंछि की हैर उसमें ५९ की संख्या का सम्बन्ध जिस प्रकार
 मिलता है केवल ने उसे भवा के जीवन के ५९ वर्ष के संदर्भ में
 ग्रहण किया है परंतु भवा के कुटुम्बक वही में कई स्थानों पर बावन^४ शब्द
 का प्रयोग मिलता है। अतः श्री जमासेकर जोशी तथा श्री मेइला दोनों ने
 प्राप्ति भव में '५९ वर्ष आधु' जर्ज न मान कर पुनरावृत्ति के
 ५९ अक्षर^५ माना है। बावन में बुध्य जाती बरी-मन्वा गन्वाकी रही

१ संवत् सत्तर पञ्चमोत्तरो, हृदय पक्ष वैश मास।

२ बोमवार रामनवमी पूष पक्ष प्रवद्य ३

३ बावन में बुध्य जाती बरी,
 मन्वा गन्वा की रही समझी ४

४ क-बावन बाहरो है, इति नावे बाणी मास।

५ न-बावन आधरो महारनो भवा, जै ते बावनवी बरी बार।

६ य-बोमु बावन मास जै बुध्य विनाय सुये ठवों।

समझी' का अर्थ है कि इन ५२ अक्षरों के अबाध में चले हुए अपने को दीक्षित समझते बाह्य व्यक्ति ५२ अक्षरों से बाहर जा रहते हैं, उन्हें नहीं समझ सकते। अर्थात् उस परात्पर तत्त्व को अक्षर-ज्ञान द्वारा नहीं जान, अनुभूति द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है।

'अबे गीता' के रचना-सम्बन्ध को हम गलत नहीं कह सकते हैं क्योंकि सम्बत् १७०५ में वैद्य माधव कृष्ण पक्ष के सोमवार को रामनवमी तिथि पंचांग में मिलती है। परन्तु यह कहना कि वह अक्षा की प्रथम रचना है अथवा उस समय अक्षा की आयु बावन वर्ष की लग्न नहीं जान पड़ता। ही अक्षा के 'पुनरुत्पन्न जंग' में आरम्भ का एक कथन^४ और मिलता है जिसमें अक्षाने कहा है—

तिसक करता जेपन बड़ा

जय मात्मना नाकी गया।

इससे स्पष्ट बात पड़ता है कि उन्होंने अपने मोक्षनिहित कार्यकाण्डी जीवन को ईश्वरशक्ति के अनुकूल न पाकर ही कहा होगा कि तिसक जयाते माता जयते ५२ वर्ष का हो गया है, अनेक तीर्थों का भ्रमण करते करते पैर पक मरे हैं, फिर भी हरि की शरण नहीं प्राप्त हुई। इससे यह भी सिद्ध होता है कि अक्षा अपनी ५२ वर्ष की आयु तक वैष्णव महाबलम्बी थे, और इसके बाद उन्होंने अनुभव किया कि कदाचित् वह माग ईश्वरशक्ति तक उन्हें न ले जा सके। उन्होंने वैष्णवमत का विधि-विधान सहित अनुसरण किया होगा। परन्तु तीर्थ-व्रत करने के पश्चात् भी उनके बेरोगी चित्त में राग (अनुभवादि) उत्पन्न न हो सकने के कारण वे काली व्रत—निर्गुण व्रत—बल मरी। श्रीनरसिंहशरण ईश्वरशरण में आने से अनेक वर्ष 'अक्षाव्रत काम्यो, माघ १ में स्वीकार किया है कि अक्षा ने पुनरुत्पन्न जंग की रचना 'अबे गीता' से पहले की थी, क्योंकि 'पुनरुत्पन्न जंग' काष्ठपत्रों में 'महाभारत' का उल्लेख नहीं मिलता है। इस हिसाब से उन्होंने माना है कि यदि 'अबे गीता' इससे तीन-चार वर्ष बाद की रचना हो तो उसका जन्म समय लगभग सं. १६४६ के आता है अर्थात् ईस्वी सन् १५९३ का लगभग १६००। टीपण बहादुर श्रीकृष्णदास शर्मा द्वारा मान्य अक्षा का जन्म है सन् १६१५ है।

४ तिसक करता जेपन बड़ा, जय मात्मना नाकी गया।

तिरब फरी फरी बाधा बर्ब, तो जे न पहुँच्या हरि के राज ॥

'अकेलीता' की रचना मन्ना ने काशी के विद्याप ब्रह्मानन्द से दीक्षित होने के बाद की है। नीचे करते करते पेर बघ लेने पर भी जब हरि की चरण की। श्री परमेश्वर देवदेव मेहता के कनानागुहार इस ग्रंथ के संस्कारण में मन्ना ने एतेय द्वारा अपने गुरु 'ब्रह्मानन्द' का उल्लेख किया है। इससे पहले अपने 'सुदृढ ज्ञान' के ज्यों में उन्होंने 'ब्रह्मानन्द' शब्द का प्रयोग नहीं किया है। 'अकेलीता' की रचना के बाद के वर्षों में 'ब्रह्मानन्द' का बारम्बार प्रयोग इस बात को सिद्ध करता है कि अपने जीवन के उत्तर काल में ही उन्होंने ब्रह्मानन्द को गुरु किया होगा। संपूर्ण ज्यों के आचार पर मन्ना के जन्म के सम्बन्ध में कोई निश्चित सन्-सम्बन्ध बताना कठिन है, अतएव यह प्रसङ्ग है कि ई. सन् १९०० के आसपास ही इनका जन्म हुआ।

मन्ना की जीवनी में ब्रह्मानन्द के शिष्य बनने की कहानी बड़ी मनोरेजक है। मणिर्षिका बाट पर काशी में आज भी छात्र-सम्प्राधियों की लम्बी-काशी सीढ़ मिल ही देखने में आती है। उस समय की नदी बहा थी। मन्ना ने अनेक छात्र-संगों की बाल-रज लेकर उनकी सेवा की पर उन्होंने देखा कि वे सब भी निरांत सांसारिक लोचों की तरह ईर्ष्या और माया की शिष्टा में डूबे हुए हैं। मन्ना को उनमें किसी से भी सौंप नहीं पाया हुआ उन्हें उनमें से कोई भी ऐसा नहीं मिला जिससे वे संतुष्ट हो सकते। एक दिन बाट से कुछ दूर एक सामान्य सोरही में मन्ना ने एक संन्यासी को एक ही शिष्य को वह मनोबोध्यपूर्ण वैराग्य-दर्शन समझाते देखा। ही शिष्य को शिक्षण देने में तन-मन से जुट रहा है। छिप कर मन्ना ने बड़े सुनना और उस संन्यासी की शिक्षण-प्रवृत्ति पर सुन्य होकर शिष्य निश्चित रूप से सुनना अपना कार्यकर्म बना लिया। होता वह था कि सम्प्राधी ब्रह्मानन्द रहता। एक दिन कदाचित् आत्मवचन शिष्य को नींद की छाड़ी जा गई, तब अपने शयन पर बैठे बैठे बाहर से ही मन्ना हुंकारी मारने लगे। बोली के बाद वैराग्य से दूर रह स्थायी ब्रह्मानन्द का ध्यान इस दूरत ही-ही पर गया, तो शिष्य को डेढ़े नींद दिसा-मिशा का सुख डेढ़े देखा। अपने परोक्ष

भोटा के संबंध में जानने की विज्ञानायता ने बाहर निकले। भद्रासु भक्ता से वही सगरी मेंद हुई, और तबक विद्या-अपसम से पूर्णतया संतुष्ट होकर स्वामी की भक्ता को विभिन्न रूप अपना सिध्य बना लिया। इस प्रकार हठाल या संयोगवशात् भक्ता स्वामी मध्दानंद के सिध्य बने। श्रीकृष्णभक्त मोहनसाह सदैवी ने 'माइन-स्टोन्स इन गुजराती लिटरेचर' के पृष्ठ ७६-७७ पर इस पद्धति की बर्णना की है। श्रीराम बहादुर मर्मदासीकर देवरीकर मेड़ता ने भी 'महाकृत काव्या भाग १' के पृष्ठ १५ पर भक्ता द्वारा दिए गए एक वर्ष तक मध्दानंद के सगरे सामुद्रिक पाल करते रहने की बात लिखी है। मध्दानंद के गुहक संबंध में कोई विशेष जानकारी मिलना कठिन है क्योंकि संस्थापकों में यह नाम विशेष प्रचलित है। अतः भक्ता के गुहक 'मध्दानंदी' के कर्ता मध्दानंद ने का और कोई, यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। श्री मेड़ता ने लिखा है कि ई. सन् १९०० में मधुसूदन सरस्वती के प्रसंग पर मध्दानंद ने टीका लिखी थी। सम्भव है, वही मध्दानंद भक्ता के गुहक रहे हों। मध्दानंद के संबंध में श्री मेड़ता ने खोज की है कि उनके चार मध्दानंदी सिध्य थे। —

मध्दानंद

बूढ़ाजी

गोपाल

भक्ताजी

मरहरिदासजी

१. बूढ़ा के पुत्रपर पर ही नाम-तन मिले हैं। उनका भिन्ना कोई प्रकीर्ण प्रेम अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है।

२. गोपाल सूरत के निवासी थे। सन् १९०५ ई० में उनके द्वारा मध्दानंद ने 'गोपाल गीता' नाम की रचना का सम्बन्ध लिखना है।

३. मरहरिदासजी नाम के एक गुजरात के कवि का सम्बन्ध प्राप्त होता है किन्तु गुजराती भाषा में 'श्रीमद्भगवद्गीता' का सुन्दर आवागतर किया है। 'मरहरि गीता', 'वसिष्ठ सार', 'अष्ट मेवरी' और 'अष्टव घोरी संवाद' नामक रचनाएँ मरहरिदासजी की मानी गई हैं।

४. भक्ताका गुहक मध्दानंद स्वामी बने भागे वैदिकीया गुहक भक्ता करती भक्ता बने हुए इरवणा भाषाण काठिया नहि सम्मेलन अधिकारी बनेने प्रकाश विधान। उपरोक्त भाषी कृतार्थ करणारा होता। महाकृत काव्यो, भाग १, पृ. १६।

२, ३ वही पृष्ठ १०।

भी ही व सर्वदासेकर है, मेरुता के अनुसार भवा की सम्प्रदाय-परम्परा
 इस प्रकार है—१ प्रमार्जक, २ भवा ३ काकवाच, ४ हरिहृत्, ५
 बीतासुति गाराज ६ कनकवाच, ७ स्वायी पूर्णानन्द, ८ एवानन्द,
 ९ भगवानजी महाराज। यहाँ पर बुद्धजी, गोपाल तथा नरहरिवाच की
 से संबंधित काल्प्य हुआ देना आवश्यक है। बुद्धजी की जमी तक पूरी
 कोरे रचना प्राप्त नहीं हो सकी है, किन्तु उन्हें अपने को प्रमार्जक का
 विषय कहा है। गोपाल ने 'लोवाकसीता' में, कहा है—

एतत्तु स्वामी की सोमराज, कृपा करी हनुं सब काज।
 राजसंशुत एवं केरी दवा, एवं सबक सब गहि कहा ॥

इससे स्पष्ट है कि उनके गुह का नाम स्वामी श्रीगोपाल का। नरहरि
 के संबंध में भी सर्वदासेकर सेवसेकर जी मेरुता ने कहाकुल काव्यों भाग १,
 पृष्ठ १० में 'नरहरिजी' की एक संक्ति कथित की है— श्रीगुह प्रसन्न वैराज्य
 प्रसाद थाको नरहरिसे संवाद-परमेश्वर इस उद्धार में उपर्युक्त 'प्रसा' से
 प्रमार्जक का कार्य अलग उन्हें विवरण नहीं समझा है। गुप्तराज के प्रति-
 भिन्न उद्धारको कोड़ी तथा भी के का बाकी से इन कार्यों एवं-
 कविता का समझातीन हुआ स्वीकार किया है। परंतु इससे इस निष्कर्ष पर
 पहुँचना कि वे चारों एक ही गुह प्रमार्जक के सिद्ध हैं, उन्हें मान्य नहीं है।
 जब प्रश्न यह उठता है कि भवा द्वारा प्रयुक्त शब्द 'प्रमार्जक' उनके
 गुह भव में प्रयुक्त हुआ है वा उसका कार्य अतिवा में ही विचारणीय है।
 यदि योजकभाय के लिए भवा स्पष्ट करने में किन सबसे हैं कि उन्हें गुह
 दिया था तो उनके बाद किन गुह के मत से वे एकतरा संतुष्ट हुए,
 उनका उद्देश्य उन्हें क्यों नहीं किया? प्रत्यक्षता के लिये मैं भवा ने
 कहा है—

बहुकाल-हूँ रोतो रंघी जमी जवानक हरि प्रसन्न मनो,
 कहे; वर वीतर लीको नाम, त्वार पड़ी उंचरी मुख नाम।
 इससे पहले के लया में उन्होंने गुह करी में 'गोपुत्रभाय' कहा है।
 देखा है कि पहले बाद का विवरण 'बहुकाल हूँ रोतो रंघी' के लया में भवा ने

१ अकाशत काव्यों भाग १, पृष्ठ १०।

२ भवा 'एक अर्चयन, पृष्ठ १० केन्द्र-की देवदीक्ष जोड़ी।

३ पहले काव्य कीने भाग २, पृष्ठ १०२।

४ अकाली वाली, भाग १ तो, पृष्ठ २०, संख्या १९८।

बात एक ही विनियोग में 'बही' गई है, इसलिए इसका भावार्थ यह निश्चय है कि भक्ता की अंतरात्मा में जो भी, जहाँ भी अन्त-प्रमाणों से हरि-मिलन की साथ कसक रही थी। गोस्वामी गोकुलनाथ को गुरु करने पर भी 'मगुरा' मन मगुरा ही रहा। अचानक एक दिन उनके समक्ष हरि का रूप प्रकट हो गया। आश्चर्य नहीं बात यदि कोई सुझाव करता कि अचानक एक दिन दुर्दैव का पड़ा उठ गया। इसका इस तरह भी समझा जा सकता है कि भक्ता का अन्तरात्मा ईश्वर प्रेम में विरहानुभूति था। गोस्वामी गोकुलनाथ को गुरु बनाने पर भी हरि की प्रतीति नहीं हुई—विरह बढ़ता ही रहा कि अचानक एक दिन अन्त आनन्द उन्हें उस परात्परतत्त्व का साक्षात्कार हो गया जिसके लिए वे व्याकुल थे। उसके आगे भक्ता कहने हैं—

परात्पर ब्रह्म परमेश्वर भया, गुण दोषो ते हिमना भया,
जै गर मे आत्मा गुरु परो, कह्युं अचानु ते प्रीतिसे ॥

इससे वह भी सिद्ध किया जा सकता है कि उन्होंने अन्तर्लोकस्था अपने आत्मा को ही अपना गुरु स्वीकार किया है। आत्मानुभूति द्वारा ही उन्हें ब्रह्मानन्द की प्राप्ति हुई। ब्रह्मानन्द के सम्बन्ध में उन्होंने स्वयं ही कह दिया है कि इसको नहीं समझ सकता है, जिसने इसका अनुभव किया है। वही है 'कबीर का अनुभवसाक्षात् परम' जिसे आत्मा को गुरु करने के बाद भक्ता ने इन शब्दों में व्यक्त किया है। आत्मा की प्रतीति को 'समी' शब्दों ने एकमत से स्वीकार किया है, समी ने इसे ही ब्रह्मणन्द माना है। आत्मानुभूति के द्वारा ही कबीर ब्रह्म का साक्षात्कार करता है। अतएव विद्वानों का यह कहना है कि गोस्वामी गोकुलनाथ के मत से संतुष्ट हो 'समने' की स्थिति में भक्ता ने अवश्य किसी दूसरे व्यक्ति को गुरु किया हो होगा, समीचीन नहीं। उपर्युक्त छप्पा के उदाहरण से यह सिद्ध करना कठिन नहीं है कि गोकुलनाथ गोस्वामी के बाद उन्होंने किसी को गुरु किया ही नहीं आत्मानुभूति में ही। उनको सच्चा मार्ग दिख गया। बात स्पष्ट करने के लिए यहाँ हम वे छप्पे 'अच्छानी बानी' भाग १ के प्रथम अध्याय से उद्धृत कर रहे हैं—

कहे भक्तो हुं 'पुन' य रद्वो, हरिने किये मम आचर्यो
पयां हृदय कर्मा में बाध, तोव न भागी मननी दास,
बरधन बेस मोई बी रयो, पछे गुरु करवाने गोकुल पयो ॥ १६६ ॥

गुरु कर्मा में जोकुलनाथ, गुरुरा मगये बाकी नाम-
 मय मगारी छपुते यबो, पय विचार गुरुरानो गपुरो रबो-
 विचार कहे पाप्मो छै भका, कम्मकम्मनो मया छै सखा? ॥ १६० ॥
 गुरु काळ हूँ रोतो रबो आरी अचलक हरि प्रगट बवो,
 मय महापुम्नो बोबो आप, जिनो न बावे बवे उपाय-
 अजे सर अतर भीबो जाय, त्वार पछी कम्पुी मुख नाम ॥ १६१ ॥
 परस्पर प्रया वरगट यया, गुन बोबो ते दिनना गया
 अच्युत नाम्नायु मे भेबाय कम्पु न बावे अको अजाय;

मे करने आया गुरु बोले, कपुं अजालुं से प्रीछमे ॥ १६२ ॥
 इस प्रमाण से स्पष्ट ही कुछ विचार एकदम समझ हो जाते हैं। एक तो यह
 कि जोकुल जाकर वही गोरवादी जोकुलनाथ को भका से गुरु किया था। दूसरे
 यह कि उसके बाद से आत्म-प्रतीति होने तक भका से कोई दूसरा गुरु नहीं
 किया। इससे यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि 'अकेलीता' की रचना से
 पहले की रचनाओं—छप्पा पुटकल अल—में 'अपार्नद' छप्प का प्रयोग न होने
 का क्या कारण है? अतः 'अकेलीता' जगवा उसके बाद की रचनाओं में
 प्रयुक्त 'अपार्नद' छप्प से स्वामी अपार्नद के विषय होने का अद्वयन समाना
 कीवनी के एक समूह अन्वय पर प्रकाश आकर है। इस प्रसंग में एक बात
 और कहनी बाकी है। यह यह कि भका से अपनी रचनाओं में कहीं कहीं
 का उल्लेख नहीं किया है। 'गुरु करवाये जोकुल बवो' और गुरु कर्मा में
 'जोकुलनाथ' भका से साफ कहा है, तो क्या कारण है कि कहीं भका ने
 बाकी और अपार्नद का वही नाम तक नहीं किया है इसी संदर्भ में अच्युत
 नाम्नायु मे भेबाय—कम्पु न बावे अको अजाय' से बात और साफ हो जाती
 है। भका बतौर किसी स्वरिवाच के पुत्रवत्पुत्र कहते हैं कि मैं अज्ञानी हूँ
 पर चरितचर्य नहीं करता हूँ—अर्थात् किसी दूसरे की बताई हुई बातें
 नहीं यह रहा हूँ। इससे सिद्ध होता है कि वह संकेत गुरु की ओर ही
 है अर्थात् किसी गुरु से कुछ सुन-गुना कर कहने नहीं कहा है।
 'अनधिया' शब्द में भी भका ने कहा है 'ना मोधि अययन अजाय अजाय, ना
 मोही मीत्र गुरु नहि बैरा' (१७) जिसका अर्थ हो सकता है कि कोई तीर्थ

गुरु उन्होंने नहीं किया है। 'अस्त्रगीता' के प्रारम्भ की पंक्ति 'अथ विष्णवे
स्तुतिं कर्त्तुं, विद्वांसि ब्रह्मानन्दम्' में ब्रह्मानन्द का अर्थ गुरु ब्रह्मावै भी हो
सकता है और ब्रह्मानन्दरूप तत्त्व भी। अज्ञानी बाणी, भाग १ के पृष्ठ १७६
पर 'अज्ञाना पद' संख्या ३ की प्रथम पंक्ति 'गुरुमा गुरु मन्मारे, जेवा धृत
भिरंजन देव' का यदि सही व्यास से अर्थ करें तो अज्ञा के गुरु का नाम
भिरंजनदेव भी सिद्ध किया जा सकता है। फिर गुरु के संबंध में अज्ञा ने (पद
संख्या १ में) कहा है—'तं गुरु सेविमे दे, जेधु मूल तोल न पाय'। इस
पंक्ति से यह सहज ही सिद्ध हो सकता है कि यहाँ अज्ञाविष भारमा को ही
गुरु मानने की राय दी गई है। इससे स्पष्ट है कि 'ब्रह्मानन्द' से काशी के स्वामी
ब्रह्मानन्द का अभिप्राय अवश्य नहीं है।

फिर भी अज्ञा की बाणी में बाँकर अद्वैत के सिद्धांतों का ऐसा ब्रह्मगुरु
और प्रामाणिक प्रतिपादन किया गया है कि यह किसी आप्त भोक्त से ही प्राप्त
किया हुआ प्रतीत होता है। यदि अज्ञा इतने सिद्धित नहीं थे कि उन्होंने
अद्वैत वेदान्त के बाँकर ग्रंथों को पढ़कर यह ज्ञान प्राप्त किया हो, तो उन्होंने
किसी गुरु से ही यह सब पाया होगा। वे गुरु ब्रह्मावै से अथवा कोई अन्य
यह अद्वैत समस्या समाधान की अपेक्षा रखती है। यदि अज्ञा ने 'मा मोहि
मंत्र गुरु ना केरा' लिखा है, तो उन्होंने कतिपय साधकों में आध्यात्मिक
सिद्धि के लिए गुरु का होना अभिप्राय भी बताया है—

अज्ञा गुरु कृपा बिना एके करे हरि नो जास ।
गिने सुखो कहे कये, ज्यू का स्यू पाव कगस ॥
देहराही दुनिया अज्ञा, और अस्तमहराही कोय ।
बाको मैन सद्गुरु बिष, ताको आत्मदर्शन होय ॥
जीव सकल पध्दर अज्ञा, सद्गुरु करे ताहे देव ।
सो ही जगज में पूजिये, वे सद्गुरु का सेव ॥

इसके अतिरिक्त भारतीय परम्परा में मन्माद, राम और भगवान् कृष्ण
जैसे पुरुषोत्तमों के लिए भी गुरु द्वारा दीक्षित होना अभिप्राय संस्कार मान्य
गया है। फिर अज्ञा को ही 'ब्रह्मा' अथवा 'कनो माना ज्ञाय' अज्ञा की
बिष प्रकार की सधियोंके आधार पर यह सिद्ध किया जाता है कि अंतर्लोक

यहाँ रगड़ ही भीषणतम लड़नी-झगड़ना भयवान् कृष्ण और महाप्रभु ब्रह्मभार्या दोनों का बाणक है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने इसी शैली में मानस में अगम गुह मन्दिरिदास के प्रति प्रशंति समर्पित की है—

बड़ीं गुहगर खंड कृपाविधु नरकव हरि ।

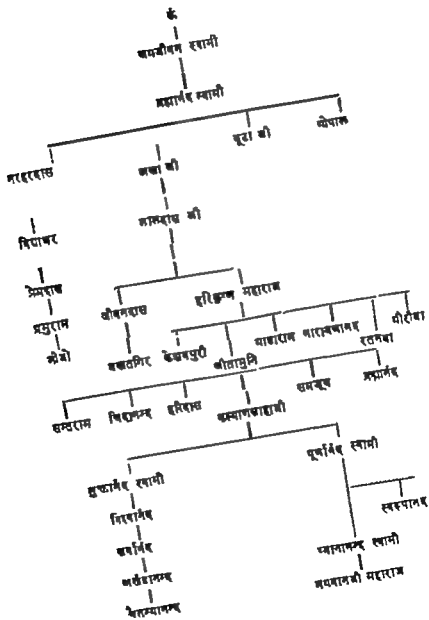
महामोद तमपुंज आमु बचन, रविकर निकर ॥

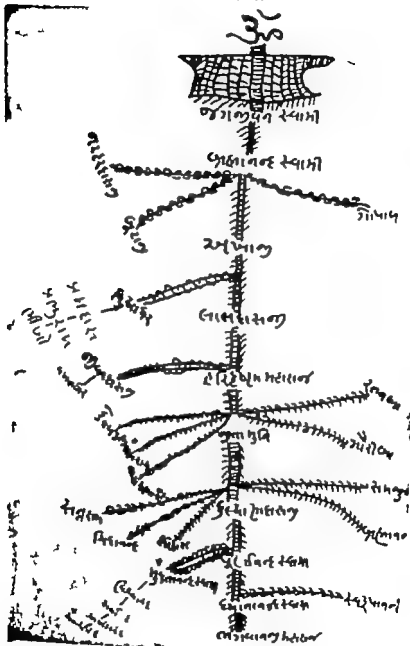
यदि अन्धा द्वारा प्रमुक्त 'ब्रह्मानंद' पर इसी परंपरा के अनुसार महात्सव एवं स्वामी ब्रह्मानंद दोनों का, बोधके मान लिया जाय, तो इस अद्विज समस्या का ऐसा समाधान मिल जाता है जो 'ब्रह्मानंद' के भिन्न भिन्न अर्थ धारैवान् दोनों पक्षों के लिए समाधानकारक हो सकता है।

अन्धा-संबंधी शोध-कार्य करते हुए इस संबंध में एक नवीन तथ्य अवगत हुआ है जो अन्धा के गुह की समस्या पर नवीन दृष्टि से विचार करने की मुमकिन प्रस्तुत करता है। बड़ीदा विश्वविद्यालय के गुहराती विभाग के विद्वान् प्राध्यापक डॉ॰ योगेन्द्र जगन्नाथ द्विपाठी जी ने मुझे अपने मसहसी पिता वत्तप्रवर छापर महाराज जी की कुछ महत्त्वपूर्ण काबरेयों और नोटबुके कृपापूर्वक दिखाई हैं। एक नोटबुक में एक पृष्ठ पर सायर महाराज ने अन्धा की गुह एवं शिष्य-परम्परा का बंधन, अपने हाथ से बनाया है और दूसरे पृष्ठ पर अंग्रेजी में इस परंपरा के प्रमुख संतों के विषय में अपनी जानकारी को सूक्ष्म में अंकित किया है। सायर महाराज के इन नोटबुके का मूल आधार क्या है वह स्पष्ट नहीं है। यहाँ उनकी प्रतिनिधि और प्रतिच्छिन्ने (कोटो) दोनों ही दी जा रही हैं—

३२

कर्मिक ६





ॐ

Jagwan Swami, whereabouts not
known, lived at Benaras

Brahmanand Swami - Do -

Akhayi, Golconda, Tulpur & Khindat

Laldas, Chhapra, Bihar, Kipur in
Uttar Pradesh state

Vidyaadhar, Nagar Brahmin (Lunavada)

Jivandas, Khadayat, Bara of
Khampur in Lunavada, his Samadhi near
Shivnagar - Lunavada State

Harikrishna Das, Nagar Varnagiri &
Lakha Patels (Joh), Ahmedabad

Ratanbhai, his daughter

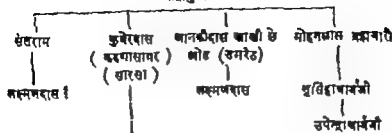
Jeta Mun, Bara of Nadiad, his
Samadhi at Kitteran near Surat

Kalyandas, Patidar of Tinel in
Cambay State, his Samadhi
near Kahanva (7 Cambay)

कर्मिक २



जीतामुनि



कर्मिक ३

Jagjivan Swami, whereabouts not known, lived at Benaras

Brahmanand Swami— —do

Akhaji, Goldsmith, Jetalpur (Ahmedabad)

Laldasji, Chhipa Bhavsar, Virpur in Vadasinor State

Vidyadhar Nagir Brahmin (Lunavada)

Jivandasji, Khadayata Bania of Khanpur in Lunavada,
his Samadhi near Shimalia in
Lunavada State

Harikrishna Dave, Nagir Visnagra, Lakha Patel's
pole, Ahmedabad.

Ratanbai, his daughter

Jits Muni Barot of Nadiad, his Samadhi at Utran,
near Surat.

Kalyandasji, Patidar of Uncl in Cambay State; his
Samadhi near Kahanva (T Jambusar)

सामर महाराज की इन सामग्री में अन्धा की मुख-परम्परा अयशीवन स्वामी से आरंभ हुई गान्धी गई है। अयशीवन स्वामी को अन्धा के लोकप्रसिद्ध मुख प्रमाणों का मुख माना जाता है। उनके जीवन में अंग्रेजी में यह शिक्षा पप्पा है कि वे नगरस में रहते थे पर उनके विषय में इससे अधिक ज्ञात नहीं है। यदि अयशीवन स्वामी का व्यक्तिगत और रिपब्लिक स्वतंत्र हो जाय तो संभव है अन्धा के मुख की समस्या का अधिक निश्चयपूर्ण समाधान हो सके।

हिंदी साहित्य के इतिहास में अयशीवनदास नाम के तीन ६तों का उल्लेख मिलता है। वे तीनों अयशीवनदास तीन निम्न-निम्न संश्रुतों के थे अयशीवनदास प्रथम दार्पणी थे अयशीवनदास द्वितीय निर्दली नगरस के प्रमुख बरह बरारकी में थे किन्तु निर्दली मईत की संस्था प्राप्त है। अयशीवनदास तृतीय सतनामी संश्रुत के आधार थे। अयशीवनदास निर्दली के विषय में जो बात मिलता है उससे यह अनुमान होता है कि वे वा तो अन्धा के समसामयिक होने अथवा उनके कुछ ही आगे होते हुए होंगे। सतनामी संश्रुत के आधार अयशीवनदास अन्धा के परवर्ती थे क्योंकि उनका जन्म सं० १७२७ या १७२९ माना गया है^१, जबकि अन्धा का जन्म १६४९ के आसपास माना जाता है। अब केस दार्पणी अयशीवनदास रहे आते हैं। कातक्य की दृष्टि से विचार किया जाय तो उन अयशीवनदास अन्धा के मुख प्रमाणों का मुख होना सर्वसम्भव नहीं कहा जा सकता। वे अयशीवनदास दारु के दिव्य बताये आते हैं। दारु के जीवनकाल के विषय में प्राम सही विज्ञान एक मत है। वे सुबल सम्राट् अकबर के समकालीन थे और उनके जन्म फासुव गुरी २ बुरस्तिकार सं० १६६० मान्य है। इस प्रकार दारु का जन्म अन्धा से लगभग पचास वर्ष पूर्व पड़ता है। अयशीवन के विषय में दारु के जो विवरण उपलब्ध हैं उनके यह प्रतीत होता है कि आयु में वा तो वे अपने मुख के समकालीन होने अथवा अधिक से अधिक कुछ ही कमिष्ठ। इसलिए इनका समय में अन्धा के जीवन वर्ष पूर्व माना जा सकता है। उनके वाक्यांशों होने के भी प्रमाण मिलते हैं और इस अवधि में प्रमाणों के नाम के उनके कई दिव्य बहो रहे हों, तो इसे सर्वसम्भव नहीं कहा जा सकता। आधार परमाणु चतुर्वेदी ने इनके विषय में लिखा है— '६त दारु दवाओं के प्रसिद्ध विद्वानों में

जगजीवन का भी नाम लिया जाता है जो एक महान् पंडित थे । ये काशी में बहुत दिनों तक रह कर जन्ममरण कर चुके थे और वहाँ से ईश्वरान्त बसे जाते थे । उन्होंने आशिर में आकर बाबूदास को साक्षात् के सिध्द सख्यकरा था, किंतु उनके रंगीर एवं निर्मल स्वभाव के सामने इनके पाण्डित्य की एक न बली और अंत में ये इनके सिध्द हो गये । इनका पोशाक सरल ही (सीसा) में है और इनकी रचनाएँ भी बहुत हैं । ” जगज्जीवी जी ने यह भी बताया है कि बाबू के प्रसिद्ध विद्वान् शिष्य सुंदरदास अपने गुरु के बेदासदानके पश्चात् इन्हीं के पास रह कर ‘गुरुवानी’ को समझते और कटस्थ करते थे ।^१ उन्होंने लिखा है—‘गुरु-वाक्मियों के समझने में इन्होंने राजजगजी एवं जगजीवनजी से विशेष सहायता भी ली ।’^२ जगजीवनजी ने काशी में सुंदरदास के दर्शन और शास्त्र के पहले अध्ययन की संज्ञा पित्ता- सीसा की व्यवस्था भी की थी ।^३ राधोदास ने अपनी ‘अष्टमांक’ में बाबूदास के बाबल शिष्यों की जो सूची दी है, उसमें भी इन जगजीवन का नाम है^४

जगजीवन, जगनाथ, सीम गोपाल बपानू ।

मटीबजन, दूजन पडसी, कैमल द्वैजानू ॥

माधवसुदास, नामर, निजाम मन राधो बधि कइत ।

दादुजी के वेब में ये बाबल शिष्य मईत ॥ ६२ ॥

आचार्य प्रवर क्षितिमोहन सेन ने भी अपने प्रसिद्ध रचना ग्रंथ ‘बाबू’ में इन जगजीवन की बर्णना की है^५ । उन्होंने बताया है कि बाबू जोशी में रहते थे और जगजीवन सीमा के पास टहलती में । इस प्रकार बुर होते ॥१॥ भी गुरु बाबू अपने शिष्य जगजीवन की सहायता किया करते थे । इस प्रबंध की एक छापी मिलती है—

१ बही पृष्ठ ४१३ ।

२ बही, पृष्ठ ४२७-४२८ ।

३ बही पृष्ठ ४२८ ।

४ बही, पृष्ठ ४२८ ।

५ बही, पृष्ठ ४२१ ।

६ बाबू पृष्ठ ९१ ९२ ।

अपजीवनही बड़लही आनी ने गुदरेव ।

साही समय साखी लिखी अपजीवन प्रति मेव त

कहा जाता है बाबू ने इनको यह साखी लिखकर सेबी जी—

बाबू सहमे मेला होवणा हम तुम हरी के दास ।

अंतरंगिणी ठी मिलि रहे कबि परगट परकास ॥

अर्थात् उसमें सहज मिलन होना हम तुम सब सब हरी के दास हैं ।
जब अंतर की प्रभु से पुच्छ रखा जाय, तो वह प्रकाश प्रकाश प्रकाश होता है ।
अपजीवन अपने साक्षात्कार के अभिमान से आकांक्षित थे । आचार्य श्रुतिमोहन
सेन ने यह बोला भी उद्धरण किया है जिसमें यह बताया गया है कि अंत
जीवन अपनी विद्या और साक्षात्कार के अभिमान से लगे हुए बाबू के पास
पहुँचे किंतु उनका एकही पद सुनकर वे उनके विषय-विराग हो गये—

अपजीवनजी बैल लहि जाये बरखा बाज ।

गुन बाबू बहु पद कही, सब तबि तिन विरदाज ॥

बताया जाता है कि इस बोले में जिस पद का संकेत है, वह बाबू के
बदों में राय रामचन्द्र सेन १९८ है । इसका संशोधन है :—

‘ हे वैदित, जिससे राम मिले, वही को । पैर पुरान पद पद कर नवा
विपुला के केर में बड़े हो । जिस से जातोग्य प्राप्त हो, वह जीवन करो । जिस
समय प्राणों को प्रभु का स्पर्श प्राप्त होता है, उस समय बरख तुम मिलता
है और संसार के बंधन तुम काते हैं । इन्द्रियों की अपार अग्नि से सरीर
जलता रहता है, जिस सदानंद से तन-मन जीतल होता है वही जल में
डूबना चाहिए । वह पद मुझे बताया जो जिस से पार कतरा जा सके । वह
विचार करो, जिस से भूल कर भी पग जाय पर न जाय और कर्म-द्वार
बंद न थिरे । गुन अपरेख के मंत्र-मन्त्रों की हाथ में लो, जिस से अनकार
रु हो जाय और सब कुछ पैदा जा सके । बाबू कहते हैं वही वैदित है
और वही ज्ञाता है जो यह जानता है कि राम कैसे मिलेगे । ”

शोध की वर्तमान स्थिति में अपने पास अनुमान ही एक मात्र साधन
है । अनुमान की पुष्टि के लिए ब्रह्मानंद और अपजीवन संबंधी तथ्यों

का अधिक अन्वेषण और उपलब्धि वांछनीय है । अक्षा का संन्य काशी के ब्रह्मार्णव और उनके गुरु बाबू के शिष्य जगजीवन के साथ जोड़ने में किसी प्रकार की बाधा असेव्य नहीं दिखाई पड़ती । अक्षा की अप्रतिष्ठा दिदी रचना ज्ञानमार्गी निर्गुमिवा संतो की तरह असेव्य है । इस दृष्टि से वे सीधे ज्योति और बाबू आदि किसी संतो की परम्परा के साथ जुड़े हुए हैं । उन्हें इस परंपरा के साथ जोड़नेवाला कोई सूत्र होना तो अनिवार्य ही है, और यह सूत्र यदि बाबू के शिष्य और ब्रह्मार्णव के शिष्य, गुरु जगजीवन ही हो, तो इसे किसी प्रकार से अस्वाभाविक या असेव्य नहीं कहा जा सकता । मैं इस के पूर्ण सत्य होने का दावा नहीं करता केवल सागर महाराज द्वारा प्रस्तुत तथ्यों के अन्वेषण और परीक्षण का ही आग्रह रखता हूँ । सागर महाराज की छोटी क सब सत माय सब प्रकार के पूर्वाग्रहों से मुक्त होते हैं इस लिए उनके द्वारा प्रस्तुत तथ्य धर्मपर अन्वेषण की अपेक्षा रखते हैं । सागर महाराज को जगजीवनवाला सूत्र नहीं प्रोत्ति हुआ, यह बात स्पष्ट नहीं हो सकी है, पर यह अनुमान किया जा सकता है कि उन्होंने उसे अक्षा की संत-परंपरा में ही ढूँढी पाया होगा ।

इतना ही नहीं सागरात्मक ग्रंथमाता पुण्य ६ के रूप में 'सागर ती विचारणा' नाम की जो पुस्तिकायें प्रकाशित हुई हैं उनके दुर्गोदाक के आरंभिक पृष्ठ पर ही सागर महाराज ने इस विषय पर एक नया ही प्रकाश डाला है ।

26-8-11

18-8 14

Karachi Sind.

Amongst Gujarati Bhaktas Narayana Pranam Akha and Mirabai and many others are realised souls They have reached the Goal through the Path of Devotion. Akha received the following Mantra from his Guru Brahmananda

गुरुगती भक्तोमा नरसिंह प्रीतम, जको, मीराबाई अने अना जनेक आत्मानो छे । आ बचाने पोतानुं लक्ष्मिबिंदु भक्तिना मागची छिद कर्तुं छे ।

जबाने देना गुरुदेव गद्गार्नर पाछेकी नीचेनी मंत्र मन्त्रो—^१

ॐ नमः गद्ग, गिराकार राम,

काना काकी, हरेये हलम

उयोतिस्वरुष जायधकान, लखगिरिजन राम

विमुक्तन्यापी, गारुड राम, तन निवेधीमा ग्हातु

“ सोहं गद्गयी सयातु, ” ॐ ।

To contemplate upon this Mantra every moment.
This was the commandment of the Revered Guru.
Akha's Gurubhakti is also unparalleled in his times

ॐ नमः

लखार, ॐ नमः

प्रत्येक पक्षे का ज यन्त्रनु पाल करतु के प्रमानी जयना गुरुदेव नी जेमने
मन्त्र हती।^२

जबानी गुरुमणि एक जेना समबमी अवस्थित हती ।^३

इस देन में विचारनीय बात यह है कि यह देन कम-साधारण
की लोकपाल की माया में है संस्कृत में नहीं । यदि यह सत्य हो कि नहीं
देन जका को अपने गुरु से मिले वा तो यह विषयही काकीय परंपरा
का मंत्र नहीं है । इस का संभव कम सेसों की परम्परा से ही होना चाहिए
किन्तु नि मुंदाकारित है कृपकल माया कहता गौर^४ बोधित किया वा । यदि
यह ठीक है तो जका की गुरु-परंपरा का अवशीजन बसे रिती धत के
साथ युक्त होना अवश्यन नहीं मान्य माना चाहिए ।

प्रत्येक संत की प्रणालिका में कुछ ऐसे सत्य और सत्य गुणस्तिन रहते हैं, जो
मोक्षनीय माने जाते हैं और सर्वसाधारण की आवश्यकता के लिए अवस्थित वा

१ गुरुरानी लखामे गरसिद्ध, गीतम जका, गीतवाई और ऐसे दूसरे
अन्य मुक्त जगमा हैं । इन सबने आपना अवन बिंदु भक्ति के मार्ग से सिद्ध
किया है ।

२ जका की उनके गुरुदेव गद्गार्नर से निम्नलिखित मंत्र दिया वा —

प्रत्येक पक्ष हकी कम का पाल करना यह उनको उनके गुरुदेव की
भासा थी । जका की गुरुमणि भी उनके समय में अवस्थित थी ।

प्रचारित करने कोय नहीं समझे जाते। तब यह है, सागर महाराज द्वारा प्रस्तुत इतिहासिक तथ्य हरी बोरे के हों और वे उन्हें बका की शिष्य परंपरा के अंतर्गत देखने से बचसकें हुए हों। गुजरात के अक्षर पाठके में कदाचित् बका नामक संस्कृत के साधुओं का एक व्यंजन है। महा के साधु भी बका की शिष्य-परंपरा में हैं। बका की शिष्य परंपरा का जो अक्षरवत् पीछे दिया गया है, उस में अंतिम अक्षरानुसारी महाराज है। अक्षरानुसारी महाराज सागर महाराज के परम शिष्य थे। अक्षरानुसारी महाराजने 'संतो की बानी' की प्रस्तावना में बताया है कि उनके आश्रम में बहुत से संत महाराजों की बानी का अवशिष्ट अक्षर-संसार संवित और सुश्रुत है। सागर महाराजने इस आश्रम के प्राचीन बानी-भंडार का अनुसंधान और अक्षरानुसारी महाराज के सहयोग से किया था। 'संतो की बानी' का उपोद्घात भी उन्होंने ही लिखा है। इस लिए यह समझ है कि सागर महाराजको बका की अंतर्गत साधना परंपरा के कुछ ऐसे तथ्यों की जानकारी रही हो जो कुछ साहित्यिक व्यक्तियों और अनुसंधानियों से दूर गये हों।

बका का प्रभाव गुजरात के व्यापारिक क्षेत्रों में बहुत व्यापक है। मेरा अनुमान है महाकाल प्राप्त कर काशी से लौट आने के बाद बका ने गुजरात छोड़ कर बाहर जाया नहीं की। यदि उन्होंने ऐसा किया होता तो कभी भी तरह उनका प्रभावक्षेत्र भी भारतव्यापी होता। उनके प्रभाव का गुजरात तक सीमित रह जाने का एक कारण उनकी बानी का अवशिष्ट और अक्षरानुसारी रह जाना भी प्रतीत होता है। यदि वह बानी प्रकाश में आई होती, तो संपूर्ण देश में साहित्यिक और व्यापारिक क्षेत्रों में उसे कवर की बानी से कम अपर न मिलता।

बका की शिष्य-परंपरा में बहुत सारे बोरे के आचार्य भक्त और संत हो गये हैं। उनके दो प्रसिद्ध शिष्यों के नाम हैं कालदास और विद्याधर। कदाचित् बका के संतों की परंपरा कालदास से जारी है और विद्याधर से एक पूरा शाखा फूटी है। कालदास परमार्थ कहलाते थे और अवशुत बोरे के महार्थ संत थे, उनकी रचनायें आराधिका सम्प्रदाय के योग्य मानी जाती हैं। कुछ लोग उन्हें महात्मा कबीर का अवतार मानते हैं। कालदासजी के दो शिष्य थे इंदुप्रिय और अक्षरानुसारी और महात्मा इंदुप्रिय के शिष्य थे

परमईस जीता मुनि जिनकी संपूर्ण जानी बेदांत की सातवीं मूर्धिका का अनुभव
 स्वयं करनेवाली और अनेक देश की असी राह सङ्घातित करनेवाली मानी
 जाती है। महारामा हरिकृष्ण की शिष्याओं में परमईस मराठी रतनबाई और
 परमईस माठाजी घोरियाई नाम की दो महान् साधिवों की थीं। इन दोनों
 साधिवों ने भी अपने मकानों में जीता मुनि का सत्केर किया है, और जीता
 मुनिने अपने मकानों में इन दोनों साधिवों का। इनकी एक भारती प्रसिद्ध है
 जिस में जका की के गुरु ब्रह्मानंद रवासी का स्पष्ट सत्केर है—

सद्गुरु की ए सानसा समवाप्सु सुख अपार
 ब्रह्मानंदरवासी अनुमध्या है।

मुझे मारुं मे ब्रह्माकार—
 हरि गुरुदेवनी भारती।

महाशुभाब की ए महेर कटी, समवासी सर्वे रीत
 आपत स्वप्न प्रपुष्टि है, मुझे मारुं मे गुर्वातीत—
 हरि गुरुदेव नी भारती।

सद्गुरु सोमा की वहुं मुझे बर्बरी नव आव,
 हरिहर ब्रह्मा रक्षति करे है तोय अमरतीत सोहाय—
 हरि गुरुदेवनी भारती।

अकेपणु अविबोझुं है, सद्गुरु किरि बोझ
 अतरवामी आत्मा है हरि विभरवा पोतावी भाव—
 प्रभु विभरवा पोतानी मोत्र—
 हरि गुरुदेवनी भारती।

भारति उताई म्हाण हरिगुरु संत जसका सर्व भंद,
 योगाक्षी न संय—
 हरि गुरुदेवनी भारती।

भारती कटी ने केडे बारबा चरं अवच, मनन, निज म्यान,
 सद्गुरु जी मे धीम सोपता है, म्हाईं कही गर्नु देहाभिमान
 म्हाईं मटी गर्नु देहाभिमान—
 हरि गुरुदेवनी भारती।

(संतोनी बाबा सयोरवात, पृ० १४-१५)

कहा जाता है, गुजरात के सुल्तान मुकपफर शाह के शासनकाल में कुछ राजकीय सम्चारियों ने परमईश महात्मा रतनबाई के मजबूत-कौशल में विष्णु वासना आरंभ किया। जब यह समाचार बीतामुनि को मिला, तो उन्होंने सुल्तान को एक पत्र लिखा। उसका शिखा हुआ यह पत्र 'काफर बोब' के नाम से प्रसिद्ध है। यह काहीबोबी हिंदी में है, उसको यहाँ पूरा पूरा उद्धृत किया जा रहा है—

‘काफर बोब

हरि। मैं काहसाह ह’ सम्मसाह।

कै मुस्तक तो भरिबल है, कर्ण तो काया है, येन तो नबी है, नाक तो कबर है मुक्त तो मक्का है, हाथ हजरत है, अकल तो पीर है, मन तो मुरीद है, तन तो कर्दि है, अरबा तो हराम है, कूट तो दोनक है, सत् तो बेहिस्त है।”

‘नामो। मार। बोशबरका करो विचार। कीन बोकिए काफर? कीन बोकिए मुरीद? काफर को कुमाराग करे, अक्साह कुरा का कर ना परे केमहेर बेनीट, निवेध कलमा पढ़े, अक्सा कलमा ओतेरा बोके केर महेर का किस्सा ना काहे बाबा के नाम पर बाटे ना खागा तिसहु केसे काहीये मुसलमाना? मुसलमान मुसावे जाप, सत्, अजुटी, कलमा पाक। पही ना खेडे, काही ना काय का मुसलमान। बाबा अन्ध पीर कहे, बोसक छोड बेहिस्तको जान। बाबा आदम, बीबी हुवा, मकके मराने कहता तथा, पइली रोटी कुकीरको रवा, न केवे रोटी तो तुड़ काय तथा देखी बाबा आदमकी हुवा।”

“हिन्दु दूरक कुराके बगडे। हम कभीर किसी को न करे कपडे। हमको अनेक तरबद, अनेक साका पेसी रौपी अफम अगोवर काहेवने परमावा। नही कंवर, नही पप्पर। नही मस्किब, नही मिनारा। नही टाकेक देवाल पर बडे—नही बुमिसे ईद बेमकी। के पागीकी पणदाहा बनी काहमकी करणी अिनका बनी डोरका डोर। बाबा अन्ध पीर कहे, परकत ये है परपेसी का विभाव।”

“जान्से मक्की पही नही पादशाह अस्तुल होव ये मक्की मे बिनाक्या पादशाह का खाना। कहा कहे पादशाहका ताना।। मक्की बीबी मेकधर। काबी मुस्का करो विचार। हे दिख देवा। हे दिख मैया। हे दिख नाक मल्लेवा। मादरके पेदमें मेहेममव हुवा, तब बाबा रतन हाजीने मुरस्त कलमा पढ़े।”

'खर। मुसफर। खर हिल खाजिने। उरस बुदस्त कीजे सराबा।
रहेमत पीर मुरिदको अहेमत पापी सोयको। म्यारा निरन्तर। मीटर बेकीम।

हिन दोस्त किम्मा कहीने ? और मेहेम्मद कीन कोहमाये ? फिरकी राह
बेहिस्तकी। फिरकी बताये। राह बाहु दो बर बैत। उसी दस दरबाबा।
सबसे मुम्मा सबसे बर कुराना ये पापी की पैदाश क्या इन्दु क्या मुसलमान।
पीर फिरका अकम्मन् है मुरिद बुदस्त प्याना सग मी सोहा बलखम है
आदम दे हम कुबत है, ये बार बार बाजीने। इबादी कहर तकत गहाई।
कीन बार बंदीकाने। कीन बार माही ? कीन बार सेहेन केके कीन पादशाह ?
तन बार बंदीकाने मन बार माही दिह गार सेहेन केके, मान बार पादशाह।
हम शाह तन शाह मन शाह शाह पास्तारन। सगी काह अरमान काह हम सगी,
हम ही खाकी हम ही काक। तन काल मन काम, तन पोस्तारन कमी
कम अरमान काह हम ही कमी, हम ही काल।

अता काफरबाघ बाबा रतनहाजी ने पहले मेहेम्मद पादशाहको बताये,
बारा बरस केके होही बाध बेमल मटकये, नब बाबा रतनहाजी ने अहमम
कहेमाये।

खाली

हिन्दु भाये बहेरा, मुसलमान प्याये मरिबद
फकीर वहां प्याये वहां दानुकी परलीत।
आसा किन्की नब बरे, कहे रखे रिबर
मुनि मिता तब आनिये ताबा कोही फकीर। "

—सम्राज्ञी बार्न १४ २० १।

जीतामुनि क हिन्दु ये परमईश महात्मा। बरबाबरत हिन्दुके बमस्तारी
की अनेक बहानियाँ बहोश के आसपास के सेठे में प्रचलित हैं। बतावा
जाता है कि ये परम अवधूत ये और इन्होंने कीर्तित ही समाधि के ली थी।
इनकी समाधि आज भी वही अन्दाजे पूरी जाती है। महात्मा कल्याणरावजी
की बाणी का कुछ अंश हिंदी में भी है। उनकी अवधूत दया का अर्थक दूध
छंद वही दिया जा रहा है—

बोलू आगी अगम सु मसम बहाय अग,
 मामा के लिये रग मटवत मयत है ।
 दिग्गज सुनि ओय, साधु सत बनु सोन
 तामे बच्यो नाही कोय, मोहनी स्वरूप है ।
 त्यागी सब माया को लागी केह रामनाम,
 प्रमना जयत मायी कल्याण की कइत है ।
 धृष्टी माया मे सब जय जूतवियो
 जूते बिग रह्यो एक ऐसो भवजुत है ।

इत्येति भी अन्तमे शुद्ध जीतासुनि की तरह काकर बोध लिखा है ।
 इसका जो अर्थ मिले देखा है, वह खड़ीबोली हिंदी में है । वा उदाहरण
 प्रस्तुत है—

पाक बेदार निम्में पगे,
 और सब छोड़ दो । सही साचा ।
 महत कल्याण सर्वेस सुनिना के बीच,
 पाक है नाम और सब काचा ।

x x x

बोल हत्याज होया तेरा अहान में ?
 पेदा कुजबसे प्रीत नाही ।
 बिना सुखिब सब अहान जाती खरी
 बोन मुकाम रहो बोन छाही ?
 बिना माकम कबो अहान हरियान बीच,
 कीम से ठीर यो पहोज जाई ।
 महत कल्याण सर्वेस सुनिना के बीच,
 दिऊ में समझ कर, दिऊर माइ ।

कल्याणदासजी के परमज् इस परंपरा में स्वामी पूजनिब स्वामी प्यामनब
 और भगवान्जी महाराज हुए । ये सभी परमज् कोटि के सत माने जात हैं ।
 भक्ता और कल्याणदास के बीच लगातार एक ही पैरुह बर्ष का व्यवधान पड़ता
 है उसी प्रकार कल्याणदास को हुए लगभग एक ही पैरुह बर्ष हो गये हैं ।

‘संतोनी वाली’ की भूमिका में जका भी की उपर्युक्त शिष्य-परंपरा का रिल्लूत विवेचन करने के पश्चात् खान महाराज अंत में लिखते हैं—

‘ये सब महात्मा आचार्य नहीं हैं—अकाजी का कोई गुण नहीं था। जल-वाहरी किसी के गुण नहीं, हरिश्चन्द्र महाराज और जीतामुनि नारायण ऐसे ही कमलदासजी भी किसी के गुण नहीं, हाजी किसी का गुण नहीं होता। अकाजी का कोई पंथ नहीं उसी तरह कमलदासजी का भी कोई पंथ नहीं उसी प्रकार समयानजी महाराज भी कोई पंथ नहीं चलाते। अकाजी की शिष्य-प्रचारिका का कार्य वह नहीं कि वह कोई पंथ है। फिर अकाजी की भीमन् संक्राणन के कंधादेठ से केहर परम गुण भव्यात् दत्त की नीता और ‘बागबाहिष्ठ’ में निश्चित अकाशवाद के सुर्वातीय स्वागुमन तक का एक अकाजी नाम काही किसी का गुण नहीं होता, जो उसे पूजना चाहे वह सबे ही पूजे। तात्पर्य यह कि हाजी अरिज खान का गुण है।

....
परमईस महात्मा अकाजी की प्रचारिका पंथ अपना मार्ग नहीं है वह अपरिमित पंथ अर्थात् अपरिमित जगत् मंडल विसा है या अकाजी मार्ग है। वारन जो परमईस होता है वह बीकासी नहीं होता मन्ने कपडे से नहीं होता फिर परंत आनंद जबवा सरस्वती जैसे नाम वारन करने की आवश्यकता इन महात्मजों को नहीं होती। जो अकाजी है वह अकाजी ही रहता है और जो कमलदासजी है वह कमलदासजी ही रहता है। परमईस तो इनकी आंतर भूमिका की स्थिति है बीका नहीं। राम और खान इन दोनों का खान नहीं जकासी अपरिमित पंथ का सुख लुप्त है। बागबाहिष्ठ और मनीनाल वह अनुमन ही इनका अकाजी घर है। इसमें एहरम जबवा विरक्त का कोई आग्रह नहीं है। कुछ के तो अनेकामिक भेद होते हैं।

(‘संतोनी वाली’ उपोद्घात, अनुसूचक पृ० १२-११)

जका की शिष्य-परंपरा में जियो को भी वैराग्यज्ञान का अधिकारी माना गया है। परमईस माताजी रतनाबाई और परमईस माताजी भीरीबाई का इस प्रचारिका में जो महत्त्वपूर्ण स्थान है हमसे वह स्वबंदिष्ठ है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने मध्यकालीन सत्तों और मन्त्रों की दो भूमियों में बाँटा है। उनका कहना है 'मन्त्रों में उत्तरभारत के दो भेदों के मन्त्रों में दो रूप प्रकट किए। आ मन्त्र वैसी आतियों से आये थे उनमें उसने जो रूप प्रकट किया, वह परंपरा प्रचलित विद्वानों के प्रति सतत तोष और आक्रामक रूप में नहीं प्रकट हुई जिस आक्रामक रूप में वह उन मन्त्रों में प्रकट हुई जो समाज की निचली भेदी की आतियों के अन्तर से आये थे। प्रथमभेदी के मन्त्रों ने समाज में प्रचलित शास्त्रीय आचार-विचार अथ उपवास सैन्य-नीति की मर्यादा को स्वीकार कर लिया। उनका अंतर्गत दूसरी भेदी के मन्त्रों के अंतर्गत से निकलकर निचला था। वे सामाजिक व्यवस्था से असंतुष्ट नहीं थे। वे लोगों के भोक्तरक मध्यमस्तुत आचरण से असंतुष्ट थे। सुति और धुत-परम्परा में आनेवाले धर्मग्रन्थों को कर्म-मर्क-के नियमन के लिये उन्होंने अविश्वसनीय प्रमाण के रूप में स्वीकार किया। दूसरी ओर निचली भेदी से आने हुए मन्त्रों में सामाजिक व्यवस्था के प्रति भी सतत असंतोष का भाव स्पष्ट होता है। यद्यपि उनमें भी वैयक्तिक साधु-बुद्धि पर कम और नहीं दिया गया।' १ अब पता यह है कि अन्तर्गत इन मन्त्रों में कहीं रखा जाय।

मध्यकालीन विज्ञान के विकास में, अन्तर्गत मन्त्रों से और न निचला वे आतियों के सुचारु से और उनका मरिचक प्रभावों की परंपरा के पैतृक पक्षपात और वैयक्तिक वर्ग की नैतिक दुर्बलताओं में मुख्य था। वे व्यावहारिक मन्त्रों को दृष्टि में रखकर सोचने चाहते थे। अब उनके पास विचार होता था, वह वे अपने विचारों के लिए उपयुक्त मन्त्रों का विचार कर ही लेते थे। व्यावहारिक दर्शन उनका मार्ग था और मानव आत्मा के लिए निश्चिततम स्वर्ग का अनुसंधान करना ही इस स्वर्गकार के जीवन की सर्वमासी महत्वाकांक्षा थी। वे अपने परिवार की एक एक बस्तु को देखते हैं, और उसे अजीब-बुद्धि का सुविचार कर अस्वीकार करते और गह कर देते हैं। अंतर्गत उन्हें वांछित दर्शन में अपना असीम स्वर्ग प्राप्त होता है और इससे

१ मध्यकालीन धर्मग्रन्थमा पृ० ८७-८८।

२ स्वामिनीय पोस्टेडस आफ गुजरात, पृ० २६।

वे मानवपूर्वक मनमाने आसूषणों की सृष्टि करते हैं और इसी से वे अपने दर्शन का निर्माण करते हैं। चाहे वे जैसे करें चाहे निर्माण, उनमें अपनी भरती के बहमूल अवबिद्वाओं से मुक्ति पाने की असाधारण समता है। ब्रह्मन्त की ओर रचना उन्होंने की है वह उनके द्वारा आदृष्ट भोटा मंडली के सर्वथा उपयुक्त की। उनकी यह भिमिति व्युत्पत्तिबन्ध है। उनकी सबसे बड़ी नीतिबद्धता उनकी अंतःसात्मिक विचारधारा में है। उनमें ऐसा शक्तितानी बावैदाव्य है, जिससे वे बड़े सरस और सारपूर्ण स्वंग की सृष्टि कर सकत हैं। उनके प्रहार मवानक होते हैं, और फिर पर ठीक जगह छोटी चोट करते हैं। इसके लिए वे नयी नयी कथावतों और सूत्रों की सृष्टि करते हैं जो भित्तान्त नीतिक हाठे हैं और स्वराष्ट्र के जनजीवन के अंतर्निहित सचिदाभी भाशों का प्रिय लगते हैं। ऐक्यविचार की अनेकानेक उक्तियों की तरह वे मोक्षमार्ग में अस्केन प्रकाशित हो गये हैं।

अबका सोचार वे। अतएव उनकी जातियों से भाये मयों से मार्गार्थ इजाजिबदार दिक्की की का अमिश्रण यदि केवल सामान और सन्निह हो तो अका उस भेना में नहीं जात। यदि इसी निचकी भेना से भाये हुए मयों का संकट करीर, दाद कारि की ओर है, जो जुलाहा और धुमिवा जैसी हीन मानी जानेवाली जातियों के वे, या अका इस भेनी में भी नहीं दखे का सकत। सोनाटों की जाति हीन नहीं मानी जाती, वे बनिद्वर्ग के समकक्ष समझे जात हैं। फिर भी उनकी बाणी में सामाजिक व्यवस्था और उठकी दृष्टियों और प्रचलित अवबिद्वाओं के प्रति ऐसा ही अर्धतोष और वैसी ही तीव्र आक्रामकता मिलती है, जैसी करीर की बाणी में पायी जाती है। इसलिये संतो की बाणी में सामाजिक व्यवस्था के प्रति जो अर्धतोष और आक्रामकता मिलती है, उसे प्रत्येक व्यवस्था में उनकी जाति से संवाद करना बहुत सचित नहीं प्रग्रेष्ठ होता। नत बही होता है, जो सत्य वा साक्षात्कार कर करता है। अतएव ऐसे संत की बाणी में यदि जाति अथवा अन्य किसी प्रकार का पसपात पाया जाय तो इसे उसकी अपूर्वता ही कहा जायगा। मेरा विचार है, सामाजिक व्यवस्था में पाये जाने वाले वैषम्य सम्बाध और अभीष्टत्व के प्रति अर्धतोष और आश्रेष्ठ सभी संतों और मयों में है चाहे वे किसी मानी जाने वाली जातियों के हो अथवा निचकी भनी से भाये हुए हो। अतः केवल इतना है कि वे संत चिन्तित और विद्वान् हैं, उनका अर्धतोष और आक्राम

अनेछाकृत होम्स बाणी में अभिव्यक्त हुआ है और जो अविशिष्ट है उसकी बाणी में बहुत और अंतर्गतता अधिक है। इस प्रकार दोनों भेदों के स्रोतों में जो भेद दिखाई पड़ता है, वह ऐसी मात्रा का है। ईनी जाति के लोके जानेवाले शास्त्रज्ञान-पथ स्रोतों में सामाजिक अभ्यास की न उपेक्षा की और न उसे क्षमा किया। सामाजिक अभ्यास के प्रति उनकी विचारधारा में भी कम असह्यता नहीं है, पर उनकी दृष्टि अधिक स्वतन्त्र है। वे समाज-समस्या पर ऐसे अविशेषपूर्ण प्रहार नहीं करते, जो विदेशियों और विपक्षियों से आकांक्षित समाज में अन्याय और भ्रातृहत्या उत्पन्न करें तथा अस्मिता की वजह से। गोस्वामी जी ने लिखा है, बिना विवेक उत्पन्न किए हुए विद्या व्यर्थ है— विद्या विनु विवेक उपवास।” तथाकथित जैनों जाति-भेद के स्रोतों में सामाजिक अभ्यास के प्रति अतिशय आक्रोश है उनका विवेक भी उतना ही आपत है। इसलिए उनकी बाणी में होम्सता है जोकसंघर्ष उसकी कलीटी है, वह सुरसरि के समान सब के हित को दृष्टि में रखकर आबिभूत होती है। तात्पर्य यह कि जाति के पूर्वाग्रह का उत्पन्न इस भेदों के स्रोत में नहीं है। वे इस दृष्टि से ऊपर उठ गये हैं इसीलिए संत हैं। जाति-प्राप्ति का विरोध करीर आदि संत भी इसलिए करते थे कि उन्हें वे बचन पारमार्थिक दृष्टि में निवार और मिथ्या प्रतीत होने थे। उनके विरोध का कारण यह नहीं है कि वे नीची जाति में उत्पन्न हुए थे इसलिए उनमें एक प्रकार की ईर्ष्या थी, जो उनकी अंतर्गत विचारधारा में अतिरिक्त हुई है। यदि ऐसा मान लिया जाय तो संत की महिमा का पड़ा भारी आघात लग सकता है। ऊपर बताया जा चुका है अन्धध बाणी में करीर से कम बहुत अस्मिता या अंतर्गतता नहीं है। गुजरात में उनकी बाणी ‘आकाश अर्थात् पाशुक का करवा करी जाती है। पर वे करीर की तरह किसी नीची जाति में उत्पन्न संत नहीं थे। तात्पर्य यह कि संत की दृष्टि तारिख होती है वैयक्तिक दृष्टि अथवा ऐतिहासिक नहीं।

वैदितवर गोवर्धनराम त्रिपाठी के अनुसार अन्ध की बाणी के दो पक्ष हैं — एक अंतर्गत और दूसरा स्वतन्त्र। ऊपर बताया जा चुका है कि गोवर्धनराम त्रिपाठी बाणी के अंतर्गत पक्ष को ही उनकी सबसे बड़ी माहिती मानते हैं। अतः तक उनकी गुजराती बाणी का संबंध है, यह मान्यता सत्य हो सकती है। पर अन्ध की हिंदी बाणी में अंतर्गत विचारधारा है

मगदम पर वह उतनी प्रखर, उतनी प्रगल्भ उतनी बलवत् और उतनी प्रमुख नहीं है जिसकी वह उतनी गुबगुबी बाणी में है। अन्धा की हिंदी बाणी में उतनी रचनात्मक प्रवृत्ति ही अपेक्षाकृत अधिक अभिव्यक्त हुई है।

अर्थात्क हिंदी बाणी का संकेत है अन्धा की संसारमय कड़ी जानेबाली विचारधारा में वेदागत-वर्तमान से पृथीत रचनात्मक तरंग बराबर मिलते हैं। वे धर्म के लिए धर्म नहीं करते, अस्तित्व धर्म करने योग्य अस्तित्व अधिप और अर्थ के अस्तित्व पर उनके ऊपर के सत्य किम और धर्म के प्रतीक्षा करना चाहते हैं। वे कुछ आलोचना का निर्दय प्रहार इसलिये नहीं करते कि उन्हें किसी मत या सहाय से विरोध है। वे तत्त्वमाही हैं आत्मदर्शी हैं, इसीलिए वे कहते हैं—

ना कई पूजा न तीर्थ गहरी,
ना मैं प्याली के प्यास समाई
ना मैं ज्ञानी के ज्ञान विचारें

*
ना मेरे पास, पुण्य ना धर्म,
ना मैं जीर्ण, ना मैं हार्न।

इन शब्दों में न विधि है और न श्रेष्ठ। इनमें उस साधक का सद्भाव स्वर झूठ रहा है जो इति-आत्म, अन्ते-बुद्धि, दित-अदित निरा-सृष्टि के मन्वीर्य से निकल कर परमात्म-तत्त्व के साथ एकता हो गया है जो 'वीतराग होत हुए भी सहज अनुरागी है। उसी अवस्था को अवलोकन, 'महत्त्व'—'आशीर्वाद' अथवा 'सुखीति' आदि अनेक नामों से अभिविष्ट किया गया है। वह अवस्था जीवन्मुक्त का सहज लक्षण है। अतएव, जब भी वह कहते हैं वे तीर्थमय कर प्यास, पूजा-पाठ नहीं करते तो इसका वह अर्थ नहीं कि वे इन्हें धर्म पाणित करते हैं। उनका धर्म का आशय यह है कि धर्म अथवा साधनों का या परमात्म है वह उन्होंने प्राप्त कर लिया है। अपने जीवनमार्ग में उपलब्धि के सम्पन्न में मरकर अश्रुमि कहा है—

अलख दिव को बकीया है— (भी अन्धा की भी बकीया)
सुरिजन सब टीहा पूरा है ()
अन्ध केबारा नाम हमारा — ()
सहज सहज साधन पर आया। ()
पूरन जोस बसा का देखे ()

अन्धा के अनुसार इस तत्व को अनुभव करने की शक्ति है, रूप भरपी होता। 'संतप्रिया' ग्रन्थ में उन्होंने कहा है—

रूप भरपी से नरा, अनुमे अकल भरप ।

परम प्रेम-विमोह होकर कर्ममार्तकार-ज्ञानविहीन अन्धा ने उस अकल भरप अनिर्वर्णनीय सत्ता का साक्षात्कार किया है जो 'अवाक्यमनसोऽप्यधोवर' है। इस देश में इसी को काम्य का महान्तम स्रोत माना गया है, क्योंकि इस स्रोत से प्रादुर्भूत काम्य शास्त्रतत्त्व तत्त्व और विरक्तान्तिक ज्ञेय से संश्लिष्ट रहता है। इसी स्रोत से विस्तृष्टित रूप में अन्धा को कवि बना दिया है, वै स्वयम्भू कवि हो गये हैं, कविर्मनीषी बन गये हैं। इसीलिए उनकी बाणी लोक की उमटी चाक हैल कर जितनी कटु हो गई है, उतनी ही वह लोकमंगल की भावनासे श्रोतश्रोत भी है—

रे मन राम हूँ न पेहेचान्यो कोन तुनी दसो को रे गुमानी ।
ओर के नीर लू बन ओवन, ज्यों बन में बिहारी मुसुखानी ।
ताही में मोटी तू मोहके प्राणी छे के संत बहगुरु ज्ञानी ।
हंस कता गुन देवे अको कहे, न्यारा करे गुन रहे पानी को पानी ।

अन्धा कहते हैं, वैदशास्त्र, विविध ऐश्वर्य-मोष, तपस्या और प्रयाचन आदि सब मन के रिझाने वा बहकाने के उपकरण मात्र हैं, तत्त्व तो केवल मनातीत है जो मन को मिटा कर ही मिल सकता है—

मन रीझावन केर विषा सब
मन रीझावन बीरह विषा री,
मन रीझावन पाठ परैवर
मन रीझावन महल अटारी ।
मन रीझावन हो ताप तपे सब,
मन रीझावन होय प्रयाचारी ।
मन के येहि मनातीत पाने,
सोसो गुरु केहे मन कल न्यारी ।

जिसने इस 'मनातीत' के अर्थ की विधि नहीं जानी, उसे बड़ा तारना भी चाहे तो कैसे तारे—

जब केहे तारे सब को छोड़ा जग को मगन की जाय न जानी ।
मनालील राम की प्राप्ति के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा मन है । वह मन ही
जग को ममता के बंधन में बाँधता है और ज्ञान-म्याल को ध्वस्त कर
देता है—

जहा ग्वाल मध्यो ममता नहीं छूरी
जहा ज्ञान कप्यो निहा मुख बाग़ी ।

जहा ज्ञान कप्यो मस जसु काप्यो
जहा ज्ञान कप्यो ममता भई गायी ।

जहा ज्ञान कबा पीछे फिरी पावर,
पाव्यो ईश्वर कटुता बहु बादी ।

ज्ञान की ओर मज्जन जसो करे,
जाव मयो मयो भूत मराही न

मन का स्वभाव ही है विषम-मृच्छ रहना पर विषयों से मन कभी तुष्ट नहीं
हो सकता । कदाचित् मे अपने पुत्र का जीवन कैहर हुआँ कर्ष तक देव-दुःख
सुखों का भोग किया और अंत में उन्हें बड़ी कहना परा कि यदि इस
संसार के समस्त भोगावरण एक ही व्यक्ति को अनेककाल तक निरस्त रहे
तो भी उसकी तुष्टि नहीं हो सकती । मन की तुष्ट्या कभी जीर्ण नहीं होती,
वह विषयों के सेवन से बराबर उसी प्रकार बढ़ती जाती है जिस प्रकार धुन की
आहुति देने से अग्नि प्रज्वालित होती है—

यत् पुष्यन्ता श्रीहिवर्षे हिरण्यं पश्यतः क्षिय ।
न बुद्धान्ति भवःप्रति पुंसा कामावतस्य से ॥

न जातु कामः कामानामुपमगेल शाम्भति ।
हरिषा कृष्णवर्धेय यस्य एवाभिषयते ॥

श्रीमद्भागवत ९ । १९ । ११-१४ ।

ठीक ऐसी ही बात जहा मे बही है—

बहुत जसो केती बहुत कीव कथय की बात ।
कोटि कल्प तो जो जिवत, तो हू विषे न जपत न

विषमभारान्न रहने से तृप्ति संभव नहीं, तृप्ति का एक ही अमोघ साधन है और वह है ईश्वरपरायणता—

चेति कर्म छिन्न मा बहे, एही ममु को मर्म ।

अर्थात् यह नहीं कहते कि सब मोक्ष सिर मुका कर सम्पादी बन कर 'मनालील प्रभु' को पाने का प्रयत्न करें । उसके अनुसार आनन्दमयि होने से 'बत' होता है, और बत होने से 'विद' मिल जाता है—

भावना केर परत विव ज्ञान के भाव जेको रूप ठेसो तेरो हे ।
 जो तुज भाव मने सिव रूप तुम्ही कछुवर को भाव करयो हे ।
 मानत है आपा नर साधा मृत मनिष्य सत्य तो हुं करो हे ।
 कहत जसो सस्य भाव निरुपय कर बेल करयो हे तो विद केरो हे ।

बत होने का मर्म है हानोदय होना । हानोदय होने से 'चेतन निधि' प्राप्त होती है, जिसके समक्ष सब मोक्ष नीरस हो जाते हैं—

ज्ञान की योग्य ब्रह्म पर लीके को लोकन की बक बोलत न आवै ।
 तुलन की छत्र पाव न दूरे विम सत्ता ज्यों बाव होजावे ।
 ईश जगदा कुं हो रोक से देखत, जोरन की कहो कोल चर्यावे ।
 चेतन नीध के भोगी अज्ञा, कहा स्वान भ्रमल भोग कुं आवै ॥

चेतन-निधि भोगी अज्ञा जिस ज्ञान की गोद में चढ़ने की बात करते हैं वह पंडितान्न ज्ञान नहीं है, वह एक ही साध आचरण ज्ञान है अर्थात् है मोक्ष है और तत्त्वज्ञान की अस्मादुपमिति है । इसीलिए वे कहते हैं, कि जहाँ पंडितों, साधकों, कर्मकाण्डियों, उपनिषदों आदि के पाँव नहीं टिकते, वहाँ की जागा उभरने की है—

मंत कहा कोई मंत्र कहा पार्वक कहा कोऊ कहा मिथारी ।
 सत्रन कहा बुरीजन कहा बार कहा कोई कहा मन्त्रकारी ।
 कोऊ के पाव लिके नहीं ताही जाय बीनी अके लु पयारी ।
 विनु किरी केसो तिहु तेसे जायो, बहोत रीते लु विचार विचारी ॥

अभीर ने भी इसी प्रकार एक हत्ता के आत्मविश्वास के साथ कहा था—

हूँ जौड़ि ब्रह्म पन्ना, किया मुक्ति लखनान ।

मुनिजन महल न पावई, तहां किया विहराम ।

अपने संभव में अन्धा ने कहा है कि न तो मैं किसी का गुद हूँ और न कोई मेरा चेला है। उपासना मेरे लिए वाणिज्य-व्यापार का साधन नहीं है। न तो मुझे रस-रसामन का ज्ञान है और न मैं गुद का भंडन ही होता हूँ। मुझे कोई आशय नहीं है, इसलिए मैं ज्ञान की भाषा बोलना अर्थात् ठगुरमुठ्ठी करना भी नहीं चाहता। हठयोग के उपासक नहीं हूँ, मैं तो सहजमार्ग का साधक हूँ—

न मोही ज्ञानक व्यापार उपासन, ना मोहि नम गुद नहि पैरा ।

ना मोही रस रसामन आसत ना मोहका भंडन देख देरा ।

लखन्य ज्ञान की वाणी न बोझैं मैं हूँत हठारा के होत ममेरा ।

देही रस की वास्य पगी नुं जया की हठ परत नाही सेजनी मेरा ॥

अन्धा ने यह शब्द संकेत किया है कि उनके हृदय में ऐसे ज्ञान के आध्यात्मिक उपासना की जीविका का साधन बनाये हुए थे। गुद लोभ संत देकर पैसा बनाने का बंधा लगाने हुए थे। ऐसे ज्ञान भी वास्तव में झूठे थे जो रसामन आदि का प्रयोग देकर जनता को ठगते थे। गुदका भंडन देकर अपने को शिष्ट करनेवाले बौद्धों की अप्यास के क्षेत्र में घेरा बांधे पड़े थे। बागीरों की तरह हठयोग की कठोरता दिखानेवाले भी बहुवचन थे। अन्धा को इस प्रकार के साधना-मार्गों में कोई हवि नहीं जिन्हें सत्यता से व्यवहार का रूप दिया जा सके। वे तो सहज मार्ग की 'छाई राह' पर चलनेवाले हैं, जो अनगिनती (अनसंख्य) के अन्तर्गत अनुभव तक के जाती है। उन्होंने कहा है—

कोई कहे बीनो अरवार काउ कहे नरनर पार

कोऊ कहे जर्म है तार किये से मुक्ति पावये ।

कोऊ कहे साधिये बीन कोऊ कहे कोविण मोग,

कोऊ कहे गति अयोग प्रियता कहा जाये ।

ऐसे ही कल्पना कोट्य बाधत अकाश मोड़,
 रह न सके करेनी कोम्प माध तो मोराई है ।
 कष्ट लखे स्वे आप बाही को सङ्कल व्याप,
 अत्यर्थनी अनुमे अमाय आपकी सहराई है । ११४ ।

(अनुभव बिंदु)

अन्धाने स्वयं स्वीकार किया है कि वे विगत अवस्था व्याकरण कुछ नहीं जानते हैं । उन्होंने जो काव्य-रचना की है वह किसी को रिसाने के लिए नहीं है वरन् उन उद्देश्य तो उस ' अकाव्य अक्षय ' की महिमा का गान करना मात्र है जहाँ माया का प्रभुत्व नहीं है और जिसका रहस्य कोई ' ग्यानराज ' ही जानता या जान सकता है—

ज्ञान को अक्षय सख माही स्वामी नाई शिष्य
 जैसे हीन जाहे पक्ष शिष्य बन केसरी ।
 मुर सत सीन भोज पाते जीरो नाहीं को न,
 नापी रे पाही मनोज सुय को नरेसरी ।
 केव ना बेसी आराध्य विमल न व्याकर्म साध्य,
 अक्षय पावे अमाध्य बाही माया नाही ईसरी ।

माही को रीक्षने काज्य जैसे हुवा नम माज्य,
 जाने कोई ग्यानराज अखा की कसेसरी । ११५ ।

(अनुभव बिंदु)

उत्तरमें यह कि गोस्वामी तुलसीदासजी की तरह अखा का काव्य भी ' स्वान्तः सुखाय ' है, उसके समस्तन के लिए ज्ञान-मन्त्रों का अन्नीकम अभिवादन आवश्यक है । जिस प्रकार गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है ' कि मेरे काव्य में नागा प्रकार का विषय-कथा-रस नहीं है, इसलिए ' क्षमी काक बलाक इसके भिन्न आने से रहे, उसी प्रकार अखा ने भी अपने काव्य के संबंधमें लिखा है कि मेरी बाची यह महासागर है जिसमें गोता लम्पेबाक मोठी खोज केग जव कि पछपाहे नहीं भी गीन ही खोजेनी—

१ संयुक्त भेद सेवार समाना । इहाँ न विषय कथा रस नागा व
 सेहि कारण आपत हिरी हारे । क्षमी काक बलाक विचारे ॥

मनु अन्धा के अशोक जल, मनुमे परीक्षा कीन ।

मरजीवा मोली मिले, माछी ताइल मोन ॥ १ ॥ चोपरी साकी ॥

अन्धा से कम वह कहाँ कि उन्हें पिंकल और धाकरन का ज्ञान नहीं है और न इसमें लौकिक विषय रस है तो उन्होंने सतों के काय के वास्तविक स्वरूप का ही उद्घाटन किया है। इसका लक्ष्य यह है कि जनको बाणी में माचो का औदास्य, नाभीर्य सरन और शिक्थ पाया जा सकता है, अधिव्यक्ति के मात्स्य की मिला उन्हें नहीं। इसलिए उनकी साम्यकता को हम 'अन्धक बना' कह सकते हैं। उनमें अन्धकारों की लक्ष्य योजना नहीं है और न किसी प्रकार का साहित्यिक बौद्धिक ही इसमें उद्दिष्ट है कि नौ दैनिक जीवन-व्यापारों के अनुभव और सूक्ष्म निरीक्षण से प्रेरित अनेकानेक वपन, रम्यता उपमा आदि अन्धकार उनकी बाणी के वृत्त पर सङ्ग भाव से लिख उठे हैं और उनकी उदाहरता से कहीं कहीं उन्होंने बड़े बचप्यार पूर्व दिग्गज अंकित किये हैं। यद्यपि अन्धा की मातृमाया हिंसी नहीं है फिर भी उनमें माया की कसक और म्यंजक छवि का मनोहारी प्रसार मिळता है। आकाश के दैनिक जीवन-व्यापारों से बचन किये गये उपमानों की बाधना उन्होंने दिस प्रकार की है उसके कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं—

आलय मनुमे दिन अन्धा, नही ठेहरन की काय ।

सङ्गी मनु मोहार की मनु पानी मनु आनख ।

अप्रत्यक्ष दर्शन दिन अन्धा, ये सख्य मेरी काय ।

जुनु बोली केवत मार को, स्वाग परे इतराव ॥

आलयम अनुभव दिन अन्धा, सफल बोधवता आदि ।

मेला आनी मसाल का, कोई सुबत नहि पादि ॥

अप्रत्यक्ष इरादम दिन अन्धा, होम कुलीन बनवान ॥

जुनु गुवा की आग्रत तहो ज्वरहि रोग का नाम ॥

आलयम अनुभव दिन अन्धा गुणव राखत सब अंग ।

जुनु वात न छाडत मरुती मरिय लूची रहत रोग ।

आलयम अनुमे दिन अन्धा, कैद व्याकल्पी गुण ।

जुनु बाबोवर की गाय का, लोक दिग्गजत गुण ॥

आलयम अनुमे दिन अन्धा, गान राग पानीन ।

जुनु मोह मनामा देम का तो दो दिन का रोगीन ॥

इस प्रकार की रचनाओं में भाषा का परिष्कार नहीं मिलता है, भाषा में बड़ी अदृष्टी और अनजु भी लग सकती हैं। फिर भी उनसे मम, प्रेम और सौंदर्य की गहनतम अनुभूति का आकाश मुक्त हो रहा है जिसके कारण ये किसी अनिर्वचनीय संगीत माधुरी से सिक हो गयी हैं। डा० पैराम्बर दास ब्रह्मभक्त ने जिसे "ईश्वरोन्मुख संगीत की भाव प्रवणता" कहा है, वह अन्धा की बाणी में सबसे व्याप्त है। उनकी बाणी में सत्य की अनुभूति से एक प्रकार की गति स्वभावतः उत्पन्न होती है जो बहिर्मुखी न होकर अन्तर्मुखी रहा करती है जो सभी गतियों के मूलभूत अंतिम शक्ति में विनीत हो जाती है। वरम कला की अनुभूति का आनन्दोदक अन्धा में कैसे प्रेम-संगीत का सर्वन करता है इस प्रकार के पद इसके परिचायक हैं—

१ हूँ हेरत कई हेरई, अजब बलि लोरिबा ।
 ५ मनसा बाणा काय, कभी सुख्य मोरिबा । हूँ हेरत ।
 बाहर भीतर तूहि बसा बिछ है हरि हाजर हसरा ।
 हर का स्वांग, बेहबूझी करनी, जहाँ त्यों आया पूरा । हूँ हेरत ।
 वो बिब रही पानी मुखा सेसाग, पिपु का पार न बाधे । हूँ हेरत ।

२ कहां कऊ हास्य को बूझन को
 जो जाही देखू नहा जाय गनी ।
 तु मांज नी वे हूँ तुज मांझी
 ऐसी तुजको भाव बनी ।
 ज्यु दरियाव को मछली को
 जिन जैन सेके सो नीर मांझी ।
 तूँ तुझको बनी रही अन्धा ।
 सो सार्ई गळोसल है न बांधी ।

३ अदबद में बलसा अन्धा सुख्य तुज न रही मोय ।
 अदबद रस भंग में पण्या, सुदत ताकी मोय ।

सब सतों की तरह अन्धा की बाणी में भी कोई नैतिक प्रवचन बहुत हैं। इस प्रकार के प्रवचन प्रायः आध्यात्मिक अनुभूति के क्षण से रूढ़िग्रि न होने के कारण उपदेशात्मक और नीरस हो जाते हैं। किंतु कबीर की तरह अन्धा

ने भी अपने उपदेशों को सरस उपमानों और खटीक प्रतीकों की योजना द्वारा रोचक और प्रभावशाली बना दिया है।

जब मैं अपनी साधना-प्रणाली को सहज मार्ग कहा है। उनका कहना है कि वह पूर्णता की ओर के कामकाज मार्ग है, जहाँ पहुँच कर बराबर में स्वास्त बिट् कणिक की पहचान हो जाती है। जो लोग इस क्रम को नहीं प्राप्त कर पाते, वे स्वयं अपनी जाति के दिन खोते हैं और फिर पर घट घट में वर्षों का मार बिट् मर में खरबते रहते हैं—

बीज बराबर बीजों बीज, बीतवत बीत के केहेन ।
पूरन मरु बीज पामरा, मरु बरबत रम ॥

पूरनता जावत नहीं केत पुरन की ओर ।
सो मरु में मरुके जका छोर सतमेर को मोर ॥

भारतीय धर्म-साधना के इतिहास में सहज मार्ग या सहजावरणा का रवान बड़ा महत्वपूर्ण है, इसका इतिहास भी काफी लंबा और मनोरंजक है। जाकारन इतारीप्रसाद द्विवेदी जी ने लिखा है "— सहज धर्म की मेरुस्थल, कैवल्य महासुख, राम-रस-मोह से होती हुई सहज लोक तक पहुँचने की यात्रा बड़ी मनोरंजक है।" सहजमार्गी सिद्ध लोग केवलसरवा को ध्यान पर से अभिविहित करते थे और उसके साथ सहज विमलज का प्रयोग भी करते थे। नागर्यजिनों की साधना का बरस लक्ष्य सहजावस्था है जो सहसार जक में प्राप्तस्य स्यावरणा का पर्याय है। कबीर ने कभी 'सहज' और धर्म' दोनों का एक साथ प्रयोग किया है और कभी 'सहज का अर्थ ही। कबीर के अनुसार सहज वह है जिससे पुन, कर्मज मोर विप की जासकि सहज ही सूर जाव और मन एकमेक होकर राम में रम जाव। इस सहज को पहचानना कठिन है, क्योंकि यह वह मार्ग है जो बड़े सहज मार्ग से हरि जी के मिल्य देता है—

सहज सहज सब गए, सुत-विप कामिनि-आन ।
एक मेक है मित्रि रही, राखि कबीरा रम ॥

सहज सहज सब कोई बड़े, सहज न बन्दि कोर ।
अह सहज हरिजी मित्रि, सहज कही न कोर ॥

(क सं० २१, ३-४ ५ ११)

कबीर ने यह भी बतलाया है कि उनका सहज उस रामरस की संपत्ति का बोधक है जिसके एक बूँद पर सब जप-तप विद्यावर है। हम उस को पीनबाले की सब तुम्हारे धिरकास के लिए शान्त हो जाती हैं—

सहज सुनि में भिन रस काफ़्या सतगुरु में सुधि पाई।

हास कबीरा इहि रस माठा कबहुँ उछकि न जाई।

(६० सं० पद ७७)

इस 'सहज' का 'सहजा' के पर्याय के रूप में कबीर ने समाधि, सन्मयी, मनान्मयी अमरत्व का भिरजन, तुर्पा आदि अनेक शब्दों का प्रयोग किया है। 'बह बह अवस्था है जब मन और प्राण एकीभूत हो जाते हैं और जब ब्रह्म मन रिकर और ब्रह्मचरी हो जाता है।

ऐसी अवस्था में उसके भीतर की शून्य है बाहर की शून्य है ... आत्मान में जैसे कोई सुना पड़ा रहा हो। परंतु असल में वह भीतर से भी पूर्ण होता है, बाहर से भी पूर्ण होता है। समुद्र में जैसे मछली डूबा कर रखा गया हो।'

जबकि ने भी जान-कबीर के ही अर्थ में 'सहज' का प्रयोग किया है। वे कहते हैं, पंडितगण 'वेद-विद्वान्' पढ़-पाढ़ कर द्वार गये, वह नहीं मिले। किंतु मुझे तो वह साजन के सहज माय से मिल गया। उस प्रिय (सोहन) की ओर जिसकी लग्न जाती है, और जो उसके अपरिमेय अरूप रूप का साक्षात्कार कर लेता है, उसकी 'सुत-वित्त कामिनि-काम' की वसन्त और आसक्ति दूरत पड़ हो जाती है—

सहजे सहजे साजन बह आया।

जे मेर विद्वान् नहीं लखाया।

सहजे सहजे साजन बह आया।

× × ×

अपम अण्णेर कहिते छारे,

पहुते पहुते पंडित हारे।

जो सुरिजन सुख लीई रे सवारे,

सहजे सहजे साजन पर आया।

× × ×

सागे सोलन की आंख बिसर
उलझन घारी भागे तिसको,
तो भीर सेलारा कहिये किसको ?
सहजे सहजे साबन बरं आया ।

इस सहजता को पाने के लिए 'दुष्टारत भाव' विवर्जित होना पड़ता है। वास्तव इसके अतिरिक्त और जो भी कुछ है, वह अज्ञानमूलक है। भाव है, प्रत्यक्ष है, भाव का विकास है, उसका कुछ भी जानने का नाम नहीं है ।

जिन जानना दिन प्रत्यक्ष जानना ।
कसु न जानना सो सहज समाना ॥

दुष्टारत भाव है जेता भाव विकास जानो सब सदा ।
(जलन १६)

यह कहना किनी असहज जप-तप कुछ साधनादि से नहीं मिलना । मिल तो यह समझा बड़े ही सहज भाव से जाता है क्योंकि जिस अज्ञान-जन्म हैत के प्रम में जीव को बाँध रखा है, वह सोसा (संस्रव) जेसे पीरे पीरे साथ प्रतीत होने लगा है वेसे ही। यह भीर भीरे ज्ञान होने पर सूट भी जाता है । जीव को दशा देखी ही है जीवी दुष्टारत को अपने बंधों में मजबूती से जकड़ केने वाले छुट की जो उन्हे यह समझने लगना है कि दुष्टारत ने ही बड़े बाँध रखा है । यह संस्रव दूर होत ही ईश्वरमुखि की जवरपा जाती है और सहज साधन का भीर ' जीव को मिलता है—

सहजे सहजे सोसा सब हुआ ।
जेम नहीं को बोधा सुभा,
सहजे सहजे नाँना सब हुआ ।
बाँध बाँध पर कहीं न बाँधा
जिन बिचारी पुकारे बधा
देम जी पन्ना जेब बधा
सहजे सहजे बाँधा सब हुआ ।

प्राप्त पारधि माँछा पात,
इहलोक परलोक की भासा,
न समस्त मर्म, न छूटे काँसा
सहजे सहजे साँसा सरस हुआ ।

× × ×

सहज उपवेश करे जन हरि का,
सहज स्वभाव पछा सो गर का,
पियु सोनारा गौर सहज सागर का,
सहजे सहजे साँसा साव हुआ ।

(मन्त्रो १)

कबीर ने भी वही कहा है कि काया की सुधि सहज ही होती है—

‘साधो, सहजे कया सोचो ।’ कष्ट में व्याप्त अग्नि की तरह सामक
के भीतर अवधान की जो उमोति प्रकाशित रहती है वही वह सहज भाव
से मार्गना द्वारा ब्रह्मासवन प्रकट हो जाती है । साई के साक्षात्कार के उस
आनंद से दिव के हरिनाम में उबार आ जाता है, सब पत-ताप कूट
जाते हैं—

बहु पावा कुछ लगना, अरु दिव हरिना पुरि ।
सकल पाप सहजे गये, अब साईं मिलना हरि ॥

(कबीर प्रयागजी पू० १४)

इसी प्रकार भक्ता भी कहते हैं कि सहजानंद का मोक्षेवाला ही साहज
का सच्चा लाल होता है । वह ‘अकल’ नाम करता है और तन-मन-बन
को कुछ नहीं मिला—

जग तन मन जो ना मने अकल काहि का नाम ।
मेहेमार्ग कूँ मोयने ता साहेब का लाल ॥

(भक्तानी की सली, काठन की अंग १)

भक्ता के अनुसार सहजानंद का अधिकारी तन-मन-बन को अपना
नहीं मानता वह सर्व की तरह स्वतंत्रकाय होता है, उसे किसी दूसरे प्रकार

की भयंका नहीं होती। वह रत्न की पूरी मर्यादा होता है जिसे रत्न और
बाती की आवश्यकता नहीं। इसे प्रतिकूल पवन प्रेरित नहीं कर सकता
वह अचलप्रतिष्ठ और स्थितप्रज्ञ होता है—

जुनुं सुरज दीप बाहाता नहि आवे मोख विहास ।

तन-मान अपना न मये सो साइब का माल ॥ २ ॥

रत्न न बाती पुट बिना जैसे रत्न मर्यादा ।

बायो न होलावत ताही हुं सो साइब का माल ॥ ५ ॥

(अन्धारी की साखी, अन्धकार को खैर साखी २, ५)

सब संत यह कहत हैं कि इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए न बौद्ध
मूर्खता की आवश्यकता है और न अज्ञान हँसने की, अज्ञान को हट देना
भी निरवकाश व्यापार है। इस स्थिति की उपलब्धि तो एहसास में ही
होती है। कबीर न कहा है—

बर में जोग भोग पर ही में, बर तब बन नहि आवे ।
बर में छुट छुट पर ही में, जो गुरु बखस लखावे ॥

गोस्वामी तुलसीदास जैसे परम बीतराज संत ने भी इस मत की पुष्टि की है—

बर कछि मर जात है बर कीजे बर आव ।
तुलसी बर बन बीच ही, राम जेम मुर छाय ।

इस स्थिति की उपलब्धि हो जाने पर साधक को कहता है वह मयमान
का नाम होता है, जो मुक्तता है वह प्रभु का स्मरण होता है, जो करता
है बड़ी पूजा हो जाता है। उसकी प्रत्येक विशेषता प्रभु-परिक्रमा बन
जाती है और उसका प्रत्येक काम सेवा रूप होता है।^१ अन्धकार हट है वह
स्थिति प्राप्त करनेवाला ही संत है बड़ी सुखीमान है, बड़ी सदा स्वासी
(गोस्वामी या लम्पानी) है—

१ बड़े सो नाम मुनीं ता गुमिरन, जो बसु कई सा पूजा ।
गिरह छयाण एक सम हेमू माव विदाई पूजा ॥

अट कई जाई सोह परिक्रमा जो बसु कई सो सेवा ।

जब लोक तब कई ईश्वरत पूजी और न देवा ॥ कबीर

बाबा सोहि दीखत सोई दाना ।
 आपत स्वप्न मुपुष्टि तुरीया-
 बाह एक समाना ।
 नावे कृत्व करे, ना त्वागे,
 नावे दिवली बिचारे ।
 ययन केस सहजे होय नीमडे
 कीन हूने । कीन तारे ?

लखानो करते हैं कि यह महाशान्द की पूर्वतय उपलब्धि और अनुमति की
 वसा है जिसमें ' हरि के हुक्म में हाथि होकर उनके साथ काम करने
 का हीमाम्म प्राप्त होता है—

सोई ईसा केसम लगो आप आपत तुरीय ।
 सहजे लखि आपर की कहरी नव नव तान तरंग ॥
 एतारु मयो ही मनोहर केसम हरि काम ।
 हो हो होरी कयो निरुलखि, लखत सबद पराम ॥

(दुआसा-राग काकी)

असा और देकर यह करते हैं कि हरि यह जग एतारु के मय में ही
 केसते हैं और सब लोको से इस महनीय महाशान्द की रिमति एक के जाने
 बाके मार्ग का ' मयम मार्ग ' या मयम भाव कहा भी है । ये इस
 बावना-माग के स्वयं का लखाना करत हुए करते हैं—

ना हम छोडै ना छोडै ऐसा काम बिचार ।
 नहि भाव छै सरा बाहु मुक्ति हुकार ॥

मयम मार्ग बसततः मन की साधना है । शरीर संसार में अब तक
 लता है रहे, संत को नकली बिता नहीं । बिता लखे केवल मन की है
 जिसे अविद्याम राम के ही वास रहना चाहिए । बाहु मदि भाव ' के मन
 को स्पष्ट करत हुए यही बात एक तरह कहत हैं—

देह रहै संसार में, जीव राम के पास ।
 राहु कहु व्यापै नही काज साज बुक भास ॥

कहने लुगने में वह मध्यम मार्ग' सरल भगवत्प्राप्ति है पर वस्तुतः यह है बड़ा कष्टित। कभीरु कहते हैं, वह दिन-रात की अभिप्राप्त कबाई है मध्यममार्गी संतान बहिष्कार और मुक्त तो सती और धृ' से भी बहुत आगे है—

काय को केवल तो बिच्छु बेंका मठी
सती और धृ की काय आगे।
धृ वमसाग है पच्छु से काय का
कती वमसाग वम एक मारी।
काय संसाग है रैन दिन कृष्ण
वेह नरकत का काय जारै ॥

डॉ० वीणाशरत्त बह्मराज ने लिखा है " वह मध्य का बीच का मार्ग, जिसे हम जानते हैं कि विष्णु संन्यासियों की वीर्यधर्म के सिद्धांतों से भिन्न था स्वयंसाग वम के काय पुत्र करने के समान है। वह मार्ग इतना मान कर चलता है कि जल के लक्षणों से भिन्न भिन्न भिन्न है और सबसे बिच्छु होने का रस है। जल के स्वयंसाग रूप के कारण किसी को बोना न होना चाहिए कि इसके बिच्छु होने के कारण नहीं रहता है। स्वयं भी अब तक वतमान रहता है किसी न किसी छिपे छिपा ही बह्मराज। कापेक्षिक समता का प्रभाव हमारे ऊपर अब तक वतमान रहता है अब तक हम अतिशय काय को साक्षात्कृत नहीं करते। हाँ, अब अब तक मनु कर हम आज बह्म संन्यासी कबाई की लोचन। सिद्ध कर केने हैं और इस प्रकार कष्टित काय का स्वयंसाग भी कर केने हैं। हाँ उत समय वतमान का बोई मध्य ही नहीं रह जाता। किंतु अब तक हमारा मुक्त चलता ही रहेगा। "

विष्णु मार्ग काये में ' मध्य का बीच ' का मार्ग वीर्यधर्म के सिद्धांतों से भिन्न था वीर्यधर्मनिरुपेता है वह विष्णुमार्गक रूप के हो करे कर। का चलता। इतना ही विधि ही है कि वीणा ने इती मध्य मार्ग का वपवस दिया है और वमसाग विष्णु संन्यास का संत भी वीर्य सिद्धांतों की

अपेक्षा मोता क अधिक निकट थे। सगवान् कृप्य न मोता में स्था कदा है कि अतिमात्रा वा अनिवार्य को त्याग कर ही वांछी स्थिति प्राप्त की जा सकना है प्रिये पा देने के बाद फिर विमोह नहीं होता। उसी प्रकार सब संतों की वाणी का भी एक ही सार प्रतीत होगा है कि मध्य मार्ग ही वह साधन है जिसके द्वारा सहजावस्था के साध्य तक पहुँचा जा सकता है। अन्ना की दृष्टि में मध्य मार्ग प्रीतम से 'सहज संन्यास' करवा देता है, पर वह रास्ता 'सहज' नहीं है। 'सहज' तो चरती और स्वर्ग के विविध भोग हैं जिनके पीछे भोग (सखियाँ) पागल हैं। दुनिया के भोग 'सहज' की इच्छा करते हैं 'सहज' को नहीं। 'सहज' और 'सहज' का अंतर अन्ना ने इस छाँटी में बड़ी सुलभता से स्पष्ट किया है—

सखियाँ बलियाँ सेहेन कुं स्वर्ग भोगन का भोग।

प्रीतम मुझ छाड़ता नहीं राखत सेहेज्य संन्यास ॥

(छाँटी, कृपा १५)

अन्नाजी का निर्देश है कि 'सहज' की इच्छा ने भोग करते हैं जो देह बर्ती होत हैं इसके फलस्वरूप वे जीवन भर सुख-दुख पाप-पुण्य और स्वयं-मरक के पक्षों में पड़े रहते हैं। 'सहज' की साधना आत्मदर्शी करत है क्योंकि उनका एक ही लक्ष्य होता है आत्म-वर्धन—

ये कोई जानत है अन्ना में छाव मेरी छाव ।

पाप-ताप-संताप सब बेहरसी कू छाव ॥ १ ॥

बहरसी राखत अन्ना बर्जामम का भार ।

बाबा देह अनिमान का आतम नहीं बिचार ॥ २ ॥

बहरसी आचरे अन्ना कहीं केहेर कहीं महेर ।

आत्मदर्शी आत्मा सम्य रहे आठा पेहेर ॥ १८ ॥

दहरसी आचरे स्पृह कम जीविक ।

आत्मदर्शी आत्मा मील रहा ओहानीक ॥ १९ ॥

बहरसी बल कर्म के दुख-मुक कर-पात्र ।

आत्मदर्शी बेह मे रहे करतम मात्र ॥ २० ॥

(बहरसी को संत)

सब सेतो ने इस बात पर बल दिया है कि वेद-दर्शन के असल और
 आत्मदर्शन के सत्य का ग्याम और ग्रहण उपयुक्त परीक्षा के बाद ही होना
 चाहिए। परीक्षित सत्य को ही वे सत प्रज्ञा मानते हैं। अपरीक्षित सत्य को
 भ्रमेय मान लेना इनकी दृष्टि में अभिप्रेक्ष्य है। ऐसा सत्य सेत का सर्व नहीं
 हो सकता। सांसारिक लोभ स्वभावगत बड़ता, अहंस्वयं प्रमाद, एवं लोभ भ्रमा
 के कारण परीक्षा करना नहीं चाहते। आंक मूढ़ कर किसी बात को सत्य
 स्वीकार कर लेना सेतो की दृष्टि में निच है, उसकी परीक्षा बुद्धि और
 अनुभव द्वारा होनी ही चाहिए। सेतो की भाषा में पारिक नाम का एक
 भव ही मिलता है जिसमें कुछ की परीक्षा का महत्व बताया गया है।
 बाह्य करते हैं—

बाह्य सांवा लीकिये छटा सीके बारि।
 सोवा सममुख राखिये छटा मेह निवारि ॥
 साके नू सावा कहे छटे नू प्रज्ञा।
 बाह्य दुविवा कोर नहीं ज्यों वा त्यों सीझ ॥

बाह्य ने कहा है कि 'ज्यों वा त्यों' (पूर्ण निरुपाधि सत्य) देखने और
 बने के लिए फलर की परीक्षा काम नहीं देती है इसके लिए ता अंतर के
 सत्य की परीक्षा अपेक्षित है। बहिर्मुखी कोकदृष्टि वह परीक्षा करने में अक्षम
 रहती है क्योंकि वह सत्य को असत्य और असत्य को सत्य मानती है—

जे नाही सो सच कहे है सो कहे न कोर।
 सोटा करा परखिये तब ज्यों वा त्यों ही हाह ॥
 वह पारिक है जगती भीतर की वह नहीं।
 अंतर की जानें नहीं ताँ सोटा बाहि ॥
 बाह्य कसर देखि करि सच को राखे नांव।
 अंतरगति की जे लखें तिनकी दि बलि जांव ॥

जना जो इन परीक्षा को अनिवार्य मानते हैं। जनपद विद्वान् है कि
 योगबुद्धि और अंतर्बुद्धि के बिना अंतर के सत्य की पहचान अनभव है।
 वह बट ही अनमोल रामरत्न की काम है, पर इसकी परख पूरी कर सकता
 है जिसकी बुद्धि अत्यंत हो जो स्थितप्रज्ञ हो। वस्तुतः को गुणगीत है,
 नहीं इस परीक्षा का अधिकारी है—

आप्य नृपे हे नद मे भीकस्त राम भयुस्त ।
 परब्रह्मनाम कोई भखा जग की भुभ नलोस्त ॥ १ ॥
 राम रतन का पारख करवा ताक ताक ।
 गुनातीत बीम मे भखा हाथ न बाधे नाक ॥ ४ ॥

(साखी-राम परीक्षा अंश)

बादू कहते हैं कि जब यह 'पारखे' करना आ जाता है तो सब जगह एक ही आत्मा के वर्तन होते हैं, पूरा जगह ही व्याप और विस्तार का विषय बन जाता है। नाबराह के कारण का भवेच्छता का हित दिखाई पड़ता है, उस भ्रम का भी तिरोभाव हो जाता है—

पूरन जग दिवारिये सकल आत्मा एक ।
 भखा के गुन देखिये नामा बरन अनेक ॥

यही बात भखा भी कहते हैं, राम-रतन का पारखी हित का वास्तविक नहीं करता यह केवल उस छोड़ने भखा अवेच्छता का घोष करता है जो बाणी का विषय नहीं है। यह पारखी तो गई जो छोड़ कर स्वयं राम ही बन जाता है—

राम रतन का पारख अगलीय बीनमत नाह ।
 भखा सोदा सो ही करे मे नामत बाणी नाह ॥ ६ ॥
 राम रतन की परखी राम ही राम हो नाथ ।
 भखा ही नाम राम हे बोहोर ना पीछ भाव ॥ १६ ॥

(साखी-राम परीक्षा अंश)

इस संक्षिप्त विवेक से यह स्पष्ट हो जाता है कि भखा उन संतों की परंपरा में आते हैं जिन्होंने हिन्दी साहित्य के इतिहास में निर्गुण संप्रदाय में परिचयित किया बना है, और जो निर्गुण अस्तित्ववादी की ज्ञानाभवा शाखा के प्रवर्तक और उद्भावक माने जाते हैं। भखा इस परंपरा के एक महान प्रकाश-संरम हैं उनका स्वान सभी बुद्धियों से निर्गुण शाखा के बद् से बड़े संत का समकक्ष है।

संसारमय प्रकृति को सिद्धों और नाशों की ही साथ जोड़ कर संश्लेष कर देना उचित नहीं होती। हो सकता है कुछ ऐसे निगुनिया सतों का जो निगुनिया मरुद् और व्यक्तिगत हों, यह प्रकृति सिद्धों और नाशों में ही रिक्त के रूप में मिली हो। पर अनेक ऐसे सत भी थे जो यदि बहुत सिद्धि नहीं रहे या सफ़्त, तो बहुत और बहुत तो माने ही जा सकते हैं। सरस्य द्वारा उन्होंने उपनिषदों का ज्ञान भी अवश्य प्राप्त किया होगा। अधिक समाधान तो नहीं है कि निःसार कर्मकाण्ड के संसार की प्रेरणा उन्हें उपनिषदों में ही मिली हो। अतएव, यदि सतों द्वारा कर्मकाण्ड आदि का कथन करना, जसा कि कुछ विद्वान् समझते हैं, बहुत बड़ी प्रगतिशीलता है, तो उक्त सत जेय सिद्धों और नाशों की परंपरा या वैयर्थी मत की ही नहीं है। उसका अन्तर्गत प्राचीन और स्वतंत्र रूप उपनिषदों में पहले से ही विद्यमान है। मेरा अनुमान है, जसा इससे अच्छी तरह परिचित थे।

(४)

डा. पीताम्बरदास जयपाल ने निर्गुन संप्रदाय के सतों के दार्शनिक सिद्धान्तों का विवेचन करते हुए लिखा है " कि इनमें कम से कम तीन प्रकार की दार्शनिक विचार-धाराओं के स्पष्ट दर्शन होते हैं। सिद्धान्त के पुराने धर्मों के नाम से यदि उनका निर्देश करें तो उन्हें जैत, भेदाभेद और विशिष्टाद्वैत कह सकते हैं। पहली विचारधारा को मानने वालों में कबीर प्रधान है। दादू, मुंदादास जगजीवनदास, मीना और मखन उनका अनुसरण करते हैं। नामक और उनका अनुयायी भेदाभेदी हैं और विश्वमात्रा तथा उनके अनुयायी विशिष्टाद्वैती। प्रायनाथ, हरियादास तीन वरकेष्ट कुल्लेष्टाह इत्यादि विश्वमात्रा की ही अन्तर्गत रहे जा सकते हैं। ' सामान्यतः जसा की कबीर दादू, मुंदादास आदि की अन्तर्गत रहे जा सकते हैं, किन्तु उनमें कुछ ऐसा वैशिष्ट्य भी है जो उन्हें इस जेय के सतों से पृथक् कर देता है। इस प्रदर्शन में सब से अधिक ध्यान देने योग्य बात यह है कि जसाजी ने अपनी रचनाओं—गुजराती जलगीता, अनुभव बिंदु, पंजीकरण, गुह्यविषय संवाद विविध विचार संवाद तथा हिंदी प्रकाशिका—में अपने दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है, और इन सबों की छात्रीय भूमिका जैसी स्पष्ट है

बेसी स्पष्टता सुंदरदास और विष्णुदास जैसे हो-एक घंटी की 'बाजियों' को छोड़कर अन्यत्र नहीं पायी जाती। गुजराती के पंडितों ने अन्धा की वार्षिक विचारवाह को केवलज्ञेय या अज्ञातवाद कहा है। गुजराती के प्रख्यात विद्वान् और ज्ञानी कवि श्री. उमाचकर जोशी ने लिखा है कि 'जबकि वे अज्ञानानुभव का जो अधिकतम धिमा है उससे वह बात स्पष्ट हो जाती है कि वे निर्नुलोपोसक हैं और इनका विचारविधि साधारणतः के संज्ञा है। अज्ञातवाद का अर्थ सिद्धांत अज्ञा की बाणी से रहस्य रीति से निर्मित है। अज्ञातवाद का अर्थ सिद्धांत अज्ञा की रीति से नहीं ज्ञानात्मक का अनुभव करने हुआ क्योंकि अज्ञा ने तार्किक रीति की रीति से इस सिद्धान्त की अभिव्यक्ति की बात 'अज्ञाना रत' के अज्ञातवाद की रीति से इस सिद्धान्त की अभिव्यक्ति की है। अज्ञात मत इसी रीति और हर्षव्यय रीति से साधारण ही किसी दूसरी भाषा में प्रवर्तित हुआ है। 'गुजराती संत-साहित्य के दूसरे साधनपरायण विद्वान् डॉ० गोविन्द जयन्नाथ त्रिपाठी ने अज्ञा को केवलज्ञेय मानते हुए भा अज्ञातवादी ठहराया है। अज्ञातवाद और केवलज्ञेय का अंतर बड़ा सूक्ष्म है बहुत अज्ञातवाद केवलज्ञेय की वह प्रवर्ती अज्ञात है जिसका प्रवर्तन दीक्षादाचार्य ने किया था। डॉ० त्रिपाठी ने लिखा है 'गुजराती भाषा साहित्य में अज्ञातवाद का निरूपण करनेवालों में सर्वप्रथम और सर्वप्रमुख तो श्री अज्ञाती ही हैं। श्री अज्ञाती की कृतियों का कुछ अन्धाता स्पष्ट देख सकता है कि अज्ञाती के समय साधारण की रचना अज्ञातवाद के सुख सिद्धान्त की वीर्यता पर हुई है। अज्ञाती के अज्ञातवाद में एक अज्ञेय परमेश का अस्तित्व स्वीकार किया गया है ज्ञान के अनिश्चित और कुछ है ही नहीं। २

अज्ञा की बाणी के वास्तविक आधार का समझन के लिए अज्ञातवाद के स्वरूप का तीक्ष्ण निरूपण आवश्यक है। अज्ञातवाद अज्ञेयज्ञेय का ही एक विधि है। अज्ञेयवाद का इतिहासिक अनुशीलन करने से प्रतीत होता है कि उसके विकास की दो अवस्थाएँ अवश्य रही हैं। प्रवर्ती अज्ञातवाद वह है जब अज्ञेयज्ञेय उत्तर दीक्षा के उत्तर में पोषण प्राप्त करता हुआ

१ अज्ञाना टप्पा-प्रस्तावक, पृ १०।

२ ज्ञान बाक ही ओरिजेनल इन्स्टीट्यूट अज्ञातवाद इन गुजराती भाषा में २०१ वा ४ व २-३ दिवस १९५४ माघ १९५५।

अन्य धर्मसामयिक विचारधाराओं का विरोधी, आलोचक और निरासारी नहीं बना था। विद्वानों का अनुमान है यह अवस्था 'योगवासिष्ठ' के रचनाकाल तक नहीं रही^१। इस अवस्था में अन्य दर्शनों के प्रति उसमें एक बड़ा डरार, सहिष्णुतापूर्ण और उन्नत दृष्टिकोण विद्यता है जिसमें सब विरोधों का समन्वय संभव हो जाता है। गीष्वादाचार्य ने माण्डूक्योपनिषद् पर जो कारिकाएँ लिखीं उनसे अद्वैतवादी विचारधारा में एक नया मोड़ आता है। गीष्वादाचार्य ही ऐश्वर्याद्वैती वेदान्त के प्रथम व्यवस्थित व्याख्याता माने जाते हैं। वे ईश्वराचार्य के पुत्र मोदिर के पुत्र तथा उपनिषदों के परवर्ती काल के प्रथम महान् दार्शनिक माने जाते हैं। माण्डूक्य उपनिषद् पर किसी हुई समझी दो ही 'ब्रह्म' कारिकाओं में उपनिषद् के सारकाल का दर्शन के रूप में समग्रतया किया गया है। उनकी ये कारिकाएँ वेदान्त दर्शन का महतीत बड़ी जाती हैं, और इनसे प्रतिपादित सत्यज्ञान को अमरतवाद के नाम से अभिहित किया जाता है।

गीष्वादा की माण्डूक्य कारिका चार अध्यायों में विभाजित है, जिनके नाम हैं आत्मन, वैतथ्ये, अद्वैत और अमरतधाम्नि। 'आत्मन' शीर्षक अध्याय में गीष्वादा ने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि परम सत्ता सर्वत्र उनके विचार प्रुतिबिम्बित और सर्वमिद है। दूसरे वतथ्य 'आत्मन' अध्याय में उन्होंने द्वैतार्थविशिष्ट जगत् के व्यावहारिक रूप की व्याख्या की है। तीसरे अध्याय में उन्होंने अद्वैत सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है और चौथे अध्याय में उन्होंने आत्मा के चरम सत् और सामान्य अनुभव के सन्तुष्ट स्वरूप को ईश्वर अपनी अद्वैत दृष्टि की अधिक विस्तृत विवेचना की है। उन्होंने बताया है कि यदि एक बिरे पर जगत् की हुई ब्रह्म को ईश्वर पुमाना जात, तो उससे सत्ताक अमरतधाम का प्रथम उत्पन्न हो जाता है। जगत् का नाशना किया बहुकाल भी ऐसा ही सम है। माण्डूक्य उपनिषद् में वेदना के जिन सोपानों का योगों का निर्देश दिया गया है गीष्वादा सभी के आधार पर आत्मा के तीन अवस्थाएं मानते हैं—विश्व का वैश्वानर आत्मा, वैश्व आत्मा और ब्रह्म। जो इन तीनों के परे और तीनों का छाया है उसे उन्होंने अनुष्ट, अमरतधाम अमरत, एकमत्त

१ डॉ. बी. एल. आनैथ, 'दी त्रिमासाधी भाषा दी योगवासिष्ठ' पृ. १८ व १९।

प्रभावसार और अवधारणमय माना है। उनका कहना है कि वही एक मात्र सत्य है और सब अद्वैत के अतिरिक्त जो भी कुछ है सब असत्य और स्वप्नवत् है। अल्प रक्षण है इसका अर्थ उन्होंने यह बताया है कि पारमार्थिक व्यावहारिक व्यवसाय प्रतियोगिता की भी व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति को कोई अतिरिक्त ही नहीं है। आपन सुख की स्वप्नसृष्टि वैसी ही व्यवस्था और असत्य है। स्वप्न में व्यवसाय इन्द्रजाल में हम जिस प्रकार लोभों को जन्म देते और मरते देखते हैं वैसी ही व्यवस्था हम व्यवसाय प्रतियोगिता जन्म देती है। जिसमें केवल कठिन लड़कियाँ होती हैं उसमें व्यवहार है वा जंगल में व्यवसाय लोभों को नहीं है व सब ऐसे विचार हैं जो मूलों को ही प्रभाव कर सकते हैं, वह सब कुछ केवल मन की कल्पना है। सब का जन्म केवल मन है वह सब एक काय-कारण के अंशों से उत्पन्न है तभी तक संसार की सत्ता है। संसार का जन्म ही नहीं होता इसलिए उसके उच्छेद का प्रश्न ही नहीं उठता।

एक अर्थ यह विद्वान् प्रश्न को छोड़ कर जन्म विचार की सत्ता ही नहीं है। यह प्रश्न न जन्म सत्ता है और न मरता है न वह सुख की इच्छा करता है और न कभी बड़ा या सुख होता है। आत्मा प्रकल्प दे उनमें सुख-दुःख की भावना अव्यक्त है। वह आकाश की तरह अव्यक्त है, उसकी हरति वा जगति नहीं होती। इसी साम्यता के कारण जीवधार का अद्वैत विज्ञान अज्ञानता का भ्रमोत्थान करती है। हम विज्ञान के अनुसार यह जन्म केवल मन का व्यापार है मन का विशेष ज्ञान ही व्यवसाय माना हो जाता है। प्रत्येक की प्रकृति स्व प्रकृति-अप्रकृति विषयक सब व्यवसाय की भावना प्रकृतिक्रमिक है। मन का अमर्त्यत्व होता ही जन्म का विनश्यत होता है।

शरीर का अद्वैतमत इसके बोधा विषय है वह विनश्यत प्रकृति है। इस मत के अनुसार प्रश्न ही स्वप्न जन्म का अधिष्ठान है। वह स्वप्न जन्म माना का परिणाम है, विद्वत् प्रश्न का केवल विनश्यत है। प्रश्न वस्तुतः जन्म में परिणमन का परिचय नहीं होता, केवल परिणमन या परिवर्तित हुआ सा प्रतीत होता है। शरीर में वैदिक एवं परमेश्वर मान्य में जन्म

स्वप्न है इस मन का लक्षण किया है। वे जगत् की सत्ता स्वीकार करते हैं पर इस सत्ता का वे केवल व्यावहारिक मानते हैं। सत्ता के अनुसार सत् नहीं है जो त्रिकालाबाधित है जो अल्पस्थायी है वह असत् है और इसी सत्ता केवल व्यावहारिक मानी जा सकती है। वस्तुतः सत्ता के मत में असत् का अनुवाद 'अवास्तविक' नहीं है उल्टा असली अर्थ है अस्थायी परिवर्तनशील और व्यावहारिक सत्ता। इस विवरण से यह स्पष्ट है कि यहाँ केवल जगत् की व्यावहारिक सत्ता स्वीकार करते हैं यहाँ वीरपाद उसे भी भिन्नता स्वीकार करते हैं। दोनों भाषाओं के दृष्टिकोण में यह अंतर अत्यंत सूक्ष्म होतों हुए भी बड़ा महत्वपूर्ण है।

जन्मा की गुजराती और हिंदी बोली में वीरपाद के अज्ञातवाद की अनेक स्थानों पर अनेक रूपों में अभिव्यक्ति हुई है। गुजराती काव्य में अनेक संत कवियों ने वीरपाद के अज्ञातवाद की बड़ी रसमय अवतारणा की है। वे सब संत प्रत्यक्ष अपना अवलम्बन रीति से जन्मा से संबद्ध माने जाते हैं। वीरपाद के अज्ञातवाद में दो बातों पर विशेष धन दिया गया है एक तो वे जगत् और जीव का उद्भव ही नहीं मानते दूसरे वे सृष्टि को मन की बहुमुखता का ऐसा कल्पित परिणाम मानते हैं जो मन के अमनीमूल प्राप्त ही सत्य का प्राप्त हो जाता है^१। जन्मा ने भी इन्हीं तत्त्वों का अनुशीर्षन किया है। 'ब्रह्मसूत्र' और 'एकसकल रामणी' आदि अपनी हिंदी रचनाओं में अज्ञात इस विज्ञान का विषय प्रतिपादन किया है। उन्होंने एक अद्वैत परमेश्वर का ही अस्तित्व माना है ब्रह्म के अतिरिक्त कोई दूसरा तत्त्व नहीं है। विश्व के नामरूपादि की प्रतीति मन की सृष्टि है कारण सृष्टि का मेर है। अम्यास इति, अचक्षेत्र अथवा प्रतिविम्ब के किसी भी रूप में ब्रह्म से भिन्न कोई दूसरी सत्ता नहीं है। कारण और कार्य का मेर भी प्रत्यक्ष ही है। जिस जीव में अक्षुर ही निवास हो उसके पद, पैर

१ आत्मसंज्ञानुभव जिन से सम्पन्न होता है।

अमनस्सो तथा याति पाप्मनाये तदमहम् ॥

गी० अ० १-११

न काश्चाज्जायत जीव संमरोदस्य न विधमे ।

एतत्तदुत्तम सत्य नमःकथितं जायत ॥

गी० अ० १-१८

और छल की चर्चा करना अज्ञान ही तो है। ऐसा ही है वह महा शिवके विषय में हृष्ट हृष्टा और दर्शन की बात हो अन्य है—

जबोही अंकुर उम्रा नहीं, तो पत्र पेश नहीं छाल।
सत् मतामत बाहरा, ताबे सब एक छाल।
पूरन महा यादये हो।

सुख नहीं, मनसा नहीं, तो वहां बैकरी छाल।
ताहं कीन कहे कीन को, ऐसा सा एक छाल।
पूरन महा यादये हो।

हृष्ट, हृष्टा दर्शन नहीं, तबोहां सब काम
स्वकवैष भी करनेको ऐसासा एक छाल।
पूरन महा यादये हो।
(एक कल रमणी)

बाहे उस परमेश को जगत् करो, बाहे जगदीश करो बाहे माया
करो और बाहे काम करो उसमें किसी काम में हैत का स्वर्ण की
सेनब नहीं। जितन नाम और रूपों की सम्पत्ता मन कर सक्ता है, वे
नी उस पून महा के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं। सतगुरु, जेता, हापर
और कस्मिनुय सब में एक राम ही समान है—

जबत करो, जगदीश करो, माया करो कोई काम
पूरन महा यादये हो, 'हैत नहीं कोई काम।
ननु, प्रता, हापर, कबि बाईं स्वारे नाम
कहा मते बिज्ञान के राम रमत एक छाल।
पूरन महा यादये हो।
(एक कल रमणी)

अज्ञात अनुभव के परमाणव से व्यस्तित होकर बसा करते हैं—
तू हि तू हि तू हि राम। शिवने कीजे आप स।

'अहम्' के परिपूर्ण निस्तेज्य से ज्ञात परम की व्यस्तित्व का एक समीचीन
बाणी में नष्ट है—

तू हि तू हि भरपूर है, में नहीं नहीं नेता ।
मुत्र बहके पिया, मुत्र है सिर मेरे देता ।

तू हि तू हि भरपूर है ।

अहम् 'को जन्मा मे 'जिन थीर आत्मा 'को 'एन 'कहा है । 'येन '
के चाते 'येन 'सूझने लगता है—

संतो ! जिन क्या, ऐन सुज्वा
में तो हूँ, नहीं हुआ ।

×

×

×

आत, मात, कुस, करम विमाना,
हरि काजर में पूता ।

असली पिछली तीन मही सब —
जुमें छुप्ते बिन सूता ।

जिसको वह 'येन 'सूझ गया उसका त्रिगुणभास सभी प्रकार दिखीन
हो जाता है, जैसे आकाश में बादल और जगो हुए जीव के सुप्तावस्था के
स्वप्न । फिर आत्म-जाना क्यों भीर देता—

जुमें नेवी काहर होय मंदर में
उपनी शक्ति विमाने,
त्रिगुणभास इसी विधि बूझे,
तो नर जाय न आवे ।

(अध्याय ११)

जन्मा मे भी जन्मतवादीको द्वारा स्वीकृत माना के जन्मा नाम को ही
ब्रह्म प्रवक्ष्य किया है । जन्मतवादी के अनुसार माना जन्मना है जन्मत
उसका जन्म ही नहीं हुआ है वह निरन्तर अस्तित्वहीन पूर्व रह्य है—

जाप ज्यों के त्यों निर्द्वन्द्व सर्व भाव केही जन्मा ।
ज्यों भुवक मेक के लोह केतन, त्यों हृदयेक पाई रमात

(अध्यायीता)

अज्ञा ' अर्थात् माया में जो नागप्रव का आनास हो रहा है वह
बैना ही है जैसे दर्पण में प्रतिफलित होने वाला प्रतिबिम्ब—

विशाल दर्पण भीति भीती और स्पष्ट सत्य स्वाभिनी ।
ताही के मध्य भीति भावी वैसी सत्य सुहावनी त
तो अज्ञा के मभी भीति माना वस्तु विशेष ही जाती है ।
आत्मा अचक्षा अमोल अमल्य आवत नीव विजाही है ॥

अज्ञातवाद में माया को ईश और अज्ञेय का समन्वय करनेवाले स्वतंत्र
सिद्धान्त के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है । उसके अनुसार मन ही
माया है, इसीलिए अज्ञा मन के मारने को ही साधना का उद्देश्य मान
कर है—

तुम मरत बही जाये, मनुष्य । तुम मरते बही जाये ।
तारे काहिए बीबना, मोठा पच विपय सब बीना ॥
मिजलस लेरी वचकी छेने, काहिये राम टीक्या ।
मुक्त को साज मिजये मन तुं दुःख बसे दस दग आने ॥
जुं गल नीयल मचली दस बस तुलन तनई त्यागे ॥
एक मन भद हुआ परा, मरे हो मूल अपूये ।
बचवा अपना अरय बचो पडा नर पू कोक ॥
बोली हा के हा तुं तफिया, बीरवा तुल धनारा ।
मरतक को मति मरतक जने बड़े लभा अज्ञा समारा ॥

(अज्ञात्री के पद राम सम्भार १७)

इस संक्षिप्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि दार्शनिक चिन्तन की
रहि से अज्ञा ने हिंदी के कृत-साहित्य को अनेक नवीन उत्तम प्रदान किया है ।

(५)

अज्ञा की माया बही सजीव और सच्चिदाभिनी है । आचार्य इमरी
प्रभाव हिंदी ने कबीर की भाषा के संवेच में लिया है— ' जाय पर बहीर का
जवरदारत अनिहार का । व बाणी के बिजोदर से । मित बाण को उम्होने मिन हा
मे प्रवत करमा काहा है उसे उही रूप में जाया से बहलवा लिया है—

बन गया है तो संभव सीधे नहीं तो बरेबर देकर । माया कबीर के सामने लाचार सी नजर आती है । उस में मागों ऐसी हिम्मत ही नहीं कि इस मगरबाह कदम की किसी क्रमबद्ध को माही कर सके । और अच्छे बड़ामी को रूप देकर मनोवाही बना देने की ऐसी ताकत कबीर की भाषा में है वेनी बहुत कम केसों में पाई जाती है ।^१ कबीर की भाषा के विषय में आचार्य द्विवेदीजी का यह कथन बहुत अच्छे में अच्छा की भाषा पर भी पड़ित होता है । वस्तुतः अच्छा की भाषा कबीर की भाषा की परंपरा का ही प्रतिनिधित्व करती है । दोनों की भाषा की संतःप्रकृति एक है और दोनों की अस्मिद्विधि भी संवदा स्वामाजिक और अग्रवत्प्रसाधित है । दोनों की बोली में अनेक कोशिकों के स्रवों का मेल है, और अनगुन होते हुए भी दोनों की भाषा में असाधारण आकर्षण और प्रभाव है । दोनों में ही सामाजिक भाषा का अन्वयन नहीं किया जा । फिर भी उन दोनों की भाषा में व विशेषार्थ देनेमान है अनेक ऐतिहासिक महत्व है ।

आचार्य रामकाश झाकने कबीर की भाषा को 'सपुच्छी' कहा था । सपुच्छी से उनका अभिप्राय था वह 'पंचरंगी मिछी सुखी भाषा' जो परंपरागत सामान्य कन्न भाषा से भिन्न है और जिसमें राजस्थानी, पंजाबी प्रभु अरबी कड़ी बोली सब का मिश्रण है । जहाँ तक इसके सामान्य कन्न म भाषे भिन्न वा मिश्रित होनेकी बात है, जहाँ तक इससे किसी का कोई मतभेद नहीं हो सकता । किन्तु यदि इसका वह भवे समझा जन्म कि वह देश के विभिन्न भागों में विद्यमान करने वाले साधुओं द्वारा पड़ी हुई कोई कृत्रिम भाषा है तो इसे स्वीकार नहीं किया जा सकेगा । श्री पुरुषोत्तमदास जीवास्तव ने इस भाषा के क्षेत्र में ठीक ही लिखा है कि " न तो वह केवल साधुओं की भाषा है और न कोई भाषाओं की मिश्रण सुझा कर बगार्ई" हुई । वह भी जलनी ही प्राकृत है जिसकी उस समय की अन्य वैद्यभाषाएँ । मेरे केवल यह है कि अन्य वैद्यभाषाएँ अपने सीमित क्षेत्रों की बोसिर्वा की पर कबीर की भाषा अपि काश्च में प्रयुक्त 'पुरानी हिंदी' नहीं थी फिर भी उसी की अंति प्रकरात से पिछार तक और पंजाब से दक्षिण तक बासी और समझी जाती थी । पंजाबी लट्टी में वह आज कल की हिंदी लट्टी बोली का प्रतिनिधित्व कर रही थी ।^२ इसमें कोई संदेह नहीं कि इस देश में कोई न कोई ऐसी एक भाषा

करेव रही है जो सारे देश में समझी जाती थी और अतर्जातीय व्यवहार का माध्यम थी। जिन तत्वों ने इस देश को एक राष्ट्र बनाये रखा है उनमें इस साहित्यिक भाषा का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण रहा है। डॉ. सुनीति कुमार बट्टी ने प्रकाशान्तर से इसी तत्त्व का निर्देश करते हुए लिखा है—

हिंदी कम से कम तीन हजार वर्षों की एक वारा—एक चिन्तितिक के अंग में आ रही है। हिंदी एक प्रवाह का परंपरागत बहा है—अनामक सामने आकर लगी हुई कोई नई चीज नहीं है।^१ अभिप्राय यह कि 'हिंदी के अति प्राचीन रूप को वैदिक, प्राचीन रूप को संस्कृत पूर्व मध्यकालीन को पालि मध्यकालीन को मागधी, उत्तर मध्यकालीन को अपभ्रंश एवं आधुनिक रूप को हिंदी कहते हैं। कबने का तात्पर्य यह कि जिन भाषा का साहित्यिक रूप केर में सुरक्षित है, वही की उत्तराधिकारिणी हिंदी है।'^२ डॉ. कैमलचंद्र माडिया ने जिस कम से हिंदी को अंग-साहित्यिकता की वर्गीकरण प्राप्त हुई उस इस प्रकार दिखलवा है—

- १ संस्कृत ।
- २ प्राचीन खीरसेनी जिसका एक साहित्यिक रूप पालि ।
- ३ खीरसेनी मागधी ।
- ४ खीरसेनी की अपभ्रंश तथा वही का रूप मेर नागर आभ्रंश ।
- ५ राजस्थानी की पिंगल तथा पुरानी ब्रजभाषा ।
- ६ मध्यकालीन ब्रजभाषा—ब्रजभाषा एवं लखी बाबो की मिश्र सेनी ।
- ७ दक्कनी
- ८ राजी की लखीबाबा ।
- ९ आधुनिक नागरी हिंदी और उसका सुलभभाषा रूप उर्दू ।

इन कम में स्थान देने की बात यह है कि जिस अवधि में मध्यकालीन ब्रजभाषा का केवल परंपरागत सामान्य काव्यभाषा होने का गौरव प्राप्त हो रहा था उसी दिनों राजनीतिक और व्यापारिक कारणों से बालबाल ही एक ऐसी साहित्यिक

- १ बाह्य अभिनेदन तथा खीरसेनी भाषा की प्राचीन परंपरा पृ ८५ ।
- २ डॉ. हरदेव वाह — हिंदी साहित्य, प्र. खंड ३, १३३ ।
- ३ 'ब्रजभाषा और लखी बोनी का तुलनात्मक अध्ययन' पृ ७२ ।

भाषा का सम्बन्ध हो रहा था जो आगे बसकर उत्तर भारत में खड़ी बोली, हिन्दी में 'दखिनी' और गुजरात में 'गुजरी' कहलाई। निश्चय ही कबीर । भाषा की सार्वदेशिक सामान्य लोकभाषा का पूर्ण रूप हमारे सामने प्रस्तुत होती है। इसी को ध्यान कर आचार्य हमारी प्रशंसा द्विवेदी जी ने लिखा है कि कबीर की 'भाषा में परंपरा से बर्त आती हुई विशेषताएँ वर्तमान हैं।' यदि दखिनी की खड़ी बोली का पूर्ण रूप माना जाय तो कबीर की भाषा में दखिनी का पूर्ण रूप कहा जा सकता है। कबीर की भाषा ही एक ओर 'दखिनी' से होती हुई आधुनिक हिन्दी की ओर विकसित हुई है, तो उसी ओर बड़ी 'गुजरी' से होती हुई मध्य की भाषा के रूप में दिखाई पड़ती है।

जिस प्रकार उस कालकी कृत सार्वदेशिक भाषा सार्वदेशिक लोकभाषा हिन्दी में 'दखनी' या 'दखिनी' कहलाई, उसी प्रकार गुजरात में वह 'गुजरी' कहलाई। गुजरात में 'गुजरी' हिन्दी के कवियों की एक लंबी परंपरा है जो अभी तक चलती रही है। ये कवि प्रायः सुसम्मान हैं और इनकी भाषा 'दखिनी' का साथ बहुत ठान्न रखती है। इन सब कवियों ने अपनी भाषा को 'गुजरी' ही कहा है, 'गुजरी' का प्रचुर साहित्य चीरें चीरे प्रकाश में आ रहा है। गुजरी के असाधारण उपलब्ध कवियों में सब से पुराना नाम डॉक्टर बहादुरीन बाबल का है जिसका काल ११२ हिजरी अर्थात् १७३० ई के आसपास है। इनकी रचना का एक उदाहरण दिया जा रहा है—

मैं बाबल बाबे रे इसराएल छाने
मंडल मन में भगके, रबाब रैय में भगके
सुखी बन पर ठगके
मैं बाबल बाबे रे इसराएल छाने ।

इस परंपरा के दूसरे कवि हैं काजी महमूद हरियायी जिसका समय १७१ हिजरी अर्थात् १७६६ ई के आसपास है। इनकी रचना का भी एक उदाहरण दिया जा रहा है—

पाँचो बख्त नमाज गुजारें बायस पाँच कुरान
काबो हमास बोली सुक साँचा राखो हुकस्त ईमान ।

इस वर्णर के सबसे महत्वपूर्ण कवि शाहजमी सामान्यी प्रणीत होते हैं
 भिन्नका हीमान भव भी इस प्रवेष्ट की पर्यवसान सुखकमान जनता में बहुत
 मोक्षप्रिय है। इनका समय १९ हिजरी अर्थात् १५१५ ई. के आसपास
 है। इनकी भाषा अजिबोस साफ-सुथरी है—

कही ना मझू हो कटावे
 कही सा लेका हो दिवावे,
 कही सो खुसरो साह कहावे,
 कही सो खीरी हाकर जाव ।

अजामी की या हिन्दी कविता प्रस्तुत संग्रह में संघटित हैं उनमें अजामी
 और 'मजमा' की भाषा का बोधा 'गूजरी' अर्थात् गुजराती कही जाती
 हिंदी का है। बीच बीच में किसी किसी पद में अजमाका का विभक्त मिल
 जाता है, पर भाषा की प्रकृति प्रचलितवा कहीबोली की ही है। अजामी के
 मजनों में कहीबोली और अजमाका दोनों ही प्रकार की रचनाएँ मिलती हैं।
 उनकी सादियों तथा संततिवा 'मज्ज' की भाषा की प्रकृति प्रचलितवा
 अजमाका की ही है, पर कहीबोली का रंग बीच बीच में झटक ही जाता
 है। इन सब रचनाओं पर गुजराती का गहरा प्रभाव भी अतिष्ठित होता है
 जो अनेक स्वाभाविक है। त्रिभ प्रकर कबीर की भाषा में केवल सज्ज ही
 नहीं अनेक भाषाओं के किताबत करकबिहादि मिलते हैं, कही तरह अजमा
 की भाषा में भी कहीबोली प्रभ, राजस्थानी गुजराती वंजाही अरबी, फारसी
 आदि अनेक भाषाओं के सज्ज, किताबत और करक के बिह मिलते हैं।
 अजमा की कही बोली भाषा के अज्जवन की कही महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त
 करती है। स. १९७० के आसपास रचित 'कुतुब सतम्' नाम की या
 मध्यममय रचना मिली है उसमें प्राप्त कही बोली के कथों के साथ अजमा
 की कही बोली के कथों की बहुत अधिक समानता है। 'कुतुब सतम्'
 के ही समान अजमा की बोली में भी प्राचीनता और अर्वाचीनता का संभाव
 तथा मज्ज के स्थान पर दीर्घ स्वर और दीर्घ के स्थान पर लघु स्वर का
 प्रचुर प्रयोग मिलता है। इनमें मूलकाविक दृष्टि कथों के प्रयोग में भी
 बहुत समानता है। निम्नलिखित कुछ उदाहरण इन विशेषताओं को स्पष्ट
 करते हैं—

(१) जे सो आप विचार देका,
सुनको जीव अवल कहौ बा ?

सुरत सो सौई सहेकु सहेन मुँन कीनी
आपपना होवा आप माहा ।

जीवम ईसव वि तेरेका हे
इस्मे मेरा क्या काने ?

भेल इकारत इतनी हे
जो सुनत मीने जात लागे ।

(२) साँव मारने से मरज है रे,
हर तोम्बा, बा नाम मरे ।

सौधी बात समझ भया ।
आका अवल क्या जाता किये ?

सई तो हासरा कुसर है रे
जो कोई होन तालीब साचा,

कसो पतो सुं रीझ जाये
भेसा कहाँ है कादर क्या ।

(३) मनवाला निराशिन बने
भीर भंवा अटक सर चढ़े ।

भई की अवल जेई भया
कहि न आये बहुत पड़े ।

मनवती हाते मज हुवा
कीया करमा ठर पन्ना ।

बिनु बोरी मे पुर छेच्चा,
कल्या पावा जेही बा न भया ।

मेरा बिकार गूबरी से जका की भाका एक का बिकासकम दिखाने का था। पर बीच की कुछ कड़ियों के अभाव रहने के कारण इस श्रवण में वह सफल पूरा न हो सका। इसलिये जका की भाका के अध्ययन की सफलता मान कर वहाँ छेदों में विरोध किया गया है। पुनरागत में मिले गये हिंदी साहित्य की वो सामग्री जब तक उपलब्ध हुई है, उसमें सरसरी तौरसे देखने पर भाषा संबंधी दो गड़बड़ों परिलक्षित होती है। ज्यों और हगरी कड़ियों की रचनाएँ ब्रजभाषा में हैं जबकि प्रकाशना अवस्थित है, दूसरी ओर सुसम्मान कड़ियों और पंक्तों को बाकी की गड़बड़ कड़ी बोली की है।

इस छोटी सी प्रस्तावना में मैंने जका की महिमा के सूर्य की केवल शीपक दिखाया है। सूर्य को शीपक दिखाने से सूर्य की महिमा में कुछ भ्रम ही न होटी हो, पर शीपक दिखानेवाले को जपाचना का आश्वासन तो मिलता ही है।

बन्धुप्रकाश सिंह



श्री एक लक्ष रमणी

'जगत' कहो ! जगदीश कहो ! माया कहो कोई काल
 पूरण ब्रह्म गाइये ही ! 'वैत' नहीं कोई काल । पूरण ।
 सत् जेता, ठापर कसि चारु न्यारे चाल
 सदा मते विज्ञान के राम रमत एक साल । पूरण ।
 उत्तम मध्यम अधमाधम, गौ, ब्राह्मण, बडाल
 सत् स्पर्श के मते, सातु बात एक साल । पूरण ।
 मद्र, मरवाड बनारसी स्वपचगृह देवाल
 सदा मते आवाण के, शुद्ध अधुद्ध एक साल । पूरण ।
 आठम चौदश एकादशी नहीं गणत देश काल
 सदा मते ज्युं मुर्यु के सकल तिथि एक साल । पूरण ।
 भागिक्य, मोती हेम, बीट, उत्तम मध्यम निर्मात्य
 सदा अर्णव के मते, त्याग जोग एक साल । पूरण ।
 धृत, वावानल, हिमगिरि, भाट, उघाट, आस, माल
 सदा अनिल के मते, सब अबनी एक साल । पूरण ।
 घट बड़ होय दिन, रेण की, ग्रीपम श्रुतु, क्षीत काल
 सदा मते ज्युं अक क, सकल श्रुतु एक साल । पूरण ।
 नील पीत, मरकत मणि ! श्वेत मिश्रित अरु लाल
 स्फाटिक के मते सदा, असंगता एक साल । पूरण ।
 रिपु, हितकारी सबको वहे, छठ, बाहाना, बाल
 सदा हुताशन के मते, सकल वपु एक साल । पूरण ।
 उठल दग्ध उत्तम मध्यम, स्वर बीणा, स्तुति, गाल,
 सदा मते ज्युं घोष के, सकल कान एक साल । पूरण ।
 श्याम, सफेनी, पीत पट, अरुण भात, हरियाल
 सदा मते ओर्छाहि के, सकल रंग एक साल । पूरण ।
 खड्ग हने छाहु, थोर को ! सबको उपारे डाल,
 सदा मते आयुध क, रक्षा हुनन एक साल । पूरण ।

अमृत हस्ताक्षर गंगजन, है मूत्र मणी गसीबास
 सदा मते इन्दुबिम्ब के, भासन का एक साल । पूरण ।
 चंदना ओर चोरी करे, चंदना खोनी निहाल,
 सदा मते वो दीप क, दिवावन को एक साल । पूरण ।
 चंद सूर, गिरि, गह्वरा, घाईस, सर्प, मराल
 सदा दर्पण के मते प्रतिबिम्बन को एक साल । पूरण ।
 शकराका भीफल कीया कुछ खोपरा खास
 सदा रसना क मते सकल खांड एव साल । पूरण ।
 बज्रका करी मृग डेहेकीजा खटायो खतपास
 नर्तक्य नरमते सदा, पुष्प, पशु एक साल । पूरण ।
 सूर्य प्रकाशत जगत को, तिमिर करत बेहास
 जमाना मते सदा, रेन रवि एक साल । पूरण ।
 सप डस्यो कोउ वग को पाव पाणि मुख भास
 सदा मते ज्युं सहर के चढ़ने को एक साल । पूरण ।
 कर्म, धर्म, सब, मानीगता धर्म जरि सब खास
 तत्त्वदर्शीमते सदा, सब है भास पपास । पूरण ।
 ओडकटाह भेदी जमी, निर्मल सुरत नीराम
 ऐश्वर्यता सत्त्वभान का तार्ये सब एक साल । पूरण ।
 दखौं बघा जा भीतरे, अन्यतार्ये विशास
 तहां मतामस काहे का ? तार्ये सब एक साल । पूरण ।
 ज्योहां अकुर डम्या नहीं, तो पत्र पेड कहा खास
 सत् मतामस बाहेरा । तार्ये सब एक साल । पूरण ।
 मुख नहीं मनसा मही तो कहा रंजरी फास ?
 तहां कौन कहे कौन को ? ऐसासा एव साल । पूरण ।
 द्रष्ट, द्रष्टा, दर्शन नहीं स्थाहां अत्रे भास
 स्वसंवेद्य भी कहल को ऐसासा एक साल । पूरण ।
 धये दृष्टांत सब ही दीये ! व्यय भस भरास !
 भया भयये भस को, ग्रहणवासा निहाल ! पूरण ।
 इति भी अथाहस एवमधरमणी संपूर्णमस्तु ॥

कुंडलियाँ

तत्त्ववेत्ता तत्त्व ज्ञान के, पद आरुढ़ भये अने ।
 पद आरुढ़ भये अने, बेत ऐसे सेवा के
 सूर सुभट मडे मोम, सबस्य बोसत वाके ।
 'आपा' गया बिलाय काया का वस्तु न कारन
 'लिंगी' बिना की बाच, साच । नहीं तरन न तारन ।
 सहज सुभाब 'आपा' बिना, अखा । अँसीसी सेन
 तत्त्ववेत्ता तत्त्वज्ञान के पद आरुढ़ भये अने ॥ १ ॥

तत्र पुरुष का संग, लिंग का सख न राखे ।
 सख न राख लिंग, रग वाके सब फिरही ,
 पर्यु मनी मनिहार मारुका भूल सोर रही ।
 असो ह्रींग को बास कणक को सत्त्व गुमावे ,
 मणी लागे ते पप, मोहोर मुख शहर गुमावे ।
 श्रीज मंत्र सारे अखा । पूरा मर जे जे भाख ,
 तत्र पुरुष का संग लिंग का सख न राखे ॥ २ ॥

जीव अपनो अज्ञान, मान बेहेत है मिथ्या ।
 मिथ्या बहुत है मान, कान गुरु-ज्ञान न सायगो ?
 भयो न भूल उखात ज्योति आत्मा नहीं जायगो ?
 भयो भुवन सो तीन ! कोनो नहीं कबहु विषारा ।
 मैं सो कोन, कवन सो ये है पिंड पतावम हारा ?
 बिना वस्तु बिचार, अखा दर्शन बहु पया ।
 जीव अपनो अज्ञान मान बेहेत है मिथ्या ॥ ३ ॥

और नहीं उपाय सहाय्य बिना गुरु शानी !
 शानी है सा सहाय्य कसा सो बेत अनेरी ,

ज्यूं बंध मलाका मेसी, पडस उतारत फेरी ।
 नेना निरमस होत, उद्योत आरम होय अैसे,
 अनुभव होत साक्षात, पात पण रहत न सेसे ।
 निज प्रतीत उपजे अखा ! पूणता अपनी मानी,
 और नहीं उपाय सहाय्य बिना गुरु ज्ञानी ॥ ४ ॥

करनी सुख विचार, पार नर तत्क्षण पावे ।
 पार पावन की विद्या सुख येहि अनुभव कीजे,
 जेतो देहि विचार, मार सब देह तिर दीजे ।
 मैं तो अव्यय, अनुपम सदा, अनेपक साक्षी,
 पाँच पचीस सेना ये चासत मुक्त माखी ।
 प्रकृति पुरुष विवेक छेक लूँ नीचे आवे,
 अखा ! ये परनासिका, पार नर तत्क्षण पावे ॥ ५ ॥

बध मोक्ष नहीं, प्राय भार अपने तिर लेवे ।
 अपने तिर लेवे अेह है, सब देह का करनी,
 पाया बिना विवेक मानत आपना आचरना ।
 देह मलिन जड रोग भाग सुख दुख को भाँडो
 आरम अखंड अव्यय, अविनाश प्रकार कछ छुप्यो न छना ।
 अखा ! बात विचार, देह बाप देह तिर देवे,
 बध मोक्ष नहीं प्राय भार अपने तिर लेवे ॥ ६ ॥

स्वे स्वरूप भली भाँति जान्त नर येहि विचारे ।
 विचारे अैसे धरण धरण से सूक्ष्म नीरा,
 नीरतें सूक्ष्म तेज, तेज से सूक्ष्म समीरा ।
 समीर तें सूक्ष्म व्योम व्योम तें मूढम सुभावा
 सुभाव तें सूक्ष्म अर्द्धमात्रा मात्रा तें मूढम अबाध्य कहावें ।
 यहि परिपाटी आपत अघा । मन बरके धारे,
 स्वे स्वरूप भली भाँति जान्त नर अैसे विचारे ॥ ७ ॥

देही नेहका विषेय छेक लूँ बर सो ज्ञानी !
 ज्ञानी परत विवक, आप विचारत न मारो,

सबको जीवन आप आपको मा कोई सहारो !
इन्द्रिय दश, दश देव, भूत पंच, चतुष्ट ये माया,
समात्रा समेत, कह्यो सब कारन काया ।
प्रवक्तक सबन का अखा । होत न क्यहु मानी,
प्रकृति पुरुष विवेक, छेक सूँ करे सो शानी ॥ ८ ॥

अैसे करत विचार सोहि नर जठर न आयो ।
जठर आया सा कौन ? अबनीर्ज अबनीर्ने जमी,
नीरे जग्ग्यो नीर, तेज तेज को करणी ।
पबने जग्ग्यो पवन, गगन कौना आकाशा,
अचरन सो है यह, "देह" देखत भयो साँसा ।
अखा ! छुट बिचार बिना अैसे सब बोल्पो गायो,
अैसे करत विचार, ! सोहि नर जठर न आयो ॥ ९ ॥

आप पूर्णता कीहैं बिना कल्प दूजी बाता ।
कल्पत दूजी बात आप भूसे की वानी,
दृष्ट पदार्थ जेह मूरत ही जे जे ठानी ।
चित्त चेतन को अंश, धन ताम गरबावे,
मण तबि मे हेम, पड़्या एक हाथ न आवे ।
अतर आपा भूल के फुसफासा, सूँ राता,
अखा पूरनता चीन्हें बिना, कल्पत दूजी बाता ॥ १० ॥

मूस, तोल, रूप, रग, चिकनता कछु न जाता !
कछु न जातो हेम खेम मित अपनो और,
भड़त मांजत है घाट निरय,, दुख पावत भोर ।
कारज, कारण एक, नेकता होत न श्यारी,
कारज बुद्ध सब रूप कारण सत्ता तिहारी ।
'भित्त बिद् ! भित्त ना होत, पोत को देखत नातो,
मूस तोल रूप, रग चिकनता कछु न जातो ॥ ११ ॥

अतरनी अविसोब बाहेर रूप को साल सब !
बाहेर रग के साल नाम अर रूप के रागी,

धयो ना पीत प्रकाश परातीत देख्यो न आगी !
 कम्पत दूर किरतार आप कर्म के बंध बंठा ,
 मेधी बसी अनादि ! जहाँ का कामें बंठा !
 शिख धूरा पूरा मुख भिसे अन्धा ! योग हाय तब
 अंतरली अबिलोक बाहेर रूप के सास सब ॥ १२ ॥

जानीनर परमेश्वर सँ रस बसते बरते सदा !
 सदा रहे रस रूप आप ना देखे असमू
 मुकुर मध्य भास्व ! तुज, विष ना असमू बसमू !
 तुज बसना मुजबास फास तुज बोसैं बोसूँ ,
 सब तेरा येन येन गये करी भूसूँ !
 नित्यानित्य जानो अन्धा ! तम गुरुप माने मुदा
 जानो नर परमेश्वर सँ, रस बसते बरते सदा ॥ १३ ॥

सहकारी साक्षात् पूरा नरते पद रह्या !
 पदे रह्या परमाण अद्विषत आशय अचस ,
 सोक चीद संगी माय पूण पवतें निदबल !
 ज्यम पारस परमे छात साक्षातत सोनुं पाये
 तेम प्रकृति बरे चैतन्य अगते ते माही समाये !
 माया केरा रग माया माह्या यमा मगा ,
 अन्धा ! आपो पू जन दूरा नरते पदे रह्या ॥ १४ ॥

सबम कुरम नू सार, बार समसन माँ जानो !
 समसनमा बहुवात मत हाय पुख्य बननी
 बोलन हारो आप नीचू सर्व दावा मननी !
 आधी रहे साक्षात् तत्कर लंघय गुनिया
 भरम बबध कर दूर जे जे रूपि मुनि जन समिया !
 जन स्वे पद वणा अगा अनेडा दूर आणो
 सबम ह्यामनुमार, बार समसनमा जानो ॥ १५ ॥

जिना करे बिचार धार बधन नर पाये !
 बधन पाये जन्नु, तन्नु नब पाये अंतर ,

हृता न पिङ्ग प्रह्लाण्ड, प्रीया रहे अर्घ्यतर ।
 देखीतो स्पृश हार, सार सूक्ष्म मध्य अैसे
 त्यम ठे त्रिगुण व्यापार, सार प्रवर्तक तसे ।
 अस्त्रा ! अने अने छे, गुरु वधन उर जामे
 बिना करे विचार, भार वधन नर पामे ॥ १३ ॥

बीजो नयी बोसनहार, अज्ञान ह्मसे बघाणो !
 ह्मसे बघाणो अन्त फरी नित नित पामे
 शाने बावे पोस ? रह खसखस ने आमे ।
 उग्योघाम अफोण, ज्याहारे जडता आवे,
 बाची खस-खस खाय, नातो शर अणावे ।
 आत्म बीजे रहे अस्त्रा ! स्वे सचराचर आणो
 बीजो नयी बाधन हार, अज्ञान ह्मसे बघाणो ॥ १७ ॥

आत्म अर्क उगिया बिना, कहो उद्योत किनको भयो ?
 भयो नहि उद्योत त्यजी ने श्रुष्ट नी स्वारी,
 भयो नहि उद्योत, सूर्य से अर्घ्या घारी ।
 भयो नहि उद्योत, जीने आगे जुग जुग विचरणो,
 भयो नहि उद्योत, जीने अर्णव घूट आचरणों ।
 भयो नहि उद्योत, जीन कैसास अंक में मिल्यो,
 अस्त्रा अर्क उगिया बिना, कहो उद्योत किनको भयो ॥ १८ ॥

ब्रह्म कवच पहेन्ये बिना, कास सताइ का वध्यो ?
 वध्यो ना शिब, ब्रह्माम, उद्यमण नबग्रह तार
 शेष गणेश, विनेश, यक्ष, किन्नर, नर सार ।
 इन्द्र, चन्द्र नरेन्द्र, ठोर दिवीके बेत्ते,
 वीर दश विगपास, जाहेर पेगम्बर जेत्ते ।
 जे घरी आया काया सो सब माया संग रभ्यो
 ब्रह्म कवच पहेन्ये बिना, कास सताइ को वध्यो ॥ १९ ॥

सर्व अंग शम बिना, जीव अंजास जातो नहीं !
 जातो नहीं अंजास मान बड़ाई मन में,

अंतर रहत सुकाइ, ध्यूँ दामिनी छुपे मन में !
 अवसर देत दिखाय जब पावत प्रसंगा,
 स्मूँ निगी नर एह देही के आवत संग।
 अंतर में भया सीन, सो अंग अंग आतो नहीं,
 सर्व अंग दामे बिना जीव जंभास जाता नहीं ॥२०॥

खरी रति उपजे बिना खरो बारज सरतो नहीं ।
 सर खरा तब काय, बिरह अंतर में धीके
 ग्यु पजावा आग्य साल रग हावे नीके ।
 ग्यु उघाइ छात काष्ट, मसीमागर हाल तेम
 जमे पारा गुढ प्रदत्त धान उमागर ।
 बिरह वैराग्य भातुर खरा ताके बिन पाँय टिके नहीं
 खरी रति उपजे बिना, अखा खरो कारण सरतो नहीं ॥२१॥

परमेश्वर का पायेबो ऐसा सा जानत नर !
 नर जाण निग्घार, अहकार पमाये अंतर
 बघनी हाय के ना होय निषिप्त गति हूँ अतर ।
 उपजन नहीं अदेम ग्रहे विन जसा तेसा—
 न बहे ईदबर—जीव अतर गया अदिमा ।
 अखा येना वाजबा छड सा बाजत गिरा
 परमेश्वर का पायेबा ऐसा सा जान नर ॥२२॥

पिड पिड परतीत माने सा ही मूड नर ।
 नर बरे निरघार, जीबत ही ए देह को
 तत्परति में मार, समुदाय एह छेह का ।
 उपजन बिणसन काय प्राय पिड को है घरम,
 ये सो इन्द्रि मुमाब आपे सो पद है परम ।
 ऐमो जानत है अखा ! दह छने हि एह पर,
 पिड पिड परतीत, माने मा ही मूड नर ॥२३॥

अबब अखा ! सो जान है एम हि बरतन मना ।
 बरतन नहीं देह संग, ध्यान नहीं राखत दूज

मदर रहत अमान, अकल कोई अनुभव सूझयो ।
 देह इन्द्रि व्यापार, आपत्ते देखत म्यारो ,
 धूमि धूम चीन होत सूर, सूर सगे नहीं विकारो ।
 देह बिकार देह शिर दीयो, नहीं शोक मानत मुदा
 अजब अखा । सो जान है, ऐसे हि वरसत सदा ॥२४॥

ज्ञान भक्ति अरु जोग के, मारग तीन अरु तीन लक्ष ।
 तीन लक्ष उरघार, संसार तें रहत बेरागो ,
 अंतर 'आपा' हार तत्त्व सु रहत है सागो ।
 योगी 'आपा' हारत जा लहे सागत तारी ,
 भक्त कृ 'व्यव्याता' य जब हि मिसत बनवारी ।
 ज्ञानी कृ सब विचार अखा । ना रहत पक्षापक्ष ,
 ज्ञान, भक्ति अरु जोग के, मारग तीन अरु तीन लक्ष ॥२५॥



धुआसा

१ राव काफ़ीनी

आयो हे फागुन मास खेसो खेस आतम आप में हो ।
 नाहि दुरघो आतम के खाने यत भटकी बन कज ।
 ज्याकु श्रुति गावे संत सेना देख सको तेज पुज ॥ जमा
 रय आई द्रुम भोरे मधुकर करत गुजारव भाय ।
 रूप बिना रूप आवे प्यु प्रगटघो, तो कैसे अव्य धाम ? खेसो
 ज्याकु रूप रग न रेखा सो तू आप्य अकाल ।
 निर्गुण सो गुन रूप भयो है मोक्ष सकल लोक पास ॥ जमा
 पंच पंच की पल में देखी आप उपावन हार ।
 भये भाकाम उत्तरय लय पावे आपमें आप बिस्तार ॥ जमा
 मन सो मन नही बिल ना बिल नही, बुध्य नही महकार ।
 पंच सो पंच नहीं हैं आपे लेखा तम सोष बिचार्य ॥ खेसो
 नाही बिपे पंच भूठ न इग्री है हरि आव आप ।
 सुरय बली जना उर्य अंतर्य तब रहे जमाय ॥ जलो
 काटि पंचास्य कहै जीव बुझि, रहे कल्प की कोटय ।
 गगन पाताल भटके भूसे आतम है आप आट ॥ खेसो
 अंघ घघ आतम बिन जानो देखी गाबो धुआस्य ।
 बारा मास बसत अखा बहे आप में आप को पार ॥ जमा

२ राव काफ़ी

एत भया हरि आप अजब गति राम की हो ॥ एक ॥
 जमा पंच तख तू प्यारे, तू गुण इग्री माय ।
 तू प्यारे ना म्यारा परब्रह्म ज्यों अम्यर भद्र बसाय ॥ अजब
 ना मरे जीव ईश्वर पुनि मरे न मरे ए पंच भूठ ।
 प्रगट्या ना पिछ्यास पायें, एही जमा अद्भुत ॥ अजब
 दृष्ट पनारय एती माया अद्भुत पदारथ राम ।

ध, ध्याता माया सब तेरी, तुम हो पूरन घाम ॥ अजब
 अजहूँ होई तुमकु पकर म आऊँ, ता तुम न मिसो त्रिलोक ।
 हूँ तुम बिन आराम निरतर, त्याहाँ हरि रोकाराक ॥ अजब
 बिश्व सा बिद्व नहीं वस्तु आवे ज्यु सविता विपे किण ।
 बिन मूर ज्यौ रक्षि सो कहँसि सब तेरे आचरण ॥ अजब
 पद्य तमारे तम ही हा, हरि हूँ तू महि परमान ।
 निज निर्धार करो भुज रूपे काहा कऊँ तम ज्ञान ॥ अजब
 जे घट उपज्ये गत्यमत्य एसी सा मर स्वेना गान ।
 सब घट सहज स्वस्वी स्वामी तमते कोई नहीं जान ॥ अजब
 करता हरता धरता भरता, धुति गाए बोहोत प्रकार ।
 सस्वरूप सचराचर बिद्व जन दास का पूत सोनार ॥ अजब

॥ राग काफ़ी

हे हरि हाज हजूर गुरु की दृष्टे याहामी ए हा ॥ टेक ॥
 अह ममता की ओट भई है, मिथ्या कोट बरजोर ।
 अह छुटे से ज्यों का त्यों है सुर उदें गयो धोर ॥ गुरु की
 हेम हुंकार गर्भो तावन बे जब प्रकटया ते सत ।
 रतम पसटी अकोर ओर सब, म्यला हे सद्गुरु संत ॥ गुरु की
 मन पवन उडत सुखकारी, सीतल मन्द सुगन्ध ।
 नन-कमल बिकसे बिष्य बिष्य के, भागा भरम भे धंध ॥ गुरु की
 उमग और आनंद ही औरें, औरे दसा और पास ।
 और ही रीत नीत कसु औरे, नवल खेस नव स्याल ॥ गुरु की
 साह इसा खसन सागो, आप आभास सुरग ।
 सहे बे शक्ति सामर की लहेरी, नव नव तान तरंग ॥ गुरु की
 दृष्टादृष्ट मध्ये ही मनोहर, जमत हरि फाग ।
 हा हा होरि कहा बिद शक्ति, उडत शब्द पराग ॥ गुरु की
 दखन लागे सनद सनदन धिब, धुक जानी भेब ।
 आपा पर बिन रमत निरतर, बे सुख दुग्मध देव ॥ गुरु की
 गुरु गम ते मन यारा छाटे, ता समझ समझ स्वराल ।
 सदा अखा फुल्यो रहें, अनुमेचित चिद्रूप विसाल ॥ गुरु की

जकड़ी

य मनका कैसा इतबारा रे !

ये मनका कसा इतबारा रे ?

य मनक कोई मत रहा मारा रे !

य मनका कैसा इतबारा ? ये मनका०

छिन छिन बंग पसट ये मनका !

छिन इतबार नही ये तनका !

तारों अर्थ होब क्यों जनका ?

य मनका कसा इतबारा ? ये मनका०

आ ही मशाला है वा पानी

तिसका ता जाब सफ ना जानी !

मोह अज्ञान कीरतकी बानी !

ये मनका कसा इतबारा ? ये मनका०

काय कर्म बाइस का छाया !

तिसको सन् मान माह माया !

बस छुकी ! और बाय बिभाया !

ये मनका कैसा इतबारा ? ये मनका०

मनु और जुठ न होब पापा !

तिसका है ना मानु मापा !

आप अग्रा समज्या ने अमापा !

य मनका कसा इतबारा ? ये मनका०

‘अगम अगोचर आशय मेरा’

अगम अगोचर आशय मेरा,
नहीं चारा मन, बुद्धि करा !
अगम अगोचर आशय मेरा ! अगम०

य संसार है मनका माम्बा
तिसरें निज घर जात न जान्बा !
मन छुटया, तो नाही बेगाना
अगम अगोचर आशय मेरा ! अगम०

सबको जैसे मन करे पीछे !
तात दुमी बुनियाको हप्पे !
तो क्यों निज घर सो नर प्रीछे ?
अगम अगोचर आशय मेरा ! अगम०

‘आपा’ ‘पर’ बिन जैसा तैसा !
तिसको रसना क्यों कहे ऐसा !
युं सुपने बिन सूता जैसा !
अगम अगोचर आशय मेरा ! अगम०

जो घर निज उपजी परतीता,
सो कछु जाने तहाँकी रीता !
नाहीं सामारा द्वैताद्वैता !
अगम अगोचर आशय मेरा ! अगम०

सहजे सहजे साँसा सत्य हुआ ।

सहजे सहजे साँसा सत्य हुआ ।

जैसे मसीहों बोध्या सूझा

सहजे सहजे साँसा सत्य हुआ । सहजे०

बाँव पाँव पर नहीं नहीं बध्या

बिन विचार पुकारे अघा ,

ऐसे जीव पड़्या अंध घघा ।

सहजे सहजे साँसा सत्य हुआ । सहजे०

प्रगट पारधि माँझ्या पाया ,

इहलाक, परमाक की आशा ।

न समझे मर्म । न छूटे फाँसा

सहजे सहजे साँसा सत्य हुआ । सहजे०

वे ही जान माने सिर छाटे

काई बहे अमामी माटे ।

(ता) ठुठुडि कीर ताक कर बाट

सहजे सहजे साँसा सत्य हुआ । सहजे०

सहजे उपदेश बरे जन हरिका

सहजे स्वभाव पड़्या मा मरवा ।

पियु मानारा नीर सहजे मागर का

सहजे सहजे साँसा सत्य हुआ । सहजे०

मूरख बोध्या उल्टा रे भाजे !

मूरख बोध्या, उल्टा रे भाजे ,
तिसके हृदे, साजा क्यी राजे ।
मूरख बोध्या, उल्टा रे भाजे । मूरख बोध्या०

बावन बात्य बसे मुज प्यारा ,
मन, बाणी का नहीं तहाँ चारा ।
तब पाइये जब आइ अहकारा
मूरख बोध्या, उल्टा रे भाजे । मूरख बोध्या०

मूरख आपन कोटे पहिसा ,
बाइ करे उर लावे बेला ।
त्युं त्युं मन होता बाइ मैसा
मूरख बोध्या, उल्टा रे भाजे । मूरख बोध्या०

सधि सेंधी लावे हांसी ,
गल माया की बेटी फांसी ।
मूं विचारे मोक्ष के बासी
मूरख बोध्या, उल्टा रे भाजे । मूरख बोध्या०

सत्य बातसूं आनाकानी ,
जिन् प्रीतम की बात न जानी ।
मं ही सोनारा घीठ निशानी ,
मूरख बोध्या उल्टा रे भाजे । मूरख बोध्या०

कुमतिया कब कूड़ी रे लावे ।

कुमतिया कब कूड़ी रे लाव ।
और उवखे अपना गावे ,

कुमतिया कब कूड़ी रे सावे । कुमतिया •

मूरख मर्म न जान साचा
खेस्या चाह न बुझे माँचा ।

तिसरें खेस पड़े सब काचा ,

कुमतिया कब कूड़ी रे सावे । कुमतिया •

पार पावन की पेर न बूझे ,
मूरख को मति उमटी सूझे ।

मने नहीं और सबसों भूझे ,

कुमतिया कब कूड़ी रे सावे । कुमतिया •

गुण छोड़े और जबगुन पाये
पर मुख देखी जले सा तापे ।

वा मूरख अपने पर कापे

कुमतिया कब कूड़ी रे सावे । कुमतिया •

ये लाके बोझव है तिमका
पियु पहिछान हुआ नहीं जिसका ।

न जाने मोनारु सा हरिरम वा

कुमतिया कब कूड़ी रे लाव । कुमतिया •

साचा साजन मेरा रे ।

साचा साजन मेरा रे ।
 तुज आवत गया अँघेरा रे ।
 साचा साजन मेरा रे । साचा०

जब आया मुज सासा रे ।
 पाया प्रेम का प्याला रे ।
 तब नौखड भया उजाला रे ।
 साचा साजन मेरा रे । साचा०

जब देख्या मुज प्यारा रे ।
 तन मम सँ हि पखार्या रे ।
 हूँ मूम गई करत जोहारा रे ।
 साचा साजन मेरा रे । साचा०

जब दी प्रीतम गले बाँही रे ।
 सब काम रह्यो ठाँही ठाँही रे ।
 हूँ देखू तो पिमु मुज बाँही रे ।
 साचा साजन मेरा रे । साचा०

जब कछु ऐसा हुमा रे ।
 मैं प्रीयम नहीं झूठा रे ।
 बिचे मखा क्या हुमा रे ।
 साचा साजन मेरा रे । साचा०

मेरा घरत भीत समूना रे ।

मेरा धूरत भीत समूना रे ।

मै पाया साथी जूना रे ।

मेरा धूरत भीत समूना रे । मेरा घरत०

जबका लाग्या हावा रे ।

हूँ हूँ निरदावा रे ।

तो प्रीतम माग्या बाहावा रे ।

मेरा धूरत भीत समूना रे । मेरा घरत०

मे सब ठण गण पियु तेरा रे ।

तुं भाव कर बहोतरा रे ।

हूँ मरूँ नहीं सी तेरा रे ।

मेरा धूरत भीत समूना रे । मेरा घरत०

अब दूई गई । तुं मिलिया रे ।

परगनिया तुं गलीगलियाँ रे ।

मेकमेक करे रसीली रे ।

मेरा धूरत भीत समूना रे । मेरा घरत०

तुं धूरत । ताहे मेरा रे ।

तुं बाजीगर । हूँ भरा रे ।

(ना) अच्छा भूम क्या तेरा रे ?

मेरा धूरत भीत समूना रे । मेरा घरत०

मेरा नैन सलूणा साथी रे ।

मेरा मन सलूणा साथी रे ।
मेरा मसपता मगस हाथी रे ।
मेरा नैन सलूणा साथी रे । मेरा नन०

पियूँ ! पसुप सतुज पर बारी रे ।
तेरी बात मुझीको प्यारी रे ।
हूँ तेरी ये मनोहारी रे ।
मेरा नैन सलूणा साथी रे । मेरा नन०

जिनको पियू । तू राखें रे ।
सो क्या क्या सौजन पावें रे ?
ज्या तू समुख हा जाव रे ।
मेरा मन सलूणा साथी रे । मेरा नन०

हूँ ता माहीं । तू ही सौई रे ।
मैं ता तेरी ऊछाही रे ।
ये दूई खेलन ताई रे ।
मेरा नैन सलूणा साथी रे । मेरा नन०

मुणा ! लटकनजी । मीता रे ।
मुज बिना तू रीता रे ।
बाजी बछा काण जीत्या रे ।
मेरा नैन सलूणा साथी रे । मेरा नन०

घन ! घन ! मेरा आज़ु रे !

घन ! घन ! मेरा आज़ु रे !

साब दानों आज़ु रे !

घन ! घन ! मेरा आज़ु रे ! घन ! घन !

तुं कीसी सरका नहीं मीठा रे !

मैं तुज सा कोइ ब दीठा रे !

सब जगमं तुं जेठा रे !

घन ! घन ! मेरा आज़ु रे ! घन ! घन !

तु नैन समूण मेरे रे !

और घन भाब खमेरे रे !

मा सब मीता ! तेरे रे !

घन ! घन ! मेरा आज़ु रे ! घन ! घन !

मेरा ब तु लाया रे !

नैं बहुबिघ सांग बनाया रे !

हैं तरा लटका पाया रे !

घन ! घन ! मेरा आज़ु रे ! घन ! घन !

जब तुंहि मित्या मुज मोही रे !

अब तुंहि है ! हूँ नाही रे !

ता काहो ! अग्रा बिम ठाही रे ?

घन ! घन ! मेरा आज़ु रे ! घन ! घन !

मेरा डोलन छलकर आया रे ।

मेरा डोलन डसकर आया रे ।

हूँ दूधे घोबूंगी पाया रे ।

मेरा डोलन डसकर आया रे ! मेरा डोलन०

हूँ आप सरीखी जीती रे ।

बोळ जग में हूँ जीती रे ।

हूँ एकमेक कर सीती रे ।

मेरा डोलन डसकर आया रे ! मेरा डोलन०

सब सही ठमें मैं रानी रे ।

जब सालन की ठकरानी रे ।

तैं राब्या मुँहूँ का पानी रे ।

मेरा डोलन डसकर आया रे ! मेरा डोलन०

बसा था मोरे हावा रे ।

शाही रंग में मिली जावा रे ।

मुज मिलते गया दावा रे ।

मेरा डोलन डसकर आया रे ! मेरा डोलन०

धूधगी मोसन की छाह रे ।

जब साँह मिल्या मुज छाह रे ।

तब उमग्या अछा जग माही रे ।

मेरा डोलन डसकर आया रे ! मेरा डोलन०

भम भीरु है री सदाका र ।

भम भीरु है रा मदाका रे ।

बतुर गयाना पाका र ।

भम भीरु है रा सदाका रे । भम भीरु०

अमानक हैं जगाइ रे ।

संजोग करा रम पाइ रे ।

नैन नैन मिलाइ रे ।

भम भीरु है रा सदाका रे । भम भीरु०

नैन मिला । हैं माजी रे ।

मेरे मन बस्या दाह राजा रे ।

तब उठी नव मत साजी रे ।

भम भीरु है रा मदाका र । भम भीरु०

अब इस मोति हैं गर्लू रे ।

धिरू र प्रीतम की गर्म र ।

पल हैं गियुका न महेलु र ।

भम भाग है रा मदाका र । भम भीरु०

तु प्याग न हैं प्यारी रे ।

नै परंपम कर मनुहाग रे ।

भाग बनुपा अछा भाग र ।

भम भाग है रा मदाका र । भम भीरु०

मुज कामिन का तू कामी रे ।

मुज कामिन का तू कामी रे ।

तू बहुस्त्री ! घननामी रे ।

मुज कामिन का तू कामी रे ।

मुज कामिन का तू कामी ! मुज कामिन का०

सटकाडा ! तू मीठा ।

तैं बहुविध सटका कीता रे ।

तू सबमें रसन दीता रे ।

मुज कामिन का तू कामी ! मुज कामिन का०

हेज दिया मुज सई र ।

मुख मुख नैन मिलाइ रे ।

तब ये सली पाइ रे ।

मुज कामिन का तू कामी ! मुज कामिन का०

मुज रूपे तू वासे रे ।

घन फरसे पियु डोले रे ।

कौन मशीके तासे रे ।

मुज कामिन का तू कामी ! मुज कामिन का०

मसपतली हूँ चालू रे ।

मनमोजे हूँ महारू रे ।

पियु है अखा के रूपारू रे ।

मुज कामिन का तू कामी ! मुज कामिन का०

पंजरगी मेरा बोला रे ।

पंजरगी मेरा बोला रे ।

सा पहिन्या है डाला रे ।

पंजरगी मेरा बोला रे ।

पंजरगी मेरा बोला । पंजरगी०

सब धामूपण मेरा रे ।

सास सिगारा खेरा रे ।

तू हूँसी बहातेरा रे ।

पंजरगी मेरा बोला । पंजरगी०

मेरा प्रीतम रुसिया रे ।

मुझ बेसे तु बसिया रे ।

मुझ देखी साबा हंसिया रे ।

पंजरगी मेरा बोला । पंजरगी०

हूँ साइया । तुझ साथे र ।

तुँहि मेरी साथे र ।

तैं खेस बनागा हाथे र ।

पंजरगी मेरा बोला । पंजरगी०

तैं माघ अनेरो बाही र ।

ते तू जरावन लई र ।

कीभा मया ओछाई र ।

पंजरगी मेरा बोला र । पंजरगी०

कोइ है रे सोहागन नारी ?

कोइ है र सोहागन नारी रे ?
 प्रेम-गामी की खेसारी रे ।
 कोइ है रे सोहागन नारी रे ।
 काइ है रे सोहागन नारी ? कोइ है र०
 प्रम-गामी है ऐसी रे !
 सिर साटे पग देसी रे ।
 तो मादी मुखड़ा आसी र ।
 कोइ है रे साहागन नारी ? कोइ है रे०
 हाव जोवन की भलवानी रे !
 पिछु की रुख में आसी रे ।
 सो पाव सालन की गामी रे ।
 कोइ है रे साहागन नारी ? काइ है रे०
 प्रेम खेल है ऐसा रे !
 सा सिर जात अदेसा रे !
 तो एक सिर तेरा कैसा रे ।
 काइ है रे साहागन नारी ? कोइ है र०
 ता भी साजा स हेसा रे !
 ना छोड़ प्रीतम गैसा र ।
 मग्न हुआ मया पसा रे !
 कोइ है रे सोहागन नारी ? कोइ है र०

ओ साग्या प्रीतम का हावा रे !

ओ साग्या प्रीतम का हावा रे—
तो तनमन का क्या वावा रे ?

ओ साग्या प्रीतम का हावा ! ओ साग्या०

पियू में क्या है आछा रे !

सिर जाते न रहे पाछा रे !

जा रूँ तो रूहें साछा रे !

ओ साग्या प्रीतम का हावा ! ओ साग्या०

बहुरंगी सटकाड़ा रे !

सुरत बहुत जमासा रे !

तिनका छोड़ जमाजी बाला रे !

ओ साग्या प्रीतम का हावा ! ओ साग्या०

दामा पोस्त अइयारा रे !

आ तन-मन पियू पर बार्पा रे !

बन्नी बली प्राण पियारा रे !

ओ साग्या प्रीतम का हावा ! ओ साग्या०

सहि सगीमहारा मेरे रे !

सा सब बारे फरे रे !

कोउ अछा बहोतेरे रे !

ओ साग्या प्रीतम का हावा ! ओ साग्या०

आज दूधे बूठपा मेहा रे !

आज दूधे बूठपा मेहा रे
 बोला साकर केरा रे ।
 आज दूधे बूठपा मेहा रे
 आज दूधे बूठपा मेहा । आज दूधे०
 प्रेम करो पियु आया रे,
 मैं किस किस चार्नु पाया रे ।
 अब मैं छोड़पा न आया रे,
 आज दूधे बूठपा मेहा । आज दूधे०
 पियु बेबत रग धूलीयाँ रे
 यूँ दूधे मोबाताँ मिसीयाँ रे ।
 तब सहिमाँ की रसियाँ रे,
 आज दूधे बूठपा मेहा । आज दूधे०
 सुरिजन साङ्ग छसा रे
 बोला सास हमेसा रे ।
 इस भौति बाह्या पहिसा रे,
 आज दूधे बूठपा मेहा । आज दूधे०
 धन बी सोहागन नारी रे
 प्रीतम प्राण पियारी रे ।
 जीत्या अखा हूँ हारी रे,
 आज दूधे बूठपा मेहा । आज दूधे०



मुरिजन सब ठाहीं पूरा रे ।

मुरिजन सब ठाहीं पूरा रे ।

देखा हाजर हमूरा रे ।

मुरिजन सब ठाहीं पूरा रे ।

मुरिजन सब ठाहीं पूरा । मुरिजन०

महिमावता मय भरिया रे ।

मौजी मौजका दगिया रे ।

तैं भेम अनेरा करीआ रे ।

मुरिजन सब ठाहीं पूरा । मुरिजन०

कहीं नारी कही पुर्या रे ।

कहीं दीसो खोर सरखा रे ।

गब क्यासा मैं निरग्या रे ।

मुरिजन सब ठाहीं पूरा । मुरिजन०

ये तुजयें है सब साई रे ।

तू मावे कीसी मोही रे ।

तैं ग्यारी रीत बसाई रे ।

मुरिजन सब ठाहीं पूरा । मुरिजन०

ये तुज देहया बाहे रे,

त तसुं बह्या न जाये रे—

ता तुज दर्शन पाय रे ।

मुरिजन सब ठाहीं पूरा । मुरिजन०

असख पियु को सखिया रे ।

असख पियु को सखियाँ रे ।

तो ए साथी अखियाँ रे ।

असख पियु को सखियाँ । असख०

तू मेनु बखण हारा रे,

राग रग तुझे प्यारा रे ।

तू बासका सेंवणहारा रे,

असख पियु को सखियाँ । असख०

तू मोठा मधुरा भाखे रे,

साब कोण अखि तुज पाखे रे ।

तू क्यूँ सिर मेरे नाखि रे ?

असख पियु का सखियाँ । असख०

क्या चारा है मेरा रे ?

सब खेल रख्या है तेरा रे ।

मैं ज नहीं मुज करा रे,

असख पियुको सखियाँ । असख०

मू समझे पियु पाइये रे,

आपे आप समझये रे ।

एक अन्ना हो जाइये रे,

असख पियु को सखियाँ । असख०



पियु बोलते मैं हि रे बोलु ।

पियु बोमते मैं हि रे बोलु ।

साई दिना घूँघट नाहीं छानु ।

पियु बोलते मैं हि रे बोलु । पियु बोमते०

अहनिश खेलु साई सैनी

बोलु बात पियु कहे तेती ।

सो जाने जिसे बिचे अती

पियु बोमते मैं हि रे बोलु । पियु बोलते०

म्हावके दवासु मेरा सासा

मुज भीतम बिष नाहा अबासा ।

एसे समरस भोग बिसासा

पियु बोमते मैं हि रे बोलु । पियु बोमते०

सब सहिजा मुज भीतम करी

मुजभी सबमे सोसा घणरी ।

हैं गुणहीना और की अधिखरी

पियु बोमते मैं हि रे बोलु । पियु बोलते०

हूपण पियुमें घाया मारा ।

जब आपस मनी किया बिचारा ।

तब बायु बान्स गया सानारा ।

पियु बोलते मैं हि रे बोलु । पियु बोमते०

सहजे सहजे साजन घर आया ।

सहजे सहजे साजन घर आया ।
 जे बेद किताबुं नाही लखाया ,
 सहजे सहजे साजन घर आया । सहजे०

मीठी बात सुनिजन केरी ,
 फरी-फरी जाणुं सुणुं घणरी ।
 सरे साजरां सासरां पूरी मेरी ,
 सहजे सहजे साजन घर आया । सहजे०

अगम अगोचर कहितुं सारे ,
 पढते पढ़ते पढित हारे ।
 सो सुनिजन सुध सीझिरे सवारे ,
 सहजे सहजे साजन घर आया । सहजे०

साथे आवत हूँ गले लागी ,
 मेरे चाहनें बीतो सोहागी ।
 छोडी निद्रा तब खरी जागी ,
 सहजे सहजे साजन घर आया । सहजे०

लागे ठामन की माँख जिसको ,
 उलझत मारी भागे तिसको ।
 सा और सामान कहिये जिसको ?
 सहजे सहजे साजन घर आया । सहजे०



आज बनी जाह मेरे सेंधी ।

आज बनी जाह मेरे सेंधी ।

गइ सा बात पहिली बी जेती

आज बनी जाह मेरे सेंधी । आज बनी •

मुसमें या सो प्रगटया मेरा ,

अब सब करणा साथी बेरा ।

'हू' मिटती गई ! पियु घणरा

आज बनी जाह मेरे सेंधी । आज बनी •

का क्या जाने गत पराई ?

ज्यु साह ऊपरवी ऊनरी बाई ।

जैसा या मुख, निआ दिखाई

आज बनी जाह मेरे सेंधी । आज बनी •

ज्यु पूतमही बहु लटकें करली

मब का दख हरती करती ।

रयु साइया साथसु हे छ भरती

आज बनी जाह मेरे सेंधी । आज बनी •

मुसका भाग बरा बरी बासा

मीठा बड़बा बात बासा ।

पहिल्या पियु मानाण चावा

आज बनी जाह मेरे सेंधी । आज बनी •

भला बिराज्या साथी मेरा ।

भला बिराज्या साथी मेरा ।
मेरा लिया ते हुं - तुं केरा ,
भला बिराज्या साथी मेरा । भला बिराज्या० !

पिपुई नारने सबको कलियाँ ,
तिसमें आड़ी अपड़ी गलियाँ ।
एक झींट केरा पानी मिलियाँ ,
भला बिराज्या साथी मेरा । भला बिराज्या० !

छोरे छोरे तुं बाँधे दावा
हीरे भापस नाम सरवा ।
ए भी प्रीतम तेरा भावा
'भला' बिराज्या साथी मेरा । भला बिराज्या० !

जहम फहम सब तेरा प्यारा
तो किसको कहूँ हैवाम बिषारा ?
जो आपे आप रख्या है सारा ,
भला बिराज्या साथी मेरा । भला बिराज्या० !

'दूई' बिना ये न जसे खेला ,
बहुनामी पण है तुं अकेला ।
'यू' सोनारा समज्या सहेला ,
भला बिराज्या साथी मेरा । भला बिराज्या० !

नो हे अकाज कदी सो घनका ।

नो हे अकाज कदी सो घनका ।

जिस पर प्यार साजन के मन का,

नो हे अकाज कदी सो घनका । नो हे अकाज० ।

जो आतशका बरसे मेहा,

ता भी त्याहां न पासे देहा ।

तो और बात का सांसा केहा,

नो हे अकाज कदी सो घनका । ना हे अकाज० ।

बाहें खंटका बापु घूमे

बाहें मेघ आइ जो झुम ।

तो भी तसक नहीं तिस बमें,

नो हे अकाज कदी सो घनका । ना हे अकाज० ।

साइ मेरा तो समरा घरीआ

सोक तीन तिस भीतर घरीआ ।

दुख देने को कोना करीआ

नो हे अकाज कदी सो घनका । नो हे अकाज० ।

दूब भी जीव साजन का हावे,

तो बिन सामन सा और न जोवे ।

तो सेहेजे सौनारा मुख सो सीवे

ना हे अकाज कदी सो घनका । ना हे अकाज० ।

વાત વઢી જો મુરીજન સૂમે ।

વાત વઢી જો મુરીજન સૂમે ।

નહીં તો મોકા રમટા સૂમે

વાત વઢી જો મુરીજન સૂમે । વાત વઢી૦ ।

ટેફી છો સવ હોવે સીધી ,

અવ પ્યારે ને વાંહા સીધી ।

નહીં તો મારે નાંચી કીધી

વાત વઢી જો મુરીજન સૂમે । વાત વઢી૦ ।

પઢે પીયુ ન પાયા કોઈ ,

જ્યું પઢીએ ત્યું કીસે કોઈ ।

ત્યું ત્યું મૂસ ઘણેરી હોઈ ,

વાત વઢી જો મુરીજન સૂમે ! વાત વઢી૦ ।

फूँदड़ी खाते फेर घनेरा !

फूँदड़ी खाते फेर घनेरा !

सबको दीसे करता फेर !

फूँदड़ी खाते फेर घनेरा ! फूँदड़ी खाते फेर !

असनुंका मन फिरने माँही !

तब सुख पावे फिरे जे बाँही !

सो नर सुख सा बँडे काँही ?

फूँदड़ी खाते फेर घनेरा ! फूँदड़ी खाते फेर !

बालक झोली में झुसावे !

जुठ बहाणी हालो गाये !

बुद्धि बिहोणा सुणता निदबि !

फूँदड़ी खाते फेर घनेरा ! फूँदड़ी खाते फेर .. !

काँकरे पयरे देखी रीसे !

जे मेसावे तिस पर पीवे !

तिम सेंधी बंसी क्या कोजे ?

फूँदड़ी खाते फेर घनेरा ! फूँदड़ी खाते फेर !

ब घपये काटे घन बोघा !

नाही सानारा मातम भागा !

पियु पिछान्ये जावे र ना !

फूँदड़ी खाते फेर घनेरा ! फूँदड़ी खाते फेर !

अजब खेलारा साल हमारा !

अजब खेलारा साल हमारा !

खेले खेल, न्यारे का पारा !

अजब खेलारा साल हमारा ! अजब खेलारा !

खेले सो वो खेल खेले मीता !

जीत खूषी कहीं हार की चिंता !

कासबूत पर बोस सो दीता !

अजब खेलारा साल हमारा ! अजब खेलारा !

एकपणा में करती हुई !

सबकी आलां जुई जुई !

खेल रही ज्युं हो त्युं हुई !

अजब खेलारा साल हमारा ! अजब खेलारा !

जिसम इसम का करी करी पर्व !

भांत दोई ! मा ! और मर्वा !

पण मेसक भाव न जाहे हर्वा !

अजब खेलारा साल हमारा ! अजब खेलारा !

हुँपणा : वार्या खुज पर, साथी !

खेल भरित साजन में बाहीं थी ?

बहे सानारा साँझिया मांघी !

अजब खेलारा साल हमारा ! अजब खेलारा !

फूल हैं आपण ! फूली कलियाँ !
 फूल हैं आपण ! फूली कलियाँ !
 दो दिन बास किया ! फिर मलियाँ !
 फूल हैं आपण ! फूली कलियाँ ! फूल हैं !
 बास कसी का फूल मीही !
 धाही सफली रंग के बाही !
 पण, कसी बिना कुछ होवे मीही !
 फूल हैं आपण ! फूली कलियाँ ! फूल हैं !
 जे वा बास कसी में भरोजा,
 तब मेहे क्या जब फूल पसरोमा !
 मौज मिटी तब निज रूप करोमा !
 फूल हैं आपण ! फूली कलियाँ ! फूल हैं !
 फूल, कसी का देखू होई !
 बहोत बिचार्या बोई जाई !
 हैं आप सारा ! आपे वाही !
 फूल हैं आपण ! फूली कलियाँ ! फूल हैं !
 कलियाँ मीत ! साध सो बासा !
 फूल सोमारा किया रासा !
 जग के भेसा भाग - बिसासा !
 फूल हैं आपण ! फूली कलियाँ ! फूल हैं !

सो घेन सुख साजन का जाने !

सो घेन सुख साजन का जाने,
जो पहिले अपना आप पहिछाने !
सो घेन सुख साजन का जाने ! सो घेन !

मसी पीतम को ना भावे,
जिसमें बास बुझी की भावे,
तिसको प्यारा क्यों रग रवे ?
सो घेन साजन का सुख जाने ! सो घन !

पहे पड केल उबोड़ी देखे !
विस पर भीतर गर ना होत देखे !
ऐसे आप पबाले सेखे !
सो घेन सुख साजन का जाने ! सो घेन !

ऐसी जे को निर्मल नारी,
एकु सेज सदा सुखकारी,
पम भी पियुमें न रखे ग्यारी !
सो घेन सुख साजन का जाने ! सो घेन .. !

कुसवती तब पहेसा त्याने,
पीछे करपा, सो करे आने,
सो ज सोनारा पियु भोग लागे,
सो घेन सुख साजन का जाने ! सो घन !

क्या जाने सोका कासा रे !

क्या जाने सोका कासा रे !

जब मयी सो लाख गुसाला रे !

क्या जाने सोका कासा रे ? क्या जाने० !

मोहे पियु सेजु पर मिसीया रे !

तबकी बहोत मैं रसीया रे !

उमगी सो रस उजसीया रे !

क्या जाने सोका कासा रे ? क्या जाने० !

सासन ! तू राता ! मैं माही रे !

सासन ! तू दीपक ! मैं बाही रे !

तु तो न्याय ! नाही संगायी रे !

क्या जाने सोका कासा रे ? क्या जाने० !

सासन ! तुज बलते मैं बालु रे !

सासन ! तुज हलते मैं हालु रे !

मैं तो एकमेक होय महासु रे !

क्या जाने सोका कासा रे ? क्या जाने० !

सासन ! तु मैं मैं तुज माही रे !

तब जीत पड़ी या दाही रे !

तब अघा आप सदाही रे !

क्या जाने सोका कासा रे ? क्या जाने० !

जिस घर न्हाव आपे चली आवे ।

जिस घर न्हाव आपे चली आवे ।
 सो घेण सुख रुं रुं में पावे ।
 जिस घर न्हाव आपे चली आवे । जिस घर० ।

महाराजा की सबको नारी ।
 सारी जाने में हुं प्यारी ।
 मान भरी रहे अंग सुमारी ।
 जिस घर न्हाव आपे चली आवे । जिस घर० ।

सब शणगार सजे डोसन का ।
 मल्ल सिख भारी बहु मोसन का ।
 नहीं अधिकारी मुख घोसन का ।
 जिस घर न्हाव आपे चली आवे । जिस घर० ।

कोइ को घन जोवन का जोरा ।
 कोइ को पड़े गने का तोरा ।
 - इनमें मन भीजि नहीं ? रहे कोरा ।
 जिस घर न्हाव आपे चली आवे । जिस घर० ।

जो मन उतरे घरम अंतरसें ।
 तो दूर नहीं पिया नाम मातरसें ।
 - मिसे सोनारा साह अंतरसें ।
 - जिस घर न्हाव आपे चली आवे । जिस घर० ।



छोकरिमाँ ठींगसिमाँ खेसे ।

छोकरिमाँ ठींगसिमाँ खेसे ।

साथी सोहागन कंष न येने । सात ।

छोकरिमाँ ठींगसिमाँ खेसे । छोकरिमाँ० ।

गुडियाँ को पहिनावे महेना ।

जाने यह मोसमी बेना ।

यूँ बम्पारो खोवे रेना । सात ।

छोकरिमाँ ठींगसिमाँ खेसे । छोकरिमाँ० ।

कंस बिछोही कायद बधि ।

बचन सुने और मनमें राजे ।

(पन) मरयस भावे न होवे सखि । सात ।

छोकरिमाँ ठींगसिमाँ खेसे । छोकरिमाँ० ।

पियु साहागन नारी होवे ।

पिया संगि रहोवे । पिया कोजोवे ।

हैसत चेनत फिर पियासंग सोवे । सात ।

छोकरिमाँ ठींगसिमाँ खेसे । छोकरिमाँ० ।

बसनपणे में भोग न भेटे ।

तब पिया पावे जब खेस समेटे ।

साथी भयो कहे पावे नेटे । सात ।

छोकरिमाँ ठींगसिमाँ खेसे । छोकरिमाँ० ।

साजु ! साज न रहीए ! सहीओ !

साजु ! साज न रहीए ! सहीओ !
 ऐसा साग मया फिर न आवे रे !
 निबर होय के जो जाय लागी—
 सौई अबेरा पावे रे !
 साजु साज न रहीए ! साजु० !

जसे सहीओ मां हरती फरती !
 स्थावा भे पण सूखी रे !
 भाघा बग देखाये सोका !
 भोम बिना रहे भूखी रे ! साजु० !

सटका सामनजी का स्थावा—
 सीता नहीं जस म्यारा रे !
 सीरे भूखी भरमया मटके !
 तो कहत अब्बा सोनारा रे !
 साजु ! साज न रहीए ! साजु० !

हलकी बात न कीजे ! सहीओ !

हलकी बात न कीजे सहीओ !

गुरुआमा पुण भारी रे !

निसदिन काम करे बहु वांसी ,

पण बीबी सो बहुत पियारी रे !

हलकी बात न कीजे ! हलकी बात० !

मनड़ा एक हुवा प्रीतम से !

तब बिना रह्या म्यारा रे !

तन पीड़े ! मन एन एक न होवे !

दल का भेद है सारा रे !

हलकी बात न कीजे ! हलकी बात० !

पातु पात बसे ज्युं पानी !

जा तुं पेड़ कौन पोखे रे ?

पात भिगोवे ने पद तले कोरा !

युं तुं देह को देखे रे !

हलकी बात न कीजे ! हलकी बात० !

सेज एन की तुं रमनारी !

बहा तु आप सजावे रे !

बंजन बहा क्यीरा साजा !

तुम एकपना ना आवे रे !

हलकी बात न कीजे ! हलकी बात० !

साजन संग सदा सुखकारी !
मुख फिराये क्या बैठी रे !
सम्मुख होय के देख अबो कहे !
बात रही सब हेठी रे !
हसकी बात म कीजे ! हसकी बात० !

पूरण सोस कसा का देखे ।

पूरण सोस कसा का देखे,
 सो दोबी, सोबी न गणे लेखे ?
 पूरण सोस कसा का देखे ? पूरण सोस कसा का० !
 जे पहिनी पिछ्छी भाषमें उगे,
 पूरा बाहिए सीसे क्यों पूने ?
 मेरा बाँध तपे मुग मुमे ?
 पूरण सोस कसा का देखे ? पूरण सोस कसा का० !
 मुख बाँधा के बाँधे माँही,
 छट नर्तन खेले तिस साँही—
 पण कोन जुझे के चंदर काँही ?
 पूरण सोस कसा का देखे । पूरण सोस कसा का० !
 बेदो अमानक ऊँचा जोवे
 तिसके नैन न नीचे होवे,
 तेज रहे ने जापा खोवे
 पूरण सोस कसा का देखे ? पूरण सोस कसा का० !
 सूर का सूर ? यदि का बाँदा ?
 निसदिन का तहाँ न रहे बाधा ?
 देख सोनारा भागी व्याघाँ ।
 पूरण सोस कसा का देखे । पूरण सोस कसा का० !

मेस घणा

मेस घणा ! पण एकज दाणा !
 रूप फिराने , आप क्षिपाणा ?
 मेस घणा पण एक न दाणा ? मेस घणा० !

शिरीर्षा सांडा, मूस, पानोठा
 बीज सपास्या तब नाहीं दीठा ।
 स्वामि पियी तुं आया, मीठा । मेस घणा० !

कुन विख्या, पण कुप्या न पाया ?
 एक कुप्या ? ने बहोत हो आया ।
 साव घणेर जेती काया ? मेस घणा० !

बैसा दाणा भू में बोया
 तैसा फिरने टोने सोहपा ?
 मूरख सोच मुखा ! नहे बोटा ! मेस घणा० !

जैसे का तैसा तु, मीठा ।
 आवणा जावणा लोक बदिता ?
 समज सोनारा सुधारस पीता ? मेस घणा० !

पहिनी पिछनी सबे बखाने ।

पहिनी पिछनी सबे बखाने ।

पय ! ज्युं का त्युं मीतम नहीं जाने ।

पहिनी पिछनी सबे बखाने । पहिनी पिछनी ।

को ऊँचा, को ताके नीचे ।

हाजर देखी, बखियाँ मीचे ।

इस बातें सो क्यों न बिगुने !

पहिनी पिछनी सबे बखाने । पहिनी पिछनी ।

सब को राता बुझण केरा ।

आये ज्युं त्युं होठ बरकेरा ।

त्युं त्युं लूने आप घनेरा ।

पहिनी पिछनी सबे बखाने । पहिनी पिछनी ।

हूँ हूँ करे पण हूँ ना बूँदे ।

ज्युं हाथी पण बाप्या बूँदे ।

पण, हूँ का अमल न जाग्या बूँदे ।

पहिनी पिछनी सबे बखाने । पहिनी पिछनी ।

पियु मेरा बसत ना बरिया ।

तिसमें जग पंपोटा बरिया ।

ममज सोनारा आपा बिच घरिया ।

पहिनी पिछनी सबे बखाने । पहिनी पिछनी ।

जिस्को तो साहसैंधी बातें

जिस्को तों साह सैंधी बातें,
तिसका केस खसे नहीं महार्ता !
जिस्को तो साह सैंधी बातें ! जिस्को तो०

जिस्को साहका मुखड़ा भावे,
झौंलका गुन तो क्यों गावे !
सोक अजाब्या भेद न पावे !
जिस्को तो साह सैंधी बातें ! जिस्को तो०

बसे दोहागन रोती नारी !
सबको कहे वे अनाथ बिचारी !
सो दुनियाँ को भावे भारी !
जिस्को तो साह सैंधी बातें ! जिस्को तो०

अहर्निश खसे न्हाव जिस सैंधी,
सो क्यों न करे चाहे तेरी !
क्या लोकों की परवा एसी ?
जिस्को तो साह सैंधी बातें ! जिस्को तो०

हु मेरे डोसन को मेई,
सुखसों बैठी संग सनेही !
अब कहे सोनारा जाना ये ही !
जिस्को तो साह सैंधी बातें ! जिस्को तो०

छंद भयों को छंदहें भावें !

छंद भयों को छंदहें भावें ।

छंद किये विन रह्या न जावे ॥

छंद भयों को छंदहें भावें । छंद भयों को

पाठ आधा रे बंदपणा आधा ।

तीन का आधु । आधन साँचा ।

पढ़ने इतना भी गोप राधा ।

छंद भयों का छंदहें भावें । छंद भयों को

जग जग की चासा सब जूई ।

कहीं अधिक । कहीं ओछी हुई ।

जात ही एक । सफाया हुई ।

छंद भयों का छंदहें भावें । छंद भयों को

जात बिना रे सफात न होवे ,

जात बहे सो सफात न जोवे ,

सो बहुदत ना बरिया होहोवे ।

छंद भयों को छंदहें भावें । छंद भयों को

जीसम ईसम के कीते महोरें ,

हूँ हूँ व बिष बाँध दोरें ,

मे मेद सानारा जाने वा रे ।

छंद भयों का छंदहें भावें । छंद भयों को

छाना परगट हूवडा मीता ।

छाना परगट हूवडा मीता ।
साव अपणडा आवे भीता ।

छाना परगट हूवडा मीता । छाना परगट
जे छाना बाणी बूँदन आवे

सो गगन पतास कहीं ना पावे ।
परगट हाथ कीसी का साहावे ।

छाना परगट हूवडा मीता । छाना परगट
बातिन में ही करे कौन बाता ?

ज्याही है ज्यु की ल्यु ही बाता ।
वेप बनेरा । हुई सफाता ।

छाना परगट हूवडा मीता । छाना परगट
यू सब पडिमा घायर बोसे

करने साम्या टासे टोम ।
देखे नैन सद्गुरु के खोसे ।

छाना परगट हूवडा मीता । छाना परगट
हैं ने बोये ज्यु ज्यु कहाड़े,

तब बावल अपणा रुप देखाड़े,
य समज सोनारा बात सराड़े,

छाना परगट हूवडा मीता । छाना परगट

झूलणा

कौन मझासा उस चारु केरा ?
उसे बूझ बाढ़ो सो एन बाहु !

मैन नझर को गैर हे रे !
ओर साफ नझर को सौई सारा !

क्या पंडित पूछे ? अछा !
आया आपो आपका पतिहार ॥ ४ ॥

पढ़ा आसिम उसबो क्या कहे ?
आँखी न आया आपो आप सँधी !

किरतार आपे कबूत पड़ी —
सा नह निखी बड़ी बात ठेपी ,

मासे बा भसा मन रीसे
माठी मणका ना कोई कंठ साबे ?

वारमे उस किरतार के ! अछा !
जे बोस सा भाउ जाबे ॥ ५ ॥

आसिम मीने पियु इस भाँतु —
ज्यु पानी का ओला ज हुआ ,

बुजमा पण्य सो प्यासा ज रहेबे
जिनु नीर बुझ्या पटपट पीया ।

पूरब पण्यम को क्या मने ?
जिनु अबनुद मीने मौनुद देखा ,

ऐन ही अग्रस अपनी जी !
अछा ! उषड़ी भाव्य रेखा ॥ ६ ॥

पियु प्यारा सो सब कोइ कहे ,
पण पियु को प्यारी पणी भसी ।

जहि जहि छमे सौई सँधी ,
तेमी अन्तरज्यु एबमेर मिसी !

ज्यु आरसी मीने फारसी सी !
एक बा दो होय आप झोय !

बासबूत मीने कोइ बस कीती !
समय अछा जेठीक भाये ? ॥ ७ ॥

झाँखते में शोवाशोव हुई !

मुख भाजते में भली धात बनी !

रावते में रग रल धली !

एक सो या दो एक गनी !

धूर्त केरे तुम डंग देखो !

किस कलू आपो आप खेसे !

ज्यु जेवरी जलती देख ! अखा !

कुडाला फिर तेज मेसे ॥ ८ ॥

भल भीस्ते भावती कीती ?

नाहि तो वहेषी वोदु अ मीने

हक और गर कहेणा ज रझा

अब कोण पतिजे लोक बेने !

ज्यु सुपने में सुख दुख देखा ,

सो जागृत में जरा ज नहीं ,

देख कला किरतार अखा ,

जे दूर सूण्या देख्या ज महीं ॥ ९ ॥

मन पाया जिनु मौजे का ,

सो तन के बोलइ क्यूँ आखे ?

ज्यु पैसा परसा पारसु जी !

सो क्यूँ ताँवा का मान राखे ?

तब तसा और अब ऐसा ,

ज्यु जान्या त्यु तें ज किया ,

बीष पड़ा या हु ज अखा !

सो साईया आपमें ज लिया ॥ १० ॥

नहाव के नेन की क्या कहुँ ?

सा जाने जिस पर आब पड़े ,

वातु बेदन वात जेतो ,

सो झूझे बिछु आप सड़े

प्रेम का काँटा जिसे चुग्या ,

सो फिर न जीवे जीवपण ,

पाँद देखा पूनम अछा !
 सो दुबरी लीजी क्यों गये ? ॥११॥
 गरीमतकी हैड है हीरों की !
 आव हवा हीरस का पाँउ पडा
 ना मन छूटे ना मास फावे !
 ज्यू कीब मीने गाढा ज अडया !
 हकीकत का हाँसिल जो होवे ,
 तो कसु जीवडा पार पावे ,
 नहि तो सुडसा ज्यू नसी ज केरा ,
 बिन बाँध्या भी बँधावे ॥१२॥
 हूँ निकली पियुजी बूँदने को,
 जाय ईट पत्थर में खोज देख्या
 पूछ्या पूरब पच्छिम के नमनारे को,
 बो भी बहे हम नहि देख्या !
 हार पड्या ! हाँसिल हुआ
 जब मुँशिव ने कल कही,
 रह्या आपोआप सौई ज, अछा !
 इतनी सो तिनू कही ॥१३॥
 कुस बल को जीवडा छोड़ बँडे !
 तो हरान मीने हाँसिल होवे
 क्या किरतार को है ज काया ?
 जे हाथ पकड़े के नैन जोवे !
 ऐसा भेद ! ऐसा अछा !
 आप आपना नके ज करना
 ज्यू माम का बालबूत जय जावे
 सोना उसकी ठोर भरया ॥१४॥
 ग्यासिल सँदी घरघर हुई
 रोस मीने सो मा भूने,
 गुरु कुतब का मरतबा देखनें,
 टबना उसका मन भूने ।

खसस है रे खुदाई मीने !

नाहस के घर में ना खपे,
वाखव नहि कोई बात, अखा !

होय अकेला आप अपे ॥१५॥

पिमु की बात भिसे पूछ देखूँ,

सो जीव की बात आगे करे !

ऐसा वेबु नाहि अखा !

जो मरते पहने आप मरे ।

मुए के मुकाम मीने कछु पावे

सो वहाँ ज पाव

हवा हीरस सु छुट सके,

सो बहवत की सीढ़ी खोस जाव ॥१६॥

पब पकड तू प्रम केरा

जो सारियाँको साव बहावे,

देख ज्यु पारेवा पास मीने,

मावा देखते नर आव ।

इसमी सायकी न होवे ज होवे,

और जेन धकीन की बात बड़ी,

बाड़ लाग्या अखा ! प्रेम केरा,

तिसकु गुनकी गाँठ पड़ी ॥१७॥

मकसानके महसमें एकपना था,

जग ना जानता एक भड़ी,

असहस्त कहत में आप हुआ,

तब मन खुनी की जड़ बड़ी ।

बाहिर हुआ तब जात सीढ़ी

और एन मस्जि वहाँ ज रही

पोछ दीन दुनियाँ सु दूर होवे

सब अखा मूसगो बात सही ॥१८॥

जीवड़ा पड़िया बजीर मीने,

वकस खोई उस ठीर बेरी,

बोन सो मैं ? और कहाँ सू आया ?

आगे सो क्या गत होय मेरी ?

येह तो टपके करले गन हुआ है !

एनपणा सब भूस गया ।

फिर टपका खावे जब खुदी का

तब अखा ! आपोआप रह्या ॥१९॥

बाहिर मीन बाहिर हुआ ।

बातिन केरी सब बात भूली ,

बाहिर का भी बातिन देखे

तब जात सफात सो एक मिसी ।

ज्यु बीज बाया या एक अखा ।

वेड़, पात फल, फूम हुआ

आरिफ को ता आया आप साईयाँ

गाफिन को गीर जुवा जुवा ॥२०॥

पाप्पी पबन के कोहड़े मीने

आपा आप सँधी सो किस कसे

ज्यै आनदावाजी वा योइसा मीने

भरद घसे सो नाहि जसे ।

भइ भइ सो जया ज्योत दीपी !

जस जस बर फना होय गई

बीम पामी ज्यु वा ह्यु अखा !

यह भूमसा बाजी हाय रही ॥२१॥

बन भूमी किरतार केरी

परगट म छाना होय छुप्या ।

बाये बानाब आप तुही ।

आप तम्बा मे जाप जप्या ।

जही दर्ज बहो कात्रि बपू ।

घट घट भान रग जुवा जुवा ।

गाफिन हुआ, गम चार्द,

अब अग्य बहे तू ज हुआ ॥२२॥

जीव को क्या कुमल लागी !

फेर फेर, सो ज्यु का ल्यु होवे
कुदरत सय किरतार केरी !

जीव हूँ का रोना निरुप रोवे !
खुदाई मीने खलल कीसी !

हीरस हवा के हाथ आया,
खुदी छोड़ सो जासी घर किया
तब अखा शाही सुख पाया ॥२३॥

॥ कहेणे मे पेश पड़्या,
उसटा अमल कर बठा !

॥ पिछाणी जिस घडी
तब मूसगे घर में आय पैठा !

येव हुबियत जात मीने !
बीच आव पड़ा था खतरा जी !

यू आवे मीने जात जड़ी !
अखा जावे किन जातरा जी ॥२४॥

हज्ज तीरय हमार हुवे,
ऐन अखड जिस घर आमा,

इस बोन फिरते बहुत मुवे,
कहाँ ? किनु ? किस ठोर पाया ?

ते क्यास किये बिन सप करे,
जाप जपे ! और जात कहाँ ?

जहाँ उलझा आप दिया,
साईं साईं अखो कहे जहाँ तहाँ ॥२५॥

बारीक सु बहुत बारीक बना !
जो बारीक होय कठ लाग !

तारीफ नहीं उस ठीर केरी
जहाँ ऐन मस्ती में जात जागे

अजब बला काई जाण जावे !
गाफिल की वहाँ गम नाहि !

पूर जाने तिते पूर है रे !
 अच्छा ! सोबासोब खीहि ॥२६॥
 इनसान मीने क्या कस रबी,
 ज्युं फिरे फिंगये वायु चबी !
 की इशारत सो असगा रखा,
 आप किस आये ना बात बकौ !
 कोहरे मीने कस मरी,
 सा मौतकी मौत चमी ज आवे !
 कुदरत तेरो को देख अच्छा !
 बासते मुखसु बास नावे ॥२७॥
 खाँखत मगी तुझे क्यास केरी !
 प्यारे ! नित्य करे और नित्य भाँजे !
 कब्जे पक्के एकु एक अके,
 य ही ना कुसी कोइ वाने !
 राख तब ताई रग राबे
 जे ज आप उमंग उठे,
 कौन कहेवे तुसीको ज, अच्छा !
 जा काई ना रहब पहल पूठे ॥२८॥
 तुज पहल कोई नहा ज प्यार !
 और साथी भी कोइ नही तेरा !
 कुरान पुरान कठ कटाई—
 सब नियम है भागिस केरा !
 अत अकम जिसका हुई
 सा बन्दु तेरा देख पामा
 माँठी सबकी बात ! अग्रा !
 सुन्या गुणाया सब गया ॥२९॥
 बाँही जाउ टागम को कुइनबो
 जा जहाँ देग्य बही आप गनी !
 तुमाँ ज मान है तुज मोही !
 तेमी मुजना आव बनी !

ज्युं दरियावकी मछली को,
 नैन बैन बसे सो नीर माहीं—
 युं मुक्तको बनी रही अछा ।
 सो सार्हि गलोगस है ज माहीं ॥३०॥
 धोये धोये क्या छब धोबे ।
 ओ मल पेठा आय मन माहीं ।
 आपणा खास और सो बुरा ।
 इस वारुं सार्हिया ज माहीं ? ।
 हाइमांस और नख निमाला,
 भूछ दाही पर हाथ बहाबे ।
 मूरख मन चेतै नहीं ।
 सो जक अछा केतीक साबे ॥३१॥
 समज बराबर बात माहीं ।
 जा सोचे आपस आपसेधी,
 नैं सो भला और सो बुरा ।
 वेखुं बीज सबत है ज केती ?
 जही जही पड्या सोही तही अ सोझा,
 तो माज फोड़ पीव क्या करे ?
 जे ही समजे सोही समूज गये,
 और अछा तबते ज मरे ॥३२॥
 क्या आप आतस विरजीन हुए ?
 के जाक वापुमें फेर पड्या,
 सब मगाले एकठ कर
 आदम इदम सब पड्या
 मत ताणो, मस्तहब खेचो
 कम ज्यादा टूक भि नाहि ।
 दिसके दीदे अब देखें,
 तब सार्हि अछा मिसे ज माहि ॥३३॥
 मुण्ये सबब पर सब जले ।
 और वाम के दीदे भुंव राखे ।

रग सम्मस्त दूखो ज खोई—
 जब बीड़े पान पीगसे जा भावे ।
 नैनबासा निमतिन भसे
 और अघा अटके सूर पड़े ।
 अघ की असस जे ही, अघा ।
 कदि न भावे बहुत पड़े ! ॥३४॥
 भावती होतें भत्स हुवा
 बीया कराया ठोर पड़्या,
 पियु घोरीनैं घुर खँप्पा
 बाढ़्या गाढा जे ही था ज अह्या ।
 हूँ—मेरा सब जानता था
 सो जमल हुवा घूसघानी ।
 अघा पियु नदी में मिल गया—
 सा छिनुं छबेली छिनुं तानी । ! ॥३॥
 पियु के हो कर पड़ रहीए,
 और जीबपण जबास घणा,
 दीन दुनिया ब दाब मीने
 कदि न भावे एकपणा
 ज्यु गर्भ पड़ा था पेट मीनैं
 नाम न उस्का कोई घरे,
 असग पड़ तब आब सागे
 बिन मार्या नित नित मरे ! ॥३६॥
 गल न हो इस गाफिल को
 पियु आपमें जाणी ना सूने ।
 एन मौई सा आपका
 हब बासता डालता ना मूम !
 यहमका पाम मन मान बेट
 बा रात बसुवा बया मूम !
 हम हछीनत हाथ ना आई
 फिर फिर अग्या मन मेन सूने ! ॥३७॥

बट पट सु चमक आव सागी
 भित्त चेतता और चमक मिटी ।
 घरसु घोखा घूसघाणी हुवा
 अब पीठ सके किस भाँति बठी ।
 दिस हाजर नाजर जहाँ—
 मेर की खतरा जाय बगी,
 गेब की बात सो हाथ मेबी ज के,
 अन्ना ! कुदरत क्युं जाय जटी ॥३८॥
 तो ज इक्क साधा अन्ना !
 जो माझुक बगेर आशक मरे,
 तब माझुक सो फिर आशक होवे,
 आव छाली मीने आप घरे ।
 उपदेश का आतश तब लागे
 जब प्रेमवारु सँई ठोक भर,
 आशक गोला सो गेब होवे,
 पीछे नाल रही आवास करे ॥३९॥
 आपस का बोप आपसे लाग्या,
 टूक आवरण का और ठीर न बा
 खाक और नूरत फार्ग देखा,
 आखर अवल की भी ज क्या !
 बाज तुझी कोई था ज नहीं,
 तो मेर कौहीं सु आव पड़्या ॥
 मैं तु का मेस सो तुही ज लाया,
 अन्ना असमान का फूस जह्या ॥४०॥
 प्यारे ! किस कलुं तूँ 'हुँ' हुवा हे ?
 हुँ जानता, था मे 'हुँ' सही !
 हुँ को हुँ जब बुँड देवूँ—
 तब मेरो ठोर सो मैं ज नहीं !
 नित कसी कसी ये ही चसे,
 प्यारे ! कि गुझे ये क्यास सागा,

रंग लम्पट, खुशबो ज खोई—
 जब बीड़े पान पींगसे जा आवे ।
 नैनबामा निशविन चले
 और अंधा बटके सूर चढ़े ।
 अंध की असस जे ही अबा !
 कवि न आवे बहुत पढ़े । ॥३४॥
 भावती होखें मस्त हुवा
 कीया कराया ठोर पड़्या,
 पियु घोरीनँ पुर खँच्या,
 काढ़्या गाढा जे ही बा ज अड्या !
 'हूँ—मेरा' सब जानता था
 सो असस हुवा घूसघानी ।
 अबा पियु नदी में मिस गया—
 सो किनुं धकेसी किनुं तानी । ॥३५॥
 पियु के हो कर पड़ रहीए,
 और जीवपण अबास बना
 दीन दुनिया के दावे मीने
 कवि न आवे एकपणा,
 ज्युं गर्म पड़ा था पेट मीनँ,
 नाम न उस्का कोई घरे,
 असम पड़े तब आब सारे
 बिन मार्या नित नित मरे । ॥३६॥
 गत न हो इस गाफिल को
 पियु आपमें बापी ना बूझे ।
 एम साईं सा आशकारा
 हक बासता डोलता ना सूस ।
 बहमको फोम मन मान बैठे
 बो खेत वसुका क्या मुस ।
 हम हकीकत हाथ ना आई
 फिर फिर अबा मन जेन मुझे । ॥३७॥

ज्यु आरसी पर बिस्तर लिखा,
 रंग रूप देखा, मूल सेव गया,
 सो आपा खोवे साईं ज माहीं
 जिन अखो कहे भेद सहसा । ॥४५॥
 गेव दरियाव के सब पपोटे,
 फाटे और फिरफिर हावे
 आप कारीगर अपना जी ।
 आपोआप समार कर आप जोवे !
 आब, मासख, छाक, वायु तुंहि,
 भेस फेर कर तुंहि आया,
 छंदहे कर कर छप जाता या ।
 अब अखा न जाये बाह्या । ॥४६॥
 फेर फेर सो जवा एक आवे,
 कवि अधिक ओछी होय कसा,
 तू परदापोशी कर खेस ।
 दूक जात में नहीं बुरा भसा ।
 सफेत मीने कई कोटि भार्ता,
 ओर आप सो ज्युका त्यु छनी ।
 टांक और सेर पासेर बहुतेरे ।
 अखा आखर सो एक मनी । ॥४७॥
 सर पुरु सरदार होइये ।
 और भाँजना नाहि भंगार, भूँडे ।
 साईं बिना मुख नाहीं ज पावे,
 ले झंडा उतर कुँडे ।
 बांध बाकरी सड़ भेदान मे,
 जीत खटी अवसर आया ।
 ग्राई गुप ओर भुप रक्षा ज अखा !
 नाहीं तने न जा मन नाया । ॥४८॥
 छराछरी कीआ गराब हुआ,
 खानिक की तुसे खबर नाहीं ,

कसरत मीने मुझे बस पाई,
सुई साँझ्या, अखा ज घागा ॥ ४१ ॥

खोजते खोजते पार पाया !
माब निकसा इनसान माँही !

बोलणा बोलणा तुमसुं रे,
तूँ देखा सब हूँ ज काँही ?

कहीं कोटि दिनों का रहा ज अखा—
सा दिस दखेंदर हास पहुँच्या !

या सपने सो साँचा हुवा,
अब साँची-सपने माँही सोच्या ॥ ४२ ॥

है किसका ? कोई अमल करे !
ये हि गफ़लत को कोन मेटे !

हक हाज़र हर हास माँही,
पीव जीब कागद के नाहीं छेते !

जुं तस्तेका कोहवा सा !
कस उलटा सुसटी होय फिरे,

है संघ साँझ्याके दोरबुं का
तुं फोक अखा बिच आप घरे ॥ ४३ ॥

करामत जले कहीं कोटि कसा,
जीब ! तूँ क्या बिच में सिर बहावे ?

है बातिन और साहिर देखे !
साहिर बातिन होई जावे !

तुं दावा घरे साँई सेयी ?
तेरे भूस भूरख केते कताई ?

सुकुमाव से बहुत गुमराह गये !
तुं अखा नाहीं पछछाई ॥ ४४ ॥

करामत हुई बहाँ केहेर आया
केहेर ताँही साँई की मेहेर नाहीं,

मेहेर बिना खूदी होय जावे,
जाये दूर दरज पढ़्या ज कहीं !

ज्यु आरसी पर चित्तर लिखा,
 रँग रूप देखा, मूस तज गया,
 सो आपा खोबे साईं ब माँहीं
 जिन मखो कहे भेद लहया । ॥४५॥
 गेब हरियाव के सब पपोटे,
 फाटे और फिरफिर हावे
 आप कारीगर अपना जी ।
 आपोआप समार कर आप जावे ।
 आव, आतष जाक वायु सुँहि
 भेस फेर कर सुँहि आया,
 छंदहे कर कर छुप जाता या ।
 अब मखा न जाये बाह्या । ॥४६॥
 फेर फेर सो बदा एक आवे
 कदि अधिक ओछी हाम कसा,
 तु परदापोशी कर खेसे ।
 टूक जात में नहीं बुरा भसा ।
 सफेत मीने कई कोटि भाती,
 ओर आप सो ज्युँका त्युँ धनी ।
 टाँक और सेर पासेर बहुतेरे ।
 अखा आखर सो एक मनी । ॥४७॥
 सर धुए सरवार होइये ।
 ओर भाजणा माँहि भगार, भूँडे ।
 साईं बिना सुख नाहीं ज पावे,
 से शंका उत्तर कुडे ।
 बाघ बाकरी लइ मेशान में,
 जीत खटी अवसर आया ।
 याई गुप ओर भुप रखा अखा ।
 नाहीं तवे न जा मन नाया । ॥४८॥
 खराखरी बीआ खराब हुआ,
 आविक की तुझ खबर माहीं,

आ बैतास हुआ सो हुआ !
 क्या खापीए के केसी ज प्रही !
 तेरा विल दुनिया पर हे जेता
 होव वीसमा बुखरा साई सेंपी,
 गेनगेन जावे एन एन खावे होवे,
 कहे न सक अखा बात तेती ॥४९॥
 साई के हाकर सुख साई ये
 काम नहीं ओर बात केरा
 रजक सो हाथ रजाक के हे
 सो तो हे खारव तेरा,
 बाँव तेरा तुज माँही ज, अखा !
 हीरस हुआ हर दिस दमे !
 आनाकानी बात साई सेंपी,
 तुझे साफ दुनिया की मन गमे ॥५०॥
 गई फिकर सो फकीर हुआ
 बहुत पेबंद में पिपु नहीं पेठा,
 बाँद देखने गरज हे रे
 कोण उठ जोवे जो देखे ज बेठा ?
 दिस की मजस पहुँचे, अखा !
 और साक बन्त तू मत करे
 आफ फकीर इस राह पहुँचे,
 तू मनके पीछे मत फिरे ॥५१॥
 मन के तिर मवार सारा,
 तन लीई क्या बात तुझे,
 मन मारा तब मूस पाया
 दाना फकीर एतना बुस
 साँप मारममु गरज हे रे
 दर ताइया, ना नाग मरे !
 सीधी बात समझ अखा !
 आइ-अबल्ला क्या जाता फिरे ॥ ५२ ॥

साईं तो हाथरा छुझुर हे रे,
 ओ कोई होय तालीब साधा,
 मनोपतो सु रीझ जावे,
 ऐसा कहाँ है कावर काधा ?
 तालीब को साईं सुरत मिले
 जो हमेशा तलब सागी रहे
 अन्ना । मनी को छोड़ देवे
 साईं कवम को नित सेवे ॥ ५३ ॥

तकव मिले तालीब बिगड़े,
 इस बगेर ना एन होवे,
 मनको मेम मलामत सागी,
 क्या हाथपाँव मलमल छोवे ?
 बिन हावा हाँसल नहीं,
 हाय ! केते मे मन मरे ?

अन्ना ! अर्वाक वहाँ सोम कसा !
 जो जीव खोया ते भक्ति एम करे ॥ ५४ ॥

अखे सो आप बिचार देखा,
 भुजको जीव अबल कहाँ था !

सुरत सा साईं सहेजू सहेज यूँ अ कीती,
 आपपणा दीया आपमाँही !

बिसम इसम भी तेरका ह,
 इस्में मेरा क्या सागे ?

एन इशारत इतमी हे,
 जो सुनते मीने जात आगे ! ॥ ५५ ॥

मम सागे तब भीला मिले
 लाख बातु की बात येही,

मन भटका बहूँदिस फिरे
 ता क्या कसे मूरख देखी !

जुं आँखों का काब फिरा
 तो मूर सो तिसको क्या करे ?

अन्ध नेत्र निर्मल होवे
 तब सर्वमें मीने आप घरे । ॥५६॥
 सार्ई मीसन मुक्केन हे ! रे !
 और प्रेमीजोंको है स्हेसा
 बिरह सराण, और आप हीरा
 नेह की रज ले बस पहेसा,
 प्रगटे जात भीतर में सु,
 तब हीरा का मोस जाणी,
 एसी उपज बिन, अन्ध !
 बहुत बोबे आपणा ज पाणी । ॥५७॥
 घात की घात होबे ज अन्ध !
 और काठ पत्थर का ना होय सोमा
 प्रेम प्रीछा कर पियु मिते,
 ईस बिन औरह नाख होना !
 बूझ घरबत ह्मसार पीबे,
 और प्यास न भागे बिन पाणी,
 बोलते को बुझ्या बिना
 और सब एसा ज जाणी ॥ ५८ ॥
 'आप' मिटा और आप रहेबे,
 आप बह्या व घुसघापी,
 सार्ई सदा सभर भर्या
 तिसमे बूझा गेर जाणी,
 अवस आन्तर आप भर्या—
 तो बीज मं बूझा का बहीए ?
 खैजातानी छान्क दे कर,
 अन्ध ! यू समज रखीए ॥ ५९ ॥
 सारे दीनवा दीन य ही—
 जे आप बीज मे सुं टल जाव
 टमसे अन्ध और होवे
 दीन की माहात तय पावे

भेदुकी छाहार सु भेद घसे ,
 यूँ अखा ना ठर बठ ,
 भेदु विना भेद हाथ ना आवे
 आप छोड़े पियुमाँ पेठे ॥ ६० ॥
 आपको अत कमई जेता ,
 साँई पास सब नेग मागे ,
 भेदु सा भेद उमटा पाया ,
 दुईसु काटा पास आगे
 बेटे को उमड बाप का सब ,
 पीगल सा आ होय घणी
 अखा ! सूज की बात प्यारी
 और बातु सु होय मनी ॥ ६१ ॥
 आरफानका ग्रहा कोई नहीं ,
 जिसको होवे सो हि जाने ,
 अकल जाये, कल एन मिली ,
 ज्यू नीर म नीर एक साने ,
 तब सब करणा उसका हे ,
 जिसका क्रिया सब होवे ,
 'शय' की ठोर साँई हुआ ,
 अब अखा क्या और जोवे ? ॥ ६२ ॥
 तेरा 'जाणवणा' फेरवणा हे ,
 'शय' की ठोर "बहवत" देखी ,
 'गेर' 'गेर' सुणी, सोही जाणबेठा !
 "गेर" की ठोर सूँ "हक" सेधी ,
 जा है सो आपु आप है रे !
 तू बूसरा होय टकटक करे !
 अखा ! "एन" जाने सु "गेन" जाने ,
 बिन बूझ्या बहुत मरे ॥ ६३ ॥
 सबसें भार बाना सरकी ,
 आर तास में कुदरत कीसकी !

एतना ब्रूमकर, बैठ रहें ।
 सब सब जानें मगठ तीसकी ।
 करणा, मरणा सब ताही ।
 जब "हु हाय सिर ताण सेवे,
 कै कोटि कृष्टु बाँव एक देखा ।
 सा अन्ना ना गेर कहेबें ॥६४॥
 आप जीव होकर पियु दूर कीता ।
 आप जीव नहीं पियु दूर नहीं,
 बाय पंखेक सूर बुंका,
 ए उमर टाला आकरा है,
 कोइ भल नेहु सूर बाहीए
 अन्ना ! देख आरफान्सें बी
 अलगा बुडने काहे जाइये ? ॥६५॥
 सई सो सत्व सुं मिस रह्यो है,
 बिन बासेक ठोर नाही बासी,
 अलगा हाय सो आव मिसे !
 बिचसु मनी दे बासी !
 ज्यं हार भूसा वा कठ मीनें
 फाम हुई तब पास पाया
 मापु मापको भूसा गया वा !
 सो अन्ना फिर ठोर जाया ॥६६॥
 जाग भुल ते छल उछंद करे,
 आप स्वावकु होय बेसा !
 बहम आर फाम सब बंग तेरे,
 उस्ताद न था काइ गुज पहेसा
 क्यास करे खस्त में सुं ।
 ज्यु छाँय खेदे में नट बाजी,
 आपो आप डहेके ! हेराज हावे !
 हे अन्ना ! इस बात राजी ॥६७॥

आपस की बात सो आप जाने,
 के टुक धूँसे भेदु ज कोई !
 दूई का भेस खेसार ये कीजे,
 रूप नाम यहोतेरे एक होई !
 सोई कहते ना भोस देवे,
 सबसों 'मैं-हूँ-हूँ' कहे !
 कुरान पुरान कहे माप में की,
 अमाप अखा भेदु ज लहे ॥६८॥
 चुपका भेस भि मे रखा है,
 ओर काई घट में बोसता है !
 बिन है घर खामोशी चुप नहीं,
 ओर बोसे, सो न बोसता है !
 जहाँ जैसा, वहाँ तैसा है ज सही,
 दुक जरा भेदु मानूम !
 सो भि इसारत तेरही है,
 ये तन, रूप अखा आसम ॥६९॥
 कोई पंडित, मूरख कोई,
 कोई गुनी कोई है ज दानो,
 कोई ब्याल खुशीसुं करता है,
 ओर सार्लसुं रहें सृप छानो !
 सूरज का तेज सब पर पड़े,
 और सूरज पर कोई नहिं साया !
 ऐसे ठेग धूरत बेरे,
 सो अखा तेरा पेस पाया ॥ ७० ॥
 ये हि अजब कला तरी,
 तू पकड़ावे माही ज 'आपा',
 खेसे खेसावें माप तू हि,
 और शिर मेरे पर होय चापा !
 प्युं माजीगर खेस खेसे,
 सो काठ के नर सिर ठोक देवें,

दूक भी साम होये तेरा,
तब खचा नर सब सेवे ॥ ७१ ॥

येक ठोरा ना ताण, प्यारे !
बहोत साणे सु टूट जावे !

दूक खेचे नरम छोड़े,
तब दोनों को स्वाप मावे !

तू हक सदा में नाहीं सा हूँ
तो नाहीं का कयास हुवा,

है दर्पन में की छाहि खचा !
और मुख बगा, उस घूम हुवा ॥ ७२ ॥

एक सो खम्बस या हि या,
और साब बाह्या तब डूई कीटी

छाना सो परगट हुवा
सबसे आगे डूई दीटी !

येक सा दो, मार दो एकी ज,
जहाँ जैसा, वहाँ तू ज, मीठा !

आलेक-खमक
आपे हि

खचा अग्नि सो हि दीपक बीठा ॥ ७३ ॥

अबस सो फाम फिर करो,
साई कैसा है और कहाँ खेता है ?

मैं सो क्या ? अबबूद सो क्या,
और किस कसू आबास होता है ?

आप बिपारे सो हि आभिम,
वर्षेया भी दानेधर्म सही,

बंदा सो हि बतूस जाने,
खचा हाहेर सो सब बही ॥ ७४ ॥

कोइ पूरव पञ्चम जमे,
क्या और एक दस है ज खाली ?

खुनवार सो सब बही है ज पूरा,
अज्ञान अबकस बाधस घाली

मिरचके पास कस्तूरी है,
 सो जाये परचर को सुंभता है !
 अछा आप पिछान बिना,
 सब कोई ऐसे भूसता है ॥७५॥
 ज्यू है त्यू बूरस है रे,
 जैसा तैसा रास्त जाणी,
 खलेस न कर खुदाइ मेंने,
 तेरा करणा धूसछाणी !
 पंडित दाना होय, होय गये
 उन आकिस होय अमल कीआ,
 बाहर, एन तबे हुष,
 अछा ! अम नफी का करार दीआ ॥७६॥
 जीत दमामां बहुत देवे
 मोर में सो छूटपा हार खाई,
 जीतने में अंजाल देस्या,
 हारण मनि मौज पाई
 आपणे जोक जे जीतता है,
 तिसको अछा काल आवे,
 सो वही अमल न कर सके,
 हार गया, सो हाथ ना आवे ॥ ७७ ॥
 बेक हारणे में भी जीत है रे,
 जो माझुक सुं हार जाण !
 हारखे में हाक ज होवें,
 अपनी सो ना तरफ ताणे ।
 ज्यू पारा सही मरणा है
 सो रोग गुमावे जीवतो ना,
 त्यू अछा सही हारणा है,
 हार्या देव है देवता ना ॥ ७८ ॥
 उरसोंवा बुनिया ज ना है,
 नदि जीतता है कवि हारता है !

हरदम सो हास होने जा मये
 कवि मरता है कवि मारता है ।
 कसरत करते करामत बसे
 कवि मसामत आब लागे ।
 पासबान पपी मपी फेर पड़े
 अबा एन सो सब आये ॥ ७९ ॥
 सो साई सो एब है रे
 कोई जाने में जंजाल पड़या !
 'हू' हो कर जब देखता है,
 तबसों पुईमें मन गड़या
 तीसमें गम जब होत है रे—
 होय सासब की साफ प्यारी,
 एनसु अवला फिरता है
 वही असा है जीब भारी ॥ ८० ॥
 असमान मीने जे फिरता है,
 कीज्जड कांटा ना तिसें
 पाई बस्त होने सो पियु सेंबी,
 मूसगा भेद पाया जिसे,
 दरियाबको आग लगती नाहीं
 जो लगे सो उपरछसी,
 त्यू अखा, भेदु आब मीने—
 ज्यू जने नहीं मछमी ॥ ८१ ॥
 केव कसरत में आबती नाहीं
 मूस समझ ऊपर बसे,
 ज्यू माया देखीये जाल मीने,
 और आ पछेद नाहीं तसे
 हू होने तब हाथ आबे
 हू बिना कास क्या करे ?
 अया ! मूस की बात ग्यारी,
 उपजे नाहीं सो बयु मरे ॥ ८२ ॥

ज्यू सो सूझ सूर हू आवै हे,
 येहि जसवा बहुतका हे,
 ये हि बुझ्या तारैं बस हूई,
 और करणा मदतका हे,
 हुँका खतरा बीच में था,
 तिनू मान्या था आप पूजा ?
 बच्चा ! आप सो एन है रे
 आपु आपकी कर पूजा ॥८३॥
 ज्यू करे तूँ तूँ हि करे,
 कसम तो ज्यू हरफ लिख,
 जब हाथ जसे दूरस खरा
 मेरा चारा नाहीं जरा,
 मैं कसम, तूँ हाथ, प्यारे,
 मैं करूँ सो तूँ ज कीमा !
 अम्बल आखर तूँ ज बच्चा
 बिच में मेरे सिर दीया ॥८४॥
 स्वर्ग पाताल तपास देखा
 सबसों जेसे छुप छाना !
 आप ईशारत सीई मीने,
 और सो बोली और बाना !
 ज्यू सूर तप्या महस काधके पर
 सब देखाने रगळ्य जुवा,
 चौदह सबकमें तूँ हि मीठा
 और अन्धा सूर कीता दस सुधा ॥८५॥
 असग सा है और ससग सही,
 कोइ प्रम दीवाना जामता है
 ना उसकी बोली और मुझे
 वो सबकी पिछनता है !
 बीज मन सीई, जिनुं नैन घरी,
 सो * दूरका सब नबीब देख,

कस दगेर आसम, अखा
 मजाण सु तो सुजाण गसी है
 आखर अजाण जैसा
 एकसों एक आकिस मिसे
 तसो होवे या तैसा !
 जाणपणे का फल बैठे
 जब जाणन हारे को ज जाण
 बही सो, अखा है ऐसा—
 आकिस प्रपक सो एक बाने ॥८७॥
 आकिस सो इतने कताह,
 जे इसम पडावे पक बाने,
 कहो सुन्ये सु बो है जुदा
 जे सबमें बोसे हर बाने
 सो हि सो आप अजाण है रे !
 सो हि लेवे जे से सके,
 अखा 'आप' फना होवे,
 कसु इशारत सो हि बके ॥८८॥
 पकते बहुत पकित होवे,
 और बात महोबत की बहुत बडी,
 पन न रहे न्यारा पियु
 अवस महोबत की राह जडी,
 गुं मेंह देख्या सून होय पानी,
 सो नीर में नीर होवे ज होवे
 अजब आरफान हावे अखा !
 सो अवस महोबत सु 'आप' बोवे ॥८९॥
 अवस सा उससन ये हि भारी,
 ज एब, जे दाउ ठहेराब नही
 ये आरफाने अटकस कीती !
 दुई का भाब राह्या सा सही !

ज्यु कपड़ मीने झाड़ यया,
 पेड़, पात फस फूस न्यारा
 हास का भार ना पेड़ लगे
 अच्छा है कपड़ा ज सारा ॥ ९० ॥
 आपु आपसों उगी निकल्या है,
 तहरे समेत बोहि ज सदा,
 आप सो जमीं, बीज भी आपे,
 देखतें नाहीं किरतार जुदा,
 नित झड़े नित आवठा है
 है पुराना नित्य नवा !
 'बाबा' आदम कहो, अच्छा !
 के काइ कहो 'माँ-माँ' ज हवा ॥ ९१ ॥
 जगका ये हि जमान सड़ा,
 के अवल आखर को ज चहावे,
 छाना सोहि परगट हुवा जहाँ,
 तहाँ जहाँ क्या हाथ आवे ?
 ससता होकर सोच देखे,
 तब नीर पपोटा नाहीं जुदा,
 अच्छा खुदको मत मारे !
 सार 'खुदी' मिले ज खुदा ॥ ९२ ॥
 अवल सा ये हि विचार देखो—
 के क्या न होवे बदि का ?
 करे कोइ, काइ पेस बाँध ।
 काम देखो इस गदि का ।
 हाथ जोड़ सों हार बठे,
 तब पुरत मिले पास ज पिया
 मखा ए ज बसा बड़ी—
 जे बहार्ये 'अपने' सिर सिया ॥ ९३ ॥
 जात, सफात दो देक है रे !
 ज्यु पूतसड़ी नेम मीने

बिब बिना सोचन नहीं,
 और बिन सोचन ठोर नहीं रखेने
 सो सँईयाँ, दोठ नाम कहने को
 ज्युं है त्युं पूँ रास्त जानी,
 छानों सो परगट, अबा !
 मनमें किसी को गैर नाणी ॥९४॥
 कोई ऊँचा असमान ताके !
 और कोई कहे पियु पाताल पैठा !
 हरदम हासर हुसूर कहेवें
 कसे न जागे सो मीठा !
 दूर कहेवें सो दिस भावे !
 पास कइया प्रतीत नहीं !
 क्या कहेना तिसको ज अबा ?
 तूँ ज तेरे मन जाण रही ॥९५॥
 सून, समझ और नेह बिना,
 पियु सी बस्त न हाथ आवे
 देह पबर और सँई सोना,
 बलगा पड़े, जो ताप आवे
 बिरह की आग, और प्रम सोहागा,
 गुद शबद से, घम वहेसा,
 नव की भावठ तब आवे,
 रीझे, अबा ! चेत ज पहेसा ॥९६॥
 जिसको नेह मित मित नबा,
 सीधी राह सो नर पावे,
 जे बोह मीर मिस ज नदी
 सो सारा समन्दर मिस आवे
 नेह गदी को ना मिस,
 सो हि मूके जेहि जहाँ पद्या
 साख बापू की बात, अबा !
 भायग उस्का जिस नेह जइया ॥९७॥

मदगी सो बहुत करत है ।

सो रास्त करास्त की राह धसी !

नेह का भूत जिसे लाग पड़घा

वो मा छोडे टक धसी

उस्के जीवन मूस जीवे ।

आखर लवे आप भाहीं,

नेहकी बात ऐसी ज अखा ।

जिस्की पकड़ी साँई बाहीं ॥९८॥

कमाई करे तिसे कछु भला,

कोई दिनुं करामते चसे,

ज्यूं कुवा खोदतें सीहीर आवे,

आड़ा अवला नीर मिसे,

प्रेम पाताल जाहीं फूटता है

निकटे नहीं सा नीर कदी

अखा ! सो आखर एन होवे

सबसू नेहकी बात धसी ॥९९॥

छानी छतका छाक चढ़,

जो मग्या होय नेह छाना

ज्यूं पास बसोटी आग न रहेवे,

सुसगते सुनगते जग आन्या ,

प्रेम का नाग जिसे डसता है,

सीम बीर मूण तिसे होय मीठा,

मूं सारा आसम, अखा !

प्रेम लाग्या तिनूं आप दीठा ॥१००॥

तीर करबी कमान में का,

कसरत नूरत निशान मारे,

बिरह कमान, बीर सूरत साड़ा,

पियु पावे बिन रहे न मारे ,

बिरह का कम फिरतार का है,

कवि बदे पर आप पढ़या,

भखा ! सो मर एम होवे,
 ज्युं सोहा पारस भइया ॥ १०१ ॥
 नेह विरहा पहमवान पियु का
 छोडे नहीं जिसे आव सागे,
 नूर सुं आव निकाह करे,
 बनाबनी हाय एक आवे,
 रग की रेश सो तो ज बने
 जो दोनू अयारी दे मसी ।
 मूस, समझ उस ठौर होवे,
 भखा ! पड़ की बहाँ क्या बसी ॥ १०२ ॥
 सबको दूर दराज पियु
 और मूस समझको दूर नहीं
 मूस, समझ बहाँ ज होवे,
 नेह बिरदा साम्या जहीं
 मुहिद की महमत ठोर पड़े,
 जो मुकैमव होय तैसा
 भखा करम बिरतार करे,
 तब सब पाइये साज ऐसा ॥ १०३ ॥
 मत मसहब को खँबता है
 और दूँडता नहीं बरतार कोई ।
 हो खुदा किस्मात होवे नाहीं—
 जाबजँ जाबजँ ठोर दोई
 बिषमीने सब उससता है,
 मान मनी कर हीरस हवा
 भखा भीतर पैठ देखे
 कसु भी कहेना नाहीं ॥ १०४ ॥
 मा मूरमें घट बढ़ होता,
 क हासी मूरमें ज कमी,
 जब घटे न तिस बढ़,
 उमनगने मस्मान जमी ,

आप बेहिरत, दोहाव दूजे,
 ये खतरा सो मनका है,
 क्या मुसममान क्या हिन्दू,
 अन्धा ! विषारे तितका है ॥ १०५ ॥
 पड़ते आया वेष मीनि,
 अटकाव हुवा इस्म केरा !
 आवि अतकी सीढ़ी खोसणी थी
 वहाँ खुसासा है ज तेरा
 नसर करे सो निहास होवे
 विलके वीदै जब देखे,
 पड़ा हो के अपड़ अन्धा !
 'आप' टस जाणा रेखरेख ॥ १०६ ॥
 जैसा तसा सो ही ज है रे !
 जिस्का किया सब होवे,
 अव्वस आखर 'हूँ' ज नहीं
 बिच हुआ हो कर सिर सेवे !
 आखर 'हूँ' मिटावणा है,
 आसिम होय पड़ रहे !
 जबसे अन्धा ! मन मिटया,
 तब सके सार्दियाँ नोण कहे ॥ १०७ ॥
 पड़े गणे वोख चडे,
 है कसु हसका ज होणा,
 अमानकी जीव मिटावणी है
 ज्यू त्यू मूसगा आप जोणा
 दाख्का दर्व होवे तो
 मूसगा रोग सोकूँ जाव,
 अन्धा] 'हूँ' ज मिट जावे,
 सो सार्दियाँ तुरत पाव ॥ १०८ ॥
 'हूँ-तूँ' सु सब मरता है,
 बिन हूँ-तूँ मरणा ज नहीं,

(८४)

मास पराया, पिछ तेरा,
तू माने 'मेरा' ज मैं ही ॥
पढ़ पढ़ने क्या पेच बाँधे ?
गाम नहीं तो सीम कैसी ?
राहा उपरधसा होबे,
करम सँझिका सो मान लेसी ॥ १०९ ॥



ब्रह्मलीला

ब्रह्मसीता
राग—सामेरी
बोझरा—१

ॐ नमो आदि निरञ्जन राया, जहाँ नहि काल बर्म अरु माया,
जहाँ नहि शब्द उच्चार न जाता, आपे आप रहे उर अंता ॥ १ ॥

छंद

उर अंतर में आप स्वबस्तु, बिग नहों माया तबे ,
अग्य नहि उच्चार करिबे, स्वम्वरूप होहीं जबे ॥ १ ॥
मिथ्या माया तही कल्पित, अध्यारोप किनो सही ,
अर्धमात्रा स्वभाव प्रणव सो, त्रिगुण तत्त्व माया भई ॥ २ ॥
आप ज्यों के त्यों निरञ्जन सर्व भाव फेसी अजा ,
ज्यो बुँबक देखकों सोहू चेतन, त्यों दृष्टोपदेश पाई रजा ॥ ३ ॥
परम चैतन्य आदि निरञ्जन, अकरसा पद सो सदा ,
अजा भस्व अर्वाक अंजन, भो जगत पल म तदा ॥ ४ ॥
समुभवह्य सो स्तुति पदारथ, दृष्ट पदारथ स्वामिनी ,
अद्या द्रव्य चैतन्य धन में, भई अज्ञानक दामिनी ॥ ५ ॥

बोझरा—२

ऐसे आप सगुनब्रह्म स्वामी, ऐसे ही अण भयो बहुनामी ,
आप फेलाव किनो ग्रही माया, सहज भोग करी सुत तोषु जाया ॥

छंद

आये तीन सुत अगत कारन, सत्त्व रज तमसादि भये ,
पञ्चभूत अरु पञ्चमात्रा, तमोगुन केरे कहे ॥ १ ॥
देव दत्त अरु उषय इन्द्रिय, बेग उपजे रजहीके ,
भये चतुष्टय सत्त्वगुन के, काम दिनो कर अजहीं के ॥ २ ॥
रजोगुन सो आप ब्रह्मा, तमागुन सो रुद्र हे ,
सत्त्वगुन सो विष्णुआपे, समुनब्रह्म पहुँची पहे ॥ ३ ॥
चार पंथक अरु चतुष्टय, एक प्रकृति भूस की ,

आपको परिवार बढ़ाओ, भई माता स्थल की ॥ ४ ॥
 सभी आगे कसा चित् की बग्यो पुरुष विराट् मे
 कहे अन्ना माया कहो के कहो परब्रह्म बाट जे ॥ ५ ॥

चोखरा—३

ऐसेई अघ चस्या अभिभारी, ताकी भाँति भई लख चौरासी ,
 निर्गुन ब्रह्म सगुन भयो ऐसे ताको और कहीजें कैसे ॥ १ ॥

छन्द

और नहि कोई कमा हरि तें ज्यों पामिको पासा भयो
 कोई निर्गुन कोई सगुन है नामरूप आवे तयो ॥ १ ॥
 नाम नहि ताके नाथ सब है रूप नहि ताके रूप सब
 कारण कारण और नाही, रूप अरूपी हूँ कबे ॥ २ ॥
 सगुन जेता निर्गुन को है निर्गुन पोषक सगुन को ,
 ज्यों पुरुष की परछाँहि दर्पन आपन समर्थो जल को ॥ ३ ॥
 जड़को जप बैतन्म सीनो बैतन्म ज्यों का त्यों सदा,
 रूपविना खेल फसूत नाही आप ज्यों अपनी मुखा ॥ ४ ॥
 सहज इच्छा बानन ज्यों है अग्य नहि कौन आपतें ,
 कहे अन्ना अहकृति दुखी मान सीखी व्यापतें ॥ ५ ॥

चोखरा—४

ऐसो रमन चाख्यो नित्य रासा प्रकृति पुरुष को विविध बिनासा
 जैसे भीत स्त्री बिचछासा, नामा रूप सबे ज्यों बिछासा ।

छन्द

बिघाल दर्पन भीति कीनी और स्वच्छ सत्यस्वामिनी
 ताही के मध्य भाँति भासी बैसि सत्य सुहावनी ॥ १ ॥
 त्यों अन्ना के मधी भाँति माना, वस्तु विशेषहीं भासी है ,
 आत्मा अकर्ता अभोग अवयव, आवत जीव बितासी है ॥ २ ॥
 प्रकृति पुरुष के जोग जंतु म, मिथ्या पुरुष प्रकट भयो ,
 सो आद्य नाही मर्य नाही, मध्य मानी तापें रह्यो ॥ ३ ॥
 समय मिथ्या बिपरीत भावना, जब मधी जो नर करे ,
 तब सगी माना देह धर्यो, माया में उपजें मरे ॥ ४ ॥

पिण्ड पर सो मोह पायो, पुरंजन तातें भयो,
कहे अखा यह जीव उत्पत्ति, मान मिथ्या भे रह्यो ॥५॥

बोधरा—५

सदा सर्वदा नाटक माया, नाटक चलने देखे परब्रह्म रामा,
सो सब अपने शिर जसा, तातें न आवहीं जीव को मंता ॥१॥

छंद

मंत न आवहीं कृत्य भावहीं, रजना देहसों सदा,
मैं ममता कर आप पोखे, एयो त्यों मन पावैं मुदा ॥१॥
स्वस्म जैसो पुत्र बछ्या कर्म नित ऐसैं करे,
आकाश की नित्य मोट बाँधे, भठार से अपना भरे ॥२॥
अजामे नर सुभट पोडा ताही की सेवा रचौ,
गांधव नगरी जीतिबेकों, चलं राम सुंवर खुची ॥३॥
जय-मराजय नित्य पाव हर्ष-शाक हूवे बिपे ।
तन-मन के आवन कारन, कर्म मादक नित भले ॥४॥
असंभावना विपरीत भावना, ताही के हियमें रही,
कहे अखा भे जीवनसञ्जम उत्पत्तिस्थिति बाकी कही ॥५॥

बोधरा—६

होता नहीं अवे नाहीं आगें, मिथ्या भ्रम भ्रमीबे कों लागे
ज्यों देह के संग छाया होई, सो मिथ्या ना साची साई ॥१॥

छंद

नाहीं मिथ्या नाहीं साची, रूप ऐसो जीव को,
जम मरन भी भ्रमम संगय चल्थो जाई सर्वव को ॥१॥
ताही अज्ञानक भेतना उजव पजे नरके विप,
जगम मरण ओ भाग सुख दुख, काल कर्म फसको सखे ॥२॥
यही विचार, गुरु सें आयो, आतुरता उपजी खरी,
धरमकमल पर शीघ्र घरकें, सेवा, स्मृति अतिशय करी ॥३॥
कीनी जु नवधा भक्ति माबें अधिकार परसे गुरु वही,
प्रेमातुर बराम्य केवस, जैसी बड़ी तैसी ग्रही ॥४॥
बहे अखा महावाक्य गुरुको, ऊग भीकस आपसैं,
ज्ञान अर्ककी जोन्हसों बस, रह्या नहीं मन मापसैं ॥५॥

शोकरा—७

जैसे भईपिछ फूटे मिहगा और क्य भयो और ही गगा,
भागें अह मध्य गंगा पानी, भसत हुसत ताकी कोमल बानी ॥१॥

छंद

यानी कोमल भग खेचर, भूचर भावना सब टरी
तैसे खंत प्रसाद गुल्लें, अहंता अपनी गिरी ॥१॥
यमारण स्वक्य हरि को, हरिजन के उर में बस्यो
सौख्ययोग सिखात पायो, कछा गुह स्या अम्यस्यो ॥२॥
तत्त्वमसि जो बाधय धति को गुरु कुमार्ते सो भयो
भाष जीब मिथ्या बह्ना, सब ऐसे को ऐसो कह्यो ॥३॥
भाष परबिन खेल देख्यो नित्य नाटक संभ्रम
मरुन मध्य स्वक्य भास्यो फ्यों पुतरिका बाध में ॥४॥
कहे अबा बँसोई जाने ताई के घट अमर्ब
जैसे को तैसे भयो अब, मध्यतें अहता तजै ॥५॥

शोकरा—८

महाजन जाने महाकम मेबा, जो परबह्य पर्यो सत्यमेबा,
क्यों बूबकतें चतन भयो सोह जीबपना ताको यों खोहा ॥१॥

छंद

खोहा गयो दिख बस अबाको, ताही तें चेतन भयो
जंघा अचानक मैन पायो हह बिचलें टरबयो ॥१॥
स्तुतिपदारण नयन देख्यो दृष्ट पदार्थ गया बिसा
मिट्टी वेह की भावना अब स्वयं चेतन हूँ बसा ॥२॥
ध्येय ध्याता अरु करन बारन भाया के मध्य जो सही
रज्जु सगी सो भुजंग भय हें दिन रज्जु कैसो अही ॥३॥
श्रीधने जो प्रलाप कह्ये जानही बिरला जना,
जामें पाछें और नाहीं, आप बिसस्या आपना ॥४॥
बहे अछा ए बहानीला, बहानीगी जन भायमो
हरि हीरा अपने हृदय में बनायास सों पायमो ॥५॥

✱

अखाजी के पद

अब्बाजी के पद

राग—विहाग

(४)

सोई पद कौन बसावे गुरु बिना, सोई पद कौन बतावे ?
 पद पहिचान मगन भये जो नर, सो फरी भवजल नावे ॥गुरु०॥१॥
 गाहे नहि जप तप तेंसो पद तीर्य बरत नहि आवे
 शुद्ध विचार सार सनन की, आपा पर बिसरावे ॥गुरु०॥२॥
 सो पद चाहत हरिहर अज, सो दोष सदा जस गावे ,
 सिद्ध साधक साधे पुनि काया, गुन के पार न आवे ॥गुरु०॥३॥
 बितवत बित्त अबित्त होई आवे, घर अघर गरबावे
 हसा बोल पद मध्य सोनारा, स्वस्वरूप बरसावे ॥गुरु०॥४॥

(५)

ज्ञान-कला अति ग्यारी, सबनतें ज्ञानकला अति ग्यारी
 जाको नेति नेति कहत हं सो घर सीना विचारो ॥सब०॥१॥
 चार बेद, चतुरदश विद्या, सो सब रही है कुँवारी
 गुन की ओछ रही उरउरे, अहता परी मय्य भारी ॥सब०॥२॥
 पढ़े पढ़ावे वेद व्याकरना धर्म कर्म अधिकारी ,
 ताम उरस रहे उर अतर, ना काई तोल हमारी ॥सब०॥३॥
 एही अवाक्य अर्णसिगी अनुभव जाग्रत निद्रा टारी ,
 सासी सोनारा पञ्च पंचन को सर्वातीत निरधारी ॥सब०॥४॥

(६)

राम रमे जुग सारा, सतोभाई राम रमे जुग सारा
 गुलाम जाने मुखामा भारी सा उतर्या भवपाय ॥सतो०॥१॥
 नादी दादी गुणी गवैया, कवि कसा रस कहैता ,
 बचक पूजक सेवक साधन, कोई नहीं ब्रह्मवेता ॥सतो०॥२॥

जयत, जयत का कुरंग न देखे, ब्रह्मवेत्ता संत सोई
 और सकल बासन के रसिया, टल भक्ति दुआ दोई ॥संतो०॥१॥
 पूरण ब्रह्म सकल परिपूर्ण, सकल भाव हरि राया ,
 बहेला पुगमा कोई एकाघा, बिरसा अनुमी ने जाया ॥संतो०॥४॥
 जैसे जग्गि काष्ठ के संवे निकसत धुँवा सोई ,
 फीटवा चुँका फिर जग्गि न पावे, कय कय मये सब कोई ॥संतो०॥५॥
 देह के कम कास जल तीरे, डूब राया पुग सारा
 ब्रह्मदरिया मे बिरसा भीले कोई अखा रे सोलारा ॥संतो०॥६॥



राग—कानडा

(१)

उलट फिरे सोई निज घर पावे नहि तो मिथ्या जन्म गमावे ॥ध्रुव०॥
 जीहारे ठहेराबू रयां बीच आकाशा, अन उपाय करे सर्वे सौसा ,
 सधे मिटे तो सहेब घर पावे, असख निरखन आप सिखावे ॥२॥
 जी हरि जोळें त्यां राम रगीसा लोक नसखे अमोक्षिणी सीसा ,
 पलपल में प्रभु नाना रे रगा, सोई प्रभु खर्चें सदा जंग सगा ॥३॥
 एककु गाय और नहि वाचे, समज से सान सबगुरु साचे ,
 वचि बिना भोग सागे नहि मीठा, सोई सरावे जेणे पियु वीठा ॥४॥
 बहार सेवत काची रे नारी, अतर भोग भोगे पियु व्यादी ,
 और भोग सर्वे नींद म जावे, जागे अखा सोई प्रत्यक्ष पावे ॥५॥

(२)

राम रसायन जब जिनिहि पियो है, ताके नैन भये कछु औरा ,
 जब ही प्यालो मानुं कान दियो है रामरसायन जब जिनिहि पियो है ॥१॥
 उतरत कंठ कुटिलता मिट गई, जब उर अंतर बास कियो है ,
 भिन्न भिन्न भाव रह्यो छोरी भीतर, सो सब महारस नीर दियो है ॥२॥
 पियो है परीक्षुप पण्यो हूबामां, महा अनुभव प्रकाश कियो है ,
 ऊर्ध्व कमल सुर्ध भये ऐसे, जीव टरी निज सिख भयो है ॥३॥
 उतरत नाही ताके ब्रह्मधुमारी, बाँकु कबहुं न कास ग्रह्यो है ,
 गर्व का रम्युही अखा है निरतर जिस चिद्रूप भयो सो भयो है ॥४॥

(३)

धर्मदातीत निगम मुख गावे, जार्को योगेश्वर ध्यान सगावे ,
 बामें हम हम भीतर जोसे धर्मदातीत निगम मुख गावे ॥ध्रुव॥
 अनिपद कहत आनंदमय, प्रकृति पार पंडित बतावे
 बाहुं खटत है महा मुनिद्वार, सो ज्ञानी घर बैठ हीं पावे ॥२॥

कोई तप तीर्थ प्रतादिक त्यागी, को यमुना भु वाहन नायो ,
कोई क्षीर सागर बहुविधि बादी, सोई सिंधु सग्न नाथत नायो ॥१॥
जैसे पारस स्पष्ट घातमूर्त सोई साधन को साध्यों नब जायो ,
कह अबो मेही अकथ कहानी नाहि कसु पायो में नाहि गमायो ॥४॥

(७)

नाबे गुणे निरगुन की बातें, आप बन्यो हे अपनी इच्छातें
आपे आप आनन्द कबस रस नाबे गुणे निरगुन की बातें ॥ध्रुव॥
जान कभी कभी हारे जानी, पक्त भनी भजी हारे माते ,
ध्याग बैराग्य करी करी पाके, प्रगट खेस न आवत बाते ॥२॥
एही अचरज भुन कोई जानी क्या जान कोई मेदु की जाते ,
जैसे वृक्ष को बेघे वृक्षमणि और न टके कोई बात बनाते ॥३॥
कपारे कहुं मनत नाही कहते अकथ कहानी लखी न नाम पाते
प्रगट प्रमाण हजूर हबोहब ओही बिराजे नाही अखाते ॥४॥

(८)

महा मत्तबाबा श्रीरामजना बडी गयो चित्त चित् आप न आपा
सा करी न उत्तरत कोई दिना महान मत्तबाबा श्रीरामजना ॥ध्रुव॥
साघी मूर्ख नूरत की निरखे आप न देखत और उना
निराधार घरती न धार, चित्त चिद्वृक्ष भया अपना ॥२॥
अजब कसा अचानक कानी पारब्रह्म रसवप मना ,
प्रपञ्चपार सेवक न स्वामी एक नहीं कौन कहे जो बना ॥३॥
रत्न साख बैत नही कोई जाग्रत म सब होत फना ,
अपने वळ ऊड़त ज्युं पसी अखा आधार नहि ज्युं बना ॥४॥

(९)

निरगुन राम गुननके बिखे है न माहि मायानी मेखे
आपे आप आनंद अनंत मत निरगुन राम गुनन के बिख ॥ध्रुव॥
भया कंधम अनंत आभूषण युं जाने जन भूष क लखे ,
गुण सा पाट माट अति शोभा, रणेन रथ काहेकुं देख ॥२॥
मनी मुद्रा भोग निमित्त ज्युं असन बसन बहु रिख बिदेख ,
रूपक ज्युं का रूप है जनहुं, न मरे आप जाग हे वेवे ॥३॥

आप अरुण रूप रस नामा, बना सख चौरासी मेखे ,
उत्पति स्थिति समाधी चाखे, ज्युं धनसार रहत नहि रेखे ॥८॥
ऐसा आप व्याधिविधि विमली, जमली नहीं कोई द्वैत उवेखे ,
कर आनोख सोच अबो कहे, सारा सिधु आपलग सेखे ॥९॥

(१०)

महापद मध्य महाजनवासी, बोहत विचार रहे सुघराशि ,
जाकी गेल पडे दुक नारद, महापदमध्य महाजनवासी ॥१०॥
सांकी लेहरी है हरिहर अब, सुर तेतीस मुनि सहस्र अठधासी ,
सिद्ध साधक सब धर्मा भीतर, सो ब्रह्मसागर सत खबिनासी ॥११॥
मरजीवा बिचरे अबुमध्य, घरणे बाहेर करत सुखराशि ,
ऐसी साध आवनिन अबर, लिंग बिना रहे सब रस मासी ॥१२॥
ए अकस बसा कसत नहि, पडित जो घौच पास सेवो ओकासी ,
ज्युं खेबर खोज पडत नहि बिचरे, चरण बसे सो भू अम्यासी ॥१३॥
जातां मात विषय गोडबा, त्युं लगना छेदेअबहे गसासी
ऐसी गत मत समज अबो कहे, न्यारा पंथ सहेजे सुख पासी ॥१४॥

राग—मल्हार

(११)

ज्ञान घटा पड़ आई, अज्ञानक ज्ञान घटा पड़ आई !
 अनुभवजस बरखा बड़ी बुंदन कर्म की कीच रेसाई ! अज्ञानक ०
 दाबुर मोर शब्द संतन के, ताकी धूम्य मीठाई ! अज्ञानक ०
 बहुदिश चित्त जमकत आपनपों दामिनी-सी दमकाई ! अज्ञानक ०
 घोर घोर गरजत धन मेहेरा सतगुरु सेन बताई ! अज्ञानक ०
 उमगी उमगी आबत है निशबिन पूरव दिना जनाई ! अज्ञानक ०
 गयो प्रीत्य अंकुर उगि आये हरिहर की हरियाई ! अज्ञानक ०
 झुक सनकादिक छेप सहाराये सोई अखा पद पाई ! अज्ञानक ०

(१२)

ब्रह्म महेस सुख कीनो अब तो ब्रह्म महेस सुख कीनो ! टेक
 चतुरासीत त्रिगुणपर पावन ऐसो निज पद चीन्थो ! अब तो ०
 जहाँ नहि ध्येय, जहाँ नहि ध्याता, छोछासीन सब कीनो
 बिधि निषेध बोल भये बराबर ना कोई अधिक जखीनो ! अब तो ०
 ज्युं मोर 'सलाखा मध्य परछत प्रतिबिम्ब सो तन में कर सीनो,
 भेदाभेद जहाँ नहि बाबा आकाश तँ अति सीनो ! अब तो ०
 जीवन्मुक्त सकल घटबासी सब रस भोगी भीनो
 जजब कसा अघा सोनारा, ऐसो अनुभव चीन्थो ! अब तो ०

(१३)

प्रानद अद्भुत आया अब मोहे प्रानद अद्भुत आया
 बिया कराया बसु मी नहीं सेजे पियाजीकुं पाया ॥ टेक ॥
 देता न छोड़पा बेदा न छोड़पा, छोड़पा संसार
 मूता गर निद्रा से जाग्या, फीट गया स्वप्ना सारा ॥ अब ० १
 नृपानाथ अंतरलें छूटी, गीसा ज्ञान मिलाया,
 नाइ मटक फैस सब निस्था जइसे जज्ञान उड़ाया ॥ अब ० २

भला कहे कोई बुरा कहे कोई, अपनी मति अनुसार
खरा मोका सोह पारस परसे सोन भया अखा सोनारा ॥ अब० ३

(१४)

तुज मरते बनी आब, मनुवा ! तुज मरते बनी आब ! टेक
तरे चाहिए चीकना, मीठा पंच बिषम सग सीना
मिअलस तेरी पंच की सग चाहिये राम रगीला ॥ मनुवा ! १
सुख को साज मिसावे मन तु, दुख चले दस डग आग
ज्युं गलनी गल मच्छी रसबस तुरत तनकु त्यागे ॥ मनुवा ! २
एक मन अरु बूझा पारा, मरे सो मूस अमूले
बच्चा अपना अरु बघाड़े पक्का नर भू बोले ॥ मनुवा ! ३
योगी हो के हो तु तपिया, जोत्या जुग ससारा,
मरतक की गत मरतक जाने कहे गया अखा सोनारा ॥ मनुवा ! ४

(१५)

अब गया जनम भरस का सांसा, राम ए राम भया रे समासा
जेही राम जाने बा बूरा, मोही राम में पाया उरा ॥ अब० १
बिन जान्मा में बहुत मरे बा, पिड बह्याड का भार धरे बा ॥ २
सो म देख्या स्वततर छागा, पिड बह्याड बावे छागे रे लाम्या ॥ ३
ना जप तप ना संयम कीना, अवाध्य रस मुख बिन पीना ॥ ४
गुरुगम म्यान ऐसे ही पामा, अंतर्दृष्टि कोई गया न आया ॥ ५
बिन मूक मूका जर सोही-जानुं ऐसी उपब होई ॥ ६
त्रिगुण की निद्रा घर न सागी, अबे राम अंतरमति जागी ॥ ७

(१६)

तब वे पद कैवल्य कु रे पाइये, कहेणी रहेणी से पर जाइये ॥ टेक
अब सगी मनुवा करे कछु आसा, तप सगी रै रहेणी का पासा ॥ १
जब य चित्त अचित्त घर आया सिर पर सीन मई छाया ॥ २
फिर मनके मनरूपे रे होवे, कासकरम सीछे काहे बगोवे ? ॥ ३
ग्युं डांके दर्पन प्रतिबिम्ब नाही त्युं मन अमन तो रहेणी काही ॥ ४
ऐसे मबधूत किया बिभारा, तो ये अखा पद पाये पारा ॥ ५

(१००)

(१७)

हार्या मन, हार्या अहंकारा, भोग हार के मया रे तयारा । टेक
तुलगा हारी हारी आसा, हारी फिरी आवरण की साँसा ॥ १
हार्या वर्णायमका माना अनमे जाये पहुँचा निवाना ॥ २
ग्रह्य अग्नि अन्तर में सागा बस गइ माया रखी नहि जाया ॥ ३
राम के जीवणे जीवणा मेरा जहाँ नहि कासकरम का घेरा ॥ ४
बहेणी रहेणी जाणे रामा मैं तो मया रे पूरनकामा ॥ ५
जैसे पारस परसा जोहा सामटा सुवर्ण पाया सोहा ॥ ६
कहत अखा जानेगा हार्या हार्ये को आवे इतबार ॥ ७

(१८)

घर न बसे घरवासा भागा अनमे खोज सीनी निब जागा । टेक
मेरी सड़का कोई न मेरा मोसे सब करे घर घेरा ॥ घर० १
पावे पूत ठगारे घर में, मेरी माया सगावे भरमें ॥ घर० २
गुरुजानी मोहे मरम बसाया तब मैं सबका हिरदा पाया ॥ घर० ३
गुरु के हिरदे का बिचारा, सारा कुटुंब त्रिगुमी बिस्तार ॥ घर० ४
ऐसा जान सब थाप थपेबथा ईत सस भाया घट बेरा ॥ घर० ५
असल एन असमानी आपा जाका मोस सोस नहि मापा ॥ घर० ६
माहीं भीतर माहीं बहार ज्यूँ का त्यूँही अखा है सारा ॥ घर० ७

(१९)

ना मैं घट दिना नाहीं जैसे वेह संगफोत उछाहीं ॥ टेक ॥
जैस मुकुर में पड़त झाँही, कही न जात यारी के माँही ॥ ना० १
पानी में नम दखियत भीके जल का मस महीं उनही के ॥ ना० २
बिज मकाश स्पस नहि रहेबकुं भीतर बहार बचवकुं देबेकुं ॥ ना० ३
मत अमत विनमत है ऐसा गुरुम्यानी की एसी सेसा ॥ ना० ४
कहा कह समुसाज कोई जहाँ जसा तहाँ तैसा होई ॥ ना० ५
भरण जीवण सा देह का घरमा मैं तो माहीं इन्दी अरु चर्मा ॥ ना० ६
नाम घरतकुं अखा सोनारा सदा मिरंतर राम है सारा ॥ ना० ७

भजन

(१) अघघघ सब भागे

मनुष्य ! अघघघ सब भागे ,
जब सद्गुरु के मुँह भागे
ना, तो पत्नी मरे ससारा ,
आत्मज्योत न जागे ।
मनुष्य ! अघघघ सब भागे !

त्पासी लाख हजार सम्बाणु ,
नवसेँ और सम्बाणु ,
बिन हरि जाण्ये सकल सरीखा ,
तो मनुष्य अधिक क्यों जाणु ?
मनुष्य ! अघघघ सब भागे !

आहार, निद्रा, भय अरु मैथुन
बोली बाली चरणा ,
मानव देह की ये ही बढाई—
के राम जानिके तरणा ।
मनुष्य ! अघघघ सब भागे !

राम न जाण्यो, 'आपा' छाण्यो,
तो सकल पशुतेँ नीचा ,
कहत अछा, एक राम जाण्ये विन—
सीव पृथोणुं सिध्या ।
मनुष्य ! अघघघ सब भागे !

(२) अजब कसा हरिजन की

अजब कसा हरिजन की—

होवे अजब कसा हरिजन की !
ताका भेद न पावे दुनियाँ !—

जाको तीक्ष्णता तनकी !
होवे अजब कसा हरिजन की !
जाकी जड़ पातास लगी है,

सो पीजे घूरका पानी
सो तस्वर कौन होवे हरिया ?
जाको हरि साये एकानी !

होवे अजब कसा हरिजन की !
ज्युं जस जामे नर मायेका,
मन एक, तब दोउ देखे ! !

पिड बिहीन रहे यह सोका—
ताकी सूरत रहे ये कहाई !
होवे अजब कसा हरिजन की !

तनोंका तन निम्र न हरितुं,
ज्युं तंवु का पर कीम्हा ,
ज्युं कपड़ा तें मूत ज्युं का र्युं !

ऐसे मापा बिहीन्या !
होवे अजब कसा हरिजन की !

ये पयको जे खोजे—मूसे,
अर्थ बेठावे सेवे ,
बस्तु बिचारे बस्तु मखो रहे,

मत कोद रीसे उबेवे !
होवे अजब कसा हरिजन की !

(३) आपे सो गैबी अवाच्य

आपे सो गैबी अवाच्य । नाम बाकों क्यों धरूँ ?

बोनत बोसावे आपे । जाने में हि उचरूँ ।

आपे सो गैबी अवाच्य । नाम बाकों क्यों धरूँ ?

मास्त ग्युं फिरावे ध्वजा ऐसे हि मैं फिरूँ हूँ ।

मोहे में मेरो है कहा ? प्रभु के मैं परहूँ ।

आपे सो गैबी अवाच्य । नाम बाकों क्यों धरूँ ?

सिन्धु में चमत भाव, जात कोइ बंदरूँ ।

सकल बायु को जोर । ऐसे मैं हि संचरूँ ।

आपे सो गैबी अवाच्य । नाम बाकों क्यों धरूँ ?

राम को मैं पकड तब, आगे 'आप' सही करूँ ।

सवण घटमें मोर—कहो ! कैसे ले भरूँ ?

आपे सो गैबी अवाच्य । नाम बाकों क्यों धरूँ ?

मैं तो जैसे घनसार । मास्त को क्युं अंक भरूँ ?

रेंच आपा रहे नाही । ऐसे हूँ देख्यां भरूँ ।

आपे सो गैबी अवाच्य । नाम बाकों क्यों धरूँ ?

इत, औरें मैं रच नाही । उत औरें केहेती बरूँ ।

इत, उत कहेवेको अखा । सहज घून्य जवे धरूँ ।

आपे सो गैबी अवाच्य । नाम बाकों क्यों धरूँ ?



(४) आलम फूस असमान का

आलम फूस असमान का !
खिल । खर जावे ।

अब्सल, आखिर नहीं केहेने को !
गैबी आप सहारावे !

आलम फूस असमान का !
पुतली बनी है बरास की !
छनु छनु उड़ जावे ।

तोस तफावत हो रह्या !
बूँडपा ठौर न पावे ।

आलम फूस असमान का !
नसरे न जावे निरखताँ !
कारीगर कोई ।

बनासुर से सब नीपज्या !
फिर बनासुर होई ।

आलम फूस असमान का !
ए रे असमान के उर में
छुपा साईं बेखू ।

अटकस सी जाई मुझे !
मिलता है सेखू ।

आलम फूस असमान का !
बूँडत मेरा मन जवा !
वहाँ जाई लाग्या !

अब तो छोड़पा न छुटीजे—
मुई परोप्या घाया !

आलम फूस असमान का !

(५) आली ! अबको फाग

आली ! अबको फाग ! मेरी मन सहसास
नहि सो, जोवन मेरो यूँ हि आस ! आली अबको फाग !
सकल ऋतु में घाय वसन्त !—
सबको सार मैं पाया ए कान्त ! आली अबको फाग !
समज केसर, कुकुम गुसास—
उमगे उड़त नभ भयो है लाल !
ऐनसें सखी करत कत्तोल !
मेरे पियासग है सक्कोल ! आली अबको फाग !
अखिल मंडल भयी रग भोम !
वीपक विवाकर घरत है सोम !
अनत कोटि ऐसे है रवि सासात् !
होत नहीं ज्यहाँ संसापात ! आली अबको फाग !
प्रीत कठिन काटे बहु वाह्य—
आपे अमृतरस ! मोहे अचाह्य !
मैं चहुँ पिचकारी सेना
पियु न चाहे नोकस देना ! आली अबको फाग !
सब सखियन मिली गात्रे गान !
अतर आप मिलाव तान !
कहत अब्बा पहुँची उमग मोरा !
पिया प्यारी है नवम किशारा ! आली अबको फाग !



(४) आसम फूल असमान का

आसम फूल असमान का !

खिसे । डर आवे !
अम्बल, बाबिर नहीं केहेने को ।

नेही आप सहपावे !

आसम फूल असमान का !

पुतसी बनी है बरस की !

छनु छनु उड जावे !

तोस तफावत हो रह्या !

बूँडपा ठौर न पावे !

आसम फूल असमान का !

नसरे न आवे निरस्तता !

कारीगर

कोई !

अनासुर सें सब नीपज्या !

फिर अनासुर होई !

आसम फूल असमान का !

ए रे असमान के उर में

धुपा

साई देवू !

अटकल सी आई मुझे ।

मिलता है

सेवू !

आसम फूल असमान का !

बूँडत मेरा मन अथा !

बही

आई लाग्या !

अब तो छोड्या न छुटीमे—

मुई

परोम्या घाया !

आसम फूल असमान का !

(५) आली ! अबको फाग

आली ! अबका फाग ! मग मन सहरात
 नहि तो, ओवन मेरो यूँ हि जात ! आली अबको फाग !
 सकल ऋतु में घाय वसन्त !—
 सबको सार मैं पाया ए कान्त ! आली अबको फाग !
 समज केसर, कुकुम गुनाल—
 समगे उड़त मम भयो है लास !
 ऐनसें सखी करत कत्तौल !
 मेरे पियासंग है झक्कोल ! आली अबको फाग !
 भविस मंडल भयी रग भोम !
 दीपक दिवाकर घरत है सोम !
 अनत कोटि ऐसे है रवि साक्षात् !
 होत नहीं ज्यही भ्रमापात ! आली अबको फाग !
 प्रीत कठिन काटे बहु बाह्य—
 आपे अमृतरस ! मोहे अबाह्य !
 मैं चहुँ पिचकारी लेता
 पिमु न चाहे नीकस देना ! आली अबको फाग !
 सब सखियन मिली गावे गान !
 अतर आप मिलावे तान !
 कहत अछा पहुँची समग मोरा !
 पिया प्यारी है नयस किशारा ! आली अबको फाग !

(६) इस नगरी में

इस नगरी में ना सुखे सोणा—
नित भाने ! और नित होय रोणा !
जिस नगरी का राजा नरुंग—
सर्वे लोक जस 'जाय' रंगा !

इस नगरी में ना सुखे सोणा !

कास मेबासी नित्य सो सूटे—
पाड़ कोट बरबाबो सूटे !
राजा सदा ये रहे अबुधा !
बन्हीर स्वतन्त्र ! न चासे सुधा !

इस नगरी में ना सुखे सोणा !

शाहजोक छुपा रहे छाना—
फिरे नगर में लोक गुमाना !
तुज सगता जाय पेर बधेर !
करे फेसाव तु नित्य नवेरा !

इस नगरी में ना सुखे सोणा !

जाय समटी रहे तु छटा !
तुझको क्या जो जाये सूटा !
आख आखा हम किया विचारा !
नगर अबिनारी किया अबवारा !

इस नगरी में ना सुखे सोणा !

(७) इसी विधि घोखा भाजे

इसी विधि घोखा भाजे
 सन्तो ! इसी विधि घोखा भाजे ।
 करके पचमूस की रचना आपे आप बिराजे !
 सन्तो ! इसी विधि घोखा भाजे ।
 ना सो जीव ईश्वर पुनि नाहीं ।
 ना सेवक ना स्वामी !
 ना हम बख्श, मुक्त, कहो कैसे ?
 ज्युं ही त्युं ही बनामी !
 सन्तो ! इसी विधि घोखा भाजे ।
 दिनकर तेज कैसे वो कहीजे ?
 सहज सुभाव हैं वाके ।
 वस्त्राभास, सत्त्व त्यम जानो,
 रमे, धमे जे आके ।
 सन्तो ! इसी विधि घोखा भाजे ।
 कौन बूढ़े ! कौन तारे ? कहाँ ? कौन ?
 अवयव आप विधाना ।
 य हि विधि अच्छा मरम गत बुझे—
 ज्युं का त्युं ही समाना !
 सन्तो ! इसी विधि घोखा भाजे !



(८) एक आचरण ऐसा !

सन्ता ! एक आचरण ऐसा !
 घट मेरे में और खोले को !
 किन्हा निशदिन वासा !
 सन्तों ! एक आचरण ऐसा !
 जब सग मैं था तब तू छाना !
 अब रग-रग में सो आपे !
 बोले चामे सुने सो देखे
 धिर मरे हि चापे !
 सन्तों ! एक आचरण ऐसा !
 मुज डेरत बाल बो हि देख
 मैं जानूँ—हुँ बोसूँ !
 ऐसा बस भया तम भीतर !
 व्याप्या अघि सानूँ !
 सन्तों ! एक आचरण ऐसा !
 जैसे पसा हेम हाठ है
 पिड रह्या सिग छूटा !
 ताँबापणा चाज्या ना पाव !
 तोस न आया ताटा !
 सन्तों ! एक आचरण ऐसा !
 मुज में तू हि हूँ मुज भीतर !
 साम नहीं बछु सोया !
 ये हि बिधि साम निरतर भुग है—
 नही अला बछु बोधा !
 सन्ता ! एक आचरण ऐसा !

(६) अबधू ! ऐसे गेन गँवाया !

अबधू ! ऐसे 'गेन' गँवाया !—

जैसे के तैसा होय रही धे
आपे आप समाया !

अबधू ! ऐसे गेन गँवाया ! अबधू०
गेन खल ! गेनी खसार !—

गेनी गेव का मेसा !
मैं नहीं मैं नहीं मध्य निरतर !

आपे आप अकेला ! अबधू०
पर मैं पच, पच मैं पर है,

है समरस, नहीं आना
मिष्ट पयों कौन कहो कहति ?

ज्यु नभ में दीप समाना ! अबधू०
कहत बाह्य, अन्तर कहौ तैं !

कहाँ तैं दूर ? न नेडा !
कहाँ तैं स्थल, सूक्ष्म, कहो कहति ?

ये हि समझे, भरम निवेडा ! अबधू०
कारण धूम, धूम सो कारन !

कृत्य अकृत्य सो धूया !
भूत, भविष्य कर्त्तमान स्वतन्त्र—

सून, अखा उममुना ! अबधू०

(८) एक आचरज ऐसा !

सन्तों ! एक आचरज ऐसा !

भट मेरे में और खोले को !

किन्हा निशदिन बासा !

सन्तों ! एक आचरज ऐसा !

जब लग मैं या तब तू छाना !

जब रग रग में सो आपे !

बोसे बासे सुणे सा देख,

धिर मरे हि बापे !

सन्तों ! एक आचरज ऐसा !

मुज डेरत बास बो हि देवे

मैं जानूँ—हूँ बोसूँ !

ऐसा जस भया तन भीतर !

ब्याप्या बंधे सासूँ !

सन्ता ! एक आचरज ऐसा !

जैसे पसा हेम होत है

पिड गहा सिंग छूटा !

तोबापणा खाज्या ना पावे !

तोस न आया तांटा !

सन्तों ! एक आचरज ऐसा !

मुज में तू हि हूँ तुज भीतर !

ताम नही कछु सांधा !

य हि विधि साव निरतर जुग है—

नही अया बछु बोधा !

सन्ता ! एक आचरज ऐसा !

(६) अबधू ! ऐसे गेन गँबाया !

अबधू ! ऐसे 'गेन' गँबाया !—

जैसे के तैसा होय रही भे,
आपे आप समाया !

अबधू ! ऐस गेन गँबाया ! अबधू० !
मेब छल ! गेबी खेसारा !—

गेबी गेब का मेला !
मैं नहीं, मैं नहीं मध्य निरतर !

आपे आप अकेसा ! अबधू० !
पर मैं पब पंच में पर है,

है समरस, नहीं आना
भिन्न पर्यो कौन, कहो कहाँति ?

ज्युं नभ में दीप समाना ! अबधू० !
कहत बाह्य अभ्यंतर कहाँ तें !

कहाँति दूर ? न नेड़ा !
कहाँ तें स्वस, सूक्ष्म कहो कहाँति ?

ये हि समझे, भरम निवेडा ! अबधू० !
कारज घून्य घूम सो कारन !

कृत्य अकृत्य सो घून्या !
भूत, भविष्य वर्तमान स्वततर—

सून, अबा उनमुमा ! अबधू० !

(=) एक आचरज ऐसा !

सन्तों ! एक आचरज ऐसा !

घट मेरे में और खेले को !
किन्हा निषादिन वासा !

सन्तों ! एक आचरज ऐसा !
जब सग मैं था तब तू सामा !

अब रग रग में सो आये !
बोले आने सुने सो देखे
शिर मरे हि पाये !

सन्तों ! एक आचरज ऐसा !
मुज टेरत बास वो हि देखे
मैं जानु—हूँ बोसू !

ऐसा बस भया तन भीतर !
ब्याप्या अंसे सारू !
सन्तों ! एक आचरज ऐसा !

जैसे पैसा हेम होत है
पिड रह्या, निग छूटा !

ताबापणा खाज्या ना पावे !
तोस न आया ताटा !
सन्तों ! एक आचरज ऐसा !

मुज में तू हि है मुज भीतर !
ताम नहीं कछु सांघा !

ये हि बिधि साब निरंतर जुग है—
महो भया बछु बीघा !
सन्तों ! एक आचरज ऐसा !

(११) खेसत जोगी जोगणी हो ।

खेसत जोगी जोगणी हो ! हो मेरे ससना !

देखत है हरि आप !

खेसत जोगी जोगणी हो ! हो मेरे ससना !

आपे सो माया भयी है जोगनी

जोगी भयो सो काल ।

नव सतदुआठ शबगार सजा कर—

कामिनी भाल मुसाल ।

खेसत जोगी जोगणी हो ! हो मेरे ससना !

भेख मध्योमन मोहन मानी—

छीनु सोक वषा कीन्ह ।

जहाँ जैसी, तहाँ तैसी माया

सामी गई सौ लीन ।

खेसत जोगी जोगणी हो ! हो मेरे ससना !

कौतुक को देखन जो सागे—

ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।

जिने देख्या सो पाख पढत है—

तनु तनु कछु है भेष ।

खेसत जोगी जोगणी हो ! हो मेरे ससना !

सुर नर नाग, मुनि सब मोहे ,

तहाँ तैसी तद्रूप ।

चौद भुवन सग खेस रख्या है—

भटपटी अग अनूप ।

खेसत जोगी जोगणी हो ! हो मेरे ससना !

पंडित जाण, चतुर, चितेरा—

सो कंकनी कीन्हें पाई !

ताके शब्द सब मोहन सागे !

(१०) ऐसे वस्तु विचार्या

सन्तो ! ऐसे वस्तु विचार्या—

ना मोहो आत भेत नहीं कबहू
जानो भेब हमारा !

सन्तो ! ऐसे वस्तु विचार्या !
आतम गगन, गगन में आतम

ऐसे समरस बासा !
तही कछु बघे घटे, कहो कैसे ?

वस्तु वस्ते समासा !
सन्तो ! ऐसे वस्तु विचार्या !

जैसे हुम सरिता उपरुठे—
बहेते देत दिखाई

स्वस ते बस विषस नब होये
जूठी रंका पाई ।

सन्तो ! ऐसे वस्तु विचार्या !
अदबद खेल ये हि बिधि बूझो

ना आवे ना जाई !
बहु सागर की लहरी सब ये—

अस्वा ! बनक बनी आई !
सन्तो ! ऐसे वस्तु विचार्या !

(१२) खेलो खेल आपमें हो ।

खेलो खेल आपमें हो । हो । मेरे साथो !

प्रायो है फागुन मास !

खेलो खेल आपमें हो । हो मेरे साथो !

नहीं दूर आत्मा है आगे,

मत भटका बन कुञ्ज

जाको धृति गावे सत् सेन—

देख सको सेज पुञ्ज !

खेलो खेल आपमें हो । हो मेरे साथो !

रत आई बन मोरे । मधुकर—

करत गुजारव आय

रूप बिना रूप आय जो प्रगटघो है—

कैसे अन्य को ध्याय ? !

खेलो खेल ! आपमें हो । हो । मेरे साथो !

जाको रग रूप नहीं रेखा,

सो तो जानो ये काल ,

निर्गुन सा गुणरूप भयो है,

सोक सकल सोकपास !

खेलो खेल ! आपमें हो । हो । मेरे साथो !

पक्ष पंथकी पक्ष हम देखी,

ये आपे उपावनहार

आप अकास उत्पत्ति स पाव,

आपमें आप विस्तार !

पला खेल आपमें हो । हो । मेरे साथो !

मन सो मन नहीं, चित्त सो चित्त नहीं !

नहीं बुद्धि, नहीं अहंकार ,

(११४)

ते मित्य नवो मेह जाही !
 बेसत जोगी जोगणी हो ! हो मेरे लसना !
 हाव, भाव, छंद भेष, मूर्च्छना,
 सलित ताम आसाप ।
 ये हि बिधि नाच पुगोजुम नाचत,
 देत सबे सीर बाप ।
 बेसत जोगी जोगणी हो ! हो मेरे लसना !
 अह, ममत कर गेंद प्रहो है
 तीनूं लोके उछास ।
 ऐसे बेस अखिस दोठ बेसत,
 फीकत खोबेगी कास ।
 बेसत जोगी जागणी हो ! हो मेरे लसना !
 छा छाणी ने छो सब ठाकुर
 बाकर की कहा बात ?
 यह राम महि मखो कहे बेसत—
 सा देत मामा सीर सात ।
 बेसत जोगी जोगणी हो ! हो मेरे लसना !

(१३) गैन गया, ऐन सूज्या

सन्तो ! 'गन' गया, ऐन' सूज्या

मैं सो तुं, नहीं पूजा ।

मैं गुलशन भया तुज भीतर !

ये ही सेवा-पूजा ।

सन्तों ! गैन गया ऐन सूज्या !

'मैं' था, तब सो तुं नाहीं था ,

'मैं' गया, तू ही विराजा ।

आपे आप तुं भया स्वतंतर ,

गया दूरका साया ।

सन्तों ! गैन गया, ऐन सूज्या !

जात, भात, कुस, करम बिलाना

हरि सागर में पूता !

भगती पिछली सीन भयी सब—

ज्युं सुपने बिन सूता !

सन्तों ! गैन गया ऐन सूज्या !

अर्मक, चेतन, अचस, न स्थिर

ना सेवा, ना दाना ।

ऐसी गति भति भयी है जीया की

सहेज मन शमाना ।

सन्ता ! गैन गया, ऐन सूज्या ।

गगनुं गगन, पवनु पवन मित्या

तेजुं तेज नीर सारा ।

बसुधा बसुधा है स्वतंतर

ऐसे खयाल बलवाना ।

पंच सो पंच नहीं, है आपे,
 देखो तुम सोच विचार ।
 खेलो खेल आपमें हो ! हो ! मेरे साधो !
 नहीं विषय पंचभूत नहीं इन्द्रिय,
 है हरि आपोआप
 सुरत बसी आपे उर अन्तर,
 सब ही रहे अमाप !
 खेलो खेल आपमें हो ! हो ! मेरे साधो !
 कोटि पचास फिरे जीव बुद्धि —
 रटे कल्पना की काट !
 गगन पताल भटके ज्यु मूले
 आत्मा है आप ओट ।
 खेलो खेल आपमें हो ! हो ! मेरे साधो !
 अंधाधंध आत्मा बिन जाण्यो !
 देखी जोयो रँवार !
 बहोतु मैं सब सन्त अखो कहे
 आपमें आपको पार !
 खेलो खेल आपमें हो ! हो ! मेरे साधो !

(१५) जागो-जागो रे म्होटा मुनिवरा ।

जागो-जागो रे म्होटा मुनिवरा । सहजे सवगुण पाया जी ।
रेणकारनी धूनमा मनवा तामें मिसाया जी ।

जागो-जागो रे म्होटा मुनिवरा ।

नामिकमल पर नेजां फरफरे । उठे शब्द सवाया जी ।
तहाँ अविनाशी का धाम है । हंसे वासा बसाया जी ।

जागो-जागो रे म्होटा मुनिवरा ।

इगसा, पिंगसा, सुखमणा त्रिवेणी रस साया जी ।
बंकनाल उमटी बहे, दशमें द्वार समाया जी ।

जागो-जागो रे म्होटा मुनिवरा ।

सून पथी ! सून आकाश है । सून सत की छाया जी ।
सन लुटये मन कहाँ गया ? निज कहाँ रे समाया जी ।

जागो-जागो रे म्होटा मुनिवरा ।

गगन मंडल को मैं क्या कहूँ ? क्या कहूँ सून सवाया जी ।
न्दा रे कहूँ ऐ हंस को ? एक दिन सब प्रसाया जी ।

जागो-जागो रे म्होटा मुनिवरा ।

अविनाशी वणसे नहीं, वणसे सो ही माया जी ।
कहे रे अखोबी अप्राण्य छे । आतम बिरले पाया जी ।

जागो-जागो रे म्होटा मुनिवरा ।

(१४) जनम-मरण-शंका सब भागी

जनम-मरण-शंका : सब भागी—

अब मेरी सुरता मुजसों भागी !
ना कहूँ प्रहूँ छोड़ कहा त्यागी ?
सहजे हूँ मेरा अनुरागी !

जनम-मरण-शंका सब भागी !

ना मैं गृह ना सबक कहावूँ,
ना कहूँ पूजा ना तीर्थ न्हावूँ !
ना मैं ध्यानी के ध्यान समावूँ
ना मैं ज्ञानी के ज्ञान बिचावूँ !

जनम-मरण-शंका सब भागी !

ना मैं चतुर के मूर्ख अजाना
ना मैं पंडित जान सुजाना !
ना माहे पाप-पुण्य न धारूँ
ना मैं जीतु ना मैं हारूँ !

जनम-मरण-शंका सब भागी !

क्या कोई कहेवे समुझे कैसा ?
हृष कंकन को दपण जैसा !
सहज पथ ये हे हार्ये का—
अथा ! पद नहीं हम मार्ये का !

जनम-मरण-शंका सब भागी !

(१७) जीवन को पाया वस्तु विचारा

जीवन को पाया वस्तु विचारा !

सो मर मर अछेष्ट अविगत—

गगन खस खसारा ! जीवन को पाया !

तत्त्व चौबीस, प्रकृति तीन गुन

आप आधार रहाई !

सहज स्वभाव, रमे क्षमे आपे,

सहज बनक बनी आई !

जीवन को पाया वस्तु विचारा !

तत्त्व गैबतों, प्रकृति गबतों,

भूत, भविष्य, वर्तमाना ।

काल करम ये सब हि गैबतों,

उपग्या गव क्षमाना ।

जीवन को पाया वस्तु विचारा !

ना बे सरय ना बे मिथ्या ,

ऐसा अजरब खेसा !

बीच संधि मध्ये महेश महि—

आपे अजरब अकेसा !

जीवन को पाया वस्तु विचारा !

(१६) जिन जान्या तिन प्रपञ्च जान्या ।

जिन आया , तिन प्रपञ्च आया ।

कछु न जान्या सो सहज समाना ।

दृष्टादृष्ट भाव है जेसा माया बिसास जामो सब तेता ।

जिन जान्या तिन प्रपञ्च जान्या ।

दूजा हो कर एक उपासे ।

दूजा हो कर ध्यान जम्मासे ।

दूजी दुनिया दूजा ध्यावे ।

तार्थे प्रपञ्च पार न आव ।

जिन जान्या, तिन प्रपञ्च जान्या ।

अछता आप करे सो जापा ।

तार्थे सागे पुण्य न पापा ।

कर्म जीव ! करम जड ब्रह्मा ।

वस्तु विचार बिपे सो ब्रह्मा ।

जिन जान्या तिन प्रपञ्च जान्या ।

आप प्रकाशे दिन मणि सोही ।

आका बहुविध छाया न होई ।

ऐसा ज्ञान विचारो ज्ञाती ।

मोहे सानारा मायाजानी ।

जिन जान्या तिन प्रपञ्च जान्या ।

(१७) जीवन को पाया वस्तु विचारा

जीवन को पाया वस्तु विचारा !

सो नर अमर अछेय अविगत—

गगन खल खेसारा ! जीवन को पाया !

तत्त्व चौबीस, प्रकृति तीन गुन,

आप आघार रहाई !

सहज स्वभाव, रमे शमे आपे,

सहज बनक बनी आई !

जीवन को पाया वस्तु विचारा !

तत्त्व गैबतें, प्रकृति गबतें,

भूत, भविष्य, वर्तमाना ।

काल करम ये सब हि गैबतें,

उपज्या गैब छमाना ।

जीवन को पाया वस्तु विचारा !

ना वे सत्य ना वे मिथ्या,

ऐसा अचरज खेला !

दीठ संघि मध्ये महेल महि—

आपे अचरज अकेसा ।

जीवन को पाया वस्तु विचारा !

(१८) तुम मत जानो हरि दूर है !

तुम मत जानो हरि दूर है !

जो समझ पड़े वो हुजूर है !

हरि व्यापी रह्यो सब घटके माहि !

वहाँ देखु वहाँ पूजा नाहि !

तुम मत जानो०

पंच कर्मेन्द्र पंच इन्द्रि ज्ञाना,

पंच तन्मात्रा विषे कहो माना

अतःकरण चतुष्टय पंच भूता ,

ए लिये सर्व माया के तूता !

तुम मत जानो०

ये पाँच विषय का अनुभव करे,

तब राम रहे नै बाधे हरे

‘आप’ ओगासी करे निचार,

अनुभव बाधे अंग अपारा !

तुम मत जानो०

चौदे लोक माया के माहीं

सत को माया सेवे नाहीं

संत भये हरि मे ली सीता ,

संत के आये माया मलीना ! -

तुम मत जानो०

कोटिह ब्रह्मांड व्यापक है हरि

सब घट माहि रह्यो विस्तरी

धुरु को भाव जिने है शक्तो

जो तो रामरूपे अवा भयो !

तुम मत जानो०

(१६) तू हि तू हि तू हि राम

तु हि तु हि तु हि राम । निश्चे कीजे आपत्तें ।

पिता को अछ है पूत, अय नाही वापत्तें ।

तु हि तु हि तु हि राम ।

आत्मा ऐसे विचार छाँड़ अयालाप तें ।

देह को सकल साज होत है अमापत्तें ।

तु हि तु हि तु हि राम ।

काहु, पाण भेन, कान, किन्हो कब नाक तें ?

पिङ्ग का सकल पेच, देख नाही छाक तें ।

तु हि तु हि तु हि राम ।

अद्भुत चरित्र अंग, कैसे होय छाक तें ?

इतनी विचारे नाही न करे क्यों ताक तें ?

तु हि तु हि तु हि राम ।

सकल भयो चेतन सोक चौद व्याप तें ।

याही में तेरो है कहा ? छाँड़ और लाफ तें ।

तु हि तु हि तु हि राम ।

है सबे क्यासी को क्याल, मान पुष्प-पाप नें ।

अखा ! और विलयमान भयो ब्रह्म छाप तें ।

तु हि तु हि तु हि राम ।

★

(२०) तू हि तू हि भरपूर है

तू हि तू हि भरपूर है मैं नहीं नहीं मेठा !
मुझ बदनसे पिया ! तूज है, धिर मेरे देठा !

तू हि तू हि भरपूर है !

मैं ता पाणी का परपोटका क्या दोस ले बाल ?
मौज मटी पिया ! तेरही हसा आनन्द हाने !

तू हि तू हि भरपूर है !

बांदा सूरज आये तू हि, मेहा होय जाने !
आप हि आपक कारणे बहुबिधि मोय बनाने !

तू हि तू हि भरपूर है !

फल फल बास तू हि तू हि मोयी तू प्यारा !
ये सटके स्हाब है तेरका केर न्यारे का न्यारा !

तू हि तू हि भरपूर है !

सुद बिचारे छाछीमा अस्वा नहीं पाया !
निचंक आया तू ऊमरे, तब तू नाथ आया !

तू हि तू हि तू हि भरपूर है !

(२१) बाबा सो हि पंडित, साई, दाना ।

बाबा सो हि पंडित, साई, दाना—
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरीया—
बाबं एक समाना ।

बाबा सो हि पंडित, साई, दाना ।

ना वे कृत्य करे, ना त्यागे
ना वे स्थिति विचारे
गगन खल सहजे होय मीमंढे,
कौन डूबे ? कौन तारे ?

बाबा सो हि पंडित, साई दाना ।

ज्युं गैबी बादर होय अवर में,
उपजी बलि विनाये
त्रिगुणाभास इसी विधि ब्रूने
सा मर जाय न आवे ।

बाबा सो हि पंडित, साई, दाना ।

वित्र विचित्र ये भासे वस्तु,
अखा ! ये हि निरधारा,
अमित में सीन भये विधि ब्रूने—
सहित सकस ससारा !

बाबा सो हि पंडित साई, दाना ।

(२२) धूम्र वात बनी सब आवे

धूम्र वात बनी सब आवे !

सोच बिचारी देखो सन्तो !

धनुस्सोनी कहावे !

धूम्र वात बनी सब आवे !

आखरी पुरुष आवे है ऐसा

मध्य अन्त मर्हि दूखा

मिन्न पडे कौन ? कहा कहाँ ये ?

(जिनुं) य विधि आवे दूखा !

धूम्र वात बनी सब आवे !

सत्त्व चौबीस अवतार चौबीस—

सो सदाकाल बिराजे

यह विधि खस अखिस ये खेसत—

उमसण सारी भजि !

धूम्र वात बनी सब आवे !

निराकार का बेही आकार

आकार रामे है ऐसा

अजर, अमर अछेय सो ये ही

कल्पित कहा कहीं कैंसा !

धूम्र वात बनी सब आवे !

आठ अंगि जा विचारा

(तो) गगनवत् है पहेला

साम्राज्य जाना सो जानो

य हि अया है अकसा !

धूम्र वात बनी सब आवे !

(२३) भेदु कोइक जाणनहारा

भेदु कोइक जाणनहारा !

और सबन बातनहारा !

भेदु कोइक जाणनहारा !

असे बोर चडत हैं नटणी
ताको बास अघारा,
बहुअल कठिम है तसे
जे चढ़ना निराघारा !

भेदु कोइक जाणनहारा !

राजपुत्र स्वभाव ऐसा
कोईको दीप न पामे,
आचक जगत प्रणामे प्रशस—
कबहु राज्य न पामे !

भेदु कोइक जाणनहारा !

ज्युं दिनकर को दीप न चाहिए,
उनको आप प्रभाषा
बिज ज्योत सब ताहीं दीसे,
जब लगी सूरजबासा !

भेदु कोइक जाणनहारा !

ऐसा खेल आनद मुगटमणि,
जाणे कोई एक घूरा
सहजे नीमडे, बहोतों नीमडे,
(कोइ) पामा मखा पद पूरा !

भेदु कोइक जाणनहारा !



(२४) मत कोई मरो भरम के छोखे

मत कोई मरो भरम के छोखे ।
सो शामी, जे 'माया' छोखे
ओ परपन्न रहे रज माने
तो पसरे ज्युँ अग्नि समाने ।

मत कोई मरो भरम के छोखे ।

ज्युँ आदव कुल गया पसा रे
रंज मोहा सो हुवा पसारे ।
रज रही तो भी तिनु कुल खाया
सो क्या जाय पञ्चास्या—छोया ?

मत कोई मरो भरम के छोखे ।

दुनिया अँधरा पानी छोखे
तिमिर न जाय इ कीचड़ छोखे ।
दीपक ज्ञान छोखे ओ प्रकाश
घेन घट्या अह तिमिर विनाश ।

मत कोई मरो भरम के छोखे ।



(२५) मतामत्त छाँड़ रमे नर शानी

छाँड़ रमे नर शानी—
मतामत्त छाँड़ रमे नर शानी ।
बावन ग्ठार सूरत की लगना,
ऐसी अकष कहानी ।

मतामत्त छाँड़ रमे नर शानी ।

मनकी भगन लगत है ज्याँ ल्याँ
तब लग आवा-जानी ।
सोच बिचार समावे ये मनपो
ये हि दशा उर आनी ।

मतामत्त छाँड़ रमे नर शानी ।

अपनी आछ बिचारो वो तशा
छाँड़ो नाना बानी ,
ये सब ही है मन की रचना,
बँबरी आत बिखानी ।

मतामत्त छाँड़ रमे नर शानी ।

तामें उलझ रहे सो जन्ता,
सधे सा विज्ञानी
सो हि अतीत अछा ये परात्पर ,
सुणवामाँ सत् माना !

मतामत्त छाँड़ रमे नर शानी ।

(२६) सब कहे मान तज्या हरि

सब कहे मान तज्या हरि पाजे ।
ये हि बात बिचारो जागे, पोषक विहीन नहीं जे ।
सब कहे मान तज्या हरि पाजे ।

कौन सुने ? कहो कौनसु कहीए ? बेहासीस कहानी
कहा जाने राजन है सीमा वासीसुख राजधानी ?
सब कहे मान तज्या हरि पाजे ।

कोइ कहे पतित पावन, दीनवन्धु, अखिल भुवन को ईश
आये 'हम हम' भीतर बोल । ग्यारो नहीं जगदीश ।
सब कहे मान तज्या हरि पाजे ।

जैसा मान घरे, कौन कहांसु, है आये आय गुसाई ?
मान, ध्यान बिना चतुराई, भला । सहज सुख पाई ।
सब कहे मान तज्या हरि पाजे ।



(२७) सुमरन कौन करे ? कहा को ?

ये ही समझ मिथ्यो तुम ही ज्युं, नाम घरे कोइ बाको ?

सुमरन कौन करे ? कहा का ?

सोते निमिष न होत नेत्र को एक स्वास लिया न आवे ,
कैसे बोनु बाको मैं पूजा, होवे जे तुज भावे ।

सुमरन कौन करे ? कहा का ?

पक्ष पत्र वृष्टांत देखते, सब मिलिके ध्रुम सारा ,
है पत्र, रूप, रस बोही सौंईयाँ, ऐसा भेद हमारा ।

सुमरन कौन करे ? कहा को ?

वीर, अग्नि कैसे त्रो कहीजे ? दोउ नाम नहीं जाना ,
मे बिधि बूझे अन्धा बखर है ना उपन्या, ना समाना ।

सुमरन कौन करे ? कहा को ?



(२८) स्वेपद संभासे बिना

स्वेपद संभासे बिना, भजे पद श्रीचको !
त्रिभुषी पड़ी है कंठ वहे जय श्रीचको !

स्वेपद संभासे बिना !

सुपन में कोउ राजा मांगत ज्यौं भीखको !
देह को अह्मास भयो, मानत न सीख को !

स्वेपद संभासे बिना !

रतन गुमाया जास ग्रहे धुँक पीक को !
रूपा के भरोसे जन संवत है सीपको !

स्वेपद संभासे बिना !

मोह को मार्यो है मन, फिरे खंड द्वीप को !
कोकबान की सी नहिं उठे खाई द्वीप को !

स्वेपद संभासे बिना !

पंचको सबाद जाहे अधिक अधिक को !
बोर के संग में मिल्यो, भूस्यो छाही रीत को !

स्वेपद संभासे बिना !

ज्यु कीत्युचिन्मोक्षराम निखे साहा सीक को !
आद्यन्त संभासे बिना धरत है बोक को !

स्वेपद संभासे बिना !

अटल यह अनुप जाहे तबनीत को !
भापमें बापा संभासे और भजे कीत को !

स्वेपद संभासे बिना !

कोई तेरो और ईश देव बध युक्ति को !
समज, अघा ! ये हि सना यथारथ युक्ति को !

स्वेपद संभासे बिना !

(२६) हम सोही नगर के वासी

बाबा ! हम सोही नगर के वासी—

ज्याँ सुख दुख नहि प्रवेश ,

ज्याँ ब्रह्म नहीं सबसेष ।

बाबा ! हम साही नगर के वासी !

काम, कर्म की तहाँ गत नाही ,

कृत्स्न नहीं को साध्य ।

करत उपाय यह नगर है न्यारा

ऐसा पद बुसाध्य ।

बाबा ! हम सोही नगर के वासी !

निज छाया ज्युँ बीच हात है

सध्या और बहान ।

और उपाय भटत नहि प्रतिविब

(जब लौं) सीस न आर्थे भाण ।

बाबा ! हम सोही नगर के वासी !

बिचार अकं अपने ही अगोचर ,

तब 'गेन' मटे अघकार ।

सुखसागर अमृतवत् पूरण ,

कोई जानत जाणतहार ।

बाबा ! हम सोही नगर के वासी !

जे पद दूर निकट नहि कसा ?

सा पद जन हि विचार ,

सा नर विहगम भये सुनिदक्ष ,

वे पद अद्या हमारा ।

बाबा ! हम साही नगर के वासी !



(३०) हार बड़ी महाविद्या

हार बड़ी महाविद्या

सन्तो ! हार बड़ी महाविद्या !

ये कोई पाव नव निघा !

सन्तो ! हार बड़ी महाविद्या !

जीतनहारे बहोतों देखें हार्ये बराबर ना मा, बे
जो रे जीत्या बाको कास मखेड़े हार्या हरमें आवे ।

सन्ता ! हार बड़ी महाविद्या !

जेत्ते जप, तप, समयधारी जेस भक्त सब स्वांगी
हाय का नहीं माम निधाना, बन्ध, मुक्ति नहि माँगी ।

सन्ता ! हार बड़ी महाविद्या !

तन कर हार्या मन कर हार्या हार्या करके विचारा
मास जाहीका भोक्ता सोही कौन कहे मास हमारा ?

सन्ता ! हार बड़ी महाविद्या !

आवे ना था पीछ ना था, बिच भी नहीं से सारा
ज्युं का स्युं एव यम स्वर्ततर बहुत मखा सोनारा ।

सन्तो ! हार बड़ी महाविद्या !

(३१) हूँ हेरत गई हेराई

हूँ हेरत गई हेराई, अजब गति तेरियाँ !

तू मनसा, बाचा काय, गसी छून्य भेरियाँ !

हूँ हेरत गई हेराई अजब गति तेरियाँ !

बाहिर भीतर तूँ हि बसो दिख है हरि हाजर हुमूर ।

हृदका स्वांग, बेहद की करणी, ज्यों त्यों आपा पूरा ।

हूँ हेरत गई हेराई, अजब गति तेरियाँ !

हृदके खोजे तूँ नहीं भीता ! बेहद कहाँ लौँ ध्याने ?

बो बिच रची पची भुवा ससारा पियु का पार न पावे ।

हूँ हेरत गई हेराई, अजब गति तेरियाँ !

सकल झरखे तूँ हरि झाँखे, भीता, भेस अनेरा ।

गगन पतास सबेका दूँदे क्यों न पड़े फेरा ?

हूँ हेरत गई हेराई अजब गति तेरियाँ !

बहम फहम तुषीका, भीता ! आपे आप भुमाबा ।

तू ही तूँ रह्या भरपूर, माहीं पूजा दर दावा ,

हूँ हेरत गई हेराई, अजब गति तेरियाँ !

पाया पेच सब तेरा, धारा ! सब हुवा सयलीना ,

नव सिख व्यापन तूँ हि सोनारा ! भाव पूजा दूर कीन्हा ।

हूँ हेरत गई हेराई, अजब गति तेरियाँ !

(३२) सवाय-दहन

जान जिया ये हि जान ! मान मन एन है ,
सद्गुरु प्रीधपा नहीं तब भगी गहेन है ।
जान जिया, ये हि जान !

गुरु जो मिले गाबिन्द ताही कु तो सन है
हामरा हुबूर हरि, बाकु हृदय मैन है ।
जान जिया ये हि जान !

बे को जन मापा खोजे ताही कु महा वैन है
मीर कोई कैसे जाने बाकु सदा रैन है ।
जान जिया ये हि जान !

सकल आनन्द हरि श्रुति का ए कहेन है
सौझम् सबद बोव सो, आपे मारयेन है ।
जान जिया ये ही जान !

सकल सिद्धान्त देखो मान मुपट 'यै न' है
पिडे हरि प्रतीत नार्ही, सा ही सदा वैन है ।
जान जिया ये ही जान !

आत्म सागर सबे तरंग बुदबुद फेन है
ये ही भखा ! जानि रजो संदे का दहेन है ।
जान जिया ये ही जान !

संतप्रिया

सतप्रिया

दोहरा

१. ओंकार वि भाष हे' अकल रूप अनंत ।
 कल्पित ना मध्य छुरसी मानीनता मानन ॥ १ ॥
- आद्य निरजन आप अज ताहा कीनो अप्याराप ।
 अद्य भाषा अद्यो कह कीना प्रगट गाप ॥ २ ॥
- ताही को विस्तार विध्य' माप्या कवित्त करके कहु ।
 हे बीद अमव भरपूर' हूँ चिरि' चष करिके प्रहृ' । ३ ॥
- सत प्रीया सुधवरधनी आक हिरदे हेत ।
 अखा करत आलाकना ता यह आप उसासा देत' ॥ ४ ॥
- सत प्रीया सत कु रुच बह आजे निबन्ध ।
 रूप' रूप अस्पी जे नरा अनुमे अकल अनूप ॥ ५ ॥
- पारब्रह्म' कहत पराश्र ह अनपरतक्ष परमान' ।
 जाकुं पिठ' परबा नही सा काटिक करत सयान' ॥ ६ ॥

कवित्त

- प्रत्यक्ष का' परमान बीना नर घावत धूपत तोरत पाती ।
 प्रत्यक्ष का परमान बीना नर नाचत गावत ह्याय हेयाती' ।
 प्रत्यक्ष का परमान बीना नर भावत पीबत स्यामा सहृताती ।
 बीन प्रत्यक्ष प्रमान अखा कहे' बिन दुल्हा' साहे ज्युं बराती ॥ ७ ॥

- १ ओंकार हे—ओंकारपी भाष हा (अ बा) २ रूप (अ बा)
 ३ मध्य (अ बा) ४ अगाध (अ बा) ५ बीदो (अ बा) ६ कहूँ (अ बा)
 ७ सुधवरधनी (अ बा) ८ आलाकना (मा.त्रि७) ९ तापह देत—नडा च
 हाप मे देत (अ बा) १० X (सा) ११ परब्रह्म (अ बा) १२ अन पर
 मान—बिन प्रत्यक्ष प्रमान (अ बा) १३ पिठ (अ बा) १४ अमान (अ बा)
 १५ प्रत्यक्ष के (अ बा) १६ ह्याय —पाती—नृवण ज्योतिर (३६२ पदा)
 १७ मानारा (अ बा) १८ भरतार (अ बा) ।

परब्रह्म राम मागयन भरहरि जाके हे नाम अनंत अपारा ।
 सा हरि हाकर^१ हजुर हथोहय स्व नर पाव जा आव बीबारा ।
 गुरु गोविन्द गोविन्द सा गुरु गुरु गाविन्द गनति नहि न्यारा ।
 बैकुण्ठ दामदव गुरु दीन आय फींगे सुभाष^२ सुभाष ॥८॥
 सद्गुरु चरण धरण ग्रह दीन भव जम आग सो बहुत बरासे^३ ।
 सद्गुरु चरण धरण ग्रहे दीन बर पडते जम नरासे^४ ।
 सद्गुरु चरण धरण ग्रह दीन दानी करन स सा परे छांस ।
 सद्गुरु चरण धरण अछा केह स्व हरिरूप करे मन आसे ॥९॥

दोहा

भमसा वाचा कमना^५ हरि न भजे जिया जाय^६ ।

अनंत बिष रसमा पच्यो पुनि गया पसारे पान ॥१०॥

कवित्त

कहा भया कचन कुन्दन^७ सा अग रम सुगंध साभा अत्य^८ आप ।
 कहा भया ताम तुरग तुरी चर धुअ धरा जाके मेक ही कोपे ।
 धनद का^९ सा धन करन सा दानी सा काहा काज^{१०} सरपा हरि ताप ।
 एते धून ओगुन भय अछा^{११} कह जा गुरुआन न पाया गुरु पे ।

कहा भयो ॥११॥

मन रीझावन बर बिद्या सब मम रीझावन चौवह बिचारी ।
 मन रीझावन पात पन्धर मन रीझावन महम अटारी ।
 मन रीझावन ताप तप सब मन रीझावन हाय ब्रह्मचारी ।
 मनकु मर मनातात पाव सा ना अछा कह गुरुवस न्यारी ।

मन रीझावन ॥१२॥

राम रमायन अचबल महि मर^{१२} कहान जीय त कीना कहा भगार ।
 राम की गार नाम^{१३} रग गच्छा गया स्थान मुनी कीरे हो सम्यार ।

१ हाथ (अ बा) २ माही (अ बा) ३ बल (अ बा) ४ धू धान
 (अ बा नि ३) ५ बिगन (आ बा) ६ पडेन नगामे—बहने बस बिरामे (अ बा)
 ७ ममे (अ बा) ८ मोनाग (अ बा) ९ मर नाम्य—भगवा जिय जान
 १० रलमें (अ बा) ११ कुण्ड (अ बा) १२ अति (अ बा) १३ × (अ
 बा) १४ नाम (अ बा) १५ अगा ७ (अ बा) १६ अचबल मर—गी न
 नर मर (अ बा नि ३) १७ रामा (पा इकर) ।

गुरु गाबि- पहचान न पाया रिपु सु हेत हेत सुं बगारे ।
 डहेक्या' डगु डग माया सानारा जा गुरु धैन सुनी न जग्या रे ।

राम रसायन ॥१३॥

घन तन त्रिया मुरास वसा मन जैसा बसा' मीन को मन पानी ।
 घन तन त्रियासो छाँड़ जात ह आर मन की प्रीत न हात पुरानी ॥
 आये' अविद्या यम' सा वसाविण ज्यु जल बुझत नाब भरासी ।
 अब क न तारे सबका खडा अखा केहे भजन की जात्य न जानी

घन तन त्रिया ॥१४॥

रे मन राम भजन की ठोर ते मजी रग रगीसी सी रामा ।
 मुन्दर त्याम मुनापो मुन्वोहे स्वे सत्य रूप सहगवे' तु म्यामा ।
 अम्बुज सी अगना अत्य आखी मन मधुप] पावे' न विरामा ।
 भाउ भक्त" भरोसो अखा केहे भघर क ठाम" भई हे जू भाभा ।

रे मन ॥१५॥

रे मन राम हृद न पहचान्या कान तु नीद सोयारे गुमानी" ।
 आस को नीर त्यु' घन" यावन ज्या वन" म वीजुरी मुमुकानी ।
 माही में मोता तू प्रोईल प्राणी" सेइ म सत सगुरु नानी ।
 हसक्या गुरु देव अखा केहे, न्यारा करे' बूध गहे पानी का पानी ।

रे मन ॥१६॥

मद्गुरु स न मभन सा मजन' मजन त" मन" ठार न आव ।
 मजन सा मस टास ठगर क भव भजन गुरुआनि बताव ।

१ ए (अ बा) नि —आचार प्रति—का सं यह १३वाँ छंद अपूर्ण मिला ।
 अउएअ अ बा क अनुमात्र नम यही मुखार कर दिया गया है । २ त्रिया मन
 त्रियामु एम अइया मन (अ बा) ३ पड़पो (अ बा) ४ होय (अ बा)
 ५ पही (अ बा) ६ जयों (अ बा) ७ अब कम गेना—अब कर करतार
 गइ का लबा (अ बा) ८ मया जानी—जासा मोहनरा मीन की मान न
 जानी (अ बा) ९ मराव (अ बा) १० X (अ बा) ११ माव मगति (अ बा)
 १२ मुधर ठाम—मुधर की टांग (अ बा) १३ कान गुमानी—गु कवन
 निद माया रे गुमना (अ बा) १४ यत्र (अ बा) १५ तन (अ बा)
 १६ ज्यु पन में (अ बा) १७ व्यार (अ बा) १८ ना मभन—मान मभाम
 गा गंतवन (अ बा) १९ भग्यने (अ बा) २० कछु (अ बा) ।

अजन मा मन छाड़ मदगुरु अजन न नन गहन गमाव ।
गुरु गाविन् नहा नर पारा अखा कह मय मा मय मुष' पाव ।

सद्गुरु ॥१७॥

मदगुरु मान मय वह मन खपन गहा' जू प्रहा न जान ।
वहामान विन मरु न भय अरु आपा पर हाथ बिकान ।
आप काई आर म और अ नीस का नीर मयी मध्य मान ।
एम अखा कह मय मय मै गुरु मा गाविन् कहा मिय क उत्तर बाने'

सद्गुरु ॥१८॥

एम नर का गुरु कीज अखा कह ज्यु त्याग जम सीधु म जय माता ।
कामन काई कया न पहचानन ज्यु जय पहान' छुर मध्य जस्यो ।
जर बपरा आर पुस्य खर नहा जा भरपूर भगि मध्य होती ।
एमा गुरु राम राम करा छाड़ गुरु मुम्बान निगार की गानी' ।

एम मरा ॥१९॥

गहा

अधुन गात्र जन राम का ह्य बरन हरि रूप ।
गुरु गाविन् का जय मास्या नवहि भया तद्रूप ॥ २० ॥

कविन

नाचन नाच कया कृम हाता आस्य बरन नन धनुराई ।
पडिन राज वड मट बहुट कान अस्या जू नीमान बजाई ।
बमार जुमाहा नाई धनिमा दानुरीनाम मेवा कबाराई ।
राम अखा कह अमिका मी उवाता मध्य पच्छा मा काना भगनाई ।

नीचन नीच ॥-१॥

ना कम का काज हराजन कु मथाका न छे जम अम्बनहु ।
गान गगत म जान मय गव उयी एव नही मय बीननहु' ।

१ मनि (अ बा)

२ चरन (अ बा)

३ गुन (अ बा)

४ वे

(अ बा) १ भाव अ-आन X काई आर उवातन धीर उप (अ बा)

२ गिर आने गिर ध उर मान (अ बा) ३ उर (अ बा) ४ X (अ बा)

५ पगट (अ बा) ६ मुम्बान गानी-मा इवान गुपाल व गानी (अ बा)

७ ११ नीचने (अ बा) ८ आध (अ बा) ९ न (अ बा) १० वेव

११-मय बरन (अ बा ३६ पा) ।

भीसी के बेर जुबे' भबे भावसु तो कहा सज्जा लगी रघुनन्दन कु ।
जैस तैसे हरिनन अच्छो कहे कीयो हे जमु नीर भग्ननकु'
ना कम ॥२२॥

जो पै राम रह्यो हृदया उदया हे दीनकर कोर' शसी ।
विधि नीपेध बराको कहा बसु जाहां गुरु की करुना बिससी ।
स्वे शुक्रदेव पायो गुरु भेव तो कहाँ चन्दन बरख्यो तुलसी ।
बेहेत अच्छो मुंगा की शर्करा' घट घुटे सो जाने सीहीरी भमसी' ।
जो पै ॥२३॥

ज्ञान बिना सुख सीहीरन पाव ज्ञान बिना ससय नहि छुटे ।
ज्ञान बिना बई' को अपराधी ज्ञान बिना नित्य निसे' सब छुटे ।
ज्ञान बिना दबान मुकर जसा ज्ञान आया भ्रम कां मांड फुट ।
ज्ञान' गोविन्द गावि' साही गनान' ऐसा अच्छो केहे माया नेह' दुटे ।
ज्ञान बिना ॥२४॥

ज्ञान बिना भटक्यो' गिरि गहबर ज्ञान बिना पराधीन नबे' ।
ज्ञान बिना मंजन मनधारी ज्ञान बिना काया क केश खच ।
ज्ञान बिना जुवती जन माया' ज्ञान बिना कर्म काऊ न बच' ।
जब गरज्यो सिंह अच्छो केहे भाग्या भर्म मंगल मद मुबे' ।
ज्ञान बिना ॥२५॥

बोहा

सर्वातीत सब जा विष सब समेत सब' शुन्य ।

स' स्वल्प स्फुरत' भयो सोही' ज्ञान नहीं नुन्य ॥२६॥

१ जठे २ कीयो हरिनरमन्धनकु (३६२फ) ३ कहाँ (अ बा) ४ बपुरा
को (अ बा) ५ बेहेत शर्करा—अच्छा जेमेहें मूक की साकर (अ बा)
६ सीहीरी—भममी—भीरी मि भमी (अ बा) ७ ज्ञान पावे—ब्रह्मज्ञान
बिना मुख की सीहीरी न पाव (अ बा) ८ बेह (अ बा) ९ बे (अ बा)
१० मो (अ बा) ११ ज्ञान (अ बा) १२ मँर (अ बा) १३ बने (अ बा)
१४ मोर्नके (अ बा) १५ माया (अ बा) १६ कोऊ बचे—कोटय
न बचे (अ बा) १७ जब मद मुबे—जब ज्ञान गरज्यो मंग सानाग्य भावे
भ्रम मयम मद मचे (अ बा) १८ भद (अ बा) १९ ग्ये (अ बा) २० स्फुरत
(अ बा) २१ नाही (अ बा) ।

कवित्त

ज्ञान विज्ञान' पुकारे सवे को ओर' ज्ञान का रूप अनंत अपारा ।
 काठ ह कम धर्म क शानी कोउ ह मन उपासन हारा ।
 काठ हे जाग पवन क आना काठ के पक्षभूत विचारा ।
 जाक अखा कह' आपा पर छटा ज्ञान विज्ञान ज्यु का ल्यु सारा ।

ज्ञान ॥२७॥

ज्या जन एक सायो हे सेज पर' सुपन सो सत कोटि भयो है ।
 हय हस्ती नर बाहन नपती' सेय सुंदर जोपी तान क्या है' ।
 माय' गुरु जग्या जग सोवन ताकत एक ही अत राखो है' ।
 लमे अखो' केहे सायो सुपन सब देखत सो गुरु ज्ञान दया है ।

ज्यों जन ॥२८॥

मोहगन की मीरी" ज्ञान मोहगन न जाने दुःखगन' कत विछोई ।
 नव-नव नह नव पलवनारी' उर आन' रहेत हे नु अछाही ।
 प्रत्यक्ष राम पसु पल पुरन ज जानत नाहो म कान हा माही ।
 आप' जसा गुरु मव अखा कह सारत सार लीना ह कु' बोही ।

साहायन ॥२९॥

इत उत मन फरे कहा' ता में रहेत" आधार घराघर का ।
 तेरो समास हावे मन सा म अब जाने नु भेद गिरिघर का
 शब्द म जा शब्दातीत बोमत पाया परछ" पराघर को ।
 ज्ञान का संत अखो कहे सीधी कला प्रत्यक्ष पक्ष्मपराघर का ।

इत उत ॥३०॥

१ ज्ञानी ही ज्ञान (अ बा) २ x (अ बा) ३ मोनाग (अ बा) ४ ज्यों...

पर—ज्यु जन सायो एक नेत्रा पर (अ बा) ५ नरपति (अ बा) ६ नेम्य...

१—मन नर जोपीना लख्यो है (अ बा) ७ माई (अ बा) ८ जग (अ बा)

९ एक १—मन ही एक राखो हे (अ बा) १ लमे अखा (अ बा)

११ मीर (अ बा) १ मोहगन (अ बा) १२ पक्ष्मप नागी (अ बा)

१४ आगुर (अ बा) १५ जोन ओही—जोन हा माई (अ बा)

१६ आग सयो (अ बा) १७ ज्यु (अ बा) १८ + तेरो (अ बा)

१९ + ना (अ बा) २० पराघरो (अ बा) २१ पक्ष्म पराघरको (अ बा) ।

पूरन ब्रह्म बहरे' सा पूरन पूरुषो गिरजा गिरजापति सु' ।
 पूरन ब्रह्म ठहराय सुन्यो जब कहाँ आस पुरुष प्रजापति सु ।
 पूरन ब्रह्म ठहराय कीनो हे वशिष्ठ गुरु हरजापति सु' ।
 महाजन ब्रह्म बहेराब' अखो केहे सत्य माय प्रभु न' रजापति सु' ॥३१॥

पूरनब्रह्म०

सप्रकाश' स्वर्ण को स्फुरण' पट्टपत 'नाही बसीया दत' की ।
 आपानन्द अनोपम आशय' ताहां सागत नहीं सुभाजत' की ।
 आपा पर भग अभ्यास नहीं अग सुरत नहीं ताहां किमत की' ।
 सतगुरु के वेद बीकसे' निजनेन समझ अखो बहे सरे सतकी' ॥३२॥

सप्रकाश०

जसो हे ब्रह्म अन ओन पूरन ऐसो न जान सके जीयरा' ।
 कोटि कला की कसा बिय जाने' तसी तो केहेन सको ए गिरा' ।
 जैसी रसना भाषा करी भाषित' तैसी तो भेन सकत अगरा' ।
 सेन गुरु की समझ अखो केहे लखप योनि मसो' अगरा ॥ ३३ ॥

जैसो हे

जाहां कछु नाहीं ताहां' कछु पापत सोधु' निरजन के मध्य ओटि' ,
 ग्युं का र्युं सत्य' सहज सततर' कल्पमा निकसो ब्रह्म ब्रज का कोटि' ।

१ ठहरे (अ बा) २ गीरजा ... सु—गिरिजा गिरिजापति (अ बा)
 ३ हरिजापति सु (अ ३९२) ४ ठहराय सोनाप (अ बा) ५ राह (अ बा) ६
 प्रजापति सों (अ बा) ७ मोह प्रता (अ बा) ८ पुनी (अ बा) ९
 तहां (अ बा), १० बंठ (अ बा) ११ आसे (अ बा) १२ सत्ताजत (अ बा)
 १३ मूज महि तहां कहाँ मत की (अ बा) १४ बिम बगसे (अ बा), १५ मठ की
 (अ बा) १६ पाव जीयरा—जामी सकत हे बियरा (अ बा) १७
 कोटि जाने—कोट काल की कसा मन जानत (अ बा) १८ तैसी ...
 गिरा—तैसी तो केहेन सको ए बियरा (अ बा) १९ कर भाबे (अ बा)
 २० तैसी अगरा—ऐसी तो भेन सके अगरा (अ बा) २१ नरा पाम
 निपयो (अ बा) २२ कहाँ (अ बा) २३ छुट (अ बा) २४ ओटे (अ
 बा) २५ सोही (अ बा), २६ स्वर्जन (अ बा) २७ निकसो ... कोटि—
 निकसो मन की ओटे (अ बा) ।

जाँ परंपरा ताहीं पुष्पोत्तम जहाँ मध्य भाग ताहीं हो करोहि' ,
 केहेत अखो जाहीं नही जीतवन जीत उमाबीन कोउ कैसे मठोहि ॥३४॥
 जाँहा कसू०

रोहा

ऐसो सखा है ज्ञान को धोर सबे मन कीन ।
 अखा सब मन को रच्यो मनु' आदिक आधीन ॥ ३५ ॥
 देहाभिमानि जब मयो, इत उत फँसो आप ।
 केहेत अखा मन ताई' सब साक चौपके' व्याप ॥ ३६ ॥

कवित्त

आवठ' हे सब लोक इत' हिते आवठ नाहिन कोए' फरी
 राय रांनी'सि बड़ महापंडीत' कोये न देत पठघो पठरी ।
 धम पारा सुत रहेत परे मानी न ता देहसंग जरी'
 इतनी ता अपने मेन देखो भार अखा मनने पकरी ॥ ३७ ॥
 आवठ०

देहधारी केहेत ए लोककी' परसोक की देह कहत' बतीयां
 साधन सम करत देहधारी देह निखत पुस्तक पत्तीयां ।
 स्वर्ग वकूठ बतावै देहधारी केहेत बनाये धरत धृतीयां'
 देखीयत हे अखो केहे सबे ईन उतकी कोउ न केहे रतीयां ॥३८॥
 देहधारी०

इत उत मन फुरयो है' तेरो मन खड़ो हे तो सबे सख्यो
 कारन करन' है मनहि को मन मयो हे पवन रच्यो ।

१ जहा (अ बा.) २ धानी करोटे (अ बा.) ३ बहुत अखो यही (अ बा.)
 ४ वित्त (अ बा.) ५ जमा मठाटि—मठा बिमा गु कोई मठा (अ बा.)
 ६ मनुआ अधिक (अ बा.) ७ ताही (अ बा.) ८ चौपके (अ बा.) ९ जान
 (अ बा.) १० बहाये (अ बा.) ११ नाहिन कोए—नहि बन कोई (अ
 बा.) १२ राजा (अ बा.) १३ अ (अ बा.) १४ बरी (अ बा.) १५
 अनोचि (अ बा.) १६ करन (अ बा.) १७ बनाये धृतीयां—बनाइ
 पर धृति (अ बा.) १८ गु (अ बा.) १९ करन सबे (अ बा.) ।

मन पवन की सय' शुय सागर' ऐसे हिए खेस मय्यो
ए' अनुक्रम अखा भयो गोबर अय्यो रस उने जु' अय्यो ।

इति उत ॥१९॥

हे कछु ओर भई कछु ओरे ए अटपटी आध अनाध चली
सोकिर ओर' असोकिर ओरे' सोकिर लोक महा' जु भली ।
सद्गुरु सेन अखा हे सो सुधी जैसे उध' रहे कवली
सेव' रह्यो सो मसा' सभरासर बीन समझ्या शुक्र बय्यो नली ।

हे कछु ॥४०॥

दोहा

छुट कपीर कचन भयो गुरु कस वस्तु बोचार ।

आप मिसा आपा रहे" केहेत अखा सब सार" ॥४१॥

कवित्त

मे नहीं, मे नहीं मे नहीं प्यारे तुही हे तूही हे तुही सही
कंधुकी को बस हेज' कहा सीये फीरे आपो" ही अही ।
अग फर्नग" बस्यो" नोकसी तब जउबरा बितहि तितही
नैम अवन नासा अग मेरो राम अखो केहे फीरे हे' वही ।

मे नहीं० ॥४२॥

ज्यु" अही के अंग होत जरा सो" अग ही ते आई उपजी ,
अग्य उपाय करन" नाहि डरे सेहेज समारी सो सेहेज" सजी ।

१ मे (अ बा) २ में (अ बा) ३ एही (अ बा) ४ उगई ज्यु
(अ बा) ५ झोट (अ बा) ६ उरे (अ बा) ७ सीकिर माहा (अ बा)
८ अखा सुधी—सागरा सीधी कस (अ बा) ९ उधइय हे (अ बा)
१ लोवे (अ बा) ११ रह्या (अ बा) १२ आप .. रहे—आपा मेटपा
माप रहे (अ बा) १३ केहेत सार—कहेता हवा सागरा (अ बा)
१४ ज्यु (अ बा) १५ सीये आपा—हरे फरे ज्यु आपे (अ बा)
१६ भुजग (अ बा) १७ गयो जब (अ बा) १८ ज्यु (अ बा) १९ संग
(अ बा) २० सो (अ बा) २१ कारज २२ सज ।

तैसे नर नारायण मीर्गुण सर्गुनसा' ऐसे ही भजी
निर्गुन' सगुन' ब्रह्मा नहीं बरे भेद पायो भव भार्य तजी ।
जु ही ॥४३॥

जो मन माग्यो तो ब्रह्म सबे को जो मन माग्यो तो जीव सबे ,
जीव ही जीव टरत नहीं को जग" अब जसो हे तसो हो" तबे ।
देहदादि सो" घनाघन" वाहन बोपह के ओष तरे जु दबे
जो दिव्य दृष्टि दीनी गुरुदेव ने तो ब्रह्म ब्रह्मो केहे सये ही पबे ।

जो मन ॥४४॥

मन को सदा पसटतें पूरन ब्रह्म जसो की तैसो हे सदा
ज्ञान बीम भटके जु" जगजग ज्ञान आयो भयो ब्रह्म तदा ।
बसर से उरगन" नहीं भावत" कहा भयो पुस्तक पोठ सदा
कह्यो सुन्य सेव्या नाहिं ब्रह्मो केहे स्वे हरिकृष्ण भयो कुरवा" ।

मन को ॥४५॥

बोहा

बीद चराचर बीहीन बीम बीतवत बीत के बेहन" ।
पूरन सदा बीन पाँमरा आयु पटावत" रेन" ॥४६॥
पूरनता ज्ञानत नहीं सेत गुरुन" की ओट ।
सो भव में भटके अपा सीरस तमेर को" मोट ॥ ४७ ॥

कवित्त

ज्ञान की गत्य कुसत नहीं बावरे ज्ञान बीना अज्ञान टटोरे
देह विदेह कीमी बाहे मुरख उछोत केसे होये गुजा बटोरे ।

१ सारगुन (अ बा) ७ गुन (अ बा) ३ निर्गुन (अ बा) ४ अ
(अ बा) २.५ (अ बा) ६.५ (अ बा) ७ दिनोपनि (अ बा) ८ बोपहके -

स्वे-देह के होयने बदे ज्यु पडे (अ बा) ० हे (अ बा) १० समतन (अ
बा) ११ भावत (अ बा) १२ कल्पा रदा-परेमुने निप नाही मोनार स्वयं
हरिकृष्ण भयो हेन उर रदा (अ बा) १३ बीनवन बेहेन-विनवत हों विन
बहेन (अ बा) १४ धम्म (अ बा) १५ दिन (अ बा) १६ पुनन (अ
बा) १७ छोट विमिर की (अ बा) ।

भीम सुभाव ईश्रीगन आरे' ता करी सुवाउर केसे तोरे'
देहातीत अम्पास अनुपम सो तो अखो केहे गुरु कस ओरे ।

मान ॥४८॥

सुमन सुमन गुरु' गोविन्द की लुभा परे लोका देखी अम्बर
आछा मो अग आर' तान तरंग शोभा सुगंध रंग पाट पटंबर ।
तन सुख मन सुख लालच के लीये भीत्रभीभीत्रदेख्या' मयो सुमर'
रामबीना रत्य मानी अखो केहे जैसे अक धरे कोई अम्बर ।

सुमन ॥४९॥

धन तन मन उपासे सबका जानत हे जगदीश अराधे ,
एठी' सीचात्य एठो सो आराधन बैठे से बोल बोलेजू अलाधे' ।
आत्य मान नहीं गुरु की गम आत्य ही छोट सारे दिन साधे ,
ठाकुर को ठेहैरावन पाया माया ने अखो केहे खेलावेत खाधे

धन ॥५०॥

माया के रंग देखी ज्यु मनोहर मानत हे जगदीश गुसाई'
धन तन ह्य हस्ति शिष्य सेवक जात' सबै गव ज्यु धन छाई' ।
मुत' को ठाव ठगे' जीव लोक रे कीट पतंग स्वामी सेवक ताई'
नाही' अधीक नुम्य कोई' अखो केहे सब चीत्र चीतेरा' हे साई' ।

माया का ॥५१॥

बेह दशि बेह देखीजू' माहे भगुर को मानत अवीनासी
उपज्या सो असपाये नीबेकर काई रखेन नाहीं भूतलवासी ।
पंचभूत कुं परमेश्वर मानत आय' लागी कोई गेबो दसासी'
पभातीत वस्तु' असल अखो केहे जानत हे काई पंच न्यरासी' ।

बेह ॥५२॥

१ मुन उरे (अ वा) २ मुदा ओरे—मुदामु पाहे तोरे (अ वा)
३ भूम (अ वा) ४ उर (अ वा) ५ देखी (अ वा) ६ गुंवर (अ वा)
७ रीत्य (अ वा) ८ ही (अ वा) ९ एठा (अ वा) १ आलाधे (अ वा)
११ जान (अ वा) १२ पंचभूत (अ वा) १३ ठवो (अ वा)
१४ को (अ वा) १५ X (अ वा) १६ पुग (अ वा) १७ आ' (अ वा)
१८ पैव बिभासी (अ वा) १९ X (अ वा) २० निरासी (अ वा) ।

अग्य उपासन पेठो रसमे जानत' हे हम हे जु अछोये ,
अग्य ही अग्य देखी सय ही' कु पसभर रेहेत नही' बछोमे' ।
अग्यन' को उपदेश सुने काहा जोत्पु' ना अग्यरथ' गछोये ,
नरमभ्य नारायन नीर्गुन सगुन अछो केहे भेप कछोये ।

अग्य ॥५३॥

मन के पाछे' करत पटदरसाम राम पहचानत नाही मना
अही' सगा बीसग्यो हे अचानक ताहां तद्रूप हावे जु बना ।
पानी की-सी बान्य" परी मन ही की रग रग में आप घरत अपना ।
मनासीत अगोचर आसय ताहां तो असाहोत मन फना ।

मन के ॥५४॥

अपरत अग रहत नही बाबरे राख्य सके जोपे मन अछुता
तन उपास करत नही तावे" कुजर' शोच कीने ते पद्युता ।
पावत" चीत नही परमात्मा तोसो" वेह कृत में सब गुता
आपा पर छाड़ भयो वस्तु रूपी तन अछो केहे सब बह्यभूता ।

अपरत ॥५५॥

माहु' न जाने भुमासा' हे अनुमे" जसे तँसी अगनी करे आवे
ग्यहेबा" नाही नाही गुरु की गम स्वान भुख" जेस जागकु जागे ।
कम न धर्म न ज्ञान न बुझत जानत नही रब भक्ती विरामे ।
ज्ञान अछा केहे हस को खाना' भुक्नाहल" चुगयो कसे जाय बागे

माहु ॥५६॥

-
- १ जानम (अ बा) २ देखे लख नीछो (अ बा) ३ जु (अ बा)
४ बिदाप (अ बा) ५ अनीम (अ बा) ६ गुलो (अ बा) ७ अनर्ब
(अ बा) ८ नर (अ बा) ९ पीदे (अ बा) १० पार्ही (अ बा)
११ बान (अ बा) १२ जाग अना—अरधरे अना (अ बा) १३ तावे
(अ बा) १४ कुजर (अ बा) १५ जावन बाहोना (अ बा) १६ तावन
(अ बा) १७ अर (अ बा) १८ मनम (अ बा) १९ अनुमव (अ बा)
२ गदवा (अ बा) २० मुके (अ बा) २१ बचम (अ बा) २२ खावनी
(अ बा) २३ भुक्नाहल (अ बा) ।

संगते रग नफीरी कुबुधी को बब मील्यो जसे हस की टोरी ,
मराल मील्या' मुगताहस चुगत बग बुरी पुछ्य' मछी बडोनी' ।
तैस ज्ञानमता में भीके खल ज्ञानी मन को मोह' जैसे को तैसोरी ,
मत माने अखो केहे ऐसे नरकु अजु काहा भयो पुछ जैसी छाछ भोरी' ।
संगते ॥५७॥

बरष की कोटप पच्यो पचरा नीर मध्य सोधो रहत परघो
नीर को नेक न जागे समागम टांकी सगी तब बन्धि झरघो ।
त्यु खल ज्ञानी अहकार न छाड़त भीतर' भीम भंगार भरघो
ऐसे नरकु फटकार' अखा केहे कर्म और ब्रह्म वाउ ये ज्यु टन्घो ।
बरष ॥५८॥

ज्ञानी सु ज्ञान न कधीजे अमाने" अज्ञानी सु बाव बडे कोन भोरे
अज्ञानी अहकार" आने उर अस शब्द कुं मरोरे" ।
भीतर म्यन' भंगार मर्मों हे बाह्यर बात बनाव भोरे ,
संत समान अखो केहे सो म्यारा सत्य" भाव बीना भव भुस" पछोरे ।
ज्ञानी ॥५९॥

अज्ञान कु ज्ञान माने मम मूरख ज्ञान परयो कही दुर" डरावे ,
सीखी सुनी गलमार गुसाई' ज्यु जाग पवन कुम खानी सो गावे ।
बीब जंजास बला मरी भीतर ऊपर आछी सी बात बिरावे ,
सो नर कु मत मानो अखो केहेकहा कुसटा टरे" नवसात द्रावे ।
अज्ञान ॥६०॥

१ मित्रे (अ बा) २ कुटी (अ बा), ३ बडोरी (अ बा) ४ त्यु
(अ बा) ५ मोड़ा (अ बा) ६ मत माने भोरी—ऐसे नरको नेक मा-
मानो मोनारा कहा नवा पुछ जैसी छाछ की गोरी (अ बा) ७ सोधा परघो-
सोनी रहत पर्यो (अ बा) ८ न समागम—समज न जागत (अ बा)
९ बतर (अ बा) १० फिटकार (अ बा) ११ समाने (अ बा) १२ बंधा
(अ बा) १३ उर ...मरोरे—उर अंतर सत्य शब्द को बेत मरोरे (अ बा)
१४ मित्र (अ बा) १५ सत (अ बा) १६ भूत (अ बा) १७ कु
(अ बा) १८ गल मारे गुसाई (अ बा) १९ दले को (अ बा) ।

बहा ज्ञान कथ्यो' ममता नहीं छुटी कहा ज्ञान कथ्यो नख' मुख बाढ़ी ,
 कहा ज्ञान कथ्यो सशयी सख सागे कहा ज्ञान कथ्यो ममता भई गाढ़ी ।
 कहा ज्ञान कथी' पीछो फीरधा पामर पाक्यो ईद फल' कटुता बहु बाढ़ी ,
 ज्ञान की ओट अज्ञान' अखा केहे भाउ गयो भयो भुठ भराढ़ी ।

काहा ॥५१॥

टुटयो तन गात ममत मेठयो' नहीं फुट कबीर पुरानी सा पजर
 जरजर अंग झुका तन नीचे जसे ही वज्र भया जसे कुंजर ।
 फटे से नेन ब्रह्मन बीन बेन ऐसा फले जैसी ऊजर बजर'
 मजहुं अखो केहे राम भजन की बात नहीं जो पे पक्षोच्यो हे मंजर' ।

टुटयो ॥६२॥

ऐसे नर ते खरखरो भयो क्याम' भयो खलतान' टरी ,
 जरजर अंग झरे नेन नासा जसे सीपम हेम' वस्यो पघरी' ।
 जरा का ओर बढ़ो जन क' अंग ओबमता डर से' डगरी
 मजहुं अखो बहेटेखो न टर्या नर जाये आय भिख्या मृत' सग सयरा' ।

ऐसे ॥६३॥

जोबन गयो जरा जठ' नयो सीर स्नेह भयो बुद्धि' कारी की कारी
 सब परम बटी तन रत्न' पटी मनसा नू रही कुसटा जैसी मारी ।
 ज्ञान कथ्यो सेंट' नीर कथ्यो आई अखा धूम्रवादी की मारी
 राम न जाने कमिमस साने भमे' ज्यु पुराने अविद्या कुमारी ।

जावन ॥६४॥

१ कथ्यो (अ बा) २ निहा (अ बा) ३ कथ्यो (अ बा)
 ४ पाक्यो कम—ज्यु वाकी इग्राणीकम (अ बा) ५ ज्ञान
 अज्ञान—ज्ञान ओटे अज्ञान (अ बा) ६ मनी (अ बा) ७ पुरानी पजर—
 पुरानी मो निजर (अ बा) ८ गजर (अ बा) ९ मजहुं हे मंजर—मज
 हुं माभागा रामभजनकी बात नाहीं जहाँ आई पक्षोच्यो हे मंजर (अ बा)
 १० जा क्षाम (अ बा) ११ रागता (अ बा) १२ × (अ बा) १३ पघरी
 (अ बा) १४ जिनके (अ बा) १५ डगग (अ बा) १६ मृत्यु (अ बा)
 १७ मगरी (अ बा) १८ ठन्को (अ बा) १९ मुख (अ बा) २० आत्म
 बटी तन निरख (अ बा) २१ मा गो (अ बा) २२ भये (अ बा) ।

बोहा

केहेत अखो केटी कहूँ जीव नवध' की बात ।

कोटि कल्प या जा जियात' ताहु बीप न' अघात ॥ ६५ ॥

ताहुँ आत्म उत्तम परा पार थें ब्रह्म'

कोटि कम छिनमा रहें' एही प्रभु का धर्म ॥ ६६ ॥

जीव न करे अब एतनो' ओ तो एक राम जराय ।

बारी मेघ बरख अखा ताहीं लयी सके क्यु साथ ॥ ६७ ॥

कवित्त

भावना फेर' परत बीधा ज्ञान से भाउ जेसो रूप तैसो सेरो है ।

ओ सुख भाउ भयो' शिवरूप तो तुही चराचर जोपे भाउ फरो" है ।

मानत" हें आगा पर साँचा भूत मबीप्य सत्य तो तु चेरो है" ।

केहेत अखो सत्यभाव निश्चय" कर चेत" फर्यो हेतो बीदमेरो" है ।

भावना ॥६८॥

सुधीसी बीहीन आबे सबन कु ताते रहे परपंच उपासे ।

तापर को पेहचान न आवत जामें समास" हें सास उसासे ।

कागत" भोट नहीं जीव सीव बीच्य भ्रम भर्यो" साम्यो माया तपासे' ।

केहेत अखो गुरुगम बीना मर कास के हाथ बेकाना" नपानो

सुधी ॥६९॥

घोखा के घंघ पर ज्यु समाने अमाने बहे ताकी कोन चलावे ।

घोखा परधा परमोक उपासे" घोखा" परधा ध्यानी ध्यान सगावे ।

१ कुबुध (अ बा) २ काट कल्प सुधी बीधे (अ बा) ३ न बिपये (अ बा) ४ ठाको (अ बा) ५ परा ब्रह्म—पराया एंडे ब्रह्म (३६२ फा) ६ बरे (अ बा) ७ इतनी (अ बा) ८ भागी (अ बा) ९ फिर (अ बा) १० हाइ (अ बा) ११ फुर्पो (अ बा)—कमा (फा ३६२) १२ ज्यु (अ बा) १३ चहेरो (अ बा) १४ सत्य निश्चय—सत्यभाव निश्चय (अ बा) १५ पित्त (अ बा) १६ बिपु (अ बा) १७ समात (अ बा) १८ कामर (अ बा) १९ पर्यो (अ बा) २० तपासे (अ बा) २१ बिकार निश्चय (अ बा) २२ घोसा उपासे—धोख परे परमोक कृ ताव (अ बा) २३ घोखे परे (अ बा) ।

घोखा परधा जानी आप कुं बापे^१ घोखा परधा देही दुर बठावे ।
गाम नहीं काहा सीम भखा कहे सेहेज कहीं कभी दूत बड़ावे ।

घोखा ॥७०॥

संसे ससार साचो कर सीना संसामीटे सोसे नु बीचारा^१ ।
नाद^१ न बीद विस्तार न बाधा तायर^१ कोन काहात^१ म्युं ग्यारो ।
आप हए ते ठाठ बड़ाया^१ हे आप मीटया^१ मीटयो म्युं पसारो ।
धूम्य अखा कृत सब सुना मुन भव सो लेखन हारा^१ ।

संसे ॥७१॥

पिड बड़ाइ क भेद कुभेद^१ ता भेद की बदन^१ सब बीसावे
देह दरपन दीड^१ मुख आगे प्रतिविम बड़ाइ तबे सत्य कहावे
भावस^१ अंग असपांनो भावे त सब जगत अजास की कोन बलावे
संध्य जखा केहे समाना^१ ताही मे आ भर कु नीमम नीरय^१ गावे

पिड ॥७२॥

ना हम जानी अजानी सयाने मामी न ध्यानी कबे हम हुवे
पानी, पवन अनी और अनी बंधर से ताहीं को खन^१ जुये
गेव मगन भटा बेजु गरजत^१ वरसे बीसावे तो काहा कसु मुये,
भखा आनंद आप हरि करता^१ देह देखे सो बहि का पूरे^१,

ना हम ॥७३॥

मपर^१ की मनसा नहि आहुं कंदर सेबा ता ताहि भसी है ।
मदिर कमर^१ दोठ नहीं जाही कुस की सुझ ताही कृष्मी^१ है ,

१ घोखा—बापत—बीने परे जानी आपकी बापत (अ बा) २
सो—बीचारी—मटे मोई नाम बिचारी (अ बा) ३ नाद (अ
१६२) ४ ता दिन (अ बा) ५ कहावे (अ बा) ६ ठठपो (अ बा) ७
बटो मटपो (अ बा) ८ धूम्य लेखन हरो—धूम्य खानाया बिचार सो
मुम्या धूम्य लगे सो लेखनहारो (अ बा), ९ बड़ाइ कु—बड़ाइ का भेद की
(अ बा) १० बद बचन (अ बा) ११ वरसाव बीसो (अ बा) १२ अब
भारदय (अ बा) १३ मध्य मनामा—मध्य खानाया सबाबा (अ बा) १४
मेनिमनि बावे (अ बा) १५ दिन (अ बा) १६ भेद—परजन—ज्यों भेद
का जन परजन वेग (अ बा) १७ आपे आप करता (अ बा) १८ बचकुं मुये
(अ बा) १९ मदिर (अ बा) २० कंदर २१ तो ताहुं बती है (अ बा) ।

पप जैसे मो' पप समारे पक्षी कु तो अटकटनी है ।
साबे मद्या सो जाग्रत चाहे ओर जाग्रत को तो जाग्रत म्यली' है ।

मखिर ॥७४॥

माम अरु रूप सकस जन ठहरे पंडित जान भक्त ओर ज्ञानी ।
कारज कारन बाँध विवर्जित ता पर की खीरसा दे' निशानी ।
भाँस्य बे भ्रम भुंसे जन सारे पानी के जद की स्थिर्य हो ठानी' ।
होय अखा क देग की जाने' आर' न जाने पुरान क मानी ।

नाम ॥७५॥

माम का गहेन कबे जु बहोतेर ध्यान के धाख दुना वही सारी ।
मक्ति' के भ्रम भटको जुमावे' पण पर ब्रह्म की गत्य हे अत्य नारी' ।
सत्य की छुपी हे छानी' अहकार की ओर भई' हे जु भारी ।
गहन' छोडन एही वस्तु खडन कहत अखा ओ पुकारी' पुकारी ।

ज्ञान ॥७६॥

विदवे कद कीउ हे जु पेदा' छद करे छपी' सा सब माहां
नननी देखत' मननी मोसत' धवननी सुने सबे चेहेन जे बाहां' ।

१ तो (अ बा) २ तो सो मटक टरी हे (अ बा) ३ विनी (अ बा)
४ ओ (अ बा) ५ बंद -- ठानी--बंदही स्थिति ठानी (अ बा) ६ होय
जाने--होवे अखा उसी देस क सानी (अ बा) ७ और क्या (अ बा) ८ लो
(अ बा) ९ मयत (अ बा) १० भटके जो भये (अ बा) ११ परब्रह्म --
नारी--ब्रह्मपति की गत्य रहत ओ ग्यारी (अ बा) १२ कृत्य की कर्मक छपी हे ज
छानी (अ बा) १३ ओट परी (अ बा) १४ ग्रहन (अ बा) १५ प्रका
(अ बा) १६ बीयो जनपदा (अ बा) १७ करी सुपोयो (अ बा) १८ बेन (अ
बा) १९ सोसे (अ बा) २० जोहां (अ बा)

* सत्य-संस्था क्रमांक ७५ के अनंतर मिश्र-मिश्रित कवित्त 'अखा बानी' ।
अधिक है ।

ज्ञान भक्त ध्यान समान मयज्ञान भक्ति वैराग्य माया की ठगोरा ।
ब्रह्म का पद बड़ जो विमोचन टारत माई न मोमर सारी ।
महज के मये हेज में पहेज कहा को भाप नहि काहा ध्याप सचारी ।
भई मुक्त की बुझ मनन से ग्यानी कृत की बुझ भखा हे ग्यु पोरी ॥

ना पदते कद करे अजु पेदा' केर ना पद करे छुनु माहा' ।
आपे ही खूब' खुदा भी तु आपे नाही मखा ईस ठाहा' उस ठाहा' ।

बिद ये ॥७७॥

जाकु मेनन ही सत्र मेन लेखे बेनन ही सब मोस सा बोले' ।
बानन ही सब कानईया' के मासा नहीं सब वास सा' बोले ।
ब्रह्म की ओट' तु आप सहरावे कामधरी कही ब्रह्म कृ बोले' ।
मखा भेप खसारा साई' बुध्य' का कर कपोम कपोले ।

जाकु ॥७८॥

भेप की टेक बले पट र्सन भेप नहीं ठाही टेक कहा' की ।
टेक की टेर' बसी जु दसुनीस टेक हमारी हे पु' फनाकी ।
नेत ही नेत' नीगम कर मोरे' टेक छूटी ताहा' योहोत बनाकी ।
एसी बुध्य' मखा गर' काना टेक गई हेध्य न बना' की ।

भेपको ॥७९॥

मान की गद' अङ्गपा नर नीके' तो लाकन की वक बीस न माने
बुदन की सड पाकन टुटे बीचसता ना बाठ डोलाब' ।
इन्द्र ब्रह्मा कुं तो रक से वलत' आरन की बोहो कोन बलाब
भैतन्य नीध्य' के मागी मखा काहा स्वान सगास के भोग को खावे' ।

मान ॥८०॥

१ ना पदते कद कर्मावक पेदा (अ वा) २ करत कोई काहा (अ वा)
३ तुलाही (अ वा) ४ जाकु-यो बोले-जाकु मेन नहीं सब मेन ही देने मेन
नहीं सब बोले सो बाली (अ वा) ५ करत ही वाके (अ वा) ६ तो (अ
वा) ७ व्यास की ओटे (अ वा) ८ महर्षि (अ वा) ९ प्योम नीको ले
(अ वा), १० माईया (अ वा) ११ बुप १२ किनाकी (अ वा) १३ टेर
(अ वा) १४ तो हेका (अ वा) १५ मेति बेति कर (अ वा) १६ जहा
रदे (अ वा) १७ बूम (अ वा) १८ बर (अ वा) १९ हे तिनीं दिनाही
(अ वा) २० मान पर्यङ (अ वा) २१ नीचेनें (अ वा) २२ ज्यु बर की
मही बहाङ न दूटत बो-बनेक करी को बाव (अ वा) २३ चित्तता को र
को देसन (अ वा) २४ निव (अ वा) २५ शृगाल मयकुं (अ वा) ।

जीब रीझे अरु खीजे तो काहा हे युग्य गये मेरो कानु छिटेगा ।
ज्यु जस नीय्य' बुँद पहे जु बहोतेरी काहा बुँद के जार उछान वड़ेगो ।
दिनकर' दीप दिखाव को मूरख दीप बीना कहा रख अरुगो
अखा चडाउ काहा मारु नु तारे' साही तीरेगो जे' नाव चढ़गा ।

ओख ॥८१॥

सठ' कहो कोई, भड कहो पाखड कहा कोई कहो भीखारी ।
सजन कहो, दुरिजन कहो चोर कहो कोई कहो ब्रह्मचारी ।
कोउ' को पाव टके नहो ताहा' जाहा जाये कीनी अछेजु पयारी ।
जीनु देख्यो जैसे तीनु तैंसो छायो बोहोत रहे जु' धोचारी वीचारी ।

लंठा ॥८२॥

रेहेनी की केहनी बसाव सबे" का रेहेनी बात न बूझी" ससारा ।
जे अन कुं" परसाक उमेवा ईस लोक की आस करत समय सारा" ।
मा" मोहे भूष मवीस्य का सोया बरसमान का काल बलावन हारा ।
केहेत अखो गेयो रेहेन हमारा' ज्यो बादल तें नम न्यारे का न्यारा ।

रेहेनी ॥८३॥

काहा रेहेनी रहु काहा केहनी कहु काहा सेहनी कहु काहा जैस का तसा'
कारा' पीरो लाल जु मपेती" अन्न गगन गेव ऐमा" का एसा ।
बबुर करीर" दुरगघ पचामृत महनी अरावत नाही अविता
केहेत अखा जाये" प्रगन पार्खत' ताकु कहे बार्खत" कैसे सदेसा ।

काहा ॥८४॥

१ बुझ गये मेरो कहा जो इहेयो (अ बा) २ > (अ बा) ३ ज्यो
दिनकर (अ बा) ४ कहा बीपा बिना बाको (अ बा) ५ अखाओ अखा कहा
नाकनु तारे (अ बा) ६ तरेयो बोरे (अ बा) ७ लंठ (अ बा) ८ चोर
(अ बा) ९ काहु को (अ बा) १० ठिके नहि तही सी (अ बा) ११ बहोत
करेह (अ बा) १२ मो (अ बा) १३ बुझ (अ बा) १४ दिनहुं (अ बा)
१५ करे म पयारा (अ बा) १६ मगम हो (अ बा) १७ रेहेनी हमारी (अ
बा) १८ कहा कारी मा दही रहणी कहु कहा सजेना गहु करेणा कहु कहा जे
का तेमा (अ बा) १९ मबज बचन (अ बा) २० गेव मभ पदका (अ
बा) २१ बाबुर करी (अ बा) २२ जाहु (अ बा) २३ पाइयन (अ बा)
२४ ताकु कहाइ इत केसा (अ बा) ।

बोहा

साधारण जन काई का सख न पावें काम ।

सख बड़ो हे जानी का न्यु प्राकृत पावें सोय ॥८१॥

आप उवेस जैसो केहे राही बुनी की बान ।

अनठ-अमठ नख आठमा तामे काहा समान ॥८६॥*

कवित्त

मालो' पेहेनु' न टीका वनाउ सरण काहा जाउ ना कोउ क्यसीका' ।

आपा ना मेटु बापन' बापु मे मवमाछा हुँ मरी खुसी का ।

भीस्त न चोबक दोउ न चाहु' न चाहु नाम रूप क्यसी' का ।

हे नाही की सख्य अछा की जानपा ज ठोर उठी का' ।

मामा ॥८७॥

सुपना की बरड बकल मन सारे बापत की वतीयां कछु मोरे ।

सुरज कु' मरी मोठ' अछरे देखावनी' कु बन रहत' बटोरे ।

तरनी की दृष्ट कीमा जम ते तम' तब जेस को तेसे मय्य ठोरे ।

एसे ज्ञान के आगे अज्ञान अछा नेहे नागो काहा कु पहेन काहा कु नीबोरे' ।

सुयमा ॥८८॥

चन्द राहु नख हे जीव सीब की चन्द राहा कु म्यु' देत देखाई

मिन्न पर राहा दुष्टि न आमत संग मीस्वा बढोया साक नाई ।

ईद्रीय तत्त्व तन्माना चतुष्टय ए वस्ती' की अरमा सब निजाई

आत्म के भ्रम मत' भुला अनि' काउ कोबोछ मन अन्ना मय्य' पाई ।

बम्म ॥८९॥

- १ मामा (अ बा) २ मपेके (अ बा) ३ परण न जाउ म काउ किसी का (अ बा) ४ बापा (अ बा) ५ बाउ (अ बा) ६ किसी का (अ बा) ७ हे नाही उठी का—हे नहि की मय्या परी जो अछा की जानपा जे कोई ठोर उठी का (अ बा) ८ मोना की बरड बकल जन गारे (अ बा) ९ न्य सुरज की (अ बा) १० माप (अ बा) ११ देखावन को (अ बा) १२ जर (अ बा) १३ जब व (अ बा) १४ बापाह पर माके बहाउ निबोरे (अ बा) १५ राहु कुउ (अ बा) १६ चतुष्टय या चतुः (अ बा) १७ आमा बनो आई (अ बा) १८, २४ (अ बा) १९ जम (अ बा) २० कोबिद जवने जव नहि (अ बा) ।

* अन्ध-अवस्था ८१ और ८६ अ बा, ये गद्दी है ।

चीन' की बसक बसके जु वसू दीश' चित्र बितेरा ज्यु आप मया हे ।
 बितेरा बतुर भले पात्य ऐसी चित्र बस्या आप में नर ह्याहे ।
 बस को जोम ज्यु चद्र खपसता सहज खपल चद्र का ज्यु बह्या हे ।
 बैसन की चीहीन ऐसी अखी की के 'भ्यत भय्यत' मे गेब गया हे ।
 चीन ॥९॥

भ्यान' घरन कोन कु नीहर्ले जो प्रगट खेन को आप खमझ्या'
 भक्तो करी करी भोग लगाठे सा प्रगट भोग को आप लबझ्या ।
 गुन निर्गुन बीबासह' कसे, जा बीवक' बीवार को आप करैया
 वे हम" फोमबाहा अपनी कु, ऐसे अबा गई देया जु मैया" ।
 भ्यान ॥९॥

सा ही भक्त भगवत भस्से छटत" हे भर छूटा के महीया ।
 सो सत जानी रहे आप आधारा लागत नहीं प्रभुना सून्य बहीया ।
 अग्री" सा अबस अरपनीचे कोटाकाट मध्य पाइयत कहीया" ।
 मोर अखी वेहे बसव के सो बाहो मन जाघा न माने को दोपी बडझ्या" ।
 माही ॥९॥

दोहा

नीराधार की रहेन कु चीहीनत बीरसा काय ।
 आप मीटभा मीजपद रहे नीराधार स्वे साय ॥९३॥*

कवित्त

ना मोही ब्यनज ब्यापार" उपासन ना मोहि मंत्र गुरु नहा खेरा
 ना मोहे रस रसायन आवत ना मोटका' अजन देव देरा" ।

१ बिष(म बा) १२ बहुतेरे (म बा) ३ जो चित्त बने ओप में रह
 हे (म बा) ४ बस को कह्याहे—बस के ओके क्या चद्र खपलता से
 खपल बंद कहा ओ कयो ह (म बा) ५ चित्त अचित्त में (म बा) ६
 (म बा) ७ गरीया (म बा) ८ निदीया (म बा) ९ बिचारो (म बा)
 १० बाज काज (म बा) ११ बह्या मैदया (म बा) १२ नेहल हे (म बा)
 १३ इतिम (म बा) १४ बमतपति कबहु कोटमध्य कोइ करे उपझ्या (म बा)
 १५ मोर बडझ्या—अला बसेबसे गो जानन जो भास माने को देखी बडा
 (म बा) १६ मुही बगज (म बा) १७ मुटका (म बा) १८ देहरा (म बा)
 * एम्-अम्या नमंक ९९ 'अजानी बाणी' में नहीं है ।

ससम्प सोम की सोमी न बालू मेंहु संहारा' के हो तुम मेरा,
 एसी गेब की बाय' परीजु अबा की हठ पर हठ नाही सेहेजनी मेरा'।
 ना नोहो ॥९४॥

शानी कुमानी कहे सा' तो बाबर रावरी रीतकु रक काहा जाने ।
 नरपति नेक न माने म्युनाधिक कुसत्रीया स्वभाव खु ठाने' ।
 घनपटा' करी गरजत मेहेरो केहरी प्राण तबत हठमाने
 ऐसे अबा कसपो कोई कंस जान' की गत्य गोविंद सेहेचाने ।

ज्ञानकु ॥९५॥

सल बड़ा ह ज्ञान को आप न भीहीने काय'
 हूदे" हाथ आवे नहि ताते असभावना होय ॥ ९६ ॥
 बु' बोहो मोल" हीरा वन में कुरते देख्यो बात
 डरपो बटोई" प्रत मन्य" अबा खँखेरी राख्य ॥ ९७ ॥
 रेहनी" केहनी ज्ञान की मेचक सागत जत
 मुन छाड़त जगगुन सहा चीमत" नाही महत ॥ ९८ ॥

कवित्त

संध की नीचा" नरत जन धुङ" सा आगत है अपने घर कुता ।
 बूँदी कु सट्टुरा' करन कु नासिका निज काटे सो म्यगुता' ।
 पारोसी" की मविर जराबने" मुरख अपना भूपशा" सगाय क मुता ।
 नहेत अबा कबुधी नर जेता" और अघीज कु आप भू" भूता ।

सत की ॥९९॥

- १ तमारा (अ बा) २ बाग (अ ब) ३ नर जेरा (अ बा) ४ मोह
 (अ बा) ५ कुसकी निपा जा मुभावही ठाने (अ बा) ६ ज्या (अ बा)
 ७ ज्ञान की (अ बा) ८ ज्ञानी को (अ बा) ९ असा न भीहीनत काण
 (अ बा) १० हारद (अ बा) ११ ज्या बट्टमसी (अ बा) १२ बटाउ
 (अ बा) १३ शानी (अ बा) १४ म्य (अ बा) १५ आगत (अ बा)
 १६ निपा (अ बा) १७ भट (अ बा) १८ बरीकु मीग (अ बा) १९
 टी मो आप बिपुता (अ बा) २० ज्या पारागीको (अ बा) २१ जारवै
 (अ बा) २२ भूप मयाय (अ बा) २३ जने (अ बा) २४ मे (अ बा)

नंदिक' नेक नाराण' न जानत ठानस हे ओगुन भुख मीघा ।
काक' कुकर पुरीप' बराबर अतर सहेज सुभाब का गदा ।
सुंदर सर मध्य नाहावत नाही खर' मंजन' छार बीनेते जानवा ।
केहेत अखो सत' सग न सागत कनुषी कृटास नर मत्य का मदा ।

नंदिक ॥१०८॥

सवे का बाण साग्या सब के तन मारी मीनो' सब माया माहेडी' ।
मारे हे बचक सरोता" सबे का ज्यु सरवर फल ज्यार" पबेडे ।
ज्यु बीछुआ जनमें बहु बासक एही" अपत्य तन बाका उघडे ।
केहेत अखा बैठ बह्य सरखे सा मतन कु माया नही छडे ।

ससे ॥१०९॥

राम ही राम जपे सा हीरा मन" नाम जप" नित्य सा स्याम सुंदर ।
स्यामनी सुरत भसी सुरमोक प तारें फीरे" गिरि सबत कंदर ।
उसट फिरघो' नर निज उर अंतर काटि कसा गवि पावे सो चंदर ।
केहेत अखा गुरुजानी सं वे बीन राम न जान जाप देख घतदर" ।

राम ही ॥११०॥

देखत सब भंजन मान निरजन" रजन मन का बहुत बहाया" ।
सात भया महीं भब को भजन नाम पुरजन मान्य" कहाया ।
भजन" माहे न सगुह बहाग भजन माटी मीनी मीनी नाया ।
कहेते अखा जहां नहि स्वर व्यजन सा भावन बाझ का हाम न आयो ।

देखेत ॥१११॥

१ नंदिक (अ बा) २ नारायण (अ बा) ३ काण (अ बा) ४ क
मार्ग बिछा (अ बा) ५ सर जही गहावत (अ बा) ६ मजन (अ बा)
७ सत (अ बा) ८ लप्पा (अ बा), ९ मारमिये (अ बा) १० मा
(अ बा) ११ घाता (अ बा) १२ तार (अ बा) १३ माही (अ बा)
१४ मंजुकि (अ बा) १५ सो राम हे (अ बा) १६ बहु (अ बा)
१७ क्यों (अ बा) १८ जब उसट क्यों (अ बा) १९ पावे का देखे प
(अ बा) २० रजन (अ बा) २१ बाहने बाहाया (अ बा) २२ नाम
(अ बा) २३ मंजन (अ बा) २४ मली मली (अ बा) ।

बोहा

मन की सुरत हे सामगी रहैत पख कु राम ।

केहेत अखो गुण रंजन मान किमो आराम x ॥ १०४ ॥

कवित्त

माय राम रमेजु^१ रमावत सत्य कहु हु दुहाई पिता की
बैतन रूप बराबर बसकत माय^२ नोदखे मनछत छटा की ।
ज्याहां उछोट भयो हे अधामक सा बर सभा परासीत^३ ठाकी
केहेत अखो एसा बंद बचन हे ओर काम बसावे^४ मन मता की ॥

अपेही ॥१०५॥

राम नही जु नावान^५ अनुपे राम बही जु अयान^६ खेसबना ।
नाचन गावन ते^७ राम न रीझत राम बही पानी पाहांन मत्ताबना ।
आमम बर्ष भरोखे को भुडु^८ कपी कसा रस करत केसबना ।
केहेत अखो भृगुबारी अकारखे मानत ह हम गग झीसबना^९ ॥

राम ॥१०६॥

गावने मे^{१०} गिरिराज रीझावत तान ते पथर^{११} का बरे पानी ।
पडित ते पजापनि^{१२} पुसकत सरस्वती सुनत ही जात सरानी^{१३} ।
सिध्दते मूर सोम नरस सार^{१४} ओर ब्रह्मांड करत चर भांती ।
बेह अद्या बीन आप पहेचान्य मानु सुपने की सखी सत्य मानी^{१५} ॥

गावन ॥१०७॥

नीराधार रहे सबका सा आधार आधार रहे साधु हे^{१६} दीयरा ।
इतिम^{१७} वस्तु तेस पुट^{१८} बाटी बयार ते डरपत हे^{१९} दीयरा ।

१ आप ही राम रमे जो (अ बा) २ मानीगता (अ बा) ३ गरहुं
छटा हे परानीत (अ बा) ४ ओर कु बसावे जो (अ बा) ५ न रीमे जा
वान (अ बा) ६ न रीमे अयान (अ बा) ७ मे (अ बा) ८ न रीमे
(अ बा) ९ भुमी (अ बा) १० असबना (अ बा) ११ जो पावन मे
(अ बा) १२ तामने पमृवर (अ बा) १३ बडित सा बरजापति (अ बा)
१४ गरमनी सुनते ही जोन मेरानी (अ बा) १५ सिधी मे मूर मुपनको
मपारे (अ बा) १६ माना स्वप्न की सखी सत्य मानी (अ बा) १७ तो
(अ बा) १८ कवित्त (अ बा) १९ पुट (अ बा) २० रहे (अ बा) ।

x पट दाहा अ बा में एम्ब न १०५ के बाद आता है ।

आत्म भर्क जतन बोन असकत कोटि सुधाकर सु मीयरा ।
 केहेत अखा स्वीस्थ^१ भई तगना की^२ जाहा वीराजत द गीअरा^३ ॥

नीराधार ॥१०८॥

बोहा

अब कहूँ परब्रह्म पोषका^४ बीसव वस्तु का^५ मेव ।
 रूप अरुपी ही^६ रमे बीगत^७ दुरसभ देव ॥ १०९ ॥
 हे अगत मध्य जगदीश क म्यारो नीरंजन साव ।
 ज्यु अर्णव मध्य बुबबुदा, केहेत अखा बहुभाव ॥ ११० ॥
 स्वेत में स्वेत सो राम, नीला पीरो साल स्याम
 मिथित अनंत नाम, आपको धरात हे ।
 जठमें जड़ केहे बेहेन चेतनु चेतन, चेत
 आपको स्वस्व एन, न्यारो रक्षा जात हे ।
 समथ तेरो ही सत्य, कारन पमग गत्य,
 सोखत पोखत नीत्य दुर से आभात हे ।
 केहेत अखो बीचार रेहेत परपच पार,
 आप ही आपो समाग कैसे के दुरात हे ।
 स्वत में ॥१११॥

स्फुरी हे केवल अस्त, जाको उद नाही जन्म,
 जान के भयो हे स्वस्त अलक्षतल ब्रह्म को ।
 आपको चेतन नीज सारीखो मसक गज
 उसस्यो रकमें अज खेल नाही बर्म को ।
 जाही वी जेतो हे आन ताही को तेसो हे स्यात,
 काग बगध ममाल, आसा नही बर्म को ।

- १ स्थिति (अ बा) २ तजों की (अ बा) ३ बियरा (अ बा)
 ४ पीठ (अ बा) ५ वस्तु बिस्व का (अ बा) ६ वही रमे (अ बा)
 ७ अ अगत (अ बा)

• छंद-मंस्वा के अन्तर 'असाओ बाबा' म यह बाह्य अपि है और इनो के
 अन्तर अ बा में निम्न-लिखित दाहे के साथ संतुष्टि। समान्य हो जानी है—

सर्वाङ्गी प्रकरण कह्या कवित जोरतसी जोज ।

बीध कह्या मध्य बोहरा कोई जानी देखे काज ॥

अच्छा नाही नाथ बिंद प्रगट पुनम चंद
आये ही ध्यानंद कद राय पद परम को ॥

स्फुरी हे ॥११२॥

अत्य ही रामनी राट ताही ते भया नेराग
पवन की एही ठाठ महस चंद लोक को ।

देवता यल कीनर नाग ही पनग मर
वानव चर अचर ठाठ यह मोक को ।

प्रवप जैस बयार गोमुख भयो सुचार
राग तान नही पार बसो मय्य मोप को ।

त्यु पारब्रह्म हे अनूप सांनय भयो स्वक्य
अकल कला अनूप पोपक अछा धोपका ॥

अत्य ही ॥११३॥

ऐसो ह अकलवाय काहु के न आय हाथ
कास माया कम साध योजना जमत की ।

बसत ऐसे ही खल मांनु नीर डार्यो सेस
टकी-सीधी गाम बेस सहज में वीगत्य की ।

आप ज्यु को त्यु विरज आलोतिक सेज पुज
विरज के कुटीर नून रेत काहा रगत की ।

अत्य तें नाही की आन्य ग्यारी सी बस हे आन्य
जावेजे अछा समान को बसावे मुक्त की ॥

ऐस ही ॥११४॥

कोठ कहे तीन। अवतार काठ कहे परपच पार
कोठ कह कम हे मार कीये व मुक्ति पाईये ।

कोठ कहे साधिये भोग कोठ कहे बीबीये भोग
कोठ कहे मक्ति अमाध छोड़्या माहा जाईये ।

ही बस्वना कोटय बाधत आकाश माट
रेह न सक काया काट भावना मोराईये ।

अप्या स्व भाप जाही का सकल ब्याप
मणस्वंगी अनुभ अमाप आपकी सहाराई ह ।

काठ कहे ॥११५॥

प्रगट प्रभु प्रमाण जैसे चद्र जैसे भान
 हाथ को ककन आव आरसी न चाहिये ।
 आपको स्वल्प भूष करत वीषे की लूस
 जैसे ही मनी अमूल काच में बेकाहिये ॥
 पर्यो हे कथ के अस माया मे कीनो दस
 काल नीरव मारे कस अज्ञान मोद आई हे ।
 आत्म गुरु दयास ज्ञान को दखायो चास
 जैसा का तसो नीहास अख नीच्य पाई ह ।

प्रगट ॥११९६

अनमेज्यु बल्यो अगम । जाहा भव की नाही गम्य । आपोपो नाही उरमा
 सेहेज स्योत्य ताही में प्राण । ज्ञान का जेहेही ज्ञान । मानको जही हे मात
 नाचत गहेराई में उठते जहीहे उर्ध्व । बर्धते जेहा हे वध । आपो वाह्य नाही मध्य
 मान मध्य वरियाइ में । केहेते अखो महावाक्य । देखे जे सज कुताक्य
 जैसे ही नाव की काग उठचा फीरी आव ताहीम

अनुम ॥११९७

एसा हे ज्ञानी को ज्ञान, बिधि ने नीरुमा नही आन
 जाही को कोना सयान टोक सके को ज्ञान मैं ।
 अस यागी साध काया, खेचरी करे उपाय
 तैसी गत पपी प्राय, छाना के अयान मैं ।
 पडीत साव सोजक, बाध का करे तरक,
 ज्ञान की सहेज की बक, जैस तेज भान मैं ।
 केहेत अखा जीव की मांम चाम क बसाव दाम
 एसो सा नाही आ राम आवे अन के मान मैं ।

एतो हे ॥११९८

ज्ञान को अनख सख, नहे स्वामी नाहे सीप्य,
 जैसे ही न चाहे पक्ष सिध बन बेमरा ।
 मुर सत सीध आज साथ घोरा नाही बाज,
 ना पीर ताही मनाज मृग की नर स्वरो ।
 देवना देवी आराध पिगल न ब्यावण साध्य
 भगम गावे अगाध्य जाही माया नाहीं ईश्वरी ।

नाही का रीतब काज्य जैसे बूया बन गात्र,
जाने कोई ग्यान राज अखा की बसेबसरी ।

ज्ञान का ॥१११॥

ताम्र जाने राम रस बीहीन जे पैरदस,
ताहीसे अतीत त्यज जाम रहे आनंद में ।
जाही का हे नाम रूप ताही तें म्यारो अनूप
आप अधिष्ठान रूप अप्पनी जैसे बर में ।
नीस यय से मीराम बाहु नहीं कर्मदान
ताही के गुन का आस कल्पत हे वट में ।
आपको कीमा अम्बास अघट घटाने तास
अखा ए माया की वास डारत हे फव में ।

तम जी ॥१२०॥

ध्यापक ऐसे ही ब्रह्म आन ताही कास कर्म
उत्पति स्थिति का धर्म सेहेज माहे होत हे ।
महि की के हे ब्रह्म बस अरूप सूरूप बस
आपको आनंद बस अर्थ तू उदोत हे ।
ताही का नीयता ओट कल्पत मन की तोर,
सत्य का कहव की ठार बाक्य जैसे बाध हे ।
केहुत अखा ह आप जहाँ जैसे तयस्या व्याप
आर मायाका भीष्या आसाप मन गात रोत हे ।

ध्यापक ॥१२१॥

उर ज्ञान समान आठ मने आठ एक छात्र सा महका आवे मन्त्र यारे ।
म मही म नहीं साही सदा डरी जीनु बीन बस क मेहस समारे ।
आव ही आप रक्षा फुली फाली ता तू का ह मध्य कहरे सोनारे ।
अस ही बस मग हाम छाया तमा हनु मध्य राम सगारे ।

उर ज्ञान ॥१२२॥

कोटि प्राणायाम पाकर हारे मूर समी म गटे नर केले ।
सिर पर हुय इमी नीकस अस्त आधार मान जाय खूले ।

कुर्य के साध्य जोपे हरि होत तो काम के क्षीण सबे पाठ
कहत अखा गुन को नहीं सांझ आप टरेत तुरी पद
कोटी ॥९॥

पारब्रह्म कैसे की पेहेचाने बीच्य परी हे मीध्या दृष्ट
मीध्या पदारथ सत्य सा मानत सत्य सोय ममता भई
दृष्ट ओर सूर्य पदारथ जेवो सा सब माई बड़ी ओर
केहे अखो एही मन को सखन, मन मुख चढो राय कर
पारब्रह्म ॥१॥

ज्ञानी मीसे ते अज्ञानी रहे नर एही अचभो बढो हे माया
सुरज बेन प्रकास सबत कुँ जलुक अख सो दोष कामा
गगा के कठ तीरस्या रहे चालुक, पावत सा दुख हठ माया
केहेत अखो दृष्ट कृपा बीना काहा जोपे वासी मयो सुर-तर छाया
ज्ञानी मीसे ॥१॥

जापत ज्ञान टटोरे मते मन घाय सोय कोठी का दा मत
हरधन पटके मत नामावीछ जुनती सुनी सासा बोहो
गुरु गमते गरकाठ करीबीत, जन जन संग बबवाद कुँ
केहेत अखो सत्य आप तैसी सब, अनुभेकी कसौटी सुँ कचन
जापत ॥१॥

अनाम अक्य अवाच असग, ज्या मध्य नहीं मन बाच
दुन्य सुमार अकार प्रीगुण तन्व कोहां से भई अनामा अ
जोपे एक कहै दुजा प्रगट पाईयत कैसे दोष कहै एक बोमे
केहेत अखा सा अवाक्य परमपद एकद दाके हेत होत
अनाम ॥१॥

नाद न बिद बिस्तार न भावा ग्यु का त्यु परब्रह्म अ
ठाहे माय ईछा कर माया भागी बंधु आप माया बीन माहीक
बस्तुकी जाहावे जजा की हे ईछा, केधु एमे बिचार केहेतु स
केहेत मया मीक या जेठावे सोहे परम गुरु वासे म
नादन बिद ॥१॥

जोपे नहुँ परब्रह्म नु ईसा त ता अपूरनता ताहे भावे ।
 जोपे नहुँ अमा सागी अमानक ता जीव को साम्यता दी कैसे भावे ।
 जोपे नहुँ सीसा आप अकेली नाना रंग-डग रखीखु देखावे ।
 नहे अखो सबे द्वैत होतु है एकमेव वेद वचन दखावे ।

जोपे ॥१२५॥
 ईछा प्रमान करे सो घुमाया वस्तु बिचार कीयां साहे मुठी ।
 मुठ की सीग नही तो काहा नहीये अंग बीना बेठी काहा उठी ।
 ज्ञान ज्ञय ज्ञाता सोधु माया द्वैत निर्द्वर सा धुम की मुठी ।
 केहेत अखो अवाध्य भावे वस्तु बेजावेण बीना परी गंठी ।

ईसा ॥१३०॥
 पाँच पचीस पचास पंचा दू, बीसौ कोटि कसप जीठ कबे कोठ ।
 किछु जात तम सो किछु गर्म गिरयो समान सबे सत्य जानी जसोठ ।
 आपन टाट्यो न राम विचार्यो नरवर नेक गनो मन दोठ ।
 केहेत अखो बीन राम पेहेचान्या इहेकानो सबे रक राय कोइ होठ ।

पाँच ॥१३१॥
 जगत भये तबने परबत तो काहा कछु साध्यो असक्य जीयेते ।
 तीन पंचास जीठ जापे कोठ, ताहु न बेत्या रच होयेते ।
 नर मूर होय बस्या अमरापुर भुगत्यो विपे रस जस्य कीयेते ।
 केहेत अखो हूदे राम जाने बीन पसो अव नुप हास्य कीयेते ।

जगत ॥१३२॥
 नर मुर बानर बजा उष्टर छर देह की भार सरीख स सारे ।
 माहार निद्रा भय मैधुन मायनी छाना बसावन नाही सज्यारे ।
 पुरुष पसुं से बीच नाही रक आपे राम पेहेचाने न ग्यारे ।
 नहेत अघा बिन व मन देखो सो सत्य मान र राम रक्ष्यार ।

नर मुर ॥१३३॥
 बचन बचन बाउ बीननिया डोठतु भाव पराई टमोरी ।
 भार सदनकु वर मचनु पाग छम गटाउ नुनित्य त हारी ।
 मक्त को शय नचा मुख भाव जस पावत नरक अपारी ।
 नहेत अघा हरिहरण विमुख नर, मित गये स्वानमुकर छर टारी ।

बचन ॥१३४॥

जैसे सोहो मुकाम रह्योषी नाच के अंतर होयन राजे ।
 भयुक धीरी को बयार सम्यो तब तब सारनहार कु छाड़के भाजे ।
 सुं अशानीन रहेत ज्ञान मता मे, कर्म बचाकु सुमेते विराजे ।
 कहत अखो मायाकीने मपुंसक सा ज्ञान अइग बाँध कोन काजे ।

जैसे ॥१३४॥

सोमन की समसेर समारी, कीधु कथीर कीनी भलघारा ।
 छोटी सी छुरीका होत सोहे की पसमें सो दुक करे बहु यारा ।
 तसे पडित बाद वदे खु बही विध्य, जो सु न आवे तस्य बीचारा ।
 केहेत अखो उमग्यो अनुमे जल, तब कागत चित्र का काहा ईतवारा ।

सोमन ॥१३५॥

काहा करे कोई करता गत्य यारी, कुछा हनु परसक जा आयो ।
 सीता की सुख्य सीनी भक जारो, छोहु तेसक छोटा से बाढ़ न पायो ।
 राम सो बानी हनु सो प्राक्रम रीझ की ठोर मुख स्पाम करायो ।
 नसे अखा गुरु ज्ञानी भीसेते, भाग्य हीन नबसक न नायो ।

काहा करो ॥१३६॥

दोहा

देखा देख कपनी कय ठहेराउ नही गुरु लक्षका ।
 चाल्य चकोर की देखके, ज्यु अग्निकु भागी मक्षका ॥१३६॥
 उलटा आप खोयो पया, बाहा राक्ष्या या भक्षका ।
 केहेत अखो पीने भये ज्यु चन्द्रमा कुज पक्ष का ॥१३७॥

इति श्री अन्ना स्वामी विरचितं संतप्रिया रत्न सम्पूर्णम् ॥ समाप्त ॥

साखियाँ

साखी

गुरु अग

सब कोई पूछत' सुन' अछा' कोन गुरु तेरा पय ।
 कोन घर से बोलिया' के ईश्वर के जत ॥१॥
 गुरु मेरा पक्ष्य बोलता त्रीगुण' के सिर पय' ।
 निरासम्ब' घर मेरडा मैं नहीं ईश्वर नहीं जत ॥२॥
 गुरु मेरा समरा मर्या सब नामु' देखे बोल ।
 सब नेनु' देखे" गुरु" बेकीमत्य" अमोल ॥३॥
 नां होना" नां" होमगा" अजरामल गुरुदेव ।
 स्थावर जंगम सब अछा" करै गुरु की सेव ॥४॥
 अपना नाम गुरु भूष' दिया" सब न" रहे हम दोन ।
 नख-सिख" व्यापक गुरु अछा सो भासा" जपे सो कान ॥५॥



१ पूछत (पा पु), २ सुन (सा) ३ अछा (अ पु) ४ बोलिया (मा)
 बोलिया (फ) बोलिया (गु) ५ त्रीगुण (गु) ६ त्रीगुण के सिर पय (फ)
 सर्वांगीण है पय (सा) ७ निरासम्ब (मा) निरासम्ब (गु) ८ ना ईश्वर ना जत
 (मा) ९ नामु (फ) नामु (गु) नामु (सा) १० नेन (पा) मन (गु)
 नेनु (सा) ११ देखे (फा गु) १२ अमोल (सा) १३ बेकीमत्य (सा)
 बेकीमत (गु) १४ ना हाणा (मा) १५ ना (फा मा) न (गु) १६
 हो गया (सा) १७ आया (अ पु) १८ भूष (सा) १९ दिया (फा गु)
 २० ना (सा गु) २१ अपसीख (फा गु) २२ जपे (अ गु), ।

आत्मज्ञान का अंग

आत्मज्ञान उपज्या बिना माया मानीं सांच ।
 ज्यों निरघन की मारो अछा सबी कपीरां कांच ॥ १ ॥
 आत्मज्ञान न उपज्या तां मुन उपज क्या हाय ।
 नवलख छाय तें अछा दिनकर कहै न कोय ॥ २ ॥
 आत्मराम न ओलक्या जे पा अपने पास ।
 हीरा ही सब पारक्या पन अफन यया बूबास ॥ ३ ॥
 हिरदे^१ हरि हिसमिस रझा पन पटु दे देखे नाहि^२ ।
 एक नही सो दस^३ नहीं यी^४ अछा जुग बेहाहि^५ ॥ ४ ॥
 चतुर दवे चतुराई मा भीर मूढ़ पने दव मूढ़ ।
 मोनु^६ पाछे^७ उड़े अछा तब प्रकटे पावक मूढ़ ॥ ५ ॥
 तन उजसे^८ धन उजसा भीर उजस वपड़े अय ।
 एक मन मैस सब मस^९ भया जो उजस न मिला हरि संय^{१०} ॥ ६ ॥
 उजस उजस^{११} नहि^{१२} अछा भीर मैसा सो मैसा नाय^{१३} ।
 उजस खर कहा कीजिए काली^{१४} तो भी नाय^{१५} ॥ ७ ॥

१ बेतवा अंघ (ना) २ मानी (का सा) मानी (मु) ३ कपीरा (का) कपीरा (मु सा) ४ तें (का) तें (मु सा) ५ बूबास (मु) बबास (सा) ६ हीरदे (का) हिरदे (मु सा) ७ परदे (मु) परदे (सा) ८ नाहि (का) नाहि (मु सा) ९ दस (मु) दस (सा) दस (का) १० मू (मी) भी (का मु) ११ वही बाव (सा) बेहाई (मु) १२ ए बीनु (सा) ए बीनु (मु) १३ सांच (सा) सांच (मु), १४ उजस (सा) १५ मस (ना) १६ जब न बिस्वा उजस हरि संय (सा) १७ उजस उजस (सा) १८ नही (ना) १९ नाहि (सा) नाहि (का) २० फारी (सा) २१ नाचे (का), नाच (सा) ।

एक मैसा भी उजला अछा ओ त्रिपा' करे जगनीस ।
 मृगमद का कुस रग बह्रा सो हि' चढ़ाया' सीस' ॥ ८ ॥
 न्याय करि जाने बहू नर नमे' और राग रग के जाण' ।
 पण आत्म अनुभे बीन अछा' ए' गुण सो कंठे पापाण' ॥ ९ ॥
 ब्राह्मण' भोसापण अछा हरि आगे दोऊ' ओट ।
 सो सदगुरु का बासका जे डाइ बस्या दो कोट ॥ १० ॥
 अटपटी' समझे ओ अछा सो' सब छूटे' छे' ।
 उसट बटारी मारते कहा वे' तसकर' बघ ॥ ११ ॥
 कासबूत' का स' किया हाड चरम' ओ मांस ।
 ताकू मूरख कहे अछा हम उत्तम हम खास ॥ १२ ॥
 एक मसासा है अछा स्वान स्वपण ओ' गाय' ।
 एक ठौर उपजे मरे मूरख भरम न पाय' ॥ १३ ॥
 कुस मोहोटा कीरत बही मन मोहोटा तन स्थूल ।
 एक अछा' अनुभव घटा' ताये' सब घुसे घुस ॥ १४ ॥
 जे मयाये' मोहोटा मया ज्यौ फूसी मृत' काय ।
 तव' मोहोटा' दीसे' अछा' अते बिनसी जाम ॥ १५ ॥



-
- १ कृपा (सा) २ सो (सा) ३ बह्राई (सा) ४ सीप (मा)
 ५. न्याय— नमे म्याये (फा) न्याय कर जाने नर नमे (सा) ६ जान
 (फा), ७ पण — अछा—आत्मज्ञान बिना अछा (सा) ८ सब (सा)
 ९ पहाण (सा) १० ब्राह्मण (सा) ११ दो (सा) १२ ए (सा)
 १३ तो (मा) १४ छूटे (फा) १५. बघ (सा) १६ कहावे (सा)
 १७ तिरकस (सा) १८ ए (सा) १९. कानू (सा) २० जम (सा)
 २१ बह्रा (सा) २२ गाये (फा) २३ पाय (फा) २४ हरि (सा)
 २५ बट्या (सा) २६ तारते (मा) २७ मयायते (मा) २८ मटक (मा)
 २९. तन (सा) ३० मोहोटाता (सा) ३१ बलिये (सा), ३२ पण (सा) ।

सूक्ष्म अंग

सूक्ष्म मसी है' पुरुष' कृ अक्षा नहीं अटकाव ।
 काया साईं के वहे गहैन यवा गरकाव ॥१॥
 समझे ते सीतल भया ब्रह्मा बंधन बाय ।
 अक्षा अरोमी तब हुधा मखे सो पश्य पश्य' बाय ॥२॥
 साईं से हेसा' बाहि कूं जिस बट आई सूक्ष्म ।
 सीकसा मुन्या मजरे पबपा अक्षा मागी असूक्ष्म' ॥३॥
 अक्षर बखु सा सूक्ष्म है काई भेदु भेदे मन ।
 और अक्षा करत' फिरे कड पर जतन' ॥४॥
 बड़ अनुमे क सत्य' क ने काई खोजन हार' ।
 सो मर सेवते हरि मिस जाके जन में धार ॥५॥
 रतनागर' बीज्य' वह रतन अक्षा न आवे हाथ ।
 अनुभव' पुरुष सामर ज्याहां रमाहां प्रमट भिसे प्राप्तिमाप ॥६॥
 सुपने का सापी' नहीं भीर पंखी कृ नहीं साह' ।
 जानी कृ अहंता नहीं सरीर कृ सहेज निबाह' ॥७॥
 सेहेज निबाहो होत है, देव नर नाथ सब सोफ ।
 अक्षा कोई कामत अनुभवी सिर' ले न करत सोफ ॥८॥



१ मुद्रा (अ) २ गंदे (अ) ३ इयक्तु (का) ४ सवस्या (ता)
 ५ जब (ता) ६ पश्यपि (अ) ७ येसा (मा) ८ पला (का), ९ अक्षा
 अवब मायी मुद्रा (का) १० करत (अ) ११ जतन (अ) १२ सत्य
 (अ) १३ खोजनिहार (मा) १४ रतागर (मा) १५ बिन (अ) बीन
 (अ) १६ अनुभवी (मा) १७ सापी (अ) (१८) साई (अ) सहाय
 (अ) माया (मा) १९ निबाहे (अ) बाह (अ) निर्वाह (ता)
 २० सीर (अ) :

अनघे' अंग

अछा अनुमवी गुरु भला, आइबर गुरु माहे' ।
 हीरा टांक के मूस' कु, मणका फटिक न पाये ॥१॥
 रघ्यकर' बड़ा रसायनी सत्ता' बड़ो राजन ।
 मैरासी साधन बड़ा अछा अनुभे बड़ा ज्ञान ॥२॥
 भातमज्जानी गुरु भला समस्त उजारपत पार ।
 ज्ञान बिना अ' गुरु अछा सत' थापत' ससार ॥३॥
 बड़ क्वासी का क्वास है अछा डर' नहीं कीन ।
 नीत्य नीत्य' रगडंग नवनवा, ऐसा कबी प्रवीन ॥४॥
 जेसा साईया आप है ऐसा कम्पा न थाम' ।
 अछा उत्तकी' वानगी रच रसना पर आय' ॥५॥
 पुरन' में टिकते' नहीं अछा बुध्य के पाठ ।
 गीर परे बाहोरु' बड़े तागा मनकु आत' ॥६॥



१ गुरु (फा) गुरु को (गु) २ माहे (फा), माहि (सा) ३ मूस
 (फा गु) मोस (सा) ४ फणीक (फा गु) स्फटिक (सा) ५ पाय (गु)
 ६ रघ्यकर (गु) गिटिकर (सा) ७ सत्ता (फा) ८ मीरा (गु) ९
 ना (ना) १० मय (गु मा) ११ माये (सा) १२ थोर (गु) और
 (सा) १३ निठनिठ (सा) १४ जाये (फा) १५ उत्तकी (सा गु)
 १६ जाये (फा) १७ पुरन (फा गु) १८ टीकते (फा गु) टिके (मा)
 १९ बाहोर (गु) बाहोरु (सा) २० बाहो (फा) ।

अदबद अग

अदबद मेरा साई है, साहा' निरतर' सात' ।
 नोहाना' माहोटा' ताहे में अखा जात गरकाट ॥१॥
 अदबद आसे' नहीं हुमा, त्यों नु' एस अवतार ।
 अखा अवाध के मख कु तीर नहीं वार वार ॥२॥
 अदबद सुं एकता भई तब आप न देखत' ओर ।
 त्यों नु' ध" प्याता अखा ज्यो सु मनका ओर ॥३॥
 अदबद ज्यु का त्योंई है, अखा गुह गम्मे" देख्य ।
 सब अवतार सीस्य वपु," दस बीबीस का" मेय ॥४॥
 अदबद आनंद बलत है धाध अंत बिन' नाट ।
 ता आग को कहे अखा ज्वाहां खोजी खोज" न बाट ॥५॥
 सप्तदीप समेत घर," अदबद में कच" रज ।
 अखा मन की गमता मध्ये पूरन' नहीं समझ ॥६॥
 पूरण में आसे" मित्या' सस नयो तदस्म ।
 अखा ' काम इतनाई" है समझी गया स्वस्व" ॥७॥
 अदबद उससा" आपमें, सेहूत्र समाप्प्या" आप ।
 अखा पूरण" की ओर ते, रथ न व्याप्या व्याप ॥८॥

१ सहा (सा यु) २ निरतर (का यु) ३ सात (सा) ४ नाना (सा)
 ५ मोटा (मा) ६ आपन (सा) ७ तो न्यु (यु) तब लगी (सा) ८ वप
 (सा का) ९ देखे (सा) १० ध्ये (यु) ध्येय (सा) ११ बने (सा यु)
 १२ बीनु (का) १३ अहा (सा) १४ बीन (का यु) १५ पीन (का)
 १६ घर (यु) १७ करण (यु) १८ पूरण (का यु) १९ आराध (मा)
 जाने (यु) २० मोत्या (का यु) २१ जापा (यु) २२ ईतना (का यु) २
 तना ज (मा) २३ स्वैक्य (मा) २४ समप्प्या (मा) २५ नवर नवा (यु)
 नवा यवा (सा) २६ पुन (का) ।

अदब की महता अखा सबकुछ जाने बीतास ।
 ज्यु केसरी सीध की गोंद में खेत केसरी बास ॥ ९ ॥
 अजब अदब की सांगन्या जात दसूदिस' गेब ।
 कोटि ब्रह्मांड रोम कूप में' अखा दस्त नहीं' एब ॥ १० ॥
 अदब समझपा सब' अखा जब रहे नहीं पावनहार' ।
 अदब ताहीं' दूजा नहीं' ज्युं का त्यु स्वे सार ॥ ११ ॥
 अदब की बगावत रसना कही न जाय ।
 सुरत अखा तामे समे, तो रसना केमे गाय ॥ १२ ॥
 अनत कोट' ब्रह्मांड है अरब खरब बहु सेप ।
 अदब ओरे' देखते अखा न राई रेप ॥ १३ ॥
 अदब में उलझा' अखा सुध्य' बुध्य' न रही मोय' ।
 अदब रस भग में पया छूट' ताकी बोय' ॥ १४ ॥
 बेहेन' अरत' जयग' के अखा ए अदब में की भांत्य' ।
 अखा सब समेत स्वे, ज्युंका त्यु एकात्य' ॥ १५ ॥
 छटदर्शन छटपट करे, तरफ वाद' तकरीर ।
 अदब ओरे' देखते' ज्युं सावा सबत कुटीर ॥ १६ ॥



१ सांगन्या (गु) सखा (सा) २ जात दसू दिस—जाय बधा बधा (सा),
 ३ लमकुपहें में (सा) ४ की (सा) ५ मे (गु) ६ समझनहार (सा) ७
 तप (गु) ८ बयुंकारी (सा) ९ कोटि (सा) १० ओरे (सा) ११ उसस्या
 (सा) उसन्या (गु) १२ सुच (सा) १३ बुध (सा) १४ मोय (सा)
 मोय (गु) १५ छूट (सा सा गु) १६ बाज (गु) १७ बन (सा) बह्य
 (गु) १८ करीब (गु) करिब (सा) १९ भग (सा) भम (गु) २० भात
 (सा) २१ एकांत (सा गु) २२ तक्रार (सा) २३ अदब ओरे—अदब
 की ओरे (सा) २४ अखा (सा) ।

पूरव जनम' अग

साईयां जाहे स' करे, सेहेअ सन्ति' करण भास्य' ।
 अमृत हसाहल ओपवी, अखा उपजे बहु जास्य' ॥१॥
 ल्यु साहब की मोज मे उपज बाहोबिधि तन ।
 फ्यु वन में ओपखो अखा ल्यु बस्ती म जन ॥२॥
 सब कोई पूरव' जनम का राखत है टेहेराव ।
 सेहेअ अखाकु वन गई, सदा की निरतर' साथ ॥३॥
 जव उपज्या तब पेहेल का, ता भागे कसु नाह' ।
 सो पूरव जनम संस्कार की अखा कोन बसाय ॥४॥
 मुक्तकुं सेया भाये गया पूरव जनम संस्कार ।
 सब के पूरव राम है मसा सो दम्भा' सार ॥५॥
 सब कोई अटवया अवुण्कृ कहे अदृष्ट होय सो होय ।
 अदृष्ट अखा परमारममा ताकु भीन्हे' बीरसा' कोय ॥६॥
 अदृष्ट अखा चैतन मवा दृष्ट' पदारम' भूत' ।
 अदृष्ट अर्चव सोलात है सो देपोपत अदभूत' ॥७॥
 सगुण पिड सेहेअ हुआ तब तस्यम मध्यम ओपगाथ' ।
 अखा काहा संस्कार बा जव वन भुक्ता' रमुनाथ ॥८॥
 सगुण पदारम ऊपरे' अमल' करत है कास ।

१ पूरव जनम (का) पूर्वजन्म (सा) २ सवरी (का) ३ भांग (सा)
 ४ जात (सा) भांग (सु) ५ बाहोबीबी (सु) अद्विधि (ना) ६ पूरव
 (का) ७ बीरतर (का सु) ८ नाहि (ना सु) नाही (का) ९ ईदा (का)
 १० बीगू मीर—मोहीने (का) बीगू (ना) ११ अ (सा) १२ बीर
 (सा) १३ पदारम (का) १४ मन (का) १५ अदभुत (का, १६ ताध्य
 (का) १७ अटवया (ना) १८ उपजे (का) १९ अकर्म (का) ।

ज्यु नांहीना माहोटा रुखडु, अखा^१ डासावत वयास ॥९॥
 मरपम सूख^२ है अटपटी, देखभा सोच विण्णार^३ ।
 सब जीवत^४ अपने वसु, अखा सो छटपा^५ हारष ॥१०॥
 सेहेज में हांसस^६ हुभा, कस दीनी करतार^७ ।
 गरभ कला पाई अखा, माके आहारे आहार ॥११॥

१ x (का गु) २ सुख (का) ३ विण्णार (गा) बाभ्यार (का)
 ४ जीवता (गा) ५ छटपा (का गु) ६ हांवास (का) ७ करतार (गा गु)
 ८ आहारो (का) ।

प्रत्यक्ष' अंग

का कहे राम हा गया को कहे खब' मेया अवतार ।
 परतस राम गावे मखा ता पर मैं बसिहार ॥१॥
 जे नहीं खावत' बीमका इत' उठ कछा न जाय ।
 बसुं ठाही' की मोख है, वरिया समर सदाय ॥२॥
 प्रसन्न पिउ बिससी' रछा सकस भाउ महाराज ।
 हुं तुं कर आपे रमे मखा बनाव सो भाज ॥३॥
 परबहु पूछे रछा गुहगुह जान बिचार ।
 मखा भावांतर है ज ॥ अगुसे आप पुरादय ॥४॥
 सुरतम रहे समरा मरी तब मबबद आपाप ।
 बजस्यस सु सागी मखा तब न माप आपाप ॥५॥
 आपव सुगम सुमुपति गुरीयाते ठवंत ।
 धी जप ज कहीं की मखा जाहीं बिगुण' की बज ॥६॥
 परा पारय कसु पेच है क्याहां ले आपव सेहेरय ॥
 उमट किरी' देख' मखा एही पनम की पेदय ॥७॥
 सुरत्य मेसावत' साईसु निरत' मया मिरधार ।
 पम अंग मेसाका जे मखा सा मुमन का व्यापार ॥८॥
 अंग मेसाका अंग मग मिंग मेसाका बाय ।
 अंग सिगत' म्यारा मखा तहां ता दाउ न हाय ॥९॥

१ प्रसन्न (प) २ खब (पा) ३ आपव (मा पु) ४ रित (का)
 ५ बाही (पु) ताही (सा) ६ पीउ बीमपी (का) ७ तब आपाप तप
 बिप्या आपाप (मा) ८ मु (ता) ९ बीगुण (पा पु) १० ठेर (मा पु)
 ११ कीरी (का) १२ बावे (सा) १३ सुरत मेसाका (मा) १४ नीरन
 (पा पु) मुरत (मा) १५ माय (पा) ।

अंगसिंग का पावना, त्रीगुण भीतर का खेल ।
 अन्धा गुणातीतकु^१ समझत^२ सेहेज उकेस ॥१०॥
 एक कुपका^३ नीर ज्यु, सकस पेठ^४ पोपात ।
 नीरसु नीर मिल^५ जात है, इम^६ सबे^७ गेब जात ॥११॥
 नीर परपोटा^८ नीर में, सुरत्य दहदिश^९ जाय ।
 अन्धा सुरत्य^{१०} उलटीं फिरी, सब पूरन पद पाय ॥१२॥
 ईत खेल कुसाभ्य है, आत्मम अनुमे^{११} सेहेस ।
 अन्धा आपकु पायतें, को दुसरा नहीं गेल ॥१३॥
 पीठ पुरनख^{१२} देखिके मो मन गयो हेराय ।
 स्वप्न भोग मिथ्या भया अन्धा जे बड़ी वसाय ॥१४॥



१ अजलगीका (कु) २ में (सा) ३ समझ ही (सा) ४ कुप(का)
 ५ पेठ (फा) ६ मिथ्या (सा) ७ रेहे (सा) ८ सकस (सा) ९ पपोटा
 (सा) १० अह (धु) बगों (सा) बहुवीरा (फा) ११ अनुभव (सा)
 १२ पूरनवा (फा) ।

कुमति' अंग

कुमति' पारय पावे नहीं सके न सम्ब सँमाल ।
 भीतर साव अहकार का, अला सो उठठ' ज्वाल ॥१॥
 कुमति आवत देखके सत जन मन भंग पाय ।
 अछा' देख्या सर्पकु ज्युं वीपक मुरझाय ॥२॥
 कुमति' न होवे अपना जो भिसदिन' करे सससय ।
 तन नये मन मा नये अंतर नहीं हरिरंम' ॥३॥
 परतल' पीठ पाइये अछा जो सवगुन' भेद बताय ।
 जेसी" कहे एसो" यहै तो सब' ब'ना जाय" ॥४॥
 नां छाहे कोई" सदगुनमिल" मिले 'तो नहीं विश्वास" ।
 जा" पयर कूबु" मित्या" ताहे न सायत वास" ॥५॥
 मापा छोड़ सुने नहीं तो क्युं" नेठ" पाट ।
 अछा अंतर भेदे नहीं हीया पयरक पाट" ॥६॥
 केहेनहार में सक नहीं सुमनहार में एब ।
 अछा ऊपर" भुम्य में बीज जाठ" कुं" येब ॥७॥

१ कुबुडि (छा) कुमति (का) २ कुबुडि (वा) कुमती (बु)
 नीकसे (वा) ४ ज्वाल (का) जाल (बु) जाल (सा) ५ ज्युं (छा)
 कुमती (वा) ७ आपना (वा गु) ८ नीनहीन (का बु) ९ इरीलन (का)
 अछा कुबुडि ए बज (मा) १ प्रत्यक्ष (छा) प्रत्यक्ष (गु) ११ के भेदु (वा)
 १२ जैमि (का) जैम' (मा) १३ एना (मा) १४ भव (वा) १५ नाई (सा)
 १६ ताहि को (गु) ताहि को (सा) १७-१८ मीले मीले (का बु) १९ बीरवान
 (का) जय (गु) १ कुर्म (वा) २२ भीस्या (का) २३ ताहे हाँनम
 नहीं बसा ! कठ मापा का पात (मा बु) २४ जैमि (सा) २५ बीठे (सा)
 २६ हीया पाट—हीया पयर का पाट (बु) बीया पयर का पाट (मा)
 २७ ऊपर (का बु) २८ नीज (मा) २९ ज्युं/सा), गज (गु) ।

संत सख्य अजमान^१ है, ग्रहनहार का माल ।
 ज्यु^२ तनको^३ अग्नी बड़े, बाउसो^४ बुझ^५ जाय बड़ी हलाल ॥८॥
 निरमल^६ चित^७ बिन मा ठरे अखा गुरु का ज्ञान ।
 ज्यु^८ अंतर रोगी सावको,^९ बिष^{१०} साकर पय पान ॥९॥
 ज्यु काष मंदिर में कुरो,^{११} भूष^{१२} मुया^{१३} सिरफोर ।
 मिम्य मिम्य^{१४} देखा स्थान सब प्रतिप्याव^{१५} बिना बिचार^{१६} ॥१०॥
 सो ही मंदिर में मर बस्या ठोर ठोर देखा आप ।
 अखा निरमल^{१७} जे मर ताकु आर्यम ब्याप ॥११॥



१ अजमान (का) आजमाना (पा) २ ज्यु (मु) ३ तनको (सा)
 गु) ४ अग्नि (सा), ५ बाउसु (सा) बाउसे (मु), ६ बुझ (सा)
 ७ निरमल (का गु) ८ बीष (का गु) ९ तापकुं (सा) १० बीष (का)
 ११ कुरो (का) १२ भसी (सा) १३ भयो (सा) १४ मीम्य मीन्य
 (का) १५ प्रतिपिब (सा गु) 'प्रतिपिब (का) १६ बीचार (का गु)
 १७ निरमल (का गु) निरमल (सा) ।

ससे अग

बीबका संसा ना मिटे जो होए छट दरसन का ज्ञान ।
 मिथ्या आरोपण कर अखा त्पु सत्य का होवे ज्ञान ॥१॥
 कथस्य ससा सरय हुवा होते हुमा केसाओ ।
 ग्युं फिरते फेर बड़ अखा प्रयवी नटी के पासो ॥२॥
 सेहेन खेस सना चमे निराधार निरधार ॥३॥
 अखा बाप खड़ा बिया कर्म बापे किरदार ॥४॥
 सब आरोपण मनका सो मन मिथ्या प्राय ।
 ताकी कल्पना सब अखा एसी बली अजाय ॥५॥
 वारक प्रेरक का नहीं, ए सब मन की पीर ।
 मन सुने मन कहे अखा, पोषण ताका खोर ॥६॥
 सा संसा केते मिटे एसी बली बनाय ।
 बाप अमानक उससे अखा तब भागे बाद ॥७॥
 पूत पिता के नाम का मोली सुयापु संम ।
 त्पु अखा जानी नरा अपना है पद परम ॥८॥

१ संसय (सा) संसय (पु) २ बीबकुं (सा) ३ मोटे (का पु) ४ मो
 (का) ५ मीप्या (का पु) ६ होई (सा) ७ जान (पु) जान (सा)
 ८ खोरते (का पु) ९ न टके (सा) न टिके (पु) १० नीराधार (का पु)
 ११ नीरधार (का पु) १२ जाडा (सा) १३ करे (सा) १४ खोरदार
 (का) १५ × (सा) १६ मनते (सा) १७ ताका (सा) १८ बीना (सा)
 १९ ससाय (सा) २० पोषण... खोर मही को बर्ता और (सा) २१ तो
 (सा) २२ मो (सा) २३ बड़ (सा) २४ हमसे (पु) २५ तब ... बाद—
 २६ मो बाप (सा) २७ पुन (का पु) २८ पीता (का पु) (सा)
 २९ मोली (पु) अगा (सा) ३० ग्युं जाने (सा) ३१ मय (सा)
 ३२ करना परम—सदेन बापे पर्य (सा) ।

पिता पूत सो दो नहीं, पूत पिता का तन ।
 एक तन का दो तन भया 'सेसे' हरी हरगन' ॥८॥
 परब्रह्म अरूप है' हरिजन है 'स्वरूप' ।
 'सु' अथा 'यु' एक है 'कहु' दृष्टांत अनूप' ॥९॥
 'बहु' को सत्य' अथा, 'सोहो' यु' करे चेतन ।
 'ब्रह्मा' छाँड़िय' 'संग संग' फिरे 'एसे' रूप में अरूप के 'वेहेन' ॥१०॥
 'साहो' में 'चैतन' नांही' 'या, भया सत्या' का भेद ।
 'सुरत' सतवर' 'साँईसु, आपा भया उछद' ॥११॥



१ सेरे (गु) २ हरीजन (का गु) हरि हरिजन (सा) ३ और
 (सा) ४ आनी (सा) ५ मरूप (सा) ६ ते (सा) ७ एक है
 (पा) एकह (गु) ८ अनूप (का गु) ९ ब्रुपक (पा) १ मत्ता
 (सा) ११ कु (सा) १२ छाँड़ि (सा) १३ कोरे (का गु) १४ × (सा)
 १५ चोग्द (सा) १६ माहीया का (पा) १७ सत्ता (सा) १८ स्वतंत्र
 (सा) १९ उछद (सा) ।

ससे परिहार

जीवता मर कभीपी कहे, परभोक की बात बनाय ।
 पय मुपां^१ कोई न कहे अखा मुख-मुख पंडित राय ॥१॥
 ज्योय अष्टांगी ना कहे, ना कहे अरु अनीन^२ ।
 सीप्य^३ साधक ना कहे अखा नरक और स्वर्ग मोहन^४ ॥२॥
 स्वर्गवासी को देव भी न कहे अघनी आय ।
 चतुर गुनी कभी पंडिता, सब अबोला जाब^५ ॥३॥
 सूख समझ जब चातुरी, त्यों सु^६ नरकुं होय ।
 प्राण यया मरवात सब, अला ज्युं का त्पुं सोय ॥४॥
 प्राणपत्नी सवि है सदा सब चेतनता ताहे ।
 त्याका^७ प्रया मन अखा कल्प कल्प सब गाये ॥५॥
 मन तरंग सेहेज समुद्र^८ की अपस नील का धर्म ।
 मन बिल का कल्पा^९ अखा आवागमन^{१०} का कर्म ॥६॥
 जीवत मरतक सा^{११} सेहेज है अखा तत्त्व का भेद ।
 बहू खाण उपज मरे कबहुं मोहे उद्येद ॥७॥
 ताम मन पुण्य पाप का तल कल्पी^{१२} सिर भार ।
 भाप^{१३} जीव सब जीव है^{१४} एहि^{१५} अखा संसार ॥८॥

१ मुपा (ना) २ अनन्य (पा) ३ विद (सा) ४ बुधन (सा)
 ५ पाई (सा) ६ तब मयो (सा), तोनु (पु) ७ ताया (सा) ताकी
 (पु) ८ प्रवी (ना) प्रेयो (पु) ९ तिबुवा (सा) १० कल्पा (सा
 पु) ११ आवागमन (सा पु) १२ मृग सा (ना)—अत्रक सो (पु)
 १३ कल्प (सा), १४ भाप (सा) १५ नहे (सा पु), १६ एही (सा पु) ।

जो ह्यो' पूव ना जूवे मनुआ आपे चेत ।
 निद्रामण' उग्या अबा खली म' जाण' खेत ॥ ९ ॥
 सब कोई करमत' नीव में पड़ित कवी जन जाण ।
 करम करता' फल सत्य कहे एहि आपकी हाँस ॥ १० ॥



शब्द परीक्षा' अग

साधो परचा शब्द का सोईयां हाये हजूर ।
 शब्द सोहागा वस्तुका' अखा गेहेन करे दूर ॥ १ ॥
 स्वांत बुद सतगुरु दाम्द जिम्नसु जन सीप ।
 ताहीं आपा जस सुत नीपज अखा शब्द कु जीप' ॥ २ ॥
 कोई जांनी' आमत जान ए जीनु मल लिया ठेकार ।
 शब्द एक में नीपजो' बयु' पची मरे संसार ॥ ३ ॥
 अहं' शब्द जीनु परबीया, सीनु पाया है आप ।
 पट छटपट करते रेहे भेदु' पाया अमाप ॥ ४ ॥
 जिनु पाया जे' पावही' अव पावत है जेह ।
 नुकसा एक है' शब्द का अखा होय बिदेह ॥ ५ ॥
 असप मति केहे' दूर' है इया' ता सोई हजूर ।
 भाट दूर हुमा वाई' का सा' पाया महबुर' ॥ ६ ॥
 इस दीदे' दीवार कइय जा तु बदे तुज मार' ।
 तमब विहोना तु रहा है हजूर किरतार ॥ ७ ॥
 प्रगट पदारथ साई है' जिसका यम विसाम ।
 अखा मदोदीत साई है दरस्या घाम नीराल ॥ ८ ॥
 जिसकी म उछाई' हूँ ज सामा मुम भय ।
 सब मटकन के मटक अखा आपु आप मरेस ॥ ९ ॥

१ शब्द परिचय (ना) २ बसु (सा) ३ जीव (मु) (४) मार्ग
 (ना) ५ अखा (ना) ६ कउ (जा) ७ आम् (ना) ८ रहें (ना मु)
 ९ असा (ना) १० X (ना) ११ पावेहिम (ना) १२ एक है—है एम
 (मु) १३ बदे (ना) १४ दुई (मु) १५ जही (ना) १६ दुईबा (सा.मु)
 १७ अना (ना) १८ ममूर (ना) १९ इन दीदे—दुई मानी (सा) २० व्या
 (सा.), बार (मु), २१ इस दीदे दीवार कर (सा), २२ ओछाई (मु) ।

साईयां खेनारी^१ सेस का कोई भेद सेंती खेस ।
 मीर सबे सेतरफ में भेद^२ सदा हे वेस ॥१०॥
 बाधी बोहुठ^३ बनाई है, आप खेसनहार ।
 काई^४ भेदु भेद अखा मीर देखे संसार ॥११॥
 संसे का^५ संसार है नीरससे^६ का पीठ ।
 अंतर नहीं इसमें अखा नाम मात्र है जीव ॥१२॥
 कस जाने किरतार की सो कबहु उससे^७ नाहि ।
 साईयां ने समरस अखा आपा छोके माहि ॥१३॥
 ब्याली होकर देख से, सब स्यासन^८ के ब्याल ।
 अखा के जाग खलन, सोई ह्याम^९ बेहाम ॥१४॥
 अपने सीर ने खेसीया तिन बांधाया आप ।
 तीन भोवन नीरखी अखा वोह सोच मीटन नहीं ताप^{१०} ॥१५॥
 अखा अनरायस छावके न करो और की आस ।
 मीर मेहर^{११} और पावसा^{१२} सब उनही के^{१३} वास ॥१६॥



१-१ खेनारी (सा), सेस (यु) २ अखा (सा), ३ बोहुठ (यु), बहोठ (सा) ४ पक्ष (सा) ५ संसारी की (सा) ६ नि-संसार की (सा)
 ७ उसमें (सा यु), ८ आत्मी (सा यु) ९ आसिक (सा) १० सोई
 हीम-सो हुमे (सा) ११ तीन पाव-तिन मुबन नरपति अखा । वोहे
 सोच का ताप ? (सा) १२ महर (सा) १३ पावसाह (सा), पावसा (यु)
 १४ उनही के-उन्के हे (यु) उनही के (सा) ।

परीक्षा अग

कोई भेद भेदे अछा मोहै मर्म बुझावै' उर' ।
 आकास, ब्रह्मावै करीस' से सो आभन' है किस ठोर' ॥१॥
 इतना' जाने' सोई सा तीनकु है आवेस ।
 मरन जीवन न्यारा अछा तीनके है सब भेष ॥२॥
 सब भेषु खेसार ए' सब उनहिके नाम ।
 बुझे मै पाइये अछा नहीं पकड़े का काम ॥३॥
 पाये का परमाण ये' आपा खोवे माहै ।
 खोमे ते प्रभटे अछा आपे आप सहराहै ॥४॥
 चीन्हा' चाहै जीवकु' तो इस बीघ्य' आपे हाथ ।
 पच जड ओमे' राखा करत अछा मुख बात ॥५॥
 जड़ भीतर जड़वत है, बेतन होय भसाये ।
 स्थूल सूक्ष्म साक्षी' अछा दूर रखा से हेराब' ॥६॥
 जबका है खसार ए सबका है ए खेल ।
 नाबे घटे बडे अछा नर छाया की भेस्य' ॥७॥

१ बराबे (गा) २ और (सा) ३ करतने (सा) ४ आभन (गु)
 ५. दूर (ना), ६. एतना (सा) ७. बुझे (सा) = सोही (सा) ८. खेसार
 ९-खेसा रहे (सा) १०. ज (सा) ११. चीन्हा (गु) १२. बीज (गु)
 १३. बीज (गु) १४. बीजे (सा) १५. नाबी (गु) १६. से हेराब-सहराब
 (गु), १७. बेत (गु) ।

वित्रेक वेत्ता-अग

कारज कारण दोउ नहि कहा न सागे भाउ ।
 ता पद का जे मर अखा सो बेकीमत्य बे भाउ^१ ॥१॥
 गगन अगोचर गम नही नही मन बुध्य सीत अहकार ।
 काई भेदु^२ बुझे अखा ज्याहां कृत्य नहीं किरतार ॥२॥
 जे पद दूर निकट सही महीं नीचा नही ऊँच ।
 हलका भारी नही अखा आद्य नहीं उर^३ बीच ॥३॥
 स्नुस सुक्षम केसा^४ नहीं गरम सीत मी नाय^५ ।
 बचल धीर^६ नहीं अखा कठन मरम न काय^७ ॥४॥
 कल्पे जल्पे बछु महीं^८ ईखा नही अखा भाभा^९ ।
 में नहीं ते नहीं बे नहीं रूप अरूप समाजा^{१०} ॥५॥
 रक्त पीठ केसा नहीं नीम नहीं स्वेत^{११} स्थाम ।
 गम भ्रत^{१२} मान नहीं अखा, कामना नहीं नीहकाम^{१३} ॥६॥
 मान ध्यान पूजा अखा सेवा नहीं कोई स्निग^{१४} ।
 एक अनेक सख्या नहीं बीम उठा सुखग^{१५} ॥७॥
 बीन मेनुका देखना बीन भवनु की घुम ।
 बीन रसना का बोलना एकु नहीं अखा चेहन ॥८॥
 जाहां^{१६} बानी का उपराम है^{१७} नीगम हारे बरी भाउ ।
 अकथ कहानी जानि के अखा गेथ गरकाउ ॥९॥

१ बेबाउ (का) तबे बाहु (घु) २ भेद (घु), ३ ओर (घु) ४ जेसा (घु) ५ नाहे (का घु) ६ स्वीर (पा) ७ काहे (घु) ।
 = बल्पे नहीं—आप नहीं इच्छा नहीं (सा) ९ भाष (सा) भाउ (घु),
 १० समाज (सा) समाउ (घु) ११ शुभ्र (सा) १२ भ्रत (सा), १३ अकाम (सा) नीकाम (ग) १४ मिग (सा) १५ सुखग (घु) १६ जहां (का)
 १७ हो (का) ।

ता' पर की उछाई कुं परसे कोई पुमान ।
 खटवरसन वेसा अखा न करे कोई समान ॥१०॥
 हुमा न होना अब है बेहेन नहीं ताही सेप ।
 अछता सासठा' अखा एसा पुरुष असप ॥११॥
 गगन झरखे' बैठके अघत' तरफल बाप ।
 गेब' में बोसे अखा संगी जस न बुसाय ॥१२॥
 आठु पेहेर' एसा रहे कबहुँ नोहे गसाय ॥
 जागृति' में समुपती' अखा ध्याऊँ' एक समाय ॥१३॥
 जुग सारा' हांसी मया विले' हुमा सब द्वंद ।
 मुल मिटया' सनेह का' तब अखा आनद ॥१४॥
 नीज पर पाया गेब का बीत बीतन समुख ।
 ध्याता या सोखे हुमा' एक अखा दो कल ॥१५॥
 तब वृष्टांत है जन को' जैसा दीप रतन ।
 पाला' का बस नहीं' अखा बाहे नहीं जतन ॥१६॥
 कल्पतरु स्वभाव ज्यों जे बाहें सो' देख ।
 मान नहीं कोई' बात का एसा पुरुष बीदेह ॥१७॥
 मापा पर नहीं ता बीये नहीं मान उपमान ।
 नीज पद बेठा रहे अखा आमा सबे समान ॥ १८॥

★

१ ईस (सा) २ मान (य) ३ सा सठा (सा) ४ अनेख (सा) ५
 परसे (पु) ६ अचिन (सा) ७ बेबीनुं (सा) ८ असन (मा) ९ पड़ोर
 (सा) पाहोर (पु) १० असाम (पु) ग्लान (सा) ११ जापत् ये (सा)
 जापत् (पु) १२ मुपुपति (ग सा) १३ बाऊं (सा पु) १४ समान (सा)
 पु) १५ जय (सा) १६ बिसय (सा) बीले (पु) १७ मिटी (सा)
 मीस्या (पु) १८ बी (सा) १९ ध्याता - हुमा-ध्ये ध्याता समुख हुमा
 (सा) २० अय (पु) २१ हु (पु) २२ सासा (१४६) उबामा (मा)
 २३ जस नहीं-जबन ही (मा) २४ तिस (सा) २५ तिस (सा) ।

निष्ट' ज्ञान अंग

ज्ञान कय चीत ना घटे तो तत्त्व भोग न साए ।
 चापक' गगा तीर का श्रीपा' कवहूँ' न बुझाए ॥१॥
 ज्ञान कय चीत ना घटे तो तत्त्व न लागे भोग ।
 मरकट गुजा ताप ज्युं सीत न मेटे' बड़ रोग ॥२॥
 ज्ञान कये चीत ना घटे तो तत्त्व न लागे भोग ।
 ज्यु छाया नेत्रे' फिरी गई सो नही देखण जोग ॥३॥
 ज्ञान कये चीत ना घटे तो हुआ सो ऐसा नाय' ।
 धातुक्षय भोजन अखा भस्त्रे सो अंग न साय ॥४॥*
 भक्ति भरोसे' भ्रमकूँ' उपासत सबहु लोक" ।
 चतन कूँ आन नहीं ब्रत मीटि नहीं सोक" ॥५॥
 चैतन कूँ आनत नहीं पातुका पूजत" वस्त्र ।
 हरि तो कह्ये रेहे गया' सेवत" कागद पत्र ॥६॥
 साचा सबगुरु ना मित्या, हुआ न आप प्रकाश ।
 ज्युं और काई मुक्ते बूझ कूँ गो भूपाव" पास ॥ ७॥
 हरि भक्ति आई नहीं आया बिप' और भ्रम" ।
 हीरा गमाया" आपमा रह्या संगडे धम" ॥८॥

१ नेष्ट ज्ञानी (सा) २ ज्यु चापक (सा) ३ लुपा (सा) ४ कहीं (सा) ५ मीट (मु) ६ नेत्रुं (सा) ७ फिर (मु) फिर (सा) ८ ग्याव (सा मु) ९ भस्त्रे (सा) १० मरम (सा) ब्रह्म (मु) ११ उपासत...
 सोक—सदा उपासे सोक (सा) १२ चैतनकूँ... सोक—चैतन की खंडना करे,
 दिन दिन बड़ ज्युं सोक (सा) १३ पूजे (सा) १४ हरि ..गया—हरि
 हीरा कही रह गया (सा) हरि तो कह रहे गया (मु) १५ सेवे (मा) १६
 और (सा) १७ गो भूपावे—गोभू पावे (सा) १८ बिपय (मा), १९ भ्रम
 (मा मु) २० गमाया (सा) २१ सम (मु) ।

* सामर महाराज के अनुसार यही से मरममीत अंग का आरंभ होता है ।

बहोत सबाधी बातके सो' साई सबाधी नाहे ।
 सती सबाधी कष की सो तन बारत दस माहे ॥ ९ ॥
 जो चाहे अखा पीठ को तो तम मन वारी बाह्य ।
 ज्युं कबली' कटे तन आपना सो फल से नीकसत बाहार्या' ॥ १० ॥
 साई कु सब सारीखा अपना पर नही कोय ।
 ज्युं धर धर अली हे अखा' पण' किया सो दीपक होय ॥ ११ ॥
 बीना' ईसक' पीठ वा मित्य हे सिर साटे का खेस ।
 भोग का रसिया हेम' सने' तिनकु' साईयां सेहेम' ॥ १२ ॥
 भक्त मिते ज्ञानी मित पण भासक बीरसा काय ।
 ज्युं रण म छाड़' सूरमा जा टक टक तन होय ॥ १३ ॥
 जा नू चाहे पीठ को तो साक बेद डर छोड़ ।
 तन मन मत अटके अखा साईयां सति ओड ॥ १४ ॥
 ज्ञान भक्ति वैराग्य इत्य' सब हे जाको अग ।
 सो पद तन पाईय अखा जब सदगुरु मित्य सुखंग ॥ १५ ॥
 सदगुरु बिन बिश्वास बिन पची मरे सब लोक ।
 सीप्य सपट भर जामीना साठे न भीटे साक' ॥ १६ ॥
 सदगुरु साथा स। अखा जाकु साईयां सति मीसाप' ।
 सोही मिसाब' सिप्य कु जा' पाया होये आप ॥ १७ ॥
 बिज्जानु साप्य अरु' सवगुरु अव मित्या ए' प्रसंग ।
 ज्युं सीप क' दीपक मीपज' जब परसे अखा अग ॥ १८ ॥
 परस्या सब पारस' हूभा भ नही वा आत्य' ।
 सर सरिता वा नीर ज्यु भ्राग किया' न होत्य ॥ १९ ॥

१ x (सा) २ कबली (सा) ३ बाहर (गा) बाहार (गु) ४ ज्यु—
 जन्मा—धर धर बलि जय जन्मा' (गा) ५ x (सा) ६ ईसक (सा)
 ७ हरि (सा) ८ ए (सा) ९ द्विष (मा) १० मने' (सा) ११ नू (सा),
 १२ मोहन (सा गु) १३ छाड़े (गा) १४ दन (सा) कन (गु) १५
 साठे साक—जन्मा' डरे नही लोक (गा) १६ मेमाय (गा) १७ मेमाने
 (सा) १८ जे (सा गु) १९ x (सा) २० बिसोबा (सा)
 २१ बीप के—बीनू (सा) बीरके (गु) २२ परपन (सा) २३ बोले (मा)
 २४ ज्योउ (गु) जोउ (सा) २५ अखा (सा) ।

आप हुआ अन्ना पवन मही नीर तेज ।
 अन्नाकाय नहीं परठना ओर जाया सो ए हेज ॥२०॥
 ए सो खन एसा अन्ना कोई वीरसा पाव' भेद ।
 तिरगुन सरगुन' बोल रहे गए की' हुआ सो' उमेद ॥२१॥
 हारज्य कारण ते' अन्ना है सो' न्यारा" खन ।
 प्रापे पब नीधान" है सो पसे बसावे" खेस" ॥२२॥
 होय" गया ना हायगा जे है सो अब आप ।
 व्यासक बीन ब्याली नहीं खसक ब्याली का व्याप ॥२३॥
 प्रजा अंतर कछु ओर है याहार हुआ कछु ओर ।
 ना भीतर ना बाह्यरी" जब पाया मन ठोर ॥२४॥
 मे" जाना" हरि ओर है मे भी हउगा ओर" ।
 ए" मता कहु रहे गया जब पाया मन ठोर" ॥२५॥
 पारा मन एक बान्य" है कथा" करे खराब" ।
 अनुमे असी" जब पजे" ता नया" करे अन्ना आप ॥२६॥
 मे" पीछ पाया आप मे" सब गये हु तु दोन ।
 एही अन्ना होई रह्या अब अन्ना सा कोन' ॥२७॥
 किमत नहीं हरिजन की अयु मे कीमत फिरतार ।
 किमत मा" आप अन्ना सो सारा संसार ॥२८॥
 सन में असता देखीएँ आप अन्ना आकाश ।
 देह" सा द्रपण" भई चतनका' आमास ॥२९॥

१ आपे (सा) आपो (गु) २ ओर ए हेज—जीर जाया सो राज
) सहेब अंतरका हेज (सा) ३ जान (सा) ४ सपुन (सा गु)
 कोई (सा) ५ ओर (सा) ७ ओर (गु) ८ कार्य (सा) कारण
) ९ बिन (सा) १० छ (सा) ११ ग्याख्या (गु) १२ आनिधान
 ४०) १३ बस्यावे (२९७) १४ बेम (३४०) (२६) १५ हो (सा) १६
 रा (सा गु) १७ हम (सा) १८ जाया (सा गु) १९. मे ओर—मे कोई
 या ओर (सा) २० को (सा) २१ जब... ठार राम असा सब ठोर (सा)
 जान (गु) जानि (सा) २३ कथा (सा) २४ पराय (गु) २५ अमि
 ७), अमे (गु) २६ जब पजे—अनुमे (सा) २७ बसा (सा) २८ हु
 १), २९. आप मे—मुझ मे (सा) ३० कौन ? (सा) ३१ किमत मा—
 प्यत मे (सा) ३२ देह (सा), ३३ द्रपण (गु), ३४ चेतन्य (गु) ।

विरही' भग

हूँ हासी' अखा पीयसु तु घन मोजी कीरतार ।
 हूनी' न माने परय' अखा सो तुही करे इतवार' ॥१॥
 गुणहीनी सक्षण कुरी नहीं कंच रीसावण जोग ।
 कइसा करुय माजी पिया ते अपनी कर दिण भोग ॥२॥
 अघट घटावे पीठरू' 'घटता दे जो बेहाय' ।
 कुरय न देख्या मेरका ज्युत्यु सीहे' मिलाय' ॥३॥
 बिरहा पीठका जीव हूँ बिरहा पीठ नहीं दाय ।
 बिरहा सा साया' अखा ओर मत' जानो' कोय ॥४॥
 विरहा ज्यु मेहा अखा मेह त सब कछु होय ।
 हरीया' हरी' तो दीपीया' जो बिरहा साग्या मोय ॥५॥
 ज्युं ठांवा परसतु' पारसु' तब कंचन होई जात ।
 त्युं बिरहा परसत जनकु सा नर तब हरी' जात ॥६॥
 कम करे साईया जीसे' तिनकु पेहेसे बिरहा देह ।
 बिना बनी चाहे अखा तम' भेब जरी मेह' ॥७॥
 बिरहा ऐसा चाहिये' हाये' मे जीठ जाय ।
 अतर जनन एसी अखा तब पीठ प्रगटे आय ॥८॥

१ धी बिरह अंग (सा) २ हनीजा (सा) ३ बुनिया (सा) ४ वन (सा) ५ हा। इतवार—सो लू हि करे इतवार (सा) सो ही तुही करे अतवार (बु) ६ पीठरू—पियु ! तूँ (सा) तूँ नीया (यु) ७ ओर (सा) ८ > (सा) ९ बहाई (सा) बिहाय (यु) १० जिया (सा) सीदे (बु), ११ मिलाई (सा) १२ माईया (सा यु) १३ न (यु) १४ जाये (बु) १५ हरिया (सा यु) १६ हरि (सा) १७ देनीका (सा) १८ परसत परका (सा) १९ पारसतु (बु) २० हरि (सा यु) २१ जस (सा यु) २२ तो (सा) तब (सा यु) २३ ना पहु (सा) २४ जे (सा) २५ हाय (सा यु) ।

जागे तो जलपे^१ अखा सुवे^२ तो सुपने माहि ।
 रोंठ रोंठ^३ विरहा यसे बीन अजे जल जाहि ॥९॥
 साई न पाहे पासुरा रूप बरन कुल जात्य ।
 भाव भरोमा दळे अखा तब पीठ पकडे हाथ ॥१०॥
 जब जोरहा साग्या अखा सव तन मन त्रण^४ समान ।
 जीव साटे पीठ पाईये^५ तो भी नहीं मुज ध्यान^६ ॥११॥
 विरहा सा बड़ी वस्तु है काहा बहुत विरहा बात ।
 बीन विरहा मो नार कू कोन सभा में गात ॥१२॥
 सारू में विरहा बड़ा साईया के दरवार ।
 अखा सो जाने विरह कू के जाने कीरतार ॥१३॥
 भक्ति भक्त कू तो फसे जोग ध्यान सा आय ।
 जान^७ अखा तब^८ ऊपे जो विरहा हाये सब माय^९ ॥१४॥
 साभा हरिजन सब मुनो जो जाहो दीवार ।
 फिर फिर विरहा मांगीया केहे अखो निरधार ॥१५॥
 विरहा झूनी है खरा निस दिन मारे मुज^{१०} ।
 के मिलके नू मार से मेहेर^{११} न आवे तुज ॥१६॥
 विरहा बाज जीव तीतरा^{१२} तोरि तोरि^{१३} मुज क्षाय ।
 नातुं मिले यो सनकसे रोवत निसदिन जाय ॥१७॥
 राते देखीय नेम कु पण रोम रोम रोबे मोय ।
 गाता देखीय गान सा निसदिन मो मन रोय ॥१८॥
 विरहन सरे^{१४} एकभी राहा सीर बेठी रोय ।
 दिन आय दीवार बिन सिर पर बरवत सोय ॥१९॥

१ तमपे (सा) २ सोवे (सा) ३ रोम रोम (गु) ४ रोंठ रोंठ (सा) ५ अजे (गु) ६ अघि (सा) ७ तूज (सा) ८ पांगोये (गु) ९ नाम (ना)
 १० जान (गु) ११ जोर (सा) १२ जब (गु) १३ जान (सा) १४ तो (सा)
 १५ सब माय—मयाय (सा) १६ मोज (फा) १७ मेहेर (सा) १८ मेहेन (गु)
 १९ ठेठरा (सा) २० तीरि तीरि—छोड़ छोड़ (गु सा), २१ झूरे (सा) ।

तत्त्व भेद को अंग

स्मृत सुखम चेतन बीदे पण स्मृत सुखम को नाहि ।
 मारम' भेद चत्वे अखा सब चेतन की परछाहि ॥१॥
 मन्ने आछ बीचारिआ बन्सा बत भीचार ।
 मध्य बीचारी देखिये' मे' वहीं नहीं नीरघार ॥२॥
 दुनी' पाछे पेडा हुआ' खसक भागे छप जाड ।
 अछवासा बिच हे अखा तो काहा बात बनाड ॥३॥
 पाँचों का ए पेचहे' मूमावे स्वर होय ।
 ठिनु का' छंतु दुटसे मरण कहत हे सोय ॥४॥
 तिन भसे दो स्थिर' रहे खल बल बहो नात्य ।
 चेतन सार सारिआ' अखा बसी यू जात ॥५॥



१ भाते (सा) भांग (यु) २ बैगने (ना) ३ हूँ (ना) ४ दुनीय (यु) ५ और (ना) ६ पेचय (यु) ७ लोभवा (ना) मीनका (न)
 ८ सुटने (सा) ९ बीर (यु), १० सारना (सा) ।

विभ्रम* अग

जाकू संग जेसा मिसे तांहां तेसी नीपज होय ।
 ज्युं सीत संग नीर पत्थर भया तो तेज संग होय सोय ॥१॥
 मखा फेर बहु संग में कृपा हरी की भाय ।
 ज्यों कांस' ईख होइ नीमइया' सो क्षत्रपाल की साध्य* ॥२॥

१



१ विभ्रम (प्र भु) इस अंग के प्रारंभ की ८ साखियां गुजराती में होने के कारण छोड़ दी गई हैं । २ काष्ट (का) ३ नीमइया (ना) नीमडे (गु) ।
 * यह शर्मा ह नि प्र सं १४० में नहीं है ।

स्वे ध्यंग

जेसा तेसा सोई है मो मन ए निरधार ।
 टेका सीधा हा बजा है बापु भाप किरदार ॥१॥
 काई भई ता सोह की निरमल ता मी मोह ।
 सब रंग माटीका बजा नहीं मुखर कहीं सोह ॥२॥
 बीज पसदा तो बूझ भया बूझ फल ता हु बीज ।
 मखा पारस परस देखते राम सोहो पर मीज ॥३॥
 कैंके स्रव करता रहे पुरनता परताप ।
 माहीना मोहोरा नीरम नवा करनहार हे आप ॥४॥
 पुरनता मे बुबुदा सवा निरन्तर होम ।
 अनंत फल हे एक के अछा सो जाने कोम ॥५॥
 अनंत अवतार हे ईसका पलपल म्यारे खेल ।
 कोई नेहू जाने अछा जाका अनुभव येस ॥६॥
 जइ पैतन नाम ताहे के जाका नाम न रूप ।
 अमल असप सकती करे अछा खेलत राम अनुप ॥७॥
 कब न होता कब अवतरण कर सीसा काही जाय ।
 समुन निरगुन का फेल दे पधरे सोई बजाय ॥८॥

१ हो बजा—झीई कहो (ता) २ x (पु) ३ मसी (घा) ४ निजे
 (सा) ५ लोभी—बली लोहू (ता) ६ कही (सा पु) ७ बकपा (मा)
 ८ सब (सा) ९ लोहू—सब (सा) १० पारस परस—परसर (मा)
 ११ मीहीज (सा), १२ पुरनता मे—पूरणपदता (सा), १३ का (सा) मा
 (पु) १४ ईषका (सा) १५ बूजे (सा) १६ अनुमे (सा पु) १७ पधरे—
 ..बजाय—पधरे मो इजमाय (फा), पीपमे लो ही बजाई (सा) ।

है सीला सब साईं की फूला फलपा' राम ।
 मा' सो आवन जानका भूतन का विसराम ॥९॥
 अनत रग अम्बर विष आकसमात आघात' ।
 आप उदरये प्रगटे आप मध्ये गम जात ॥१०॥
 नहीं 'मारा सो भूत ये' जतें न नाहि होत' ।
 अमंत सक्ति है साईं की' अखा आप ओत प्रोत ॥११॥
 मोहे बनी एसी अखा अनुमे बठा ठीक ।
 रमता राम सु मिल गई सार सोह गर लीक ॥१२॥
 बड़ा अचम्बा मीतका जे साव ग्रहे सब ठौर ।
 अंतर मेनु देखते नहीं अखा तु और' ॥१३॥
 आप' हे तो आप कु पावनहारा कोन ।
 मोन करे आपे आपसु अखा घरपाका गोन ॥१४॥
 आका कीया सब होत है सोई जानत मूस मर्म ।
 अमलता आत्मम' अखा देख फेत' और बर्म ॥१५॥
 अतर में कछु ओर है बाहर' हुवा' कछु ओर ।
 शग जात' न्यारा अखा सारी मन की तार ॥१६॥
 मन केहेवे मन ही सुण बनी बनाई बात' ।
 भीतर का मेनु अखा' खसो' जाने घात ॥१७॥



१ फलपा (सा) २ नाहि (सा) ३ आ मात (सा) ४ सो .. भूत
 ये—विभूतते (पा) ५ जतें .. होत—खेते जना हाता (फा) सवे खे न होत
 (गु) ६ अमंत .. की—अमंत सक्ति शिवराय की (मा) ७ बन (सा)
 ८ अंतर.. और—वेन मेन नियम सग बाहो अखा वे और (सा) ९ आपे
 (सा) १० आमय (सा गु) ११ फैल (सा) १२ बहार (सा) बाहोर
 (गु), १३ कूत (सा) १४ बागिमास (मा) १५ मन .. बात—मन कहे
 वे मन ननों गुने बनी बनाई बात (सा) १६ गो (सा) १७ जानत (सा) ।

दीसा' अंग

दस' दीसा' जा भीतरे ता' नर में स्थित कीन ।
 अखा दीसा' की काहा बली जब भया महानीध का' मीन ॥१॥
 योय भ्यान तप सत्य प्रीया सुरत नरत सीरसाज ।
 'मारी 'मारी हे दीसा अखा सो साधन काज ॥२॥
 पण राखे पुरा अखा जीनु जे पकड़ी टेक ।
 ताकी दसा' सहरात हे पाछे सोक अनेक ॥३॥
 मन मनसा के' खेस हू खे भ्याता की साधप ।
 अखा सो नर काहा करे जाकुं नहीं अह बाध्य ॥४॥
 सूर्य के उदे अस्त ते' पड़ता' वसी विस' नाम ।
 अनीत रखा तावे अखा ताहीं पहुँची' ज्यब हीन ॥५॥
 दसा सपदसा' जीमकु' जात्युं माय्या' मन ।
 मन दिनकर माहानीध मीस्या रह गया रेहेची दन' ॥६॥
 दसा रेहेणी सीध की सबकु' ए' प्रसीत ।
 ए उर माने हे बाहर' अनुमे' सरपाठीत ॥७॥
 जेहे' सो आवे सदा ओर अखा सो कीन ।
 सीध रहेणी ताहीं दुसरा हे' माया के गुन' ॥८॥

१ दसा (सा), २ वपु (सा) ३ दसा (सा) ४ सो (सा) ५ दसा
 (सा) ६ महानीध (सा) माहानीध (यु) ७ सीरत (यु) नरत (सा)
 ८. x (सा) ९ दीसा (सा) १० का (यु) ११ खे (यु) १२ पड़त (सा)
 यु) १३ दसा दसा (सा) १४ बौहोणी (यु) बहोणी (सा) १५ उपरीसा
 (यु) १६ जोस्व' (यु) जय लयी (सा) १७ माया (सा) १८ रेहेमी दन
 रेमीदन (सा), रेमीन (यु) १९ सबनकी (सा) २० x (सा), २१ ए
 उर.. बाहरे—अखा ! बरना बदेवार है (सा) ए उरना बदेवार है (यु)
 २२ अनुभव (सा), २३ जेही (सा) २४ एहे (यु), २५ मीन (सा) मोन (यु) ।

देखे पर आवे अखा सो देख्य साहब' के रग ।
 ना सो ज्युं का ल्युं सदा' मत पकड़े तु अग ॥९॥
 ना कछु देखत ना कछु' जो हे तो' यही वस्त ।
 अखा पडकू देखते भै' हेरांनी मस्त ॥१०॥
 अल्प अलीक ओर अटपटा देखते देहे' वेहेबार ।
 अखा साम्रथ अजब हे जीनु मुत्ता कीरतार ॥११॥
 अखा अजब कोई कोह्लाहा ना कछु चर' बसवत ।
 जेसा तेसा तु पीया ! तु ईस्वर तु बत ॥१२॥
 साम्रथ देखी कर ग्रहे सो पकरावे वेह ।
 सो तो क्षण भगुर अखा सटके' करत' बिनैह ॥१३॥
 होता देखीयत बाही से' ताते कछु न होय ।
 रूप अस्पी होय रमे एक अखा के' दोम ॥१४॥
 देखन जेसा जे नहीं सो देखे सब नेन ।
 अखा उलटा' भेद है जे समझे' सो एन ॥१५॥
 आप गमाया अही' अखा बनति हे सब वात ।
 हुतु बीन हुतु' रहे ज्युं लोहो पांगर एक जात्य ॥१६॥



१ साहब (सा) २ अखा (मा गु) ३ बी (सा) ४ सा (सा पु)
 ५ भई (गु) मयी (सा) ६ देह (सा गु) ७ वेहेबार (सा) ८ सामर्थ्य
 (सा) ९ ओर (सा) आर (गु) १० सटके (सा) ११ करे (सा)
 १२ तैं (सा) १३ है (सा) १४ उलटा (सा) १५ समझे (सा) समझे
 (गु) १६ यही (सा), १७ तूज (सा) ।

समदष्टि अंग

ऊँच नीच की भक्ति^१कु एव^२ कडा मठ कोय^३ ।
 'बदन बाबल, अग्नी कुं मिलते' एकता^४ होय ॥१॥
 ऊँच वण नेह नहा नीच वर्ष नोहे वूर ।
 क्यों मर भग्ना और ठीपना^५ कोई सुबत नहीं वूर ॥२॥
 ऊँच कुं मृपच धव्या^६ दूपच बीमा नीच^७ ।
 राम न पावे सो भवा बे^८ बस्या भम^९ की कीच ॥३॥
 उत्तम मध्यम जात का कृत्य^{१०} नहीं^{११} बेहेवार ।
 भवा हरी का जब हुआ लूग साकर^{१२} मीस्या बार ॥४॥
 भवा वर्षाभम का बे कोई राखे^{१३} मान ।
 क्यों मर-नारी होमे^{१४} मट रमे ना काम सुख संतान ॥५॥
 साहो केहेते में मन बड़े^{१५} हरीजन^{१६} कहाँ^{१७} कमसाम^{१८} ।
 सो मर काहा वणसे^{१९} भवा जाको मुस सुप्या घर जाय ॥६॥
 भवा काठ के नाब बिमा^{२०} कोई न पावे पार ।
 क्यों हरीजन^{२१} सब बीमा छुटे नहीं संसार ॥७॥

१ भक्ति (सा) २ कडा (सा पु) ३ होय (सा) ४ वण (सा),
 ५ मिलते (सा) ६ एकता (सा) ७ मीकट (सा) ८ और (सा) ९ बीम
 (सा) १० डीव्या (गु) ११ पणा (गु) १२ नीच बुलना नीच (सा) १३ x
 (सा) १४ कम (सा) १५ कम (सा) १६ वण (गु) १७ ताहि (सा) ताई
 (गु) १८ सागर (गु) १९ रातन (गु) २० होय (सा पु) २१ साहो ----
 बड़े—नाम्हीं केहे तेव न बड़े (सा) नाहा केहे तेमे मन बड़े (गु) २२ और
 (सा) २३ कहाँ (सा) २४ गुमनाम (गु) २५ कमसाई (सा) २६ बिमने
 (सा), कमने (गु) २७ बिम (सा), २८ हरी (सा पु) ।

अखा सत्य^१ भाषण कीयां माता मारे पूत ।
 तू बेसासब के बालकू^२ सब कहे^३ अनाहूत ॥८॥
 छिलर बाहाबरे^४ जीबकू^५ न होय भक्ति नीबाहो^६ ।
 अखा ताही^७ न पतीजिये खु मया जुहारी साहो^८ ॥९॥
 सो नर साचा सूरमा जे मरते न ताके ठोर ।
 त्यों हरीजन एक रामबीन अखा न देखे ओर ॥१०॥
 राम भरासा राखके रेहेत माठु पहेर मस्त ।
 बोज्यकते^९ डरता^{१०} नहीं अखा न ताके^{११} म्मस्त^{१२} ॥११॥
 हरीजन मा नीज सामत पूरण बासै मास ।
 ज्यु सागर पूरण आपते नाही ओर की आस ॥१२॥
 अखा अतर में नहीं आम्प स्रोत्य^{१३} सबसेस ।
 हरीजन हरीसू^{१४} मिल रह्या समर मरा^{१५} सरबेस ॥१३॥
 दडि नहीं जन के बिपे नहीं चीनसा दम ।
 पूरनते पूरम अखा ऐसा अनुमे सभ^{१६} ॥१४॥
 हरी हरीजन वो नहा अखा जैसे अरण्य सहैर ।
 त्रीहा कारण दोउ है अंत्य^{१७} ज्यु की तू ठहेर ॥१५॥
 बाना^{१८} लेखे बोहोन है पण हरीजन बीरसा कोय ।
 बीन सीध्या हरिया^{१९} रहे जे पीये पातासे तोय ॥१६॥
 नर मादा^{२०} मोठी अपा तेसे हरी हरीजन ।
 अंतर में^{२१} दोउ एक है^{२२} न्यारे^{२३} देखीयत तन ॥१७॥
 मान मीटया^{२४} कुस जातका ध्यान रह्या नीब धाम ।
 अखा पीछे काहा^{२५} रह्या बेसा तेसा राम ॥१८॥

१ सत (सा) २ बचन का (सा), ३ कोई (सा) । ४ बाबरे (सा)
 ५ थ (गु) ६ री (सा) ७ निजाब (मा) ८ ताहे (मा गु) ९ साब (सा)
 १० बोजग (गु) ११ बो शब्द (सा) १२ डरे (मा) १३ बाहे (सा) १४ बेहेरत
 (सा) १५ छील (सा गु) १६ मरपा (गु) अर्था (मा) १७ रंम (सा)
 १८ अति (सा), अंतर (गु) १९ बाना (सा) बहाना (सा) २० हरा (मा)
 २१ नरमादा (गु) २२ बागमागु (सा) २३ और (मा) २४ म्वाग (मा),
 २५ मीटवा (गु) २६ क्या (सा) ।

आप ओसक्या तोहे आतमा' ना ओसक्या' तोहु' सोम ।
 जीहीनी' सीधी आरसी अखा नीज दरसम होय ॥१९॥
 अखा अधिकता एही है जे हरीजन के हे' सब' लोक ।
 जीहीना सरीर समेत' स्वे सोया रोकारोक ॥२०॥
 तेरी ओरते मे' खरा मेरी ओरते नहि' ।
 पडछडपा'' पड मठ में बोलनहारा सौई ॥२१॥
 नीज साम्रप'' ना भावरे'' ना जीवे नीज बल कोय ।
 बड़ा अथम्बा एही खडा बीध करता जीब'' होय ॥२२॥
 मसा बुरा सबकु मखे चतुर गुणी भूपाल ।
 जनम्या कू'' जुटे'' परा बड़ा बेमरुत'' फाल ॥२३॥

८

१ और २ जीम्या (सा) ३ हे (सा घु) ४ जीम्या (सा) ५ जड़े
 (सा घु) ६ x(ना) ७ सो (सा) ८ नीका (सा) ९ हुं (सा) १० बड़े
 (सा) नाहि (सा) ११ पड छडा (सा) पर छडा (घु) १२ सामर्थ्य (सा),
 १३ अवनरे (सा) १४ बय (सा) १५ को (सा) १६ जुटे (सा) १७ (ह
 लि प्र म २१७) जड़े (ह लि प्र म ३६०) अन्ति (घु) १८ बेमुक्त (सा) ।

भोरी भक्ती अग

अखा तु' भोरी भक्ती कर्य जो साईं गीताया चाहे' ।
 पडीत कमा में मव पड बुध्य अखर में जाय ॥१॥
 पडीत कमा खो हे भसी होये अखर का ज्ञान ।
 ग्यु पानी काटत' मेसकु पण अतर अपना रहे वान ॥२॥
 भोरा भक्त ऐसा अखा जैसा काशा पूत ।
 वचन बोमत तोतरे तब' प्यारा अदभुत ॥३॥
 पीसा मगावत कठ तब मुख बुझत सोतराई ।
 पाटु' बचम बोमत भया तबसे' अग' न साई ॥४॥
 कव ध्रु प्रह्लाद पींगल पडे कव व्याकथ नामा कबीर ।
 भक्ती पख" भये अखा सब सतन' के गीर ॥५॥
 भोरी भक्ती चीत की लगन अतर खल अपार ।
 अखा अनल का चीतुआ ग्यु भाय" मोल परिवार ॥६॥
 भोरी भक्ति एसी अखा चाख्य चावुरी हीन ।
 पाउ पाख दिन परवरे ग्यु जल नीच्य मा" मीन ॥७॥*
 भोरी भक्ती एसी अखा लासन सु रहे सास ।
 ग्यु नीका जसनीध का" खलत न देखिमत चास ॥८॥
 भोरी भक्ती एसी अखा सकस पाउ प्राणस ।
 मोस दीग सासत साईसु ओर नहीं उदस ॥९॥

१ भाभी (मा) २ x (सा) ३ चाह (मा), ४ ता (मा)
 ५ काट (सा) काटत (गु) ६ ल्यु (मा) ७ भयावै (मा) ८ पाण (पा)
 ताई (सा) १० कठ (सा) ११ अमर (मा गु) १२ भासु (मा)
 १३ बाइ (सा) जाय (गु) १४ मं (सा गु) १५ मध्य (गु) ।

* चिह्नित साली पं १४० में नहीं है ।

मोरी भक्ती एसी अन्ना कल्या न जाये अग ।
 नेम बेन बेहेन एक हे बेसा जस' तो रम' ॥१०॥
 रत्य सागी जब रामसु तब काम नहीं ओर बाध ।
 पद तारा' सब क्षीण' मये जब ते प्रयद्या प्रात' ॥११॥
 रत्य सागी जब रामसु प्रेम आतुर वैराग्य ।
 रय रग राम रमी रह्या नहीं धातुरी कु बाम्म ॥१२॥
 रत्य सागी जब रामसु प्रीतम मिसीया' सेव ।
 अन्ना सकुटी' डर' दे जब नेनु मामा नेव ॥१३॥
 रत्य सागी तब रामसु काम नहीं ओर बाध' ।
 माता स्थन' मीस अन्ना तो कोम चुप' तात ॥१४॥
 रत्य सागी तब' रामसु तो सकल रीप्य' ता माहे ।
 रति नयु' रेहे अन्ना कल्पद्रुम की छाहे ॥१५॥
 रत्य सागी तब रामसु पाई पीठ की मोज ।
 मन्ना पीछे काह्या' रह्या जब समझ्या' बीद की बीज' ॥१६॥
 ईत उठ भीत स्यु सा घसे जो म्यु नीरखन हाय ।
 भीतामय पाया अन्ना तो कोड़ी को कोन जाव' ॥१७॥
 पडीत तो बह्य' भसा भक्त भसा रत्य राम ।
 भा उनकी जीवका सघ' पण भक्तन हू बेकाम ॥१८॥
 भक्त भक्तसा साई का राम रत्या बीन रात ।
 अन्ना सनी ओर सुरमा न करे दुबी बात ॥१९॥
 पड़े पडीत ओर सेवका' बात करन के काग्य ।
 भक्त पाया हरी प्रेमयन हा न हो बीजरी माग्य ॥२०॥

१ कर (पु) जलका २ सरय (सा पु) ३ x (सा) ४ लीला
 (सा) ५ प्रमत्त (सा) ६ मसीया (पु) ७ सखोटी (सा) ८ सफूबा (क.)
 सफूबा (१४०) ९ और (१४०) डार (सा पु) १० जब (मा ग),
 १० काम बाग—पुन को मोही न चहात (सा) ११ रत्न (म पु)
 १२ चुप (सा) १३ जब (मा) १४ रत्य (पु) रति (मा) १५ रस
 (पु) १६ कहा (मा पु) १७ बीहीनी (सा) १८ बीज (मा) १९ ना
 जोय—तबको बीड़ी जाय ? (मा) ता बीड़ी बीजे बीजे (पु), २० बाह्य
 १४०) बाह्य बाह्य (मा पु) २१ मध्ये (पु) २२ औरसे बड़ा (सा) ।

सगार' सतीका ओर हे कुमकुम काजर नाहे ।
 कुमकुम काजर हो म' हो प्रीत्यम प्रेम मीसाहे' ॥२१॥
 साब सती ओर नीज भक्त दोनु की एक टक ।
 तन मन कू' पहेंलु दीया अब' को' कर अबिवेक' ॥२२॥



१ सगार (सा) सीगार (मा) २ हाव (सा) ३ प्रीत्यम ह—प्रीत्यम
 मम मिनाह (मा) प्रीत्यम प्रेम मीसाहे (गु०) ४ सा (सा) ५. भक्ता
 (गु) ६ फोन (गु), ७ बीवेक (सा गु) ।

अधम अंग

पुरण ग्रहा पुरी रह्या ता' बीन नहीं मज्जु ठाम ।
 ऐसे जाने बीन अन्ना मय्य' पावे आराम ॥१॥
 अन्ना सततर समझ' बीन जीव उमसाना जाई ।
 पुरण ग्रहा पद पावे बीना वाहु'त क हाथ बिकाई ॥२॥
 भसग पद गरभ' मातते तव बूझ सुख का पाव ।
 जो सुख अन्ना अपार है जे रस रूप होता गात्र ॥३॥
 जब पुरनते बीसुड्या मान सीआ आप अवग ।
 जीव होते ईश्वर भया बेमस्य भूला' समय ॥४॥
 आप एक ईश्वर बड़ा भीषण भया ठेहराजो ।
 पंच नीचे साग्या तबे' अतर गत्य" में जाहो ॥५॥
 अन्ना पीडा" ताहू की' मांखन साग्या बीन ।
 दबी देव" पायाच ग्रहे" सबका भया आधीन ॥६॥
 बन्दे अतना" बकरे" पंच ताहां पंचबीस ।
 परठधबी पाछो पद ज्याहां प्रीत्य" जगदीश ॥७॥
 प्रीत्यम प्यारा हाय जा सा" मुगत आवे मुर ।
 वात नेन खुस रहे ज्यु' कमल कुमल" सग सुर ॥८॥

— — — — —

- १ या (ना) २ ना (ना) ३ (गु) ४ मज्ज्या (ना) ५ × (ता गु)
 ६ बह्मराय (ना) ७ बेवाम (य) ८ घम (गु) ९ गर्प (ना) १० अवार (ना
 गु ३८७) ११ बे यति (ना) १२ बे यत (गु) भूस्या (ना गु) १३ अता !
 (ना) १४ वन (गु) १५ गति (ना) १६ अजय (ना) १७ जाओ (गु) १८ पिडा
 (ना) १९ वा (ना) २० भुन (ना) २१ अर (ना) २२ बिलनी
 (ना) २३ बगलो (गु) २४ बर (य) २५ बीनय (गु) २६ नो (ना य)
 २७ गुन (गु) २८ कुमल (ना) ।

नेन खुल साके रह जाके ह्रीरदा खोसा डाय ।
 अजाने घहेरा' अखा साब मीचे दोय ॥९॥
 अखा केहे आतुर वकी केहे सामत्य' गुण ग्राम ।
 खरी छेप कीछा बीना काम नहीं राख' माम ॥१०॥
 करतो बाछ ससार मी फुल सोरा गाल ।
 हरी गुण सामलता अखा भोपि मड अई भाल ॥११॥
 बाह्या वतुर ससार माहा' सत संग त्याही सठ राज्य ।
 नृपपण साब नहीं अने हरी गुण सुनता साज ॥१२॥
 भाइ भवाई भाम्यमी तहाँ ते राता धाय ।
 गुण सुणसां गोविंदना ऊच के ऊठी आय ॥१३॥
 आसा अदावत नहीं अखा ज्यु अदावत नहीं आग्य' ।
 वनखड' कु वहन करे तो ही भुम्या जाड जाम्य" ॥१४॥
 आस्या पुरी नहीं कव जा परवत सागर पाय" ।
 अखा मोहो" बीन सीमल एसी पडी' बसाय ॥१५॥
 आस्या गई सब अज भया जे कोई पुरन ब्रह्म ।
 आस्या बभ्या जीव हे अखा मयस ल मर्म ॥१६॥
 कुधान कुदेव कुमाणसा नप पणु अहा ताय" ।
 सावधान" रहणर अखा गरफल मार्या' आय ॥१७॥

*

१ घरे (सा) घेरवा (गु) २ माजल (सा) ३ मुके (गु)
 ४ झू (सा) ५ अड (सा) ६ मां (सा) ७ लड (पा) ८ पाइ
 पाव—मांड भवाइ भ्याम्यमी त्यां ही तेरा तो पा—(२९७) मांड भवाई
 भाम्यमी ताही तेरा ता पाये (३४०) • आसा—आग्य—आसा गवत
 नहीं अखा ज्यो प्रावन महा आग्य (३४० गु) १० मव (गु) ११ ता
 आय—या मा भुम्या भाग्य (गु) १२ जाई (मा) १३ माह (गु) माडे (मा)
 १४ बड़ी (मा गु) १५ मर्प पाय—निर्प पणु अहिनाड (२९७मा) नृप
 पणु अही साय (३४०) १६ सावधान (गु) १७ मागा (गु) ।

सुरमसा'

मरदु के मेरान में जब नीसान मईत ।
 सुर मकसावत' मरनकु' हीजु' नास पईत ॥१॥
 हडबड सागी हीज कु मो फौर फौर ताके ओट ।
 सुरा सादवे सीधकु अवे मुख पर ओट ॥२॥
 नीवाहीत' सब के संतका नीरबाणी नीरबोप' ।
 सो गुहें मुची गहें आबता मनमुची फेर दें' मुख ॥३॥
 सुरे साहब को सीर' दीया साह' छ न छाड़ें ओट ।
 रयु' तमा ममा' मवे अला जव' शम्' सा' साडा' देत ॥४॥
 मरद सवे सो मरद सु हीज कु' नारे नाहि ।
 सुरा सो' सनमुख लड़े हीज सो मुख फीरहि ॥५॥
 भाजे ठासु' ना भड़े' सो जानी सो सूर' ।
 मका शब्द ना सहे सवे' भटकया' भाजे भूर ॥६॥
 संत समसेव ना लड़' करे सब को ओट ।
 अला टीका तो साह वे लटकया तो खाई लोटप' ॥७॥



१ सुरमा (मु) मूरमा (सा) २ मूरम कसावत (का गु) ३ जब मूर
 नावे (सा) ४ नीर (मा) ५ हिजब (सा) ६ नीवाहीत (१५०), न हुच
) नीवाहीत (य) ७ निर्वोप (मा) नीरबोप (य) ८ अवे (सा गु) ९ वे
 नु) १० नीर (सा) ११ साह (सा मू) १२ मज (सा) मज (य)
 जब (१६ २६७ सा गु) १३ अ (सा य) १४ निजाडा (मा) १५ म
) १६ अजा' (मा) १७ निमन (मा) १८ मज (सा) १९ मूर (सा गु)
 य (मा) २० भटकया (मा) २१ लछ (सा) २२ अजा लोटप
 टिकया तो लाडो देप टिकया तो पाई ओट (१५) अला' निमन तो लाडो
 लटकया तो लाई लोट (मा) अला टीका तो नीरे पटकया 'ने पाई पाट (मु) ।

हेरा' अग

साया' तेरी साहबी' बन्दे कही न जाय ।
 अखा अकल पग न टीके ता रसना केसे गाय ॥१॥
 तेरी अकल सु मुस अकल तरे बेम मुस बेन ।
 तु तेरा भेदु अखा तु तेरे सांख' नेम ॥२॥
 तुज पर बासु हूँ पणा तुज कस पर कीरसा ॥
 अखा के भेसु हज तु पर' मे' न सहूँ तुज पार ॥३॥
 अज भुतारा मीत तु भी' साखें मी' गब ।
 माठु पहर" एसा रहे ता बाहा लागे तुज एम ॥४॥
 मे हु ता मी तुज हे तुहे मो भी तुज ।
 मसा नाम आमे करी तू आप कुराबे क्युन" ॥५॥



१ हेराग (सा मू १४०) २ मारिणी (सा मू) ३ माहेजी (पू) साहेबी
 (सा) (४) क्यु कर (मा) ५ देखे (सा) ६ पण (सा मू) ७ हु (मा)
 ८ मजब (सा मू) ९-१ मिसी (सा) ११ पहेर (मू) पहेर (सा)
 १२ क्यु १ (सा) ।

सुर्यमा

मरदु के भेरान में जब नीसान मंडत ।
 सुर मकसावत' मरनकु' हीमू' पास पडत ॥१॥
 हडबड लागी हीज कु मा फीर फीर ताके ओट ।
 सुरा छाटके सीसकु लबे मुख पर ओट ॥२॥
 नीमाहीत' सब जे संतका नीरवाणी नीरवोप' ।
 सो मुहूँ मुखी गहे' भावता मममुखी फेर वे' मुख ॥३॥
 सुरे साहब को सीर' दीया ताह' सड न छाड़े सोत ।
 त्पु' तमा मगा' मये अला जब' सखसो' साका' देत ॥४॥
 मरद सड सो मरद सु हीज कु' नारे नाहि ।
 सुरा सो' सनमुख मड़े हीज सो मुख फीराहि ॥५॥
 भाजे तामु' ना भके' सो मामी सो सूर' ।
 मखा शब्द ना सहे सके' मटकया' भाजे झूर ॥६॥
 सत समसेव ना सड' करे सब को बाट ।
 बला टीका तो ताह' दे लटकया तो खार्ड सोटप' ॥७॥



१ सुरमा (सु) मूरमा (सा) २ मूरम कसावत (का सु) ३ जब सुर
 मावे (सा) ४ फीर (मा) ५ हिजड (सा) ६ नीमाहीत (१५०) न डूठ
) नीमाहीत (म) ७ निचोप (मा) नीरवोप (म) ८ बड़े (सा सु) ९ वे
 य) १ शीर (सा) १० नाई (मा ग) ११ मय्य (सा) मय्य (म)
 जब (१८-२६३ सा ग) १२ ख (सा ग) १३ निमादा (सा) १४ म'
) १५ बला ! (मा) १६ निमनू (सा) १७ लदे (सा) १ सुर (का म)
 ख (सा) १९ मटकया (मा) २० बछु (मा) २१ अला ... सोटप
 । टिपया ता ताही देप्य टिपया तो पार्ड ओट (१८०) अला ! टिपया तो ताहरे
 लटकया तो खार्ड सोट (मा) बला टीका तो मोई बटकया तो पार्ड पाट (सु) ।

हरा' अग

सांया' तेरी साहेबी' खन्वे कही न जाय ।
 असा अकल पग - टीके तो रसमा केसे' गाय ॥१॥
 तेरी अकल सु मुस अकल तरे वन मुस खेन ।
 तु तेरा भेदु असा तु तरे झांख' नन ॥२॥
 तुज पर वालं हूँ पणा तुज कस पर कीरतार ।
 असा के भेसु हज तु पर' मे' न सहूँ तुज पार ॥३॥
 अज धुतारा भीत तु भी' झांखें भी' गेव ।
 आठु पहर' एसा रहे ता काहा लागे तुज एब ॥४॥
 मे हूँ ता भी तुज हे तुहे नो भी तुंज ।
 असा नाम भागे बरी तू आप दुरावे क्युज' ॥५॥

✦

१ हेराज (सा गु १८०) २ साईया (सा गु) ३ साहेबी (गु) साहेबी (सा) (४) नपु कर (सा) ५ देखे (सा) ६ पग (सा गु) ७ हूँ (सा),
 ८ अजब (सा गु) ९-१ मिला (सा) ११ वेहेर (गु) पहार (सा)
 १२ क्यु ! (सा) ।

हस परीक्षा अग

वम हंसा रण एक हे' दोउ मने पाणी पाल ।
 बग ताक अखा मछली मोली बुने मरग्य ॥१॥
 सीता एक देपीयत' अखा मसारा आ मंत ।
 काया ताकत कबुर्षी 'हरीजन हरी हेरत ॥२॥
 जन हसा अहे खीरकु नारया करके लेह ।
 बभ खटाई गुस्सला अखा बबपण एह ॥३॥
 हरीजन' की कसा अखा हरी बाणा के हरीजन ।
 जिस दावानम जुगजरे' गाहो न दास तत ॥४॥
 गुरु वदा बकार सिम दसा कसा अपार ।
 अमृत पोख बभमा सो बसते भख भगार ॥५॥
 बंद बसत आकाश 'म भूपर' बसत बकार ।
 तो अमृत काने' उतरे सो' मुमा अखा कह ठार ॥६॥
 मलग' मुरख ताकी रहे मुते' मुखा पापाय ।
 एसी भखा भाबी बन मो हरीजन हरी पाय ॥७॥
 आ रतन उपजे जनक' हरी मजब का भाव' ।
 ता अखा गुरु बाहा कर ज्यु आया त्यु जाव' ॥८॥
 ज्यु पाणी में परवर पड्या नीसा भया सबास ।
 तापर प्रण न उछरे अतर नही रसास ॥९॥

१ वे (मा) २ सीमे (मा) ३ बीर (ता) ४ म्याग (सा बु)

५ हरिपुर (मा) ६ जाने (मा) ७ जग (मा) ८ ठव (१४०) जन (सा)

९ बीर (मा) १० भुने (मा) ११ बहाने (मा बु) १२ > (मा)

१३ मछल (मा) १४ मुरत (बु) मुरते (मा) १५ जा जनक—पावन

अने गाम का (मा) जा ज्यु न उतर जनक (बु) १६ पाय (बु) १७ जाव

(बु) ।

ज्यु मीरतर बरसत बरसा' भाउ भेव कछु माहे ।
 द्रुम सकल हरा होतु हे अद्या अरु सु काहे' ॥१०॥
 हाम न बाहावे' हूठ करी तो अद्या मीत्ये क्युं राम ।
 लसोपत्ती माहाराज सु' आदर दुनीया वाम ॥११॥
 आदर सत्ये ससार पर हरी मक्ती सो' टोम ।
 सो फस' कासु धामी' अद्या' ज्यु' नसकीये बीना रोसा ॥१२॥

८

१ बुपा (सा) ७ भला हे—और अर्क मुकता बार्ह (सा)
 भला अरक मुपाहे (सा) ३ पाले (सा) ४ और (सा) ५ अरव (गु)
 ममति (१४०) ६ हरी .. सो—और हरिजन मो (सा) ७ पर (गु)
 ८ पाले (सा) ९ बुवा (सा) या (गु) १० × (गु) ११ × (सा) ।

क्रम^१ जड अंग

पट दर्शन देख^१ अन्ना तामे खरे बीगुने^२ धीन^३ ।
 आत्म नञ् बीन अंग है चम कर्म के नेन ॥१॥
 मन मेला ब्रह्मज्ञानी बीना तन मेला धीम बीर ।
 कर्म कल्पन^४ में कल्प^५ रहे पाये न देखी तीर ॥२॥
 सब छावे अज्ञानने गेहेनु कीये खराब ।
 सुपने में सरपु डटे सो भने दमे देहे जाय ॥३॥
 सागर आम्हा ब्रह्मका बीच्य प्यासा मरे संसार ।
 मापा फोड^६ पानी पीये जो सदगुर मीले सार^७ ॥४॥
 मेदू बीना भटकत अन्ना उसटा करत अम्हास^८ ।
 कचन काया आत्मा ताकु^९ हे कर्म कपीर का पास ॥५॥
 दीया मसामा रांगका^{१०} कचन कीया खराब ।
 छाक^{११} कर्म खोहोमा^{१२} अन्ना त्पु गमाया आप ॥६॥
 हुसि^{१३} जीव सुना अन्ना हुसि^{१४} करावत कर्म ।
 कर्म जडता उपजे ए माया का धर्म ॥७॥



१ कर्मजड (३४० सा पु) २ धीमे (सा पु) ३ बगुने (पु)
 बिपुने (सा) ४ मंत्र जंत्र (पु) ५ कल्प (सा पु) ६ बन्नी (सा पु),
 ७ छोड़ (सा) ८ सोनार (सा) ९ अम्हास (सा) १० टाढ़े (ना)
 ११ रंग (पु) १२ होम (सा) १३ मी (सा), १४ जोबा (सा) आम्हा (पु)
 १५ हुसि (सा) १६ बीर (सा) ।

अकल अग

हम देसी होवे अछा जा' जाने हमारी रीत्य ।
 परदेसी पीछे फीरे' वी देख भये भेभीत्य' ॥१॥
 सेहेर सततर एक रस जाहीं' बुझा न समाय ।
 आबादान सवा अछा' कोई कसत नहीं काय ॥२॥
 दुख पारीद्र ताहा ना मीसे' जहँ बसत दीवाने लोक ।
 असक पुरी आस मे सपने न मीसे सोक' ॥३॥
 लोक बेद पोहोचत नहीं' आप मुरादी सेहेर ।
 कोयेक सत भेसे अछा' बाहार" न काहाडे" सेहेर" ॥४॥



१ सो (सा गु) २ सो (सा) ३ मय... भीत्य—कवे मयभीत
 (सा) ४ ताहां (सा) ५ ताहा (सा) ६ x (गु), ७ असक सोक—
 असक पुरी आकासमा सुपने न मिमि सोक (१४०) असक पुरी आकासमे सुपने न
 मीसे सोक (गु) असक पुरी आकासमे ज्यही मपने न मिमि सोक (सा), ८ प्यडा
 (सा) ९ सो (सा) १० फिर (सा) ११ बोड (२१७ गु) १२ काड
 (सा) कइत (सा) १३ पैर (सा गु), देख (१४०) ।

क्रम' जड अंग

पट दर्शन देना' अन्ना तामे खरे बीयुबे' जैन' ।
 आत्म मत्ता बीन भय है चम कर्म के मेत ॥१॥
 मन मेला ब्रह्मज्ञानी बीना तन मेला बीन बीर ।
 कर्म कल्याण' में कल्या' रहे पाये न पेसी तीर ॥२॥
 सब छाये असमानने गेहेनु कीये सराब ।
 सुपन में सरपु इसे सो भये हमे बेहे जाय ॥३॥
 मागर जाम्बा ब्रह्मका बीष्य प्यासा मरे संसार ।
 जापा फोड़' पानी पीये जो सदगुर मीसे सार' ॥४॥
 नेहू बीना मटकत अन्ना तसटा करत अम्मास' ।
 कचन काया आत्मा ताकु' हे कर्म कषीर का पास ॥५॥
 दीया मसामा रायका' कचन कीया खराब ।
 खाक' कर्म खोहोया' अन्ना खु पमाया आप ॥६॥
 हुंसि' जीव हुवा अन्ना हुंस' करावत कर्म ।
 कर्म कहता उपजे ए मामा का धर्म ॥७॥



१ कर्मजड (१४० ला गु) २ बीजे (ला गु) ३ बयुबे (गु)
 विपुबे (ला) ४ जैन जैन (गु) ५ कचन (ला गु) ६ कमी (ला. गु)
 ७ फोड़ (ला) ८ खोनार (ला) ९ अम्मास (ला.) १० तादे (ला)
 ११ रंप (गु) हेन (ला) १२ मी (ला) १३ खोवा (ला) मोमा (गु)
 १४ हुंसि (ला) १५ और (ला) ।

अकल अग

हम बेसी होवे अछा जा' जाने हमारी रीरय ।
 परबेसी पीछे फीरे' डी देख भये भेभीरय' ॥१॥
 सेहर सतंतर एक रस जोहो' बुजा न समाय ।
 आबादान सवा अछा' कोई कसत नही काय ॥२॥
 दुख दारीअ ताहा ना मीसे' अहं बसत बीवाने सोक ।
 असक पुरी आस मे सपन न मीसे सोक' ॥३॥
 सोक' वेद पोहोचत नही' आप मुरादी सेहेर ।
 कोयेन संत मेसे अछा' बाहार' न काहाडे' सेहेर' ॥४॥



१ लो (सा गु) २ लो (सा) ३ गये... मोरय—कमे भयभीत
 (सा) ४ ताहा (सा) ५ ताहा (सा) ६ X (गु) ७ असक... सोक—
 अकल पुरी आकाशमा सुपने न मिस मोक (१४०) अकल पुरी आकाशमे सुपने न
 मीसे ताक (गु), अकल पुरी आकाशमे जवही नपने न मिस ताक (सा) ८ अरहा
 (सा) ९ लो (सा) १० फिर (सा) ११ जोड़ (१६७ गु) १२ काड़
 (सा) काड़त (सा), १३ देर (सा गु) देरय (१४०) ।

भवती वीवेक अग *

वन सकल हरीया अछा फुले फले वनराय ।
 ताहां' घाय अमागी मांस बीमा बांधे मुख मर जाय ॥१॥
 मीठी सेवा समुनकी मोला ब्रह्म जनान ।
 पव पामोका अर्थ ना कर अछा ईशुका पान ॥२॥
 पानी' कारन ईशुका ताम मधुरा मीसा बीकार ।
 त्पुं' पैतन सब' समरा मरपा कामना सो साकार ॥३॥
 मर्मि' ध्यामकु' सिध्य' मही ए कर्म' सीध्य अपार ।
 फीरते जाकु पुतमी' केसे" सीख बितार" ॥४॥
 ज्याकु" आप दगा मही सो कर आप" उपचार ।
 प्रतिदीब क भावका" कीनु फल मरप्या रसास" ॥५॥



* इन २८वें अक्षरी २ भाषायां मा में अक्षर अक्ष में मिलती हैं । १ वन (मा) २ उषु (मा) ३ मिथुन (मा) ४ X (छा) ५ और (मा) ६ डिपा (मा) भरमी (मु) ७ मरपा (मा) कामकुं (मु) ८ मिथि (छा) मिथ (मु) ९ एक मगो (सा) १० अछा' (मा) ११ त्पु (मा) १२ बितार (मा) अपार (मु) १३ त्रिनकुं (मा) १४ और (मा) और (मु) १५ प्रति भाषा—वच पानी के अक्षर (मा) १६ प्रकार (छा) ।

नदीक' अंग

पहेंप्ये' ह्रीठ पामबा कस्ये' कस्य' करबा काम ।
 तव' मन घन बारा' बाना अखा मीस्ये कम राम ॥१॥
 मुख प्यारा माहाराज कहे' तलमां प्यारा वाम ।
 स्यो कुसटा प्यारो जारहे' ओर प्रगट पीठ को नाम ॥२॥
 नदीक नर आर सुहर' का सेहेज एक सुमाई ।
 आ मंघा करे जो मल भखे घोर पाक' करी मरी जाई ॥३॥
 नंदीक नर ओर गुहड़के' के बेसा' उषडे मेन ।
 राम' अर्क तहा अंध है देखत नघा' रेन ॥४॥
 नदीक पुख्य अरु बाग बा एक सुमाये बाल ।
 हरीगुन हरीमा वृक्ष तजी ताकत मघा बाल ॥५॥
 नंदिक नर बुझा गघा दोउकी' कुमल्य बीसाल ।
 हरीपुन घन्य मे दुबरा माता मघा उनाहाल' ॥६॥
 हरी मीघा हरी सहो सके पण जन नघा न सहेवाय' ।
 ज्यु जाने जसपर दाढ़ीमे पण नीर पर जस्यो न जाय ॥७॥
 नंदिक नर मघा कर हसी हसी सहेज सुमाय ।
 ज्यु हुसे अफीज कु खादि पण अते अफीज पुखाय' ॥८॥

१ निन्दक (सा) २ पेच (मा) (३४) बल्ल बल्ल (मा) ३ पण
 (मा) ४ बापा (मा) ५ और (मा) ६ दिल (सा) ७ स्नेही (मा)
 ८ मुहर (सा) ९ पातक (सा) १० मुबड (मा) ११ कबला (मा)
 १२ जान (मा) १३ निम्दा (मा) १४ देली (सा) बानु (मु) १५ उनास
 (मा) उदुनाम (मु) १६ मुहाय (मा) १७ अग जाय—उमटा ताकृ माय
 (सा) ।

हरीजन मीसा^१ हरि पाइये भामन^२ मीसा संसार ।
 वाक्य जाही खप यावा सो तेसा करे^३ उपार^४ ॥९॥
 भामन^२ मीसा कर्म जडकरे हरिजन करे हरि रूप ।
 ज्युं पाणी कु सीत जडकरे फीरी^५ रस करे सु घूप ॥१०॥

१ मीसे (पु) २ वाक्य वाक्य (मा) ३ करा (मा) ४ उपचार
 पु) ५ कर्मी (सा) ६ ताहे (सा) ।

गुस्तान अंग

पेनर^१ की पसा न करे नव के नीकट न जाय^२ ।
 एकाकीत के हो रहे सो बरसा^३ जुग माय^४ ॥१॥
 अखा ज्ञानी कुं नहीं मता मत जाहां ताहां संसार ।
 मत पीज्यर कुट होए पइया सो बीब रखा नीरखार ॥२॥
 पीजर पइया पडे सुखा सा पर रीझत जत ।
 पण बेहव का बोले अखा सो कोईक मसझत^५ सत ॥३॥
 मेहेरी बोसी ज्ञान की ओर मानव मत^६ हे मद ।
 ताये ठाठ मीस नहीं ए माया का फंद ॥४॥
 स्वांग पहेंया साई^७ ना मीने मासा मुद्रा पुर ।
 नीर तुपक लहते नहीं अखा लहता हे काई सुर ॥५॥
 सुरा साठी स^८ लड़ सो भी हे समतेर ।
 भार भगोरे स^९ फीरे पण^{१०} सुरा आये जेर ॥६॥
 *अखा मन संसार का नीस्वे न रहे बुंन ।
 बोहो बीम्य करी समझाईये पण ज्यु^{११} कुंजर का सुख ॥७॥
 अखा पड परचा बीना सुजे सुणावे ज्ञान ।
 कीचुं गाड़ी मेख ज्यु^{१२} ठहेरत नहीं नीरबाण्य ॥८॥
 बाहा राखे मन ज्ञान की तो पर्दा दोतु^{१३} फारुष ।
 के हे जसा दो कौ^{१४} रहे म्यान एक तरवारुय ॥९॥

१ पंजर (सा) २ पनर (पु) ३ जाह (फा) ४ बिरसा (सा) ५ बीरसा
 (पु) ६ माहे (फा) ७ म्हाय (सा) ८ समझत (सा पु. ३४०) ९ मति
 (सा पु) १० पीड (पु) ११ गाईका (सा) १२ म (मा) १३ मे (सा)
 १४ बड़े (मा) १५ बीर (सा) सो (पु) १६ पण ज्यु—फिरी (सा)
 १७ निदान (सा) १८ दोतु (सा पु) १९ ज्यु (सा) २० क्यों (पु) ।
 * सा के अनुसार यहाँ से अफीर बंगका आरंभ होता है ।

हे एसी' जो' ना महे तो का' मारे नीत्य सीत्य ॥
 मुरा बाली ना फीरे योनु पास बकसीत ॥१०॥
 भीत न छोड़ चातुरी बाण पनेका जोर ।
 अखा खोर काहा' भीत र जे' जाये हो रत्ना मार ॥११॥
 मान बड़ाई बीभ्य पडी घनतन का अघकार' ।
 सोई साधन मान्य अखा ताथ नहीं दीवार ॥१२॥
 सोन' बड़ाई जानीय जेसा तमहु होड' ।
 तन गोरा सा देखीये अखा सा अग कू लाड्य ॥१३॥
 पडते पीड न पाईये मत कोई राखो मान' ।
 अखा ज्यु बाँडा हेम का रेंगमा न आवे काम ॥१४॥



१ नेना (सा) २ जो (मा) ३ नखा (मा) ४ बधिम (सा) ५ बड़ी
 (सा) ६ जो (मा बु) ७ अविचार (सा) ८ अघीकार (गु) ९ मान्य
 (गु) १० मान (मा १४०) मान (गु) ११ जोड़ोड (१४०) १२ मान्य
 (गु) मान (मा) ।

बीटङ अग

अह बेभासा' साध अखा त्पीसु साधक नाम ।
 बतन बेधी जव हुआ तब पावे आराम' ॥१॥
 अखा संगत्य सा भसी जे अनुमे आत्मम साय' ।
 आत्मम बोध जामे नहीं मछ तासु' पतिआय' ॥२॥
 हीतकारो भी हे रीपू जामे नहीं आत्मम अम्पास ।
 सो संगीकु सेता जरे ज्युं वृक्ष पलेटा' पास ॥३॥
 दाना छोड्य नागानगी कर्म अह बेरा सग ।
 मया' फल ईन्द्रवारणी मत रीसे नृरग' ॥४॥
 कबुधी संगी नहीं भला सु प्रीत्यम कृ करे उपान ।
 राषक वाघ बाधे अखा बीमुख करे भगवान ॥५॥
 आपे कोई नीरुखे नहीं खंड सयकु बाघ'' ।
 वचन बीडारे बेदके अखा जे आद्य अनाद्य ॥६॥
 सोई बीटङा' मन मुखी नहीं कोई की परतीत ।
 ताका सग करे अखा सो राम न पावे भीत ॥७॥
 नीरुख नहीं ताहीं भक्ती'' का नहीं ज्ञान'' बैराग्य ।
 धुकम कुटत नीत्य अखा बबहु न पावे जाग्य'' ॥८॥
 आप आयुध भीत्यधरे आर मु भी सुधाम ।
 'सुरपणा' चारा अखा ताका नहीं उपाय ॥९॥

१ बेजा (१८० २६७ गु) बिद्या (सा) २ अनाम (गु) ३ आत्मम
 साम—प्रथमलाई (सा) ४ तासु (मा) ५ पतिहाई (सा) ६ सपेत्पा (मा)
 सपेटे (गु) ७ गु (मा) ८ ईन्द्रवारणी (सा) ९-तु रम (मा) १० और
 (मा) ११ बाघ (गु) बाघ (मा) १२ बिडङा (मा) १३ ज्ञान (मा)
 १४ भक्ति (सा) १५ ताग (मा) ज्याम्य (गु) १६ जो भी (सा)
 १७ मूर (गु) ।

असन बसम बीम जे फीरे सोहि अभागी नाहि ।
 अभागी ताकु जानीये जे हरी हीरा गुमाय ॥१०॥
 असम बसन के कारण सेवे राख्यहार ।
 राखक बोध^१ बोधे जका ताको बाहा ईसबार ॥११॥
 याथा सुना जे फीरे कर ले अपना सीस ।
 बेभास्य बोले अला सो नर देखे^२ जुगदीस ॥१२॥
 मान^३ मीदया^४ जोर मग मुआ तमकु दीया तसाब ।
 सा साई ते भीम्य नहा ज्यु फीरी जस नहीं साब ॥१३॥
 मखा अगमकु^५ कबि कबि आपा रहा गुमाय ।
 आप^६ गुमाया उबरया^७ सा ता कय्या न जाय ॥१४॥
 जका आपा मेन्ते सांसा गया ससार ।
 गाढ़ा साहार मगाईया हारया^८ हाकनहार ॥१५॥



१ बाधक (सा) २ बप (सा) ३ घाम्ब (गु) ४ मीमा ५ ज
 (गु) ६ असम (१४) ७ आपा (१४०) ८ गया (१४) ९ उबरया
 (गु) १० हाया (गु) ।

क्रीपा' अंग

हरी क्रीपा तब जानीये जब हरीजनसुं हाये प्यार ।
 राम सुतका कोकडा हरीजन नाका तार ॥१॥
 जन छडा हरी सुतका जो आवे कबहु हाथ्य ।
 उलझण सब' भागे' भखा सब देखे रघुनाथ ॥२॥
 हरीजन ताकु जानीये ज पक्ष करे नहीं पास ।
 नीरदावे जनत भखा सोही सत की जात ॥३॥
 ऐसे जनकु सेवते ततक्षण पाइये राम ।
 भार उपाय ससार कु आवे साधन काम' ॥४॥
 हरी अरपी कोई भखा मत अरपी महु लोक ।
 बनज उधारे ज' करे सो राम न पावे राक ॥५॥
 मस्य' कु सत्य माने भखा पण' सत्य सु नहीं पहचाना ।
 तेमे जीवसु बोलते होरा आपका जान ॥६॥



१ क्रीपा (भा) २ भारी (सा) ३ बर्द (भा) ४ और ... काम—
 और उपाय मने भखा ! मन साधन की काम (भा) ५ बहुत (सा) ६ मत्
 मा) ७ और (सा) ८. एम (भा) ।

ज्ञानदग्ध अंग

ज्ञान दग्ध न नीपजे जे कुप्रक' लागे माठ' ।
 अछा न पावे' बांगडु' जो वास सो मन' बाठ ॥१॥
 ज्ञानदग्ध न नीपजे जे छेजे अपनी बार ।
 ज्युं पाव' भीरसा आब फल सो पाकठ नहीं ॥२॥
 ज्ञानदग्ध न नीपजे जे रोहन गुच्छाणा मान' ।
 ज्युं वठा' दुध' मल' नहीं जा कीज कोठ उपाय' ॥३॥
 ज्ञानदग्ध पड़े अछा सो वाद करन क राज्य ।
 ज्यसा बोसण गुहृदका चीरपा' रूप अबाज ॥४॥
 चतुर गबैय्या गुनी मील आर' अगम नियम का' जान ।
 पुरा कोई वीरसा अछा जाकु' हरा सेवी पेहुवान ॥५॥
 नीरदावे का मर अछा कोई वीरसा जुग' माह ।
 दम' दसाध जस्त कु एम यहात पड' ज्याहा ताह ॥६॥
 नारदाबा त नीपजे बाब' गानन' दस्य' ।
 अछा उत्तरना उदधि मार कठे बांधा सत्य ॥७॥

१ कुप्रक (१४०), कुप्रक (सा गु) २ बाठ (सा) ३ पाके (सा)
 ४ पाव (सा) ५ वास सो मन—जारे मोयुष (१६१) जारे सा मन (सा)
 ६ बाज (सा) बाजु (गु) ७ अब (सा) ८ मन (सा गु)
 ९ बांठपा (सा गु) १० पब (सा), ११ नमरे (सा) मील (गु) १२ मन
 कोण अदब (सा) जो कीये काज जवन (२६७) १३ बिमा (सा)
 चीना (गु) १४ x (सा) १५ x (सा) १६ पुरा जाकु—जग
 ताने ना मिले (सा) १७ पब (सा) १८ दाम (सा) दम (गु) १९
 (सा), २० भीर (सा) २१ x (सा) २२ दिन (सा) ।

नीरवावा का मर अखा जसा काठ का नाउ^१ ।
 वावा पयर भीमबपा^२ सब समेत गरकाठ ॥८॥
 समुझ साचा सो अखा शठ^३ पेहेचाने जेट ।
 लडा पेहेबोग्या नीपजे भत^४ न देखे देह ॥९॥
 देहे दरसी कुरमगी अखा सत्य थापे^५ ससार ।
 रो सुघा^६ समझो नहीं जसा ज्ञान बीचार ॥१०॥
 मानी ग्रहे छाड अखा आ सत्य थापे^५ ससार ।
 सुपने^७ मे सरपु टपस्या ला जाग्रत काहा उपचार ॥११॥
 आपा थापे नही अखा ता रहेणी का बाहा थाप ।
 आपा मनि^८ अणछता सा भीध्या करता असाप ॥१२॥
 रेहेनहार^९ रेहेनी नही एसी केहेनी मोघ ।
 अखा धुअर वाचका भरसाहे सब काय ॥१३॥
 ज्यु बलीये त्यु बल्य हे ज्यु रहीये त्यु रेहेन ।
 सब गत्य राम रमे अखा देखो गु^{१०} के नेन ॥१४॥
 सब रेहेनी हे राम की हे जक्त रूप अगदीस ।
 अखो केहे^{११} खल आपे रमे त्यु अछता काड सीस ॥१५॥
 कोई केहे केहेणी^{१२} हे मनी कोई कहे रेहेणी सार ।
 आत्यम दरमन धीन अखा सब कर्ई करत पाचार ॥१६॥
 सीधा टेढ़ा मत कहे तु अपना^{१३} छाड सियान ।
 जसा हे तेसा हरी बीध्य तु क्या हाथ जान^{१४} ॥१७॥
 ऐस जान्य धीन अखा रुदे न सीतल हाय ।
 भोसु प्यास न भाजही अखा^{१५} अखा हरी ताये ॥१८॥

१ नाओ (गु) भाव (सा) २ भीमग्या (गु) भावडा (सा)
 ३ कय (गु) कृत्य (सा) ४ कल्यो (सा) ५ सम्यक् (सा) ६ जाने (सा)
 ७ ज्यु (सा) ८ डस्या (सा) डया (गु) ९ मान (सा) पाप (गु)
 १० ज्यहो (सा) ११ x (सा) १२ रेहेनी (सा) १३ तेरा (सा)
 १४ देमा ... जान—जता^१ आपे है हरि तो तू क्या हाथ बिच जान ? (सा)
 जता पीता तेमा है हरि बीच गु क्यों हाथ जान (गु) १५ पीजा (सा) ।

अजब तमासा आप मा जानत बीरसा^१ काय ।
 हु सो तु हं हूं वही^२ एक अच्छो केहे^३ दोम ॥१९॥
 हु हं को पेहेचान से तु तुज ताकी देख्य ।
 ज्यु का रज्यु मीहामत रहे अच्छो केहे सेप ॥२०॥
 समझ अच्छा तु^४ सार्ई कु मेनु भीतर माहो ।
 आपा मोटु आप हे ज्यु खवन क भाग^५ राहा ॥२१॥
 चदन^६ बीन न पाईये राहु दरसन की काम ।
 तु^७ सोब भसकण में भासीये जीब सा^८ आस पवास ॥२२॥
 जेही पड्य मे प्रान^९ बसे ताही^{१०} बसत प्राप्त ।
 कागत मोट नहा अच्छा ताहां बीज्य पड़े^{११} बहुनेस ॥२३॥

१ ताही (मा), २ तु सो हं हूं वही (मा) ३ हे (मा) ४ केहे (मा)
 चरके ५ मोटे (२९७ ३४०) ६ चर (मा गु) ७ कोई (ता.) ८ तु (गु)
 ९ (मा) १० सो (गु) १० प्राणी (गु ता) ११ ताब (ता.),
 १९ परपा (गु) ।

समस्या अग

स्वान' समस्त कर पेहेनीया भेद कीया भगवान ।
 सो नयु चाल चने' मखा बाहा कछु हे नादान ॥१॥
 नट ज्यु स्वांग लावे सुवे सो बोली बालत चास्य ।
 जब' आप देखावे मुलगा ता अखा महीं बन वही स्याल ॥२॥
 आप मुकाना लोक में लिया जस्त का रूप ।
 ज्यु मरपती नट होई खेसते' केसे' केहे मे भूप ॥३॥
 ए' बीबारो अनुभवी देखो' दस के माहे ।
 ज्यु दरपण मे मुख देखीये पण मुख में दरपण माहे ॥४॥
 एयु पडप मध्ये पीठ हे ज्यु आरसी भीतर अग ।
 बोसण डोलण पुस' का अखा साईया संग ॥५॥
 अजब कसा जानन्दवन बुझ्य केस" कर बीबार ।
 "पार वही प्रतीबीबना "तु बबी' समस्त सानार ॥६॥
 जानत खोजत खप गया ख मध्य खोजनहार ।
 तब अखो केहे सा" रखा जाका बार न पार ॥७॥
 साई मखा केहे स्वे मीस जे खोजे आ वेस ।
 फीरत ही फीरत फना भया जीनु खोजा परदेस ॥८॥



१ स्वांग (सा गु) २ चूक (सा) ३ नय (गु) ४ मा (सा)
 ५ मुपति (गु) ६ मा (मा) ७ नयु (सा) ८ ए हि (सा गु)
 ९ बिबारो (सा) बीबारो (गु) १० पुम (सा) ११ पुस्य (सा गु)
 १२ नयु (सा) १३ ज (सा) १४ मा (सा) १५ बीबी (गु)
 १६ स्वे (सा) ।

मरुँसां अग

जो जन होवे राम का सा राम बरुसा राख्य ।
 कहा' बबुधी भटकत पीरे सुन अजगर की साख्य ॥१॥
 अजगर रेहे आनन्द में न करे आस उमेद ।
 सो पद्यु ने पुरुष नीच हे जे बन्धा न समझ' भद ॥२॥
 जो बाना सीना सीच का सो मन नीमडे 'सीमास ।
 काट' भाषा आनंद ग्रह तो अखा न लागे काल ॥३॥
 नीधणी भाषा का धणी' साखा सुरजणहार ।
 धणीयाते बेखा अखा बदक' पद जो भार ॥४॥
 तुष्ट पुष्ट बन बे पद्यु नहीं काहू की आस ।
 धणीयाते देखो अखा पीठु नीचसा माम ॥५॥
 नीरामब नीप्य में रहे" नार्हक नरबह भाग्य ।
 देहे दरसी दुरबल अखा रहेत बध्यादुगु" साम्य ॥६॥
 मर हाव नाराय्य" का ना भस अटक तु आहार ।
 अखा न ताब अनकु ज" बाहे देदार ॥७॥
 जब मुरीजन सांहांमा हुआ तब असन गहो भायास ।
 ज महाराजा (म)माभी अखा ना' नीप्य ताबे पास ॥८॥
 जरने" का जुमसी" बसा सगार' सली को सात्र ।
 जा" असन मसन कु उर धरै ता अखा हाय अकाज ॥९॥

१ मरोमा (मा) २ क्या (मा) ३ बाबे (सा) ४ पहेया (मा)
 ५ गु (गु) ६ काट (मा गु) ७ नीधणी धणी—निधनीया बाका धणी
 (सा) नीधणीबा का है धणी (गु) ८ जे (मा) ९ जन मये (मा)
 १० नीर (गु) ११ रय (मा) १२ भाषा (गु) अविम्वन (मा)
 १३ नाराय्य (मा गु) १४ ना (गु) १५ मब (सा गु) १६ जमने
 (सा) १७ मुबयो (मा) १८ नाब (सा) १९ तब (मा) २० (गु) ।

मन हो रहे महाराज का भुल्या मीन घर आय ।
 आत्मम जाम्या बीन अखा' हाटु हार बेनाय ॥१०॥
 सठ अब सो साधन करे ज्युं जीव की जड़' जाय ।
 मंद मर्य मन मारे नहीं त्युं त्युं पड्य' पोपाय ॥११॥
 जड़ काटा' फल उपजे सो कल जानल गुरुबाल ।
 जे जड़ सीचा फल उमटे' ताकु खावे काम ॥१२॥

८

१ क्युं (ता) २ लडवा (ला गु), ३ पैड (मा), ४ पड (गु) ५ काटे
 (ता), ६ हाटवा (गु), ७ उपजे (गु) ८ उमटे (ला) ।

संपट अंग

लपट मोभी सासबी नीलज ओर भवाङ्ग ।
 अखा असत्य नहीं आस्यमा जैसे छाया साङ्ग ॥१॥
 जैसे कुमटा बाम्बनी कुटा मन फजीत ।
 सो हरे फरे हरीजन में पण एसी मन की रीत्य ॥२॥
 सो बचते बढते देखीये कहे सुने गुनग्राम ।
 ज्युं अखा कंठ पयाधरा' अखा न आवे काम ॥३॥
 मानन की सेह' गाव' हे मख ता' मखनां साय्य ।
 अखा मसे जो बगनी' तो वड्या' रहे रघुनाथ ॥४॥
 से तीन बीम ज' श्रीहरी ओर' सीर दब सग नार्य ।
 आप पकावत' पंच में सास्का सीरदार' ॥५॥
 बचते बढते देखीये' सुगत सुगावत मान ।
 कस पावत रामकुं' भमा कपट का मान' ॥६॥
 नाथ अविह' नहीं नारथये' धन आये धर्म नीच ।
 मत आगे सत्य ना बछु' जे कस' बीप के कीच ॥७॥
 पंचज' पड़ी' तल रहे दादुर दुरवत जात ।
 र्यों सत्संग छाड़ु' अखा' पसु बीये पंच स्यात' ॥८॥

१ जो (सा), २ सै (जु) मय (सा) ३ समावते (पु) बाव
 (सा) ४ रहे (पु) ५ अयना (मा गु ३४०) ६ पणा (मा ३४०)
 ७ छी (मा) ८ मंतन (मा) ९ बगजे (मा गु) १० X (सा)
 ११ पंचाये (मा) १२ सीरदार (सा) १३ कचते देखीये—दृष्टि
 तित्व मित्या करे (मा) १४ केन रामकुं—तो हु न पाव आठमा (मा)
 १५ म्बान (मा) मान (ग) १६ अविह (मा) अर्थात् (पु) १७ नाथ
 (मा पु) १८ अखा (मा) १ पड़े (मा) २० ज्यु (मा) २१ ने
 (ग) बढ (मा) २२ छोड़ी (मा) २३ रहे (मा) २४ पात (मा) ।

पाप ताप सब बामीने अखा सत के संग ।
 सा नीकट के दुर पड़ ज्यु जैन बस्यो' कंठ गग ॥९॥
 अखा बीषय की अक्ती ज्यु जवन के' द्वारे गाय ।
 सेवपण' स्वारथ लीयां' सो' जानत' नहीं महिमाय ॥१०॥
 बीष ओ सतसग करे सो बीष पड़ बीघात' ।
 ज्यों भाग्यहीना' रसायनी अखा" न घाते घात ॥११॥
 आसा मुखी अभागीया जो घर झुल गजराज ।
 दधीच" पे" जाचक भया अखा देख' देवराज ॥१२॥
 नरासी नर राज्य" हे जा कटी" न मीलत" कापीन ।
 अन मागे' सो नाथ पे कबहु न भाल दीन ॥१३॥
 मत" मृकीने मानवी बीघ्यसु करा बीघार ।
 ना अण आयास आत्यमा सहेजो' पाम्या' पार ॥१४॥

१ बसत (सा) बसे (गु) २ जवन के—जवने (गु), ३ सो (सा)
 ४ सिधे (सा) ५ पण (सा), ६ भुमें (सा) ७ बीपई (गु) बिपयी (सा)
 ८ जा (सा गु) ९ व्यापात (सा) विपात (गु) १० कर्महीन (सा)
 ११ तादे (ना) १२ दधीची (सा गु) १३ का (सा), १४ देख (सा)
 १५ राज (सा), १६ कटी (ना) १७ मन (ना) मीन (गु), १८ न
 (गु) १९ न (ना गु) २० मान (१८०) २१ अखा (सा) ।

घीदाकास अग

आँकुरे अङ्कुरे अम्बुनो बीपे उर्ध्व वाम वसवीस ।
 गङ्गा सारी अहो अखा है ज्यु का त्यु जगदीस ॥१॥
 अखा जाय जाय काहा जायगा आगे-आगे आकास ।
 गाय गाय काहा गायगा बाधा दम्ब बीसास ॥२॥
 ज्यु पार नहीं आकास का त्यु दम्ब भी अनस अपार ।
 अखा तपासो ताही कु जे कोण है बोमणहार ॥३॥
 बोले सा बोलता नहीं है अबोलते का भेद ।
 ऐसे आवे बीम अका काहा पडे होये नेद ॥४॥
 हरीजन हाजर । हुकम हरी त ।
 नेम बेन बेहेन एवे ॥५॥

दुर्मति अंग

ज कोई दुरमति धीवकु हरीसुन मोलत हउ ।
 जैसे कूलटा काम्मनी पती तन जारकु^१ भेत ॥१॥
 हरी प्यारा बाहु^२ अखा भावत^३ हरी की बात ।
 रीस परे रग बहु बने होत नहीं बीषास^४ ॥२॥
 अखा छेहेन जनमकु हाये ज्ञान की प्रतीति ।
 नहीं तो अटके भव बीष^५ ज्युं तसी बहेल की रीस्य ॥३॥
 असप मति अमागीया कब^६ मोले हरी सग ।
 दोष देख^७ सा दुरमती ज्युं त्यु पढ ताकु^८ भग ॥४॥
 हरी त्रीपा बीष्य^९ सुन अखा प्राणी पगु समाप्प ।
 उपदेश अंग^{१०} त्यागत नहीं नक मज्जत नीखाय्य ॥५॥
 अखा आत्मम प्रगट ता आग कर्म अनेक ।
 ज्युं अनेक^{११} उडगण आयमे जब उदे भया अर्क एक ॥६॥
 आत्मम ज्ञान बीना असा भुई^{१२} जानो^{१३} ससार ।
 "सो मण केस जसाइये न साप न खाक अगार ॥७॥
 सुग्या सुनाया काहा भयो जो सुनत न आइ पाँव^{१४} ।
 अन्ना दजायो का भयो ज्युं बेहेरे पाग सर ॥८॥

१ जारे (सा) २ बलकु (सा) ३ मने (सा) ४ कबहु (सा)
 ५ व्यापात (सा) ६ भव बीषे—भूवन में (सा) ७ X (सा) ८ बल (सा)
 ९ अमागीय कप—अमागीयायु का कपि (सा) १० देख (सा) ११ बिष (सा),
 १२ बिन (सा), बीमु (गु) १३ मति (सा) १४ अमठ (सा) १५ ऐमा
 (सा) १६ ए (सा) १७ ज मे (गु) १८ ज्युं (सा) १९ ज्ञान (सा) :

भीदाकास अग

बाङ्ग्य' अटक' अम्यनी भीप' उष वाम वसवीस ।
 गङ्गबङ्ग सारी अहीं अखा हे ज्यु का त्यु जगदीस ॥१॥
 अन्ना' आम जाय कांहाँ जायगा आगे-आगे आकास ।
 गाय गाय काहा गायमा बाधा' शम्भ बीसास ॥२॥
 ज्यु पार नहीं आकास का त्यु शम्भ भी अनत अपार ।
 अन्ना तपासो ताही कु जे कोष ह वोग्गहार ॥३॥
 बोसे सो बोसता नहीं हे अवोससे का' भेव ।
 ऐसे आबे बीन अन्ना काहा पडे होये बंद ॥४॥
 हरीजन हाजर हे अन्ना हुकम हरी के माहे ।
 नम बेन बेहेन एन हे एम नेह नीबाह ॥५॥



दुर्मति अग

ज कोई दुरमति जीवकु हरीसुन मोलत हउ ।
 जसे कुलटा काम्प्रनौ पती तन जारकु' देत ॥१॥
 हरी प्यारा जाकु' अखा भावत' हरी का वात ।
 रोस परे रग बहु बने' होत नही वीधात' ॥२॥
 अखा छेहेल जनमकु हाये ज्ञान की प्रतीति ।
 मही तो अटके मव बीप' ज्यु तसी बहेल की रीत्य ॥३॥
 असप मति अभागीया कब' मोले हरी संग ।
 दोष देब' सो दुरमती ज्यु र्यु पड़ साकु" भग ॥४॥
 हरी क्रीपा वीण्य" मुन अखा प्राणी पशु समाप्य ।
 उपदेश अग" त्यागत नही नर्क भन्नस मीखाप्य ॥५॥
 अखा भात्यम प्रगटे तो आग कम अनेक ।
 ज्यु अनेक' उडगण आयमे खव उदे भया अर्क एक ॥६॥
 आत्यम ज्ञान बीना अला भुई" जाना" ससार ।
 "सो मण केस जसाइये न ताप न खाक अगार ॥७॥
 सुग्या सुनाया बाहा भयो जो सुमत न आइ पोग" ।
 मया बजामा का भयो ज्यु बेहेरे आगे सख ॥८॥

१ पारे (सा) २ जनकु (सा) ३ यमे (सा) ४ बबहू (सा)
 ५ व्यापाठ (सा) ६ मव बीपे—मूबन में (मा), ७ X (सा) = बत (मा)
 ८ अभागीय कप—अभागीवाकु ओ कर्ति (मा) ९ रेमे (सा) १० बिच (सा)
 ११ बिच (मा), १२ बीपु (गु) १३ मति (सा) १४ अनत (सा) १५ ऐमा
 (मा) १६ ए (सा) १७ ज मे (गु) १८ ज्यु (सा) १९ जात्र (मा) ।

सुने सुनाया काहा भया आ अंतर ज्यास न हाप ।
 पाणी भोग्या भुज प्यु चसटा मरमी लाहाम ॥९॥
 कचे कचे' कषा सुने' अवाह' न जाव हाप्प ।
 नीरमल नेत्र बिना अला काहा करे वीसासात ॥१०॥



वात्यम परीचा को अग

मुज बात्या' ते बीम ते ये जाना बीम बीम ।
 बीम देखते नहीं मया गु का त्पु हे' सीब' ॥१॥
 त्पु त्पु बीमण हृषणा बेरस की बक ओर ।
 मया सह म्याहां सूरमा बीम सांहां की ठोर ॥२॥
 बीम केहे मै' सो मया सीब सांहां बीमण न होय ।
 बीम ईस्वर जामें' मया सो जानत बीरना कोय ॥३॥
 मोरन जाण ओ ही धखा ठोर नहीं ज्या ही नाम ।
 मत कोई भुस' मम में बसता देखी जाम ॥४॥
 हरी देखे सो हरी मया' बीम देखे सो जत ।
 ताकी बीमत्य ताही में ओर बाहा" पडे" तत ॥५॥
 मान सहो वे सतगुरु सहो मम सब एही उपाय ।
 हु तु बीम हे आपे हरी समझ्यां हंत पलाय" ॥६॥
 हुं जाल्या तो मम मया' तु जाया तो" मम ।
 हु तु" एक ठेहे नहीं ताब गाने दस ॥७॥
 जाणनहारा जाण मया जमत्य न जावे जाल ।
 जे जागे' जुग तरफडे ते यमु जान पंपास ॥८॥

१ बीमते (गु) बासि (सा) २ बीम (गु) ए (घा) ३ बीम (मा)
 ४ त्पु त्पु हुं तु (मागु ३४० २६७) ५ नहेतेमें (मा) कष्टे मे (गु) ६ ता
 (गु) ७ भुस (मा) ८ जिन (मा) ९ भुसो (मा गु) १० और (सा)
 ११ मया (मा) बहा (गु) १२ पाह (मा) पड (गु) १३ मैं नहीं नहीं
 तु हरि सब हुं तु बीम जाणा । हुं तु बीम हेबाये हरी समझा हे
 पैसाव (घ ३४०) १४ वे (मा) १५ ग्याव (मा) १६ पय (मा)
 १७ जाने (मा गु) ।

वीरवी वीगत्य करी मध्य सके मरड न लहे जे हेमुमाम ।
 ते पोत प्रकाश भये अखा पाम्यो अमृत पाम ॥६॥
 भेद न समझे भम श्री' वेहे भुपण नो भार ।
 बुपण' द्वैत कंठे अखा न चीम्यो सद्य वीचार' ॥७॥
 अखा वीष्मारे वीपु' महीं दो' बुपण सामु' द्वैत' ।
 त्यांही घे धाता न समजे ज्यम अग्नी न लामे सीत' ॥८॥
 आत्यम त्यांही अटकण मही अखा अटकण त्यांही' माय ।
 सब ज्ञाने' सापी'' कसो न त्यांही जांही'' अम्याम ॥९॥
 सेहेजानद समरस सदा योग'' पीना नो साहो'' ।
 गगन गामी गुरुमुक्ती अखा ते जागे सेहेज समाहो'' ॥१०॥
 सब कोई बुद्धत पीठ को मे सो बुद्ध जीव जीव '' ।
 वाचा रंभन सा अखा'' सेहेज ही सेहेज सब सीव ॥११॥
 मत कोई खोजो रामकु' आपा खोजा जाई ।
 आपा खोजत राम हे ओर अखा कांही घाई ॥१२॥
 सीध पेंड सब चल जात'' बरम'' कुल बाल ।
 टेढी चाल बस अखा जे'' मीमा क्यालीक'' के क्याल ॥१३॥



१ जने (मा) २ ते (सा) ३ म वीचा—विवा लक्ष्मिचार (मा)
 ४ बुपु (मा) ५ सा (मा) ६ वपहायु (मा) ७ द्वैत (सा) ८ वीव
 (सा) ९ त्यां जवहा (मा) १० लय जान—मर्थजने (सा) ११ माधि (सा)
 १२ न जाहा—ज्याव त्याहा जवहा (मा) १३ ए (मा) १४ स्टाव (मा)
 १५ समाव (मा) १६ म (मा) १७ मा जना—माज ए (सा) १८ गुम
 (मा) १९ रेंना (मा) २० बर्य (सा) बरम (गु) २१ जव (सा)
 २२ क्याल (गु) ।

उपदेश अंग

जो वे कृबुधी जीव हे काहा भयो कथीया ज्ञान ।
 उगुगला' न छाडत कालमा जो साम पढाया' पान ॥१॥
 मखा कथे ये कछु नहीं जो ल्युं अंतर राग ।
 साधे पन सीधे' नही जेसे भाइ का ज्योग ॥२॥
 कछा सुन' जो सत का' तो जीवत मुक्ती कु' पाय ।
 उगु पास गत्य' पाणी हुआ ल्यु भव वेदना जाम ॥३॥
 कान न मंडत' कबुधी टेक न छोड़त टांक ।
 प्यास' वर्षया मर गया तो क'हा गंगा का बांक ॥४॥
 ताहे मखा 'तुं गुरु करे' जे नीरदावा नीसंघ' ।
 उगु कुजी के बीदुआ' सुरत ही आवत' पख ॥५॥
 हरी गुरु संत सास्त्र केहे 'केह साधारण बहु लोक ।
 आत्म' ज्ञान पाया मखा' सछ लटीजे' सोक ॥६॥
 मोक मीटा' सीतल भया' मीसे सीतलता गुरु पास ।
 अग्रा सा गुरु' छोड स जो बाटे मन की आस ॥७॥
 तन मन धन सब बारीयि जो कोई दे ब्रह्मज्ञान ।
 जीव टानी स्वे जीव करे सद्गुरु द अमेदान ॥८॥

१ उगु पानी (सा गु) २ भराया (मा) ३ सीस (मा) ४ माने (मा) ५ भरा (मा) ६ मुक्त हि (मा) मुक्ता कुं (गु) ७ मी (मा) गस (गु) ८ माने (मा) मांडे (गु) ९ प्यास (मा गु) १० कहे (मा) ११ साधारण (मा) १२ निशक (मा) नीर्मर (गु) १३ इंडमा (मा) १४ सुरते - आपत—भूत बीबाई (सा) १५ और (मा) १६ बाट (मा) १७ बिमा (सा) १८ मछ मटीजे—मिट नहीं (सा) मछन्नी म (गु) १९ मिटे (सा) २० कथे (सा) २१ गुरु का (मा) ।

सन मन का बड़पन काहा जो पाईये निरतार ।
 दिखे ते' अहरण' न होईये जो पोहोचावत पार' ॥९॥
 सदगुरु सीपनू हरी बीया सीप गुरु कु कहा वेह ।
 तन धन गमा पासघ' में सीर रण' का रह्या संदेह ॥१०॥
 अथा अस्त सब आर्यमा सो भेदो' कु भोग ।
 पण जीव हरी कु तब भीले जब सदगुरु मीसाये' जोग ॥११॥
 मान मुकीने मानवी करा संत को' संग ।
 नहीं तो काचा भरसो अथा' ज्यम बीस बस मन भग ॥१२॥
 गुणी काहाप्ये अलगुण ययो 'गुणननु बड़पु गुमान ।
 ना प्रीछ ना पुछी सबे ज्यम 'ग्रहा भाषमे भाण ॥१३॥
 गुण गाने गसीत या काई खप करीने हरीने खोल्म' ।
 पण गायेज गाविन्ध नहीं मल' 'हीरा' जाप्या बीना रोल्म' ॥१४॥
 सेवमेत संत देस ह ल्ये सकी सो ल्यो एह' ।
 पुकार पुकारी बी हे मखा नावा माहोर' 'वीगुचण होहे' ॥१५॥
 प्रसग मील्या हरी ना मील्या गुरु ज्ञानी के संग ।
 'जीव ममामी' 'कांगडु जल परसत नहीं भंग ॥१६॥
 अथा सागर ब्रह्म का मये सत के साध्य ।
 शब्द रतन सांही प्रकटे सा बड़' पारपय' के हाप्य ॥१७॥
 सीप नम समुद्र भ' सो आतुरता होई जाई ।
 ताकु' धन तेसा कर्म मुक्ता स घर' जाई ॥१८॥

१ X (सा) २ अहरण (सा) अहरण (पु) ३ कहेन अता निरधार
 (सा) ४ पण (सा) ५ पारम (मा पु) ६ अण (सा) ७ भेदु (सा पु)
 ८ जीव मीले—जुगिया न गावे राम का (सा) ९ जब मीमावे—
 बिना महुमुद के (मा) १० जो (सा) ११ कमुपिया (सा) १२ जें (मा)
 १३ ग्रहो (मा) १४ सोल (मा) १५ ए (मा) १६ हरि (सा)
 १७ रोळ (सा) १८ ल्यो एह—लोह (पु), ल्यो लीप (सा) १९ बड़प (मा)
 २० हाप (मा) २१ तो (सा) २२ वापक (सा) २३ जाप (मा)
 २४ पारम (मा) पारम (पु) २५ माप्य (सा) २६ तो (मा) २७ घर
 (मा) ।

जाकु रत्य जसी अखा ताहां तेसी नीरपज्य होय^१ ।
 ज्याके मोती नीपजे^२ मही मुख^३ वीप होई सोय^४ ॥१९॥
 अखा आत्यम आप में पण जीव म जाणे पास ।
 आपमा दुध अनुभवे महि ज्यु गो मुपावे^५ घास ॥२०॥
 अखा रक्त भी समुजा^६ सुखी असमजा बुधिया राय ।
 +बाधा कचन भी^७ न तरे काठ तरें नै^८ तराय ॥२१॥
 अखा समझकू हृष नही असमझ^९ बाध^{१०} ब्रह्माड ।
 समझा निर नवाणका अब समझ्या पाणी भाड ॥२२॥
 अखा अनुभव अकंभीन दहु दस नाहे प्रकास ।
 ताचे सेवो सदगुरु जे^{११} कर्म गहेन करे नास्य^{१२} ॥२३॥
 सदगुरु कारन मुक्ती का ज्यु भोग का कारन हे ध्य^{१३} ।
 ताचे सेवो सदगुरु ज्यों चाहो राम रतन^{१४} ॥२४॥
 ज्यु रत्न मीसे रत्नागरे ल्यु राम मोसे गुरु पास ।
 ताचे सेवो सदगुरु जे पूत दरिद्र करे नास ॥२५॥
 जीव सकल पथर अखा सदगुरु करे ताहे देव ।
 सोई जस्त में पुभीये ए सदगुरु का भेव ॥२६॥
 मोहो^{१५} सखी जीवकुं बसा सदगुरु साहत^{१६} ताहे ।
 पण जीवते वीवकुं^{१७} उतरे जे भाव भरोसा माहे ॥२७॥
 अखा धंदम सगुरु ज्याके पासु धन बसाय ।
 +बांसु बास न भेद ही गारुम पढ़ी हूय^{१८} माय ॥२८॥

१ जाय (सा) २ सो (सा) ३ मुखे (सा) ४ जाय (सा) ५ मोमू
 खावे (सा) गो मुपावे (मा) ६ समझ्या (गु) समझ्या (सा) ७ ज्यु (मा)
 ८ बाधा (गु सा) ९ × (सा) १० × (सा) ११ अण समझे (सा गु)
 १२ बपे (गु) बम (सा) १३ × (गु), १४ माहासा (गु) नाग (सा)
 १५ भाग कारण हे धन (गु) माय का कारण धन (मा) १६ माह सपे (सा)
 माहो सरपु (गु) १७ कारत (सा) १८ जीव" कु-जीव ताको बिय
 (मा) जीव ते कुं वीप (गु) १९ पण (सा) २० ह- (गु) हरे (सा) ।

* यहाँ से सा के अनुसार 'सदगुरु अंग प्रारम्भ होता है ।

प्रच्छा गांधी जीब हे सव ओपछ बाके' हाय' ।
 सो बंद धोगा मरे रोगीया साहे' सवा गुरु' बत्तावे' बार ॥२९॥
 जोही' गुरु का खोज सँ जे देखे देखावे राय ।
 वे धाये हि भरकत फीरें काहा करे अंगले काम ॥३०॥
 दीव धाये सा जीव हे' + ब्रह्म धाये सा ब्रह्म ।
 दीव ये पारत पाईये जे' + बत्तावे' कर्म ॥३१॥
 सीस सदगुरु करता नही' गुरु' बीना न सरे काम ।
 दु' सीस बीना नीपजे अन्ना सो ही' पुरव घाम ॥३२॥
 पन बेघी' जे सीह अन्ना सलमे जाय सदरूप' ।
 तकी सुत' पकड़त' नीरतकु' सा सदगुरु' सीस अनूप' ॥३३॥
 प बेघी माया' यहु शब्दबेघी सा ज्योष ।
 हेम्य बेघी सेहेम्य मा रमें रूप बेघीकु राख ॥३४॥
 प में बोहत' राम' हे' अस्य अविलम्ब जाय ।
 न समाना' सेहज में बीदेही' काहावे सोय ॥३५॥

५

१ अपच (मा) जाके (गु) २ हाट (गु) ३ लु (मा) ४ (सा)
 बुर (गु) ५ बेजावे (सा) ६ अन्ना (मा) ७ ५ (सा) ८ अपसे
) ९ बीर (मा) १० अन्ना (मा) ११ बेजाव (मा) १२ सीस -
 नही-निप्य करे मो मुट नही (मा) १३ बीर (सा) १४ पन
 १५ मो (मा) १६ ५ (सा) १७ सलमा जावे रूप (मा)
 १८ गुरु (मा) गुरु (गु) १९ पकड़े (मा) २० मुरतको (मा) नीरतकु
 २१ ननुमुक्ता (मा) २२ भूप (मा) २३ जोडा (मा) भाबी
 २४ बहातु (मा) २५ रमे (मा) २६ पय (मा) २७ नवावे
 २८ बिदेह (गु) ।

गिरीबि' अग

अखा गरीबी हे भलो मनस्या बापा काय ।
 आप मिटाया आप' रहे हरी काज सारे आय ॥१॥
 सुख गरीबी चेतना साध' बीज्यार समाय ।
 और अखा गरीबी नहीं ए तो' डीग आगे हार आय ॥२॥
 अपना आप बीज्यार के समझ' गरीबी कीनी' ।
 पड़पा प्राण मेरा नहीं एसी अखा सुख' बीहीन ॥३॥
 सप सामूष' होता साईं का विषय मेरा होता टांक ।
 तो भी मन में मानता' अब नाई अखा में रोक' ॥४॥
 अखा गुरु तू ते करे जेहेने तोहे प्राण पिड ।
 बाकि सब ससार ब' गुरु सीस साहब मड' ॥५॥
 नाम रूप नर ने बीपे ज्यम मोहोर पड़े छे घात ।
 पण बीदसे मय्य व्यापरे घात सघ मे' साक्षात ॥६॥
 वस्तु' बीचारये वस्तु' छे नाहीं ताही अखा उपग्य' ।
 जेसी' अंघी भोम्यकी' ते भुचरने माध्य मृध्य' ॥७॥

१ गरीब (सा), गरीबी (गु) २ मीटाया (गु) ३ मीटायांवा रहे (गु)
 मिट्या बापा रहे (सा) ४ सोको (सा) ५ बिचाटी (सा) बीचार (गु)
 ६ जो (सा) जे (गु), घात (सा) ७ समझी (सा), ८ लीन (गु)
 ९ पिड (सा) पंड (गु) १० शुद्ध (सा) ११ सामय्य (सा) सांप्रत (गु)
 १२ मोफता (सा) १३ नाई - रोक-नहीं अखा मे रोक (गु) नाहि अचारा
 रोक (सा) १४ मे (गु) १५ मंडय (सा) १६ मयल्ल (सा) १७ १८
 वस्त (सा) १९ नहीं तो छे उपाय (सा) २० अखा ! (सा) २१ भूमिनी
 (सा) २२ आपव्याध (सा) ।

(२४६)

अन्ना करे तो ए करे बिण्यु' + मा करे
सर्वातीत तु स्वें धई गध्य मोरो उपदेस'
बासध्य पीछण्य बेसरी' कमली ज्ञानी का
वण फसे अब भोगेवे फावा पछी बड़ जा

✱

ब्रह्म सागर अंग

अद्या वीचारची ज्ञेयता सागर ब्रह्म सदाय ।
 सुत्यु* रेहे सभराभरी जो वीच्यारणहार बीलाय ॥१॥
 मीस्थे* नरने दाहसो वस्तु गरमनी बात ।
 वेहेवार बीटपण बीखने बघन ए उत्पत्त ॥२॥
 अह सये अद्या सकल्य वेहेवार नीस्थे परमाण ।
 अहंमा सोह भली गमुं जाण गया रही जाण्य ॥३॥

✽

१ विचार अंग (मा) २ मुरत (छा) ३ मिस्थय (छा) ४ गई (छा) ।
 * इस अंगकी २ और ३ यावियां बिनाकुल गुजरती होने की वजह से छोड़
 दी गई हैं ।

श्रीदा' अग

पद' रहे तो पद सीप्य जे क' पद सीयल' अगम्य ।
 पदारथ पद में जहे जा होय अखा मुद मम्य ॥१॥
 पद सोधे ते पद रहे गाते भली कहैबाय ।
 मीष्टान' भोज्यन' ता भलु जो पचे न बसन' न पाय ॥२॥
 सीस अखा का का नहो गुरु सारा संसार ।
 होते होने हो गई समझे' आया' पार ॥३॥
 ना गुरु का कीया सीप ह'त ह सीप होत अपने भाय' ।
 अखा नीपज्या मेघये तो सब कोई ताकु चाहाय' ॥४॥
 मतमता में रहे गया अखा सब संसार ।
 बिप' में पड़ीया नाब ज ठाकु नही बारपार ॥५॥
 बीप सारी दरियाव में सा दरीया बीप में नाहे ।
 अखा मतमत बाहरा सबकी निमत्य कराह ॥६॥
 नाही मता पंचभुतकु मत नही गेबी साई' ।
 अखा मतमत में' मत पड़े तु सा सेहेज्य समाई ॥७॥
 अया जानी सा परा जे पलो बीरबन दाय ।
 टुक मी बीस भाग जैसे' पण पीछा न छरे पाया ॥८॥

१ मि'ग (मा) मीठा (मु) मि'प्या का बज (३८०) २ पद (सा)
 ३ सीप्य (मा) ४ सीस (मा) ५ मिष्टान (मा) मिधाम (मा)
 (२६०) ६ भोजन (मा २६५) ७ वसन (मा) बीसन (मा) ८ नि
 (सा) नीप्य (मु) ९ मतमत (मा) मतमत (मु) १० आये (मु) पा
 (मा) ११ भाव (मा) भाव (गु) १२ पाय (मा) पाय (मु)
 १३ बज (मा) बज (ग) १४ पाय (मा मु) १५ X (मा) १६ प
 (सा) ।

પરપંથ પસારી મત કરે હુકમી^૧ બોધે સોહે ।
 સોહી રામચન સાચા બધા બે મુલસ આપા સોહે ॥૯॥
 અતર અપના મત કરે કોહુ કિસી કા નાહે ।
 નરકે સગ મારી બસે બસા સો અપને તાહે ॥૧૦॥
 હાસી છલ હરામ દે હાંસીયે હોયે જાન્ય ।
 હાસી યે ગયા બધા બાદ્ય કુલ છેમાય્ય^૨ ॥૧૧॥

૫

श्रीसा' अग

पद' रहे तो पद सीप्य जे ख' पद सीयस' अगम्य ।
 पदारथ पद में जड़े जा होय अन्धा गुरु गम्य ॥१॥
 पद सोखे ते पद रहे गाते भसी कहेबाय ।
 मीष्टान' भोजन' ता' भनु जो पचे न वमन न बाय ॥२॥
 सीस अन्धा का का नहीं गुब सारा संसार ।
 होते हाते हो गई ममज्ञ' आया' पार ॥३॥
 ना गुब का कीप्रा सीप होत ह सीप होत अपने भाये" ।
 अन्धा नीपज्या भेष्य ता सब बाई ताकु पाहाय" ॥४॥
 मतमता में रहे गया अन्धा सब संसार ।
 बिप" में पड़ीया नाब ज ताकु नहीं बारपार ॥५॥
 बीप सारी वरियाब में सा वरीया बीप न नाहे ।
 अन्धा मतमत बाहरा सबकी किमल्प कराह ॥६॥
 नाही मता पञ्चमुनकु मत नहीं रोबी साई' ।
 अन्धा मतमत म" मत पड़ तु सो सहेज्य समाई ॥७॥
 अन्धा ज्ञानी सा घरा जे लसो बीरबन दाय ।
 टुक मी बीस आग जले" पण पीछा न घर पायो ॥८॥

१ गिता (ना) नीता (पु) विप्या का अग (१६०) २ पद (ता)
 ३ सीप्यजे (ना) ४ सीस (ना) ५ मिष्टान (ना) मिष्टान (पु)
 (२६७) ६ भोजन (ना २६७) ७ वमन (ना) बीमन (पा) ८ विप्य
 (ना) नीप्य (पु) ९ समजत (सा) समजत (पु) १० भाये (पु) बाय
 (ना) ११ नाब (ना) नाप (पु) १२ पाद्य (ना) बाप (पु)
 १३ अग (ना) अग (पु) १४ गण (सा गु) १५ x (मा) १६ बरे
 (सा) ।

परपच पसारा मत करे हुबमी^१ बोधे तोहे ।
 सोही रामजन साधा अछा धे भुइस आपा सोहे ॥९॥
 अतर अपना मत करे कोहु किसी का नाहे ।
 मरके संग नारी जले अछा सो अपने ताहे ॥१०॥
 हासी खेल हराम दे हासीचे होये आन्य ।
 हासी धे मया अछा यादव कुल छेमाग्य^२ ॥११॥

५

नुगरा सुगरा की पेहेल्लान'

नुगरा' सुगरा' कीवकु बर्यो पहेल्लाम्या जाय ।
 ताकी कीमरय ए बख्ता गुरु बचन' ४ ठेहेराय ॥१॥
 सुगरा बोले ईतना जेता होय नीवाही ।
 सुगरा बोहोत बके बख्ता अमु बोमार' वाही ॥२॥
 सुगरा बरते मुस्सीया' नुगरा बरत खोस' ।
 मन्ना नुगरा सीधे' ज्यों सो फीरी फीरी ताके बोस ॥३॥
 एक गुरु के सीख जसा नुगरा सुगरा दोस ।
 अमु चार पयोघर रहे" अजा दो दुध दो खान्ती होय ॥४॥
 दोनु कपनी एक हे फेर बोहोत" लक्ष माहे ।
 हन बग जल बंट के के मोती मछरी जाहे ॥५॥



१ नुगरा मग (ता) २ नुगरा (मा) ३ नुगरा (मा) ४ ये (मा)
 ५ न (मु) ६ बोधारी (मा) ७ जाय (मा) ८ नुगरा बोले इतना (मु)
 नुगरा बरतन गुरु बिने (मा) ९ गोन (मा मु) १० मिह (मा) ११
 (मा) १२ बहो (मा) ।

हेरान अग

ज्याणपणा वाते मने बघते' बघ बसाय ।
 हे उसटी एसी अखा फीरे ही फारक' ही जाय ॥१॥
 सोक कहे पाया काहा होय पावनहार प माल' ।
 आखा सर ससीता' मील्या नीर भीम्य एक तास ॥२॥
 जाता आता नहीं अखा होत भावना फर ।
 ईत ओरुं संसा रहे' उत आरु सु सेहेर' ॥३॥
 इत उत मन समस्य मने' केहेत हु वात बनाई ।
 घटमट' मन की गई अखा तब कोन काहाकु' पाय ॥४॥
 तन बढते मे' मन बढो मन बढते बढी बसाय ।
 मन घटते सब घट गया कोन कोनये जाय' ॥५॥
 सरकारी' बज्यारकी' हरो' घर' दी ब्यार ।
 एसो काया सब अखा मन राखे सु प्यार ॥६॥
 जसा ओसा निर का परत परत गम' जात ।
 अया ऐसी देह हे ताकी केतिक बात ॥७॥
 जैसी घन की बाबुरी घरी पसक की छाहि ।
 ईत बढ उत उतरे अया ऐसी जाय ॥८॥

- १ बढते (सा) २ फारणउ (गु) ३ ने माम—पायमाल (सा)
 ४ सराता (मा गु) ५ मसार दे (मा गु ३८०) ६ सुंघतेर—मूनिर (३४०)
 ७ बिना (सा) ८ X (सा) ९ घटमठ (मा) १० की (मा) ११ X (सा)
 १२ पाय (सा) १३ गु (मा) १४ पहाणकी (सा) बजारकी (गु)
 १५ रही (३८०) १६ पढ़ी (सा) घरी (गु) १७ वीर (सा) नीस (गु) ।

ऐसे बगुला^१ बाउका बोहे^२ में हो बोलाय ।
 इतने पर इतरी^३ काहा अखा तुम मम गुमराय^४ ॥९॥
 चदकसा ज्यु^५ देह है पुरा तपे एव^६ रात्य ।
 बीदस परवा संम है^७ अखा समझमे^८ बाठ ॥१०॥
 जेसा माव ल्यु देह है वायू के हाथ्य मदार ।
 अखा मस्सा ताहेका राखे सोही गुमार ॥११॥
 जेसा भंगुर देह है तेसा भंगुर भोग ।
 आल्ये रहे तन घन अखा धुतु^९ भागठ भोग^{१०} ॥१२॥
 हुसी हुसी देते तारीया छम्प जीवन के ओर ।
 आकतुर^{११} उहे अखा ज्यु बकता रहित कटोर ॥१३॥
 ज्याका सर्भ^{१२} हिले अखा सो ही बागठ सर्भ ।
 तेरे हीया^{१३} का मुलकि^{१४} एक ठोर एक छन^{१५} ॥१४॥
 ज्या^{१६} अप्पनी तु उमीया ताव^{१७} उग्या संसार ।
 इरिइर अन्न सग एकन्न अखा जी बेर्ये बीष्यार ॥१५॥
 कही सु उग्या कल्प बुध कही सो उग्या तर्भ ।
 पापण पानी एक है अखा रूप और वष ॥१६॥
 स्वर्ग मृत्यु^{१८} पातास के भात्य माव सह^{१९} ज्यंत ।
 उपज बीनरो रहे जगता पातु^{२०} ज्यु का र्यु अंत ॥१७॥
 अखा भात्य की भावना बीन अशीकी^{२१} साहे^{२२} ।
 दखा नहीं मझही सुनो इति जत जरे जराये^{२३} ॥१८॥

१ बगुला (गा) २ बाउका (बा गु) ३ इतरी (सा गु)

४ गुमराय (मा) ५ ल्य (मा गु) ६ बीदस परवा संम है—बीदस परवा मम है (मा) ७ नमझमे (मा) ८ मदार (मा) ९ र्युनयु (मा) ज्यु ल्य (गु) १० मार (मा) भोग (गु) ११ अकतुर (प) अकेतुर (मा) १२ मरभ (मा) १३ ईया (१४० २६७) बाके (गा) १४ मूलकी (१४० २६७ मा) १५ छन (२६७ गु) बर्भ (गा) १६ आ (मा गु) १७ निन (मा) १८ मृत्यु (गु) १९ बह (गु) मज (मा) २० बीन (गु) पाप (मा) २१ बापी (१४०) २२ स्पहाव (मा) लाय (गु) २३ महे (मा) २४ जे जराये—जराय (मा गु) ।

भखा बोसी बातकी भात्यन का परया नाम ।
 इरावती इरपनी^१ भात्यको ज्युं त्युं इष्ट^२ देहे^३ चाम ॥१९॥
 सत्य^४ पुष्प और वीररा^५ परखत भास^६ करोडप ।
 घटत बढ़त न दोठ भखा सग दोष न खोडप ॥२०॥



१ इरती (सा) इरना (जु) २ इष्ट (पु) इष्ट (ना) ३ बढ़ (पु) रहे
 (ना) ४ सत (सा) संत (जु) ५ वीररा (ना) ६ परखत (मा जु) ।

हरिजन अग

अला हरी का भावता सो दुनिया भापत नाई ।
 जे दुनिया सो मीलता रहे सोही हे दुनीवाई ॥१॥
 जे अला हरी का भावता ज्यों पानी में का बंध ।
 ताहे मछी जानत मीन हे सो परसत नाहीं बंध ॥२॥
 अला हरीका भावता परमा न छरत सोक ।
 भीहारखती बास नहीं सादा रोकारोक ॥३॥
 अला हरी का भावता भीतर तैसा बाहारध ।
 बढ़ता बोल बोले नहीं संकृष नहीं संसार ॥४॥
 अला हरी का भावता मायत नहीं मतलुक ।
 मागे जे मनुआ मुया हाँस गई सब सुक ॥५॥
 अला हरी का भावता जैसा जुहर सोह ।
 रग रग रस बस रामसु भसा जात नही साह ॥६॥
 अला हरी वा भावता ना आबरव कीमत्य माहे ।
 जता पारस मनी गरा मोल तोल न बेकाये ॥७॥

१ ज दुनिया— पा०—ज दुनिया में मीलता बने सो भी हे दुनियाही
 (३६०) जे दुनीयां मु मीलता रहे ना भी हे दुनीवाई (गु) ज दुनियामें मिलता
 रहे सोही हे दुनिया—(मा) ७ मछी (मा) ३ बंध (३४०) ईडु (गु)
 बंध (मा) ४ प्रवा (गु) परवा (३४०—मा) १ बहार (मा) ९ संकृष
 (मा) ७ मनुआ (मा) ८ हुवा (मा) ९ होम (सा ३४०) १० जोहर
 (३४ मा) ११ बरम (गु) १२ ना आबरव—नावन (मा) १३ न बेकाये—
 न बे नाई (सा) न वे नाहे (गु) ।

भला हरी का भावता दुजा हे आकाश ।
 माय माय केसा' नहीं ना स्वामी मा दास ॥८॥
 भधा हरी का भावता मोठ हाथ का नाही ।
 जेसा सरणा पाठका' भवीरघ' धारसा' आहे' ॥९॥
 भधा हरी का भावता नहीं करय वा सेप ।
 जी कृष्णागर नीपजे सडस सडस रेहे सेप ॥१०॥
 भधा हरी का भावता सदा लेहेत' नहीं कोय ।
 ज्यु तारा मंडल चाम्यकु' परा ममत न होय ॥११॥
 भधा हरी का भावता' वा' भी मनकी ठहेरे ।
 धरे परे ससता नहीं हे गगन ज्यु गेहेर' ॥१२॥
 भधा हरीका भावता आप्यनी बरसत' भग ।
 ज्यु गगन की बाबुरी काँच' भावत रग ॥१३॥
 भधा हरि का भावता काहु के सरण न जाय ।
 ज्यु गलो मीली रेहे सदा जीत तीत परी'पोपाय' ॥१४॥
 भधा हरी का भावता अम्बर का सा सुभाव ।
 तातासिता बेसीये सो भुतन का भाव ॥१५॥
 भला हरी का भावता पाय दीदेवा देख ।
 पाठ पेडा तांही पंग हे यनत सपन का मेख ॥१६॥
 स्वप्न मीटापर्य या भधा काहे नू करो भटाट ।
 फिरत फिरत फना भया मूल गमाया माट ॥१७॥

१ होवे (२६७) २ पाठका (सा) ३ भवीरघ (सा १४०, २६७)
 ४ बास (सा १४० २६७) ५ आई (सा) ६ सहन (सा), ७ धार (सा)
 बास (सु) ८ ममत (सा सु) ९ कावता २६७) १० काँचो (सु) गया (सा)
 ११ हे गगन --- --गेहेरे—हफ गगन जेही वीर (सा २६७), हफ गगन जेही वीर
 (सु), १२ बरसत (सा) १३ काँचावे (सा) नहीय (सु) १४ पोपाठ (सा)

* मं० १६ से मं० २६ तक की साधियाँ सा बीर सु में नहीं हैं । इति
 प्र मं १४० में दो 'हरीजन को भव दिये हैं । एक में ३२ साधियाँ हैं जो
 इनमें से बाँच । ये बाँच साधियाँ सा के पु १०४ पर मिल जाती हैं ।

सुपने में भोजन कीया अन्ना अघाया कौन ।
 आगन ताई काम है ना तो भसा भोजन ॥१८॥
 स्पीति बाध्या ठेहरा अन्ना आपो आप पर हांम ।
 श्री सोना की मोहोर भा सारे माये दाम ॥१९॥
 ठेहरा सो ठाकुर भया फरता चाकर साम ।
 तिन भोजन भूपति अन्ना तो श्री टेहेर ना होय ॥२०॥
 नर बेठा कोइ नाव भा बस्या बोहो दिस आये ।
 धरनि पाद धरे नहीं सकल बुष्टि में आये ॥२१॥
 दाम दया सप सीस सरय तिरय द्रव सब कीन ।
 जब नीज घर पाया अन्ना सब बाके आधीन ॥२२॥
 जन डरत एहि समझ के सकल कये फल जाये ।
 मुक्ती सुख सी आनिध्ये धरत बीये छीपाये ॥२३॥
 प्रगट बीपके जीव सब डरत मुक्ती के नाम ।
 मुक्ती माया भीष्या भया टुटत मन की हान ॥२४॥
 मुक्ति मानत हे सुख सी भीष्या सब हो जाये ।
 एह लोक पग्लाक की अन्ना मूप कयो पाये ॥२५॥
 गगन गंग की धारते सकल लोक पोपात ।
 प्रावत जीव समस्त नहीं माया डेहेके जात ॥२६॥
 अन्ना ए उसटी भई सब सीष्य बीये कू जाहात ।
 मीसरी को पूतना महुआरु बीततता* ॥२७॥
 पेव पीमा का काहा कहूं आरो आप की एव ।
 सोल देखूं सब मैं नहीं अन्ना जात सब गेव ॥२८॥
 छेमे तुमरे सोगटी कभी पक्री होये ।
 इत भया सो काहा करे म्यासी स्यास तू दोये ॥२९॥
 मैं कुसछना हरी भया ऐसी नहे सब लोक ।
 इत भया कु बनती नहीं जाठ के भर सीर ठोक ॥३०॥
 बाबीमर की पूतमी छद करत बहो भात ।
 काहा गुदरत हे जाठ की अन्ना मुडी की जान ॥३१॥

* एह अंश की म० २३ में मं ३३ गद्य की नाबिर्ग वेचन ह नि म
 सं० ३४० में मिली है अन्य प्रतिषों न नहीं ।

(२५७)

मे बुरा साइया भला लोक की माछी बात ।
ग्याहित जब देखुं अछा तुं खेलत सब बात ॥३२॥
बुरा करन कु मैं हूँआ पुदरय का कपी मोर ।
गोला छुट्या नास ते सो दार के ओर ॥३३॥

प्राप्ती' अग

सार्ईयां पाई सुंदरी केसे जानी जाय ।
 अग रग म्यारे खुने एक सान रहाय ॥१॥
 सार्ईया पाई सुंदरी केसे जानी जाय ।
 गुन गावे अहरनोस सदा त्हुं त्हुं सार्ईयां जाहे' ॥२॥
 सार्ईया पाई सुंदरी केसे जानी जाय ।
 ज्युं आसक मेहबुब पर धन्य' तब नारे नाय ॥३॥
 सार्ईया पाई सुंदरी केसे जानी जाय ।
 सुख ससार भावे नहीं सबे पैगारी ताहे ॥४॥
 सार्ईया पाई सुंदरी ज्युं खुवती सम वार ।
 कुल काव्यवा छात्र के जात अकेली जाहार' ॥५॥
 राम भक्त जोसो' अक्का सोप रहे' पंडित प्रान ।
 माया मंदीर न सुंदरी सम माने बेकाम ॥६॥
 सो राम भक्त साधा अक्का टुटत हरी के ताप ।
 प्रसन्न होत सीम वासज्युं मारत गजकुं ध्याम' ॥७॥
 राम भक्त साधा अक्का पासत गुरु के बेन ।
 घरनी' बोल परे नहीं गुरु की मानत एन ॥८॥
 राम भक्त साधा अक्का गुरु मोखिद एक ।
 अनीमता' छाड़त नहीं साधी मन की टेक ॥९॥

१ प्राप्ति अग (ता) २ जाहाम (पु) ३ जन (सा. पु) ४ काव्य " ...
 के—अग बीषड़ अक्का (ता) वागवा छाड़के (पु) ५ नार (ता) ६ जोसो—
 साधा (१४०) साधा (सा पु) ७ मोख रहे—सो परहे (पु) लोनी रहे
 (ता) ८ लोनी (ता) ९ पाई (ता) जाय (पु) १० बरती (पु)
 ; अनमता (ता) ।

राम भक्त साचा अखा मान मझाई त्याग ।
 जैसे बेहेर^१ छाडी रहे बाजीगर का नाग ॥१०॥
 राम भक्त साचा अखा करे सो पर उपकार ।
 ज्युं सपर^२ उबारत मजनकु आपे ही सेहेबे मार ॥११॥
 राम भक्त साचा अखा करे न काहु की आस ।
 ज्युं मय जीवाबे जकनकु आपे रहे उवास ॥१२॥
 राम भक्त साचा अखा सदा सेहेबे श्रीपास ।
 अस तारत तूबड़ा ऊँच भींच बाइसल ॥१३॥
 राम भक्त साचा अखा सखन माक संतोष ।
 ज्यु प्यास मगत नहीं नीरकु सवन करत नीरदोष ॥१४॥
 राम भक्त साचा अखा कल्या^३ पास नहीं सस ।
 सूरज का सुभाउ ज्युं खोसत सबके चम्पू^४ ॥१५॥
 राम भक्त साचा अखा बोसत आत्मम हेत ।
 जसे बाझा ज्ञान का^५ बौड दास सुरातन देत ॥१६॥
 राम भक्त साचा अखा अपने अनुभे सास ।
 जु सोनाय सब सोभीये आपे आप पेमास^६ ॥१७॥
 राम भक्त साचा अखा मसा^७ रहेन नही माहे ।
 दरपण मेका बिब ज्युं संपुट मे न बंधाय ॥१८॥
 राम भक्त साचा अखा दरसत हे एहसोक ।
 कुंजी^८ सुर्त^९ छुवाईये^{१०} पढय रहेत परसोक ॥१९॥
 राम भक्त साचा अखा विन मायक हि मस्त ।
 दो ज्यग ठे करत नही चाहता नहीं सो^{११} मस्त ॥२०॥*

१ सहार (सा) २ धूर (सा), ३ कल्या (सा), ४ चम्पू (गु) ५ चत (गल. गु) ६ ज्यम (गु), ७ मय (सा) ८ जु — पेमास—ज्यु सोनायें सब सोभीये, आगे आपमें पास (सा) ९ जी सोनाये सब सोभीये आगे आप में पास (१६०) १० ज्यु सोनाये सब सोभीये आगे आप पेमास (गु) ११ मिय्या (सा) १२ मय्या (गु) १३ माय (गल. गु) १४ ज्यु (सा) १५ धूरत (सा) १६ मुक्त (गु) १७ छपा हीये (सा) १८ छुनाये (गु) १९ x (गु) ।

* यह शायदचित्त छापी सा में नहीं है ।

राम भक्त साचा अछा नादाना नादान ।
 गुडीया लोसठ गगन में अरूप पीठ के ताव ॥२१॥
 राम भक्त साचा अछा धरती राममय सामो' ।
 अस्त्यु में आसभुँ का बुरा न सो ए मामो' ॥२२॥



१ अरूप --- कै---अरूप अछा आयु का (ना) अरूप बाव (गु)
 २ बरनीकामा इवभाव (ना) धरति राममय माव (गु) ३ अस्त्यु में आस
 (ना) आसपमे आसयु (गु) ४ बुरा न ता है भाव (गु) बैराम हो
 बहाव (ता) ।

राम परीक्षा अग

क्षाप्य सुनी हे घट में नीकसत रत्न अमुल्य ।
 परचन वासा कोई अछा उपाकी मुद्द अलोल्य ॥१॥
 राम रत्न का पारखी साख कराहे काय ।
 राहोसमे' न चम अछा दरसी परसी कहे साय ॥२॥
 राम रत्न का पारखु भरा' गया नही' गाम ।
 अछा सीध सुभाव ज्यु बीबत' गज कू छाव ॥३॥
 राम रत्न का पारखी सोही ठाहार रेहे ठाने ।
 भावन जान नहीं अछा 'बद तारा ससी भान ॥४॥
 राम रत्न का पारखु टुटत पाई' आग्य ।
 कपडा सीनी अगय' ज्यु परसत हो गई आग्य ॥५॥
 राम रत्न का पारखु एके बेर नीहास ।
 ज्यु सुहा' परसत पारखु हुआ सो हुआ सास ॥६॥
 राम रत्न का पारखु करे न सोदा बोहोर ।
 एक बीनजमे' पाईया अछो कहे भागी दोरघ ॥७॥
 राम रत्न का पारखु करछा ताका तक" ।
 गुनातिव बीन जे" अछा हाथ न पावे" छोक ॥८॥
 राम रत्न का पारखु अगलीग बीनजस माह ।
 अग्य सोदा सोही करे जे नाबात" यानी" माह ॥९॥

१ ॐ हुं (सा) २ भया (सा गु) ३ मा (मा) ४ बीबते (गु) ५ रेह
 टान—रेटान (गु) रूटान (मा) ६ न (सा) ७ कूटत (मा) ८ पामा
 (सा) ९ अग्नि (सा) अग्य (गु) १० साहा (गु सा) ११ बनिज
 (१४०) बनज (सा) १२ ताक (मा) १३ बजमे (मा) बनजे (गु)
 १४ बहावे (सा गु) १५ नावन (मा गु १४०) १६ बावन (सा)
 बापी (१४० (गु) ।

राम रत्न का पारखु मास कु' तम मन देत ।
 अखा मुक्ता फल जानके बोनमत सीप समेत ॥१०॥
 राम रत्न का पारखी बोटारत सातुं घात ।
 पास सम्यबेधी है गोदघका' अखा करत मेय' एक जात्य ॥११॥
 राम रत्न का पारखु मुंदल' खात न कोट ।
 अखा बेजा' भोग्यका' खासी परत न पोट ॥१२॥
 राम रत्न का पारखु सब कोई' ब्रष्टा होय ।
 सुर्यरस बैठे अखा सो सारी अप्यती ओय ॥१३॥
 राम रत्न का पारखु सीप्य बीना सीप्य बान ।
 अखा न ईछत अयकु सेहेग्य फमत एकसान ॥१४॥
 राम रत्न का पारखु सतु' पावत साम ।
 अखा मीटाया आपकु बुसन साग्या आम ॥१५॥
 राम रत्न का पारखु राम ही बेठा ठीक ।
 अखा बसम न साज' कु' दुरका सब नजीक ॥१६॥
 राम रत्न का पारखु नफा बोहोत नीहास ।
 सदान नर बतीसका कर्म कर्म बहु मास ॥१७॥
 राम रत्न का पारखु अह गया रहा राम ।
 अखा कछु उसटी भई सुन्य ओर सुंदरसाम ॥१८॥
 राम रत्न का पारखु राम ही राम ही जाय ।
 अखा ही मासा रामहे बाहोर' ना पोछा आय ॥१९॥
 राम रत्न का पारखु रुखा सब सबका सार ।
 अमृत हुलका नीरये अमरा पीवनहार ॥२०॥

✽

१ मुत (गु) २ मुटिका (गा) गोण्या (गु- २६०) ३ हेम (गु
 २६०) केम (गा) ४ मुरन (गा) ५ बेहो (मा.) ६ भूमिका (गा)
 भीमका (३४) भीमका (गु) ७ को (गा गु) ८ X (गा) ९ सीप
 बोन-मिजवान (गा) १० मुरत (गु) ११ लु (गा) १२ सीप
 (गा.) १२ बगुटी (गा) बोहो (गु) ।

संसारि अग

अखा समझी सोयजा' दुनीयां ते दल' फेर ।
 अपनी भावे ओर की बाटन की सवसेर ॥ १ ॥
 अखा समझू नर बोन दुखवायी भव सोक ।
 घर की पासी ओर की सोह' पीवन की ओक' ॥ २ ॥
 अखा मन दे मत मीसे दुखवायी जीव सग ।
 ज्युं साइसी' भर सोहा घडे' तो जरे नहीं अग ॥ ३ ॥
 अखा पय बीपम हे जो मजल' पोहोच्या चाहे ।
 ओपट घाटी सोक' की तु उबट' ही घर जाहे ॥ ४ ॥
 अखा संसारी जीव कू सुट सैन सूं काम ।
 मात पीता सुत बघवा सारा ठग का गाम ॥ ५ ॥
 हीतकारी संसार के ऐसे से सुभाय ।
 बरुका कुटव' अखा उमक' धाकू खाय ॥ ६ ॥
 भुवेकु रोवे बरे ज्यु गघा मुवा कुंभार ।
 मेरे बारे मणका बीजीये" कोण उठावे छार ॥ ७ ॥
 लूना भधा रोगीमा लसम पुत मरी जाय ।
 रोबत सोका साजकु सीरये गई बसाय ॥ ८ ॥
 अखा संसारी जीवसु रबी पबी रहे नादान ।
 जेसी इयारी" भुतकी अंते जीव को" ज्यान ॥ ९ ॥

१ मुई (सा) सोई (पु) २ दल (सा पु), ३ जोहा (पु) ली
 (सा) ४ जोप (का पु) ५ सांजसी (सा) सींहासी (पु) ६ बटे (मा)
 ७ जो मजल (मा) जोमजल (पु) ८ उबट (पु) ९ कुटव (मा)
 कुटव (पु) १० बजड़े (पु सा), ११ बीजीया (सा पु) १२ पारी (मा)
 ईपारी (पु) १३ का (सा) ।

अन्ना सुख संसार का हरसब का सा नीर ।
 सोमत मीठा पीबेते^१ सो पाबे^२ सोहीनी सीर^३ ॥१०॥
 अन्ना संसारी जीव की प्रीत्य सो पुन्यमण्ड ।
 जात्य जात्य क्षीनी^४ परे पुरा रेहेत नहीं ईहु^५ ॥११॥
 अन्ना संसारी जीवका जेता सुख सराय ।
 जु पसु जवनके द्वारका असोमुख टांग्या जाय ॥१२॥
 अन्ना संसारी जीवसु बोहोत न रहीय^६ लाग्य ।
 ज्यु^७ दुरते दीपक कीजिये परसत उठत आय्य ॥१३॥
 बीर्यमा^८ ही भसा अन्ना करते बड़े^९ कसाप ।
 ईतने में माया सबे साधन पुन्य भीर पाप ॥१४॥

★

१ पीबेते (मा गू) २ पिबत (गू) पीबे (मा) ३ भीहीर (मा)
 ४ पीबी (गू) लीपी (मा) ५ दम्ब (मा) ६ न रही ये—नरहीये (मा)
 न रहेमा (मा) ७ X (गू) ८ बिरय्या (मा) ९ बड़ा (गू) ।

गेवी अग

गेबी' राम जाने बीना सबे जान बेकाम ।
 घे' उहा' ध्याता ईता उपजे ब्युं आराम ॥१॥
 अखा गेबी राम की असोकिक सी बात ।
 नेन खुले नहीं जा बीना सासों सास सहरात' ॥२॥
 अखा गेबी राम की कला असोकिक साल ।
 हाथ पकड़भा' हुवा' करे' हरदम बेहे हु हसास ॥३॥
 अखा गेबी राम के अटपटे से भंहेन ।
 लाप बतावत वूरणुं सो बोलत आपे बेन ॥४॥
 अखा गेबी राम की बेसे कहु मे बात ।
 नेन बेन में प्रेरणा सो केसे पकरात ॥५॥
 अखा गेबी राम हे सो परगट भी और गोप्य ।
 राम कहा बास नहीं ताके नाम सबे आरोप ॥६॥
 अखा गेबी रामकु केसा कहा न जाय ।
 भाग दीया टांक ना भये ओर उपग्या सारा खाय' ॥७॥
 अखा गेबी राम के अग बीना बोहो' रग ।
 कलपीत नामु" बासदे असस नामना अंग ॥८॥
 अखा गेबी रामकु धुपट बोहोत सुहाय ।
 ज्युं बावस ओटु दामनी दुरी दुरी रूप देखाय ॥९॥

१ अखा (मा गु) २ घे (मा) घे (गु) ३ बही (मा) ४ हरात
 (मा) ५ पदमा (मा) ६ हुना—हु ना (सा), हुना (गु) ७ बहे (म गु)
 ८ बात (सा) ९ जान (सा) १० बहु (भा) बोहो (गु) ११ नामा
 (सा) नामे (गु) ।

अक्का गेबी रामकु नाम नहीं बहुत नाम ।
 बुठत ठोर पाइये नहीं ओर सकस ठोर आराम ॥१०॥
 अक्का गेबी रामभर^१ पग पेंड^२ म^३ पोहोचाम ।
 पंथी पंथ माही मरे जो मीने तो मीन जाय^४ ॥११॥
 अक्का गेबी रामकी जो उपजी हेराय^५ ।
 हर हामुमे^६ हेईहे निमइत भेतन चाम ॥१२॥
 अक्का गेबी राम कु एव नहीं कोई बात ।
 एबाकु^७ हे एव सब आपेही सकस सहराठ ॥१३॥
 अक्का गेबी राम बीम खासी न परत^८ भोट ।
 हर हामु^९ में आप हे सो^{१०} ने युनकी ओट ॥१४॥
 अक्का गेबी रामकी रसना काहा^{११} करे बात ।
 अठर सी^{१२} रेहे राम की सोही बीभु^{१३} बात ॥१५॥



१ राम के भर (गु) २ पेंडे (गु सा) ३ नव (सा) ४ जो मीने ..
 म मीने जो मीने जया ह्याव (सा) ५ हे रान—हेरान (सा) ६ क्यानों
 ना) ७ एबी (सा) ८ न परत—मीनइत (सा) ९ हामु (सा) १० ने
 सा) ११ क्या (ना) १२ सीहीर है (सा) १३ बी (सा) ।

महाकला अंग^१

अबब कला उपजी अखा बसा पुरातन पय ।
 बसते बसते तार्हा गया आपा रह्या नही अंत ॥१॥
 अबब कला उपजी अखा अंय सीय बीना एन ।
 नीरासब अविसंब नो समझत सेन^२ सन ॥२॥
 अबब कला उपजी अखा नीराकार बोर आकार ।
 अटपटाई आकार मां आवे पीछे सार ॥३॥
 अबब कला उपजी अखा ना पंथ ना पंथी नाम ।
 चंदन बामा नीर मां तो काहा कुछ मुकाम ॥४॥
 अखील बस्त ऐसे अखा नेहा दुर^३ नीवान ।
 सख्या ठानी बीच मां हरसन मत समान ॥५॥
 मां सोया ना जागता ज्याकु नहीं रूप नाम ।
 आवे पीछे एब है बीक्य अखा धुमधाम ॥६॥
 जो उलझा^४ तो मन अखा मुमछा तो मन का भेद ।
 समझा कु नहीं अटकना ज्यु कोठा बज्रबेध ॥७॥
 बक्राबेध के कोट कु ना बजीर कपाट^५ ।
 समझा बीना रोधा^६ मरे फाबट^७ बाहं बाट ॥८॥
 अबब कला उपजी अखा नीज पर का बीक्यार ।
 जाके मठमें सब मता गरब मया^८ सब भार ॥९॥
 घरनीका^९ बहुरंग फीरे फीरे मेय मंडान ।
 देस काल के बस अखा फिरे नहीं बीरान ॥१०॥

१ अबबकला (सा) २ मैनों (सा) ३ मूर (सा) ४ उलझा (सा)

५ बक्रा (सा.) ६ रोध्या (सा) ७ फाटक (३४० सा) ८ दुवा (सा),

९ बरती (सा)।

भीतर के अंग रंग फीरे फिरे नहीं आकास ।
 दोसो चाख्य कीरे नहीं फिरे नहीं ज्ञान प्रकास ॥११॥
 बस बिभस का धर्म हे गुनेन का व्यापार ।
 गुनातोत न बसे अन्धा सबका पोषण हार ॥१२॥
 देस बीदेस बीसे' अन्धा ओर ओर ईछ' आराध' ।
 नाम रूप गुण कर्म भीय ओर अस्तन मे नहीं आघ ॥१३॥
 अजब कला आजी अन्धा ता घर ये स्थित कीन ।
 सो सागर में भीस गया हरीहर ज्याके मीन ॥१४॥
 मुबत ना बड़ा अन्धा ना कछु माते माहे ।
 मे सोई' सुरका जानना ज्य बजे सांस' सब माहे ॥१५॥
 अप्यक्त वृक्ष पसरथा अन्धा बहु दस' भुम्या आस ।
 आल्पम समय राहा पातकु भेंबु पेड बीसान ॥१६॥
 पात झरे' अर' मीत्य नबा स्वामी सेवक दोय ।
 काल न पोहोचत पेड' लग अन्धा तु ऐसे जोय ॥१७॥
 अजब कला उपजो अन्धा जे हे सब की आघ ।
 ताही सुं भेटा गया देख्या आप अनाघ ॥१८॥

✱

१ विन (मा) २ कृष्ट (मा) ३ आराध्य (मा) ४ सोही (मा)
 ५ उपर... मांन—हे सब बीना (मा) ६ दित (मा) ७ पेड (मा)
 ८ पान (मा) ९ भाडे (मा) १० ओर (मा) ११ पेड (मा) ।

गुरु की अंग

हितकारी सदगुरु बीना और नहीं संसार ।
 राखे भवभी भटकता पसये पावे पार ॥१॥
 मात पीता हितकारी हे पद' उछेरनहार ।
 पर' गुरु हितकारी धुर लगे अछा जे छोड़े पार ॥२॥
 हितकरता कू हितकरं ए' दुनिया की चाल्य ।
 गुरु हितकारी आस बीना दाम्ने करत लीहाम ॥३॥
 सदगुरु मेघ समान हे करत न काहू की आस ।
 मेघ बरसत जगत जीव बने' गुरु काटत भय पास ॥४॥
 सत धरत हूँ देहकू ज्यों धरत' देह नाभा' ।
 परमारथ के देख हे अछा न राखत चामो ॥५॥
 सुरज का अर संत का आटो' एक सुभाओ ।
 चर्म-चदु खोलत निकर जान बखु संत फैलाओ ॥६॥
 निसप्रही' साबा गुरु नहीं भासब का मेस ।
 बग्यदुम एसा' अछा ईछा" फसत उदेस" ॥७॥
 सेहेज्य सुभाव ऐसा पढया जैसा सातस कर ।
 सकिं पोष किर्न सुधा अछा देत आनद ॥८॥
 पाप ताप संसार के जल जीवकू ठौर ।
 बिन सतगुरु सीतल करे अछा ठोर नहीं और ॥९॥

१ पिड (सा) २ पण (सा) ३ हे (सा) ४ जीव बने—जीवावर्ते (सा.) ५ हे (सा) ६ नाब (सा) ७ चूरा (सा) = प्राय (सा), ८ निसप्रही (सा) ९ जैसा (सा), १० इच्छा (सा), ११ चरप (सा.) ।

राता माता रंभ भरथा राग रग के सास ।
 संत मठासी दूरहैं अला सदगुरु का पास ॥१०॥
 पानी में पावक जसे ऐसा सूख संसार ।
 ताहे सीतलता दूर है विना गुरु सपगार ॥११॥
 साची सीतलता अला सदगुरु केरे संग ।
 और गुरु संसार के पोषत है भव रंग ॥१२॥
 बिकणा कुम कोई काल का जोरा मन छराप १ ।
 ताहि १ वचन नीर भेदत नहीं अतर ज्ञान १ अघाप ॥१३॥
 अला न्यारा १ देव है गुरु जानी का पास ।
 ओर उपदेश उपर छसे ज्युं जस जात भुस १ पयास ॥१४॥
 साधा गुरु मील अला तो अंतर करे उघोठ ।
 साचा सीप्य ग्रहें अला जे १ मील रह्या जोत प्रोठ ॥१५॥
 साचा सदगुरु सीसकू करी छोड़ हरीरूप ।
 साचा सीप गुरुदेवकू माने पारबहु अनुप ॥१६॥
 गुरु करधा जे सीप्यकू पुरण पद के देत ।
 ता धीन सब संसार दे ब्ये धाता १ समेत ॥१७॥
 कान फूँक सीप सों स्फूर्त सहे नीपग्य सेहेग्यमा होई ।
 जैस कांटा बेर का टेढ़ा सीप्या दोई ॥१८॥
 तन-मन देखते राम नहीं और नहीं रामते दूर ।
 ज्युं किरण मुकावत सूरमें पर अला न मुकावत सूर ॥१९॥
 किरण छये १ जाय गुर मे पर १ सूर्य साप्या १ जहाँ जाय ।
 निरगुन फूँया सगधरा १ फूँये १ सो कग्माये ॥२०॥

१ उगार (गा) २ लछब (गा) ३ ताहें (सा) ४ अज्ञान (गा)
 ५ स्वार्ते (गा) ६ नून (गा) ७ जी (सा) ८ ब्ये तागा—ब्येव ध्याना
 (गा), * होय (गा) १० छरी (गा) ११ वन (गा) १२ छुनो (गा)
 १३ घरी (सा) १४ वन (गा) ।

(१७१)

आत्म' कहे परमात्मा मेरे सीर कहा' मार ।
 सब भट एही सूत हें जे मेही' बसावनहार ॥-६॥
 परमात्म' कहे सुख्य बखा गुड़िया तु' सब जीव ।
 मे' खचू मुक्ता कहे मुक्त' कर डार सदैव ॥२२॥



१ आत्मा (मा) २ क्या (मा) ३ मे ही (मा) ४ परमात्मा (मा)
 ५ खु (मा) ६ मे (मा.) ७ मुक्त (मा) ।

भासा को अग

अखा' भासा जनने' फांसू करे फजेत ।
 इछु' तहां आवे नहीं आवे तो सींग रहेत ॥१॥
 जदकू' ओछु देखिये विद्या घन रूप राजि' ।
 ए काम ऐसे छे कालमा' आपे ले महाराज ॥२॥
 केहेनु' लेइने कोइने आस तो विसे काम ।
 मूढ़' मरोड़े मूछने अमूछु' भूपास ॥३॥
 अखा भासा जीवने करावे कपिनो न्यास ।
 आत्मी वीन ठमो रहै "बेसे तो उघा "गुहा धान ॥४॥
 राज्य छे बडपो गाम दे ते हसी हसी रामे होठ ।
 भासा ए अस्त" भाजिया" पण" माहे से क्रोध नु कोट ॥५॥
 राजस बहु" अम्याय" के' ताहां जी जी" कहेता जाय ।
 झूठा ने साधो करे" अने साधु करे मिथ्याय ॥६॥
 भासा जनने प्रमवे" देस बीदेसे जाय ।
 दाम धाम मयें अखा करता" आयु गमाय ॥७॥
 काई न पाये जीवनं कसू" पण अहंकार' ता मन मोड ।
 पसके मज घोड़े बड़े पसके" पण माहे छोड" ॥८॥

१ अखा (सा) २ जनको (सा) ३ इच्छु (सा) ४
 (सा) ५ राज्य (मा) ६ कामनु (मा) ७ कोइनु (मा) ८ आप
 ९ राजी (मा) १० जलो छु (मा) ११ जो (सा) १२ मूढ़
 १३ अख (मा) १४ भाजिया (मा) १५ अखा (मा) १६ राज सव
 बहु (मा) १७ बहु (मा) १८ बके (मा) १९ जी ! जी !
 २० बहु (मा) २१ परमवे (मा) २२ फगता ज (सा) २३ ब
 २४ अहंकार (मा) २५ अने (मा) २६ छोड (मा) ।

जन ना-जोमे' पाछो भरी भासाइ' ठकेम' पुठ' ।
 प्रत्यक्ष भागवे दुखम माहे ते' सुखनी मुठ' ॥९॥
 मन गमलु' मिस महीं मिसे तो न रहे जोग ।
 भाव जाअके भोगी मरे के जोव ता भोग बेरोग' ॥१०॥
 पावस बेसके जस जसे करे ते' धुझपान ।
 ताप्ये' तृष्णा ना" फरे माहे राखे बह्मान" ॥११॥
 ज्यम मिश्रुक मिला करे एकठी, कहीं जसग" बेठि छाय ।
 मननी यंस स्वाम तहाँ पूँख हसावना जाय ॥१२॥
 अप तप करे बने देहने मन बहे धर्म ध्यान ।
 तहाँ तन धन ना अर्थी घणा टियमाय ससारी स्वान ॥१३॥
 मज्जा" बयावे" जीव ने एह लोक परलोक की" भास ।
 कोई" न पाए जीव धी फले हा" सखा बास ॥१४॥
 देव आगल दुख दाखव इ" पहर" एकान्ते जाय ।
 उसका भर तो सख" कहूँ न जोसे न प्राप्त" बाय ॥१५॥
 बेहरा" पावस भीत न भरतो दीस बाय ।
 घुल चाटे बहला चोपड मुज्जमा घाल हाय ॥१६॥
 जेम भास बयावे जीवने मरसुर बीवह सोय ।
 जयम दडो डोटावे" नर बछा लण लण हरख सोय ॥१७॥
 बेय पहिरी वाक" बीघ्ये" घेर-भर बंदबा" जाय ।
 भासा कंठ" गानो करी" कपिनी पहर' मजाय ॥१८॥

१ बुवे (सा) २ भासा (सा) ३ बयेसे (सा) ४ पुठप (सा)
 ५ × (सा) ६ मुठप (मा) ७ जाय के (सा) ८ जीव..... बेटोय—जीवन
 भोववे रोय (मा) ९ करतें (मा) १० ताप्यो (सा) ११ जो (सा)
 १२ बह्मान (सा) १३ जळगो (सा) १४ तृष्णा (सा) १५ बयुवे
 (मा) १६ भी (सा) १७ कोई (मा) १८ तो (सा) १९ × (सा)
 २० पहा (सा) २१ दुल (सा) २२ प्राप्त (सा) २३ बेहरा (मा)
 २४ डोटावे (सा) २५ वाक (मा) २६ बिघे (मा) २७ बंदबा (मा)
 २८ ँठे (सा) २९ बरी (सा) ३० बेरे (मा) ।

करमा बांकी कोथसी जये ते छातो^१ बाप ।
 अंतर भाराघम^२ प्रेतमु स्वामि मुने काई^३ सीधी^४ बाप ॥१९॥
 जण्णा तरुणी^५ मिस्य नई^६ विघ्न-विघ्न बांछे बिनास ।
 पण पसारि ते खोर्बे, अखा बे काये भास ॥२०॥



१ जये ... छातो—करतो हीने (मा) २ भाराघम (मा) ३ अ (मा)
 ४ निडि (मा) ५ तरुणी (मा) ६ नही (या) ७ मुने (मा) ।

नैरासी को अंग

नरासी नर ने अखा नप्य' नखावे काज ।
 मावता देखी नर भसा माग्या होस' उछाम ॥१॥
 नैरासी नर ते' अखा एहे न मुके रज ।
 हास भासा गई' अंगवी तेहने' प्राभव' न बरे पब' ॥२॥
 स्थूल सूक्ष्म पोसे टस्यो त्यारे काई नही राय रंक ।
 बहु पक्ष ने मुकी रह्यो त्यारे सबोदित मयक ॥३॥
 नर नीउस' यमा बिना मूस उछात न याम ।
 महाउछोत यमा बिना मूसपी आस न जाय ॥४॥
 मुक्ति समी भासा असा भासा बैकुठ बास ।
 अष्टमा सिद्धि' ने अनुभवे ताहा लगै द्वैत नी आस ॥५॥
 वस्तुता अ भासा' नधी क्त" करबु त" जाड ।
 बीवा माहा" नेइो मम' तोहू साये "साड ॥६॥
 ज ईखेस" ठ आपदा क सीध्य क संसार ।
 अमृत महां" साकर मस" आखा" ठे दूखण" सार ॥७॥
 रूपण तथा" भूपग अला मुरज न सो दीप ।
 वस्तू तहो वेहेवार सो आवास नो" हे छड होप ॥८॥

१ नव (सा) २ हुंख (सा) ३ ज (सा) ४ यमा (ना) ५ तेज (सा)
 ६ पराभव (सा) ७ प्राण (सा) ८ नैरास (सा) ९ अष्टमा सिद्धि—अष्ट
 महर्निधि (सा) १० कई करबु (ना) ११ < (सा) १२ ठेट लो (सा)
 १३ बही (सा) १४ बछे (सा) १५ नट (सा) १६ ईन्दीय (सा)
 १७ अमृत यक्षी—अमृतजी (ना) १८ बछे (सा) १९ अखा (सा)
 २० रूप (ना) २१ रया (सा), २२ तोहे (सा) ।

नैरासी इमि^१ आणवा जिमि^२ देव महा^३ सासियाम ।
 वण प्रतिष्ठ^४ पुंज^५ छे तिमि^६ स्वैच्छ पूरण काम^७ ॥१॥
 निराधार आसे अकस अमाम अरूप अभोग ।
 जहाँ^८ अम्य साधन असगां रहें नैरासी ते ओग ॥१०॥
 सगुणना संसर्ग नहीं निरगुण सक्षण^९ भाये ।
 प्रथा नैरासी स खरा मेहेज^{१०} सहेज ममाये ॥११॥
 घसा^{११} देखि घस्या^{१२} महों गघर घोसप्यु जे^{१३} आप ।
 ऊमे तहाँ आसा अखा नाहे धन कोरद^{१४} ने चाप ॥१२॥
 पुरण तहाँ आसा नहीं अपुरण तहाँ आस ।
 पुरण ना प्रताप^{१५} मत्ता^{१६} बरते स्वामी दास ॥१३॥
 पूरण की कई वही परु ज्यम अवनी महा बहु रिध ।
 स्वामी सेवक रिध अखा । पूरण सङ्गती निध^{१७} ॥१४॥
 जीव जाने छे कर्म फले । पण फल छे पूर्ण प्रताप ।
 सहज धननो सखनो, उत्तम, मध्यम पण माप^{१८} ॥१५॥
 पूरण मंश अपुरणो पूरणना बहु वेप ।
 अभिसाये ओघा पढ समजये सहु सबैस^{१९} ॥१६॥
 पूरण कटक गभी धयु बहु बाचक पण एक ।
 ज्यम धन बुद बहु दोसे अखा पण नीरे ओता एक^{२०} ॥१७॥
 अखा । एम समजये बके जेमनो तय मदाय^{२१} ।
 आठे मरत देहने ते तमनो तयम प्रीप^{२२} ॥१८॥
 भासा जाना छाड़के^{२३} निज भाग निरधार ।
 अखा सो पूर्ण काम नर जाओ रङ्गो संसार ॥१९॥

१ एम (ना) २ जेव (ना) ३ देवपी (ना) ४ प्रतिष्ठा (ना)
 ५ पुण (ना) ६ एम (ना) ७ नैरासी (ना) ८ जान (ना) ९ तपसा
 (ना) १० गजब (ना) ११ जे (ना) १२ धर्म (ना) १३ धने
 (ना) १४ × (ना) १५ धन कोरद—धन की दंड (ना), १६ परमा
 (ना) १७ मही (ना) १८ छाड़के (ना) ।

* चिह्नित पाँच भाषिणी वंश न० २८ फा प्र २६७ और ३८० में
 नहीं है ।

प्रभु पाया तब जानिये जे मर' भया मीरास ।
 एह सोक परलोक की आसा तात्पी' दास ॥२०॥
 तन मन के सुख कारण पराधीन सर्व लोक ।
 तन मन सीपा कापकर सब हरि पाणा थोक ॥२१॥
 आसा भुसावत आपकु जे भैतय भीरुप ।
 बडा परत' जौ' केहरी छाया देखिके कूप ॥२२॥
 अला सतगुरु सेवणा ज्ञान' निपुन' नैरास ।
 आर भले संसार में अंतर माय' दास ॥२३॥
 अला एक सदगुरु बिना संग सकल उपाध्य ।
 बरतन मात्र बिसम्बना' बढता सेती व्याध ॥२४॥
 जो नाक निकस्या आकू भावे मीणा मणीहार ।
 मकल भग लेपन करे' तो करे' प्राण परीहार ॥२५॥
 नमस्त से बोलत बहु पण समझ्या" कोरमां एक ।
 मन कर्म" बचने निमम दोस दरस गया छेक ॥२६॥
 ऐसे बहुत मिले अला ज्या छति भोग" करे कोय ।
 आय्य बुझा" गद्यक भग सो फर भयूका हाय ॥२७॥
 बाह्याभ्यांतर निरमला मन बस रस रूप ।
 एमा नर नारायणा जाय नही अहसा" छप ॥२८॥
 पूराका ह आपमा" मूराका हे सीस ।
 दूजे' राजा स्वात्र के अते मीख का भाव ॥२९॥
 पड़ पुन' मुचि" म्नीग ते अह व्याधि न जाय ।
 आसिम रोग मिटे तबे जय राम तबीब गमाय" ॥३०॥
 कपती आवे ज्ञान की कोठ" जाना जनके संग ।
 'अह व्याध मिटे नहीं भीतर वासना सिंग ॥३१॥

१ जे मर जय निर्णय (मा) २ नो मु (मा) ३ पवन (मा) ४ ग्यु (मा) ५ आगो (सा) ६ पूर्ण (सा) ७ मापाके (मा) ८ बिटबना (सा) ९ बीजा (मा) १० नो करे—हाल (मा) ११ दाम्या (सा) १२ x (मा) १३ धूमि (सा) १४ बुझ्या (सा) १५ अह (सा) १६ उपमा (सा) १७ ओर मो (मा) १८ गने (मा) १९ मुचि (सा) २० मिश्र (मा) २१ औई (मा) २२ पन्ना (मा) ।

आगसा' बनकूँ सीख दे पण मन परमोष' नाहि ।
 ज्युं दीप देखावत और कूँ तसे अंधेरा माहे ॥३२॥
 उपनिषद् के अरथ करे स्मोक सुभाषित सार ।
 रचना निरमल देखिये पुनि अंतर घोर अंधार' ॥३३॥
 जैसे फटिक की कोठरी भीतर भरि बहु रिख्य ।
 दूर से देखिये मन' अन्धा पण जाय न पैठा मध्य ॥३४॥
 पूरण पद पहुँचा बिना अन्धा सब जरली बात ।
 भाषुष यपरे काहा सके मध्य सुर' बिना साक्षात् ॥३५॥
 पूरण पद ऐसा अन्धा अग सिंग लयलीन ।
 आप नहि और काहा कहे ए' पूरा पद की बीहीन ॥३६॥
 बिन पंढरा' कोई नीपञ्चा की' पड्या' नीपञ्जी' कोय ।
 होय वरसन सब' गया तब पूरण पद सोय' ॥३७॥
 नैरासी ऐसा अन्धा जैसे पारा' नीरास ।
 अरोगी सबकूँ करे आसी माया दास ॥३८॥
 भापा से बाते नहीं और न बापे थाप ।
 सो अन्धा' नर नीपञ्जे देव अपगा व्याप ॥३९॥
 सुडा' ज्ञानी की एक अन्धा बहुत है ताकी पल ।
 बित्र सिंह जहाँ तहाँ लज सा' साधा सिंह की बल ॥४०॥
 आसा अपनी काटिके नित्र भोग निरधार ।
 अन्धा सो पूर्णकाम नर आज रह्य संसार' ॥४१॥
 प्रभु पाया तब जानिय हिरये ज्ञान प्रकाश ।
 अन्धा सबका हित करे हरिजान सर्वावास ॥४२॥
 नैरासी नीपञ्ज अन्धा ! जेय अनलनुं बंध ।
 बधफूटये अघागति हूँसी, चेतन उद्य ब्रह्मांड' ॥४३॥

१ अपगा (मा) २ परमादे (मा) ३ पण (मा) ४ पण (मा)
 ५ अंधार (मा) ६ × (मा) ७ पय (मा) ८ × (मा) ९ × (मा)
 १० पड्या (मा) ११ के (मा) १२ पड्या (मा) १३ नीपञ्जी (मा)
 १४ अन्धा (मा) १५ होय (मा) १६ मूल (मा) १७ मो अन्धा—मोही (मा)
 १८ गुह (मा) १९ सा (मा) २० जहाँ—सो—बादे, अन्धा ! (मा) ।

नीराशी नरमे, अस्ता । नाहे भिगुणनु जाल ।
 ज्यम सहज भमर सरिता पडे पण नीर एव पातालने ॥४४॥
 नीराशी नरमु, अस्ता । मूसये आप्पु मन ।
 ज्यम शरद श्रुतु सपी शोभीए धांध टम्पु गगनी ॥४५॥
 परमेस्वरमु पद अस्ता । ग्राह्य ग्राहक नहीं सेव ।
 बेस्ताने पणे पडे बाजा देसा देखा ॥४६॥
 नीका ने नीराश नर जाहता मोहे आप ।
 घरण आवे ते तरे अस्ता । एव इच्छ नहीं मेलाप ॥४७॥



आगला' जनकूँ सीख दे पण मन परमोध' माहि ।
 ज्यू दीप देखावत और कूँ'तले अँधेरा माहे ॥३२॥
 उपनिषद् के अरथ करे एसोव सुभाषित सार ।
 रसना निरमम देखिये पुनि' अतर घोर अँध्यार' ॥३३॥
 जैसे फटिक की कोठरी भीतर भरि बहु रिप्य ।
 दूर से देखिये भल' अखा पण जाय न पैठा मध्य ॥३४॥
 पूरण पद पहुँचा बिना अखा सब उरली बात ।
 मामुघ बपरे काहा सङ्गे मध्य सुर बिना साक्षात् ॥३५॥
 पूरण पद ऐसा अखा अंग सिंग समसीन ।
 आप नहि और काहा कहे ए' पुरा पद की बीतीन ॥३६॥
 बिन पंढ्या' कोई नीपजी की' पंढ्या' नीपजी' कोय ।
 दोष दरसन सब' गया तब पुरण पद सोय' ॥३७॥
 नैरासी ऐसा अखा जैसा पारा' नीरास ।
 अरोगी सबकूँ करे आसी माया दास ॥३८॥
 आपा ने बोले नहीं और न थापे थाप ।
 सो अखा' नर नीपजे देख अपना व्याप ॥३९॥
 मुढ़' ज्ञानी की एक अखा बहुत है' ताकी पल ।
 बिज सिंह जहाँ तहाँ लख सा' साक्षा सिंह की बल ॥४०॥
 आसा अपनी नाटिके निज योग निरधार ।
 मन्त्रा सो पूर्णकाम नर आसा रहा संसार' ॥४१॥
 प्रभु पाया तब जानिये हिरदे ज्ञान प्रकाश ।
 मखा सबका हित करे हरिजाने सर्वावास ॥४२॥
 नैरासी नीपज अखा । जेय मनसनु अड ।
 बणकूटये अघागनि हूती बेतन उर्ब ब्रह्मांड' ॥४३॥

१ अयना (मा) २ परमादे (मा) ३ पण (मा) ४ पय (मा)
 ५ अंधार (मा) ६ अ (मा) ७ पण (मा) ८ अ (मा) ९ अ (मा)
 १० अयो (मा) ११ के (मा) १२ पड्या (सा) १३ नीपजी (मा)
 १४ अय (मा) १५ होय (मा), १६ मून (मा) १७ ना बसा—सीही (मा)
 १८ मुह (मा) १९ सा (सा) २० जहाँ—सो—घारे बला ! (सा) ।

(२७९)

मैराणी नरने, अस्ता ! नाहे त्रिगुणनु आस ।
 जयम सहज भमर सरिता पड पण नीर एक पातास । ॥४४॥
 मैराणी नरमु, अस्ता ! मूसगे आप्यु मम ।
 जयम शरव श्रुतु शशी सोभीए धाघ टम्मु गगना । ॥४५॥
 परमेदकरमु पण अस्ता ! घाह घाहक नहीं सेश ।
 बेस्ताने पगे पडे बाजा देस्ता देखा । ॥४६॥
 नौका ने मैराण नर आहता मोहे आप ।
 दारण आवे ते तरे अस्ता ! पण इच्छे नहीं मेलाप । ॥४७॥



* ये दो सामियाँ मा वं नहीं हैं और । चित्तवानी नासियाँ पंकी से हैं ।

देह दरसी को अंग

जे कोई जानत है अखा मे सत्य मेरी काय ।
 पाप ताप सताप सब वह दरसी नू लाय ॥१॥
 वेह दरसी राक्षस अखा बर्षाधम का भार ।
 दावा वेह अभिमान का आत्म नहीं बिचार ॥२॥
 देहाभिमानी नर अखा काम कष बस होत ।
 मोहो' ममता तहाँ कामबस आत्म नहीं उघात ॥३॥
 देहाभिमानी उपर 'अखा बस बसावत काम ।
 पटित जान सीष्यवत है रंक भी के भूपास ॥४॥
 देहाभिमानी नर अखा अंतर बस का है अंध ।
 बाह्यक्रिया बसा रहे' बांधा तरीर के बंध ॥५॥
 देह दरसी जे नर अखा देखत वेह के दोष ।
 'संतन्य' क जानत नहीं मानत कर्म परोक्ष ॥६॥
 वेहाभिमानी नर अखा सख जोरासी ताहे ।
 'जामत' मे ज अनुमते" सा आवत सपने माहे ॥७॥
 दुख देवे तो देह कुं सुख जाहे" ता देह ।
 पूजे ता भी देह कुं राम न जाने" तेह ॥८॥
 पाप पुण्य जे ग्रंथ मे "नर देह दरसी के काज ।
 छद्" दाग ओपधि अखा सब रागी वा साज ॥९॥

१ माह (मा) २ उररे (मा) ३ ५ (मा) ४ विद्विबन (मा)
 ५. चयु (मा) ६ हि हा (मा) ७ पन (मा) ८ बाध्या (मा) ९ केन
 को (मा) १० बाधन (मा) ११ अघ्ये (मा) १२ देवे (मा) १३ जानत
 (मा) १४ मकरा (मा) १५ गु (मा) ।

वसोभम का भार बहे रथ न छोड़े राम ।
 जी' हास' की सकरी भार' बहुत बे काम ॥१०॥
 देहदरसी माने अन्ना सत की उमटी पात ।
 प्रसन्न राम आवै अन्ना ताफू कहे उतपात ॥११॥
 हाय मया के होयगा ताके नाम सह्राये ।
 जे सागर के बुदबुदा जाकूँ जानत' माये' ॥१२॥
 देहदरसी मानत अन्ना बीठ हाथ वेहमास ।
 तख जौ' जानत नहीं मेरे मूम पासास ॥१३॥
 देहदरसी सींचत अन्ना पात पात कुं नीर ।
 मातमदरसी पेढ कूँ सिंचत' एम' सरिर ॥१४॥
 देहदरसी देवे अन्ना जीव जान' के दान ।
 मातमदरसी आत्मा पोषत 'हे निहकाम' ॥१५॥
 देहदरसी सब' भूत को बड़ा माने के रक ।
 आत्मदरसी मानत' अन्ना जेसत राम निसंक ॥१६॥
 देहदरसी हित आचरे देह समझ' प्रीत हेत ।
 आत्मदरसी आत्मा ज्यानत सख्त समेत ॥१७॥
 देहदरसी आचरे अन्ना कही केहेर' कही मेहेर ।
 आत्मदर्सी आत्मा सज रहे माठो पेहेर ॥१८॥
 देहदरसी आचरे अन्ना स्पूस कर्म लोकि ।
 आत्मदर्सी आत्मा भीस रह्या सोहोसोक ॥१९॥
 देहदरसी बम कर्म के दुख मुस केरा पात्र ।
 आत्मदरसी देह मैं रहे भरतन मात्र ॥२०॥

१ x (ना) २ हारीम (ना) ३ अन्ना (सा) ४ गावे (सा) ५ ताको
 (ना) ६ बेने (ना) ७ नाहि (ना) ८ त कबजो-सदवर प्यु (सा)
 ९ पोषत (सा) १० राम (ना) ११ जानि (सा) १२ रहे (सा)
 १३ निहकाम (सा) १४ कूँ (ना) १५ देवे (सा) १६ सख (सा)
 १७ मेहेर (सा) ।

(७८२)

संसारो और संत हे एक पेड़ मे दोय ।
 नौ बदरी^१ कांटा मखा एक सिध्या^२ टेढ़ा होय ॥२॥
 समारी और संत के^३ फेर बहोत सख माह ।
 ज्यों सारदूस भाजत अग्निते पकोर समृत करी काम ॥२२॥

✽

आतुरता' को अग

हुपा गुरु गावि' को माना ए नर' नार ।
 ज्यौ' निपज्य सारि मेघने अखा भ्रुमङ्गल सार ॥१॥
 क्रिया' तँ नर नीपजे सा अनुभ' जाजसमान' ।
 जहां धारे' मास वरप करपा' तत्रा पटञ्जलु' सब' समान ॥२॥
 जेती क्रिया नीपज्य तेती कहत भखा बिचार ।
 ज्यौ' नदी मासे के माबड तरे न दरिया वार ॥३॥
 अखा क्रिया सा एतनी आतुरता की तोस ।
 जसी आतुरता सीप क ऐसा माति अमूस' ॥४॥
 अखा आतुरता बीन नरा जैसा आमी भांडा ।
 भूमुआत' पण "मायो बिना भक्ति बँरारये खड ॥५॥
 आतुरता गंभीर ज्यु तेसी नीपज्य बेग ।
 अखा धीपम बहु तप ऐसा वरप मेघ ॥६॥
 आतुरता भन उपजी वारा' हरि पर आप ।
 "ज्यो रनि प्रगटा" रेणी घटी" 'आभूसमान अमाप ॥७॥
 अखा आतुरता' मिले राम रतन मंदार ।
 जहां बभीस लखना' प्रपट' तहां कम-कर्म घनघार ॥८॥
 अखा आतुरता नही खरो आँग साँग बनाई ससार ।
 'ज्यौ' बध्या के उछंग' पर खेल कहां स कुमार ॥९॥

१ जब हुपा अंग १९ १ (सा) । २ नर नार—निग्यार (सा) । ३ हुपा (मा) ।
 ४ अनुभव (सा) । ५ जाजस्यमान (मा) । ६ धार्क (मा) । ७ वरगत (सा) ।
 ८ असा (मा) । ९ लटरत (मा) । १० सडा (सा) । ११ मोल (मा) ।
 १२ मज्जात (मा) । १३ माबना (मा) । १४ मायो (सा) । १५ ज्यु (मा) ।
 १६ प्रगट्या (मा) । १७ पट्ट (मा) । १८ लेख (मा) । १९ को (मा) ।
 २० लखना (मा) । २१ बबतरे (सा) । २२ X (सा) । २३ उछंग (मा) ।

अछा आतुरता बिना बी अगसी का ध्यान ।
 निसे' पिसे' मांग' के बायु मिमाबत तान ॥१०॥
 अछा आतुरता बिना बिना रत की शष्ट' ।
 नीपग्य न ह्रावे ताही ये वो छन' भीगी सृष्ट ॥११॥
 चेहेरी' आतुरता अछा प्यी समुद्र का उध्यान' ।
 कोटि नदी नामा भरे ऐसा राम निदान ॥१२॥
 घहेरी आतुरता अछा बैसा राम का बाण ।
 एकहु श्याली नां पड उपज आरम जाँच ॥१३॥
 आतुरता चाहिए' अछा प्यो मणि गमाया' नाम ।
 रोवे तसफ सरफड ताके तनका त्याग ॥१४॥
 अछा आतुरता छरी प्यो रुई लपेटो आम्र ।
 छिपाई' छिपे' नहीं तां बढ' आतुरता' भाग्य ॥१५॥
 अछा आतुरता लुरी प्यो महि में नवनीत ।
 अतुर बहुत मयन किया' हात दीसा' अद्वैत ॥१६॥
 अछा आतुरता बिना बीबडा प्यी अवास्त ।
 बिना फल फूल खारी' मर रैता होवे नास ॥१७॥
 बिना आतुरता राम की बी आर' आतुर' तो होय ।
 प्यु कोयस छाना कागडू काम न आवत काय ॥१८॥
 बिना आतुरता राम की अन्य उपासन बोहात' ।
 अछा प्यो' दिलीला साप' को परमा बहामा' हात ॥१९॥
 बिना आतुरता राम की सीरय बरय तप त्याग ।
 प्यो मूखर को मारे अछा पण लखर न मारे बाघ ॥२०॥

१ मीनी (सा) २ पीली (सा) ३ भीगवे (सा) ४ बृष्ट (सा)
 ५ दिन (सा) ६ बढ़ती (सा) ७ उद्यान (सा) ८ गड्ढा (सा)
 ९. चाहो (सा) १०. निगम्या (सा) ११ छुताई (सा) १२ छुरे (सा)
 १३ झुड (सा) १४ आतुर (सा) १५ किया (सा) १६ बटा (सा)
 १७ गार्बी (सा) १८ उर (सा) १९. आतुर नरे—आरता (सा)
 २० होय (सा) २१ x (सा.) २२ माय का (सा) २३ बहामो हाड-
 बासा मोय (सा) ।

घहेरी आतुरता भखा तन मन लग्या' ताल ।
 ज्यों राज पुत्र का सोमणा' हिरा-भाषक' माल ॥२९॥
 घहेरी आतुरता भखा जेसा घोसा बास ।
 भाङ अटक मानत नहीं अपनी करत नीरास ॥३०॥
 घहेरी आतुरता भखा रामचरन सू राग ।
 जो बूझाई बुझत नहीं जे लागी बाओ में लाग ॥३१॥
 घहेरी आतुरता भखा रामचरन' पर धोर' ।
 सिंह ज्युं मारत गज भसा पसु न मारत धोर' ॥३२॥
 ऐसा राम ताकै भखा जे सबके सिर का ताज ।
 जे नहीं आकण आण का मारा ताका साज ॥३३॥
 आतुरता का पावनां जो' अमर का जल ।
 कुन कुटुब मारो लड़े साई' सुरा ममृण ॥ ३४॥
 घहेरी आतुरता भखा धरै उपरे नहीं धांज ।
 ताकू सीना अंक में जयाकू' अंय न्यय धृति" न आंक्य ॥३५॥
 घहेरी आतुरता भखा फांसफूस न सहाराज ।
 जो' सकर धाज" जनाधरा सकर" लाजो छाय ॥३६॥
 घहेरी आतुरता भखा एक पेड़ मा" बीकूठ ।
 जो' बाजागर का उड़ण बायन को नही मूठ ॥३७॥
 घहेरी आतुरता भखा आपा पर दलि जाये ।
 आपा पर बिना भाग ह सा रमना पार न जाये" ॥३८॥

१ तरणा (सा) २ माइजा (सा) ३ मोमी (सा) ४ ज (सा)
 ५ धोर (सा) ६ धोर (सा) ७ जेसा (सा) ८ अमर (सा)
 ९. भया ! (सा) १० जाई (सा) ११ मुरत (सा) १२ पार (सा)
 १३ लाकर (सा) १४ पेड़ में (सा) १५ पार न जाये—पर माहि (सा)

क्रीपा' को भग

कोई वत सीरय बरा याग' याग' करो कोय ।
 अछा 'बैठा तुज पर हाथ पाव को ओय ॥१॥
 ना में पड़पा गुन्य अछा ना मोहे इत्य का ओर ।
 गलीया बेहेल' पाग्याअ पीठ' देख्या अपनी ओर ॥२॥
 यहाँ जगल मा उतरया माहा काह रे बिराय ।
 छिन' 'एक में बस्ती हो गई ओर की बने बमाये ॥३॥
 गाज बीज बिना बरखीया' महा कोई येष माहाराज ।
 हरी भई अपनी अछा सहेज मां सरिया राज ॥४॥
 मुसकल' पाइये खुदै सा आया अपनी मात्र ।
 नर माति मावा मिल्या अछा न बेगियत छाज ॥५॥
 निद का गेहेरा जछा कहा आम प्रतिकार ।
 अपनी माजा" आपक दाठ दिया" दीनार ॥६॥
 ज्यो बिलके छानाई" के नेन छुमल बेगि हेम ।
 मास पाया' मामकू अछा पाठ का प्रेम ॥७॥
 माहनवल" माम मिले जेस कूबड कुमार ।
 खोजत "पाइय नहीं अछा" सो गुरु साया किरतार ॥८॥
 खबिरल घारा भम बली मो मुय निज घर' जात ।
 ग्याहल" हावे साही" नर अछा जेहि ए" बेसकु आहान" ॥९॥

१ अच इत्या भग (मा) ० १२ ३ ओय भाव (मा) ४ यो (मा) ५ बेम
 (मा) ६ पाग्याअ पीठ—७ ग्या रिग (मा) ८ लज (मा) ९ X (मा)
 १० बरखीया (मा) ११ मुसकल (मा) १२ मोत्र (मा) १३ सोठ दिया—
 बोरी दीना (मा) १४ छोनाहि (मा) १५ माम पाया—मामे मिलिया (मा)
 १६ बेम (मा) १७ जे (मा) १८ X (मा) १९ पड (मा) २० निहान
 (मा) २१ सो (मा) २२ न हि ए—जे येहि (मा) २३ बहाज (मा) १

अन्धा सोधा निद में पारस' गरिया' गेव ।
 दरिद्र भाग्या दूर सब थी' अज्ञान की एव ॥१०॥
 जोड़ पड़पा न ससार मूं गारि पिसे दात ।
 वरि रामकू' सुबरी अन्धा मिलि नहि पात ॥११॥
 जागे नेना माहा के' असनपमा में ओर ।
 पुनति' हाते आनीया अन्धा सा बोसी ओर ॥१२॥
 प्रेम मित्या पिठ सु अन्धा ओर भात का भोग ।
 नेन बेन रस रूप ही चल्या आत' सयोग' ॥१३॥
 आज काल की नहि अन्धा प्रमदा पीठ के संग ।
 नेह मोरतर चलन है गयो साहेर' तरंग ॥१४॥
 गुपत हेरानी बहु धिमां' अब' भई मासम' माय ।
 नाता माही' देखिया अन्धा सो आमत कोय ॥१५॥
 'कठो हाथ हे परसपर' में आर मेरा नाही' ।
 आकार अन्धा जाओ रही 'मिटे न भीतर' भाया' ॥१६॥
 उलझ रही तीसा' विना मुपने अहम' साथ ।
 करोट फीराया कय न अन्धा कहै अने' हाथ ॥१७॥
 कभी' भामिनी थी अन्धा सुपन सहराती साओ ।
 खरी जाग्या पकी' भई प्रसन्न पीठमू दाओ ॥१८॥
 सोही भोग कषा अन्धा जे धनाबनी' मरजाओ ।
 मेदू मेव' भुक्ते खरा कबहु खता न छाये ॥१९॥
 पीठ मरण को' नही अन्धा प्यारी भर भर जाय ।
 रस बस होय मिसे नहीं टर्ने' नही हाय हाय ॥२०॥

१ परमा (मा) २ विरिजा (सा) ३ जेथी (मा) ४ जोरी (सा)
 ५ रामकी (सा) ६ माही के—आज मे (सा) ७ पुकड़ी (सा) ८ प्रदी
 (मा) ९ १० ई भोग (सा) ११ सायर (मा) १२ बिना (सा)
 १३ अब (सा) १४ मामूम (मा) १५ आब (सा) १६ कंठ (सा)
 १७ परसपरे (मा) १८ आब (सा) १९ ना (मा) २० अंतर (मा)
 २१ आब (सा) २२ कोई (मा) २३ असम (मा) २४ अपने (मा)
 २५ काबी (मा) २६ गाकी (मा) ७ पिया प्यारी (मा) ८ माय
 (सा) २९ का (सा) ३० टरल (मा) ।

अमर कंच अंक में अखा कंच के अंक मा माप ।
 सा' मिलिन बिछूरत नहीं बिछूरत पथका थाप ॥२१॥
 ग्यारी न परत माहो ते' जो सुंदरी समझी होय ।
 मितर भाय ऐसा मखा गरम जसा सी सय ॥२१॥
 अंग अयासी' भोग हू अखा प्रेत का खेस ।
 मोहो निसा का पेखना जगत बासना बेस ॥२३॥
 साजी समारत सांग' कू बहोत जीवन की भास ।
 रूप' रंग मित्या अखा छाब सकू नहीं पास ॥२४॥
 सखियाँ बनियाँ सेहेस कू स्वर्ग भोवन का भोग ।
 प्रीतम' मुझ' छड़त नहीं राखत सहेज्य संयोग ॥२५॥
 परबस सारे पखीमाँ सबि डोर पर सास ।
 मोजाँ खेतत आपणी 'हर घन मये मये हास ॥२६॥
 मैं तो छड़ सकता नहीं राख्या अपने हाथ ।
 ज्यों बीतरे' के हथिया बड़ा सो बड़या माहत' ॥२७॥
 मेरी मैं ममजू नहीं तो मसा क्यू समझू' और ।
 ज्यों देखियत बहुरय मादरी मज का' रम फिरेगा बहार ॥२८॥
 मेरी तो ऐसी प्रखा बिम बासी' सी बात ।
 साते डोर यामा' पड़ तब अजर बासत तात ॥२९॥
 जैसा जान रबाब का' ऐसा बासण माप ।
 बाजा छड़त अदिया ना अखा ते होय ॥३०॥
 ज्यों स्त्री रह्योस' बीत्या अखा तब मानत सब सोय' ।
 बका' भीन्ही घई "अबे "ताका "बेसा काय ॥३१॥

१ माही (मा) २ गहावने (मा) ३ आपानी (मा) ४ मखीमाँ
 (सा) ५ स्वांग (सा) ६ रिम (सा) ७ कला (मा) ८ भीम (सा)
 ९ मूवे (सा) १० अखा (मा) ११ बिम (मा) १२ बहान (सा)
 १३ ममजे (मा) १४ बहान (मा) १५ बाजी की (मा) १६ घाट (सा)
 १७ जान रबाबका—बागर कावका (मा) १८ गहुम (मा) १९ बीय (मा)
 २० बनिया (मा) २१ असा' (मा) २२ ताका (मा) २३ बेसा (मा)
 २४ बा (मा) ।

बेहि' न आवत बाउमा सो ही बोसत' बोस ।
 नर भूषण सेवे अछा मानक' मौल अमोल ॥ ३२ ॥
 अछा अलख का लखणा ज्यों सिहिनी का पयपान ।
 और पसू अच' मा सकें बचा' अचत एहि साम' ॥ ३३ ॥
 मो रसीसा का' माहात्म्या आप में सब गरकायो ।
 सोहामा कोई रह्ये नहीं पसू पंखी ब्रह्म' सायो ॥ ३४ ॥
 तख दरसी का देखना' मात साहि नहि काम ।
 बेहेन चरित्र न्यारे अछा खेन" मध्ये आराम ॥ ३५ ॥
 बोसन मंते चुप है चुप का स्फुरण सा" वाल ।
 नाही चुप जा" बोलना अछा अच देख्या छान ॥ ३६ ॥



१ औ (सा) २ बोलावत (सा) ३ बाध्यक (सा) ४ अभी (सा)
 ५ बचवा (सा) ६ अचत एहिबान—वीरत एक मान (सा) ७ मा रसीसा का—
 पार गलाका (सा) ८ सहामा (सा) ९ बुरा (सा), १० देसमा (सा)
 ११ ऐन (सा) १२ बे हि (सा) १३ नाहि (सा) ।

हीरा' को अग

जीव जात्य' हीरा अन्धा लाग्या रग' का दोष ।
 आपे से सुधा भया तब नहि बचन मोक्ष' ॥ १ ॥
 भया अवस्था भेद हे क्यू निपू जाग्रत जाय ।
 जागे व' क्यू का त्युं ही है 'धमस्या' मेहेन ममाय ॥ २ ॥
 जाग्रत कही जाता नहीं बाहर से निद न जाये ।
 भया अवस्था भेद ह जो साक्षीवत रहाये ॥ ३ ॥
 जाता जाता नही कछु हे जान पणे का जात ।
 अन्धा जीव करोलिया उससत अपनी सात ॥ ४ ॥
 स्वर्ग बैकुण्ठ ब्रह्माक सौ जानी सब संसार ।
 भटल पद ग्यारा अन्धा अहां' लागत नहि उधार ॥ ५ ॥
 अक्षर के भाधार कदुय' क्षर वस्तु होये' रहि जाये ।
 जाका सक्ष जाग अन्धा छोही सो पद कू पाये' ॥ ६ ॥



१ त्रि (ता) २ जाने (ता) ३ संय (ता) ४ बच और मोक्ष
 (ता) ५ जाये (ता) ६ त्यु (ता) ७ समजनु (ता) ८ न.सी भू
 ९ लहा (ता) १० नव (ता) ११ नव (ता) १२ कू पाये-पद रहाव (ता) ।

मेघ की अंग

ज्ञान निमग्न दीर्घो भसो एक भावना मास ।
 दीनो छाप निरञ्जनी बग्या वैरागी माल ॥ १ ॥
 टापी सिर अछ मात्रिका^१ मुदड़ी रग पच भूत ।
 फूस मास निरवासना^२ सेसी सुरत्य अदभूत ॥ २ ॥
 निज नदृषा^३ † उदायनी जगाटा सो निरास ।
 आइध अछ एक लज्जा^४ सरथ सगोटा पास ॥ ३ ॥
 वस्तु बिचार^५ सा कूबड़ी अचरा सहज सुभाषा ।
 आसन पिङ्ग वृहदा^६ पर जहा^७ ओष का न टिके पावो ॥ ४ ॥
 सुत नित^८ ले कोलणा बलवो बिद आकाश ।
 ध्याता ध्ये और ध्यान का जाये सब समास ॥ ५ ॥
 रेहेणो कण्ठी आपसीयां यबी करणाहार^९ ।
 अमल मुद मित्रारम में^{१०} का गुरुमुखी सगा बिचार ॥ ६ ॥



१ घरी अछ माशा (मा) २ निर्वाचना (मा) ३ महेष्वा (मा)
 ४ ता (मा) ५ सद्य (मा) ६ वराग (मा) ७ रवही (मा) ८ टिकठ (मा)
 ९ गु... म—नूरत नूरत लय (मा) १ अहार (म) ११ नुर
 मे—नुर निपा रमे (मा) ।

असंत की अंग

तिमरु बनावत रुचि रुचि^१ हेत नहि हरिनाम ।
 जयवि टसवा^२ स्वान ही आत न कटनी बान ॥ १ ॥
 मनुआ तो समरप^३ नहीं भेख समारत बाहार ।
 जैसो सोमल उजरा करत^४ प्रान परिहार ॥ २ ॥
 हीय मोठी हरि किया कोई भाग्यवान के काज ।
 तितस्व ज्ञान भोग अखा कोई एक अंस^५ महाराज ॥ ३ ॥
 जैसे सीसम काष्ठ में पचरा रहत हे बिध ।
 त^६ अखा अगत ए^७ आत्मा बिच कुबुध्य की कीध ॥ ४ ॥
 अखा सदगुरु के भिसे कबुधि न नीपजे नैम ।
 तोहारी^८ वरसत पारस काई न हावे हेम ॥ ५ ॥
 एक असंत दूजी मन की मख कुमुदि धियाय ।
 रयो^९ अवसर आया^{१०} अस जना^{११} ज्यों का र्यों हो जाय ॥ ६ ॥
 अखा सदगुरु के भिसे असंत संत न होय ।
 "ज्यों नीर नरम सब कू करे पण कछुवा नरम न होय" ॥ ७ ॥
 असंत आत्मा नामका वरसत एक सुभाय ।
 गिला तब गदा अखा सूखा कठिण हो जाय ॥ ८ ॥
 असंत अरा बानास का प्रेरणदार दुष्ट देत ।
 छूत्र चुप रहे ताते अखा जे किया न जान हेत ॥ ९ ॥

१ दक्षिण-रुचि रूची (सा) २ पण (बा) ३ हीनुवा (सा)
 ४ पण (सा) ५ मुजरत (सा) ६ करे ली (सा) ७ रयु (सा) ८ मोठी
 (मा) ९ अंस (मा), १० सीसम (सा) ११ रहत दे-नीपज (सा)
 १२ रयु (गद.) १३ हे (सा) १४ अयु (सा) १५. X (मा) १६ जाय
 (सा) १७ राम न (सा) १८ X (सा) १९ नरम होय-नये न कीद
 (सा.), २० आरा (सा) :

†'आँबा दूधा सत जन फलते ममता जाय ।
 असंत एरंडा जब फल्मा तब ऊँचे मुख राहाय ॥१०॥
 असंत दूधा बही अछा मानस नही उपकार ।
 अवसर आया फुफ्फे' ओ होये पय पावणहार' ॥११॥
 अछा राम ताकू मिसे, जे सछनबसा' होय ।
 साँव दाँव यभीरता दोष न देखे सोय ॥१२॥



अथ सीता' अग

बाद न क्य' मखा कोई सूँ ज्ञान रतन भमोल ।
 बे कीमत मत बारवे कोई पारख आने आस ॥१॥
 अजर प्यासा ज्ञान का कोई भस गेहूँ सहाराम ।
 छिलर बुध्य' का नर मखा दाउ बात ते आय ॥२॥
 सिय न मारत सिवाल कु बोट करत गजराज ।
 बाना' दकि मत बके क्यों मोति न हावे पाज ॥३॥
 छुधा' बासण छार का मरण सिंहनी का दूध ।
 बह्य रस ठहरे तब मखा हाय सोला हेम तल दुध ॥४॥
 मुसकल' बह्य रस पावना पचना भी मुसकल ।
 जानी और रसायणी चाहिये पुगता दल' ॥५॥
 जैसे तसे जन कू बकबक मत' विगाड ।
 मखा सुधे सरप' के नरम न कूता हाड ॥६॥
 सोई' नर निपजे मखा जामे सब' समाखी ।
 ढाढ़्या' परछान' उपर बेनु मे का पानो ॥७॥
 मासा मलका बाबा ते बाओ शम्भ का जोर ।
 मरे की पीछा बाहाड़े मखा' दग्धा' नीकस बाहीर ॥८॥
 मखा दग्धा जाको पख्या ताकू सब पख्या सेल ।
 पयर पख्या जा पेट' में तब' कोण कणा रह्या गेल ॥९॥

१ पिछा (ता) २ कर (ता) ३ बुध्य वा—बावना (ता)
 ४ बह्य (ता) ५ प्याज (ता) ६ छोछी (ता) ७ मुसकल (ता) ८ बुनन
 (ता) ९ दिन (ता) १० नते (ता) ११ तपे सर—सुपे सर (ता)
 १२ मोहो (ता) १३ दग्धा (ता) १४ गु (ता) १५ पीछा (ता)
 १६ पद (ता) १७ न (ता) १८ पिड (ता) १९ और (ता) ।

ज्ञान उपदेस मत अथा कसुसी साहमा होय ।
 जी नाम चढ़े अणूक मुखा^१ तो^२ प्राण हाण करे सोय ॥१०॥
 असा बोवी सभर कर मत सेंट गमावै आय ।
 बोवा हरि हा^३ निमठ ना तो छार होय आय ॥११॥
 इत सासण ससार की उत^४ लासण परमाक ।
 बनज उभार दोड हे राम रेहे जात^५ हे राक ॥१२॥



१ अणूक मुखा—उत्प्लुकमुखा (सा) २ अ (ना) ३ होय (सा)
 ४ और (ना) ५ गया (ना) ।

नीष्ट ज्ञान' को अंग

निष्ट ज्ञानी' ऐसा अच्छा भाव भरौसा हिन' ।
 सतगुरु की जापर नहीं' जीव काके' बाघीन ॥१॥
 निष्ट ज्ञानि' ऐसा कपनी रहत आकास ।
 करत्ये' ब्रतत जीव में राखस जीव के दास ॥२॥
 नीष्ट ज्ञान क्यूँ जानिये सबन' कुटुंब परिवार" ।
 क्यूँ कुसटा कब कू तर्ज" चाहत निधि बिन बार ॥३॥
 निष्ट ज्ञान ऐसा अच्छा सीधी सुख करे बात ।
 गुह मूल" मुखाई की जागत" नहीं सो बात ॥४॥
 ठठे" सोइ बाजीगरा अपरस काटत" अंग ।
 भेहि कसा खेले अच्छा तब पाया" गृह संग ॥५॥
 कपनी कहनी नल अच्छा पर रहमी ये कुरामो ।
 निष्ट ज्ञान जाण्या पडे आवातन घन पाबो" ॥६॥
 निकट्या पिछा न फिरे छुड़ ज्ञानि जोर सूर ।
 तब घनी' बीतमा ना धरे सहे सो राख हजूर ॥७॥
 छुड़ ज्ञानी जोर सिंह की एव टेक एक पास ।
 फिर देखे जागे खेले अच्छा न मारे मास ॥८॥

१ निष्ट अंग (सा) २ ज्ञान (सा) ३ हीन (सा) ४ सतगुरु....
 नहीं-बाब नहीं सद्गुरुका (सा) ५ काया के (सा) ६ निष्ट ज्ञानि-निष्ट
 ज्ञान (सा) ७ कुटुंब (सा) ८ ब्रतत (सा) ९ कुल (सा) १० पर
 प्यार (सा) ११ भेजरी (सा) १२ कुली (सा) १३ समग्रत (सा)
 १४ ठठे (सा) १५ काटत (सा) १६ जाण्या (सा) १७ आवा पाबो-
 बन तन आवा बाब (सा) १८ कू (सा) ।

निष्ट ज्ञान^१ और उदरा चोपट^२ न भले आम ।
 मुख स्यावे^३ पथमी खान पान तहाँ सास ॥९॥
 गुरु गोविंदी^४ परचा^५ नहीं दमड़ी चमड़ी चाहे ।
 अन्ना पास जहाँ^६ संत^७ की नहीं मानाकानी लाये ॥१०॥
 परमोद्ये परकू भसा पण परमोद्यत^८ नहीं आप ।
 जेसा दीपक बीजका तेज करे न ताप ॥११॥
 साधु संत को टेक हे साकू घरत न कान ।
 जेसे सूत^९ गुन का जाच्या^{१०} †^{११} पीता नहीं पहचान^{१२} ॥१२॥
 जे फल पाक्या^{१३} झाड़ते ठाकी सहजत^{१४} और^{१५} ।
 गुरु गोविंद^{१६} ते जे गया सा टुट पड था फटोर ॥१३॥
 गुरु द्रष्टा^{१७} पाया नहीं आस्त^{१८} ब्यङ्गोणी^{१९} गोष्ट ।
 अच्छा भयस नहीं अंतरे काहा भयो खरबपां होठ ॥१४॥
 सरयमानी^{२०} ऐसा अच्छा जैसा सूर्य^{२१} सुभाबो ।
 दिन सापत पोपत निशि अनन्यता के जाबो^{२२} ॥१५॥
 निष्ट ज्ञानी ऐसा अच्छा ज्यों दूध भचाया नाग ।
 हलाहल हो नीमड्या कर पड़त हे जाग ॥१६॥
 सतमानी ऐसा भसा सदा रहत गुरु सरण ।
 सख गुरु के सखमा सन मन^{२३} गुरु क चरण ॥१७॥
 ज्यू मूहूरतय^{२४} बिप भरी निपजत सहित भवेव^{२५} ।
 सरय ज्ञानि^{२६} ऐसा अच्छा जिनु सख्या गुददब ॥१८॥

१ निष्ट ज्ञान—नैष्ट ज्ञानी (सा) २ चोपट (सा) ३ छुगावे (सा)
 ४ वा (सा) ५ खान (सा) ६ जे (सा), ७ साकू का (सा) ८ प्रमोदे
 (सा) ९ प्रमोद्यत (सा) १० पुत (सा) ११ गुनका जाच्या (सा) १२ ताहे
 (सा) १३ पक्षिपान (सा) १४ पाकृत (सा) १५ पक्षमात (सा) १६ और
 (सा), १७ से (सा), १८ दूरा (सा) १९ भास्य (सा) २० बिनाही
 (सा) २१ ज्ञान (सा) २२ सूत (सा) २३ व्याय (सा) २४ x (सा)
 २५ मृति (सा) २६ अवयेव (सा) २७ ज्ञान (सा) ।

समस्त कर^१ मीपजे^२ अखा गुह सा मीपजे सोय ।
 सस ससस मीथा रहे तो बिम्ब^३ प्रतिबिम्ब होय ॥१९॥
 टुक मी पग बाये घरे^४ † पिछा न घरे^५ पायो ।
 अखा या पीछा घरे^६ तो बहोर न पाये पायो ॥२०॥



अजब की अग

अयमा आप विचारिया बेतम्य बिम्हा थाम ।
 अछा पय बसना रङ्गा कहीं तहीं नीज धाम ॥१॥
 अजब मता पाया अछा आपा भीहीना एम ।
 अहता मेर' बित्त' ते टर्या जे करता दिन रैन ॥२॥
 अजब मता पाया अछा पूजे' ते दखिय सूख्य ।
 नव नीट्य तामे' नीपजे 'बोसत सब' ओर मृग्य ॥३॥
 अजब मता माया' अछा बिज चकमक की आम्ब ।
 सुमयत सो दखिये नहीं ओर' नही कोई' जाग ॥४॥
 अजब मता पाया अछा अस्या अमोहर थाम ।
 सो ब्याप्ती मां भिस गया जाके हे सब कपाल ॥५॥
 अजब मता पाया अछा धम्दा' ठौर दिखाय ।
 आपे राहामे रहे गया बैतन बीत में माये ॥६॥
 अजब मता पाया अछा आप न परस्या अग ।
 क्युं मेघ बुंद दरिमा गिरी अबनी न कोना' संय ॥७॥
 अजब मता पाया' अछा ज्यों गर्म रखा था बाये' ।
 आप बिसाना अंतरे को कहे नर मायाये' ॥८॥
 अजब मता पाया' अछा सबका दुष्ट आप ।
 पिड बह्मांड जमे हुमे मां नीज थाप उपाय' ॥९॥

१ मेम (सा) २ बीजते (सा) ३ डूब ते—दुलन (सा) ४ ऐली
 (सा) ५ कात्रे (सा) ६ ता (सा) ७ भी (सा) ८ पाया (सा)
 ९ छी (सा) १० और (सा) ११ घर (सा) १२ कीम्हा (सा)
 १३ कसा उपजी (सा) १४ आप (सा) १५ पाहाव (सा) १६ कसा
 पाई (सा) १७ उपाय (सा) ।

अजब मठा पाया अखा अपारो^१ का के तीर ।
 आपत स्वप्न स्वप्नोमती^२ तुरिया^३ का सो नीर ॥१०॥
 अजब मठा पाया अखा चैतन्य^४ बराबर भीहीन ।
 सोहि सागर की सेहेरियाँ हृष्टि^५र जाके मीन ॥११॥
 अजब मठा पाया अखा सुत^६ सत्त्व सब सार ।
 उपज्या सो बोन^७ मया^८ पण प्ररत^९ न अतर ता^{१०} ॥१२॥
 अजब मठा पाया अखा कहे सुने^{११} से कूर ।
 सन्नेधि का बघ हे मुरत^{१२} मुरत से^{१३} मूर ॥१३॥
 अजब कसा उपची^{१४} अजा करनी हारी काम ।
 मुमे के मुकाम में ज्यों का त्यो^{१५} हि^{१६} निवाय ॥१४॥
 अजब कसा सोहि अला जो^{१७} से ब्याता बिन धाम ।
 पैसा तैसा आप हे को कहे राम अराम^{१८} ॥१५॥
 अजब कसा पाई अखा ज्यों का त्यो^{१९} हि सदैव ।
 मया गया से बाहिरा^{२०} सब जीवन का जीव ॥१६॥



१ बाह्य (ना) २ मुप्राति (सा) ३ बाह्य का (ना) ४ दृश्य (ना)
 ५ दृश्य (ना) ६—७ विनय मया (ना) ८. X (ना) ९. टग्न (ना)
 १०. मुने से—मुप्राति (ना) ११ लय (ना) १२ पाई (ना) १३ X (ना)
 १४ X (सा) १५ आराम (ना) १६ बाह्य (ना) ।

तपास अंग

तपास अंग सो एहि है जे तपासै अपना अंग ।
 सब तत्व का पुतसा करे को' येहि अंग ॥१॥
 मेरी तेरी नहि मखा अहां है साइया आप ।
 ए मत मत कु' खेचते' हांसल गया अपाप ॥२॥
 नाहि हरी हिंदू मखा नाही मोरा मुसलमान ।
 बिच खचाखापो मत करा पण पीठका नही पहचान्य ॥३॥
 जो कर जाने बदगी तो आपा छोड गुमान ।
 भला - बुरा मत कहे मखा एवो आपे आप खीरान ॥४॥
 फाल्या फूल्या गया फीरे कहा देखाने अंग ।
 काम फना हा जामगा जसा रंग पतंग ॥५॥
 भातसवाजी ए अन्धा जाना सब सत्कार ।
 समरतें दिन भुजरे मार' फना होत नहि बार ॥६॥
 निरदासे का बाजपा' मखा जा' घड़का जूत' ।
 सो रिपु बिना रजसा सड़ मोर' भाजन की महीं सुत ॥७॥
 ज समरिकरी' जूत' को चढ़ सो साधा संग्राम ।
 सो मरे मार' अखा तूं हरीजन कु राम ॥८॥



१ जो (सा) २ पण मतइव को (या) ३ बिच (सा) ४ सराव
 (सा) ५ × (सा) ६ बीर (सा) ७ × (सा) ८ मूत (सा) ९ पन
 (सा) १० जमवर (सा) ११ मूषु (सा) १२ मरे मारे-मारे मरे (सा) ।

खस जानी' को अग

सा सगत ये सूखे नहीं जे कुटिल विपई' १'बघ ।
 मखा' यग की मछनी सा छाड़त नहीं दुरमघ ॥१॥
 हरीजन की' तामस अखा अस बंद की छाम ।
 तेज करे तपे नहीं १'उपवेसे आराम ॥२॥
 नर नरहरी बिच नहीं अखा १'कागदबा की ओट ।
 १'अहंमानीनता' बोच पड़ी मीथ्या वख का कोट ॥३॥
 जो कोट होय वख का सो सोड कोड संध जाये ।
 एतो माया बड़ी' माया" बिना ताठे कोई हाम न बाहे" ॥४॥
 जैसी प्यारी नछमी और" जैसा प्यार भर्म ।
 ऐसा प्यारा राम था तो क्या' दुस जाता कर्म ॥५॥
 मुरख के मन मा अखा राम धाम पर प्यार ।
 बाकू माहोता' दीजिए सो जाये घर बार ॥६॥
 माता तन भासम अखा पिता पुत्र काई" एक ।
 माता तन माता" भजे और' पीता पुत्र विएक" ॥७॥
 एक पसक न मार पीठ निन' आ लाग्या" होय नाहा" सो नेह ।
 एतो जपमि" तन" बाहेर' फिरे १'दे दूरी जन" की देह ॥८॥

१ खस अंग (सा) २ विपयी (सा) ३ खल (सा) ४ म्यु (सा)
 ५ ना (सा) ६ और (सा) ७ एक (सा) ८ वन (सा) ९ अहंमानीनता
 (सा) १० बड़ी (सा) ११ माया (सा) १२ वख (सा) १३ X (सा)
 १४ क्याहा (सा) १५ नछमी (सा) १६ को (सा) १७ माया (सा)
 १८ वन (सा) १९ व्यतिरेक (सा) २० निष्ठा (सा) २१ नाबनु (सा)
 २२ दुरवली (सा) २३ X (सा) २४ बार (सा) २५ अखा (सा)
 २६ दुर्जन (सा) ।

हरिजन ते हरि में रहे मनसा बाधा काय ।
 बाहार भीतर माहीं भखा तो कांहाते कांहांकु जाय ॥९॥*
 छपट पसे बन राम का ज्योहां वन वस्ती दो माहि ।
 छटकी छटपट में भखा कमहूँ मन न बाहि ॥१०॥*
 मूषर कु सब मे भखा और खेपर कु कछु माहि ।
 रघु देहदर्शीकु सब दमन और तत्त्वदर्शी सत्त्व माहि ॥११॥*



* यह तीस सावित्री का हा जी अ २६७ ३४० में लही है । सा के अनुसार है ।

दुनिया अज्ञान अंग

अथा सारा समुद्र का नीकसत नाही पार ।
 एक घरीजा और ज्ञानी मता समझत नहीं संसार ॥१॥*
 दुनिया हरिजन कुं ना मदे जो नीकट रहे दिन रात्य ।
 ज्युं गीगाडा गीमान का वृक्ष छोड़ सोहु सात ॥२॥*
 संसारी संसे भया कबूच्य आके साह्य ।
 मत्ता सो न बूझे अर्थकु सो अनर्थ से घर बाय ॥३॥*
 बल न सके भाघा अथा जाकुं है अहं व्याघ्य ।
 जे लागे बेहवसु ताका मता अगाध्य ॥४॥*
 दुनिया कटणी कूकरी काटे सबक पायो ।
 कर' साठी से ज्ञान की निरमें हरि गुन गायो ॥५॥
 ज्यी जाने ल्यो कर' अथा आपे बेत' मोसान' ।
 ए दोनु टेढ़े ना टसे एक दुनिया दूजी कमान ॥६॥
 दुनिया राजी ना रहे ज्या ल्यो काढे एव ।
 मपना काज समार से अथा शब्द कर गेव ॥७॥
 परबत तात्या दव पीमा आनि दिया यकवास ।
 सोहरिपरदूनी राजी नहीं अब अब न जैन देत हे 'गाल ॥८॥
 स्तुति निद्या दोनु अथा 'ए ठम माया की जात्य ।
 "दो पर दिस जा' राखिअता मोसरयो" करि' हाय ॥९॥

-
- १ दुनिया अंग (मा) ० करि (सा) १ मात्र (सा) ४ करं (सा)
 २. बेत (सा) ६ उमान (सा) ७ भाग (मा) ८ दुनीजा (मा) ९. अब
 न बैन हैत है—देन बजन जन (सा) १० x (मा) ११ दोनु (सा)
 १२ x (सा) १३ यू (सा) १४ करे (सा) ।
 * ये चार लाखियी मूल आपार प्य ह नी प्र २६० व ३४० में नहीं
 है । परंतु सा के अनुसार है ।

वंदे पञ्च पञ्च नर नीचे^१ एहि दुनिया की^२ बाग्य ।
 दानु ठग माया भखा मत धरे^३ तु काम ॥१०॥
 अत्रा धान के खेत मा जी खड्ड्यान् ररेहण म पामे ।
 सौ हरीजनमा खस मीमे सा अषबाध्य ये^४ जाये ॥११॥
 अखा खस जन जानिये जा तिसमे का पाहाण्य ।
 जतन जतन करि करि^५ बासही^६ पण गध न रहे^७ निरवाण ॥१२॥
 अखा लमचकू ना लगे^८ †^९ मृगमद फूल बरास ।
 †^{१०} खस अबगुन भागे करे अते अपना बास ॥१३॥
 त्यो हरीजन मा खस रहे जी^{११} बकमकमा^{१२} बाग्य ।
 ठपके ते^{१३} बहनी^{१४} नीकसे अखा पावे^{१५} जब साग ॥१४॥
 *नर नारायण ओमखो नर नरहरि^{१६} छ एक ।
 साखा गुह मन अखा ता^{१७} पामे एह बिबेक ॥१५॥
 बिबेक विणा वणमे^{१८} धणा रुदे^{१९} ना जाणे राम ।
 पसूनी पेरे यई मुत्रा अखा मरू^{२०} नहीं काम ॥१६॥
 काम धाम धन धाइयो धान्य कीछो धध ।
 गुह गोविद^{२१} न^{२२} ओमक्या ते आक्याला नहीं^{२३} अघ ॥१७॥
 अघ अघान् नप्य सहे अजूवासू^{२४} मप्य दिठ ।
 त्यम हरिजन देख^{२५} नहीं जे र्जग ब्यश्रोणा घीठ^{२६} ॥१८॥
 हरीजन यो हरि पामिम जा हरिजन^{२७} मू हाय हेय ।
 जनकी^{२८} जे^{२९} नीचा करे ताके मुख मारेत ॥१९॥

१ पंनर मंडे (मा) २ X (सा) ३ करे (सा) ४ X (सा)
 ५ एयु (सा) ६ मप्यने (सा) ७ कंकर (सा) ८ पहाण (सा) ९ X
 (सा) १० बासीब (मा) ११ लण (मा) १२ प्यु (सा), १३ एयु
 (सा) १४ लप (सा) १५ बहनी नीकसे—मुलमे जरा (सा) १६ न (सा)
 १७ ते (मा) १८ बाग्य (मा) १९ हरे (सा) २० मर्य (सा)
 २१ हरि हरिजन (मा) २२ नक (मा) २३ मे (मा) २४ अजबाल
 (सा) २५ ओल्लये (सा) २६ घीठ (सा) २७ जनमु (सा)
 २८ हरिजन (मा) २९ X (सा) ।

* सा के अनुसार वही से बिबेक अग का प्रारंभ होता है ।

रेत पड़े रु रु पने हेज तेज होय नास ।
 हरी बिमुख तिह' लोकमा पीछा फिरे नीरास' ॥२०॥
 जो' दिमकर साहाम् देखते नेन तेज' खुडि' जाये ।
 हरी बिमुख तिन लोकमा' साका राम न हाव' साहाय ॥२१॥
 •हरीजन छोना' राम के ताक प्यारे प्यार ।
 आराधा' हरी हन करे बिरोधा दे मार ॥२२॥
 हरीजन हरिके माइसँ बने सो हरि की मोज ;
 टैंड मेन जापइ' करे तापर कासकी कोज ॥२३॥
 हरीजन छोना रामक औ गठका छौना बछ ।
 सिर मारे अह पय पीये त्यो त्यो भाग बछ ॥२४॥
 हरीजन परहित भावर तापर हरि अनुकूल ।
 जनकी के नींछा करे ताके काइ' भूल' ॥२५॥
 पर निद्या पापी करे भारे अपना फन्द' ।
 हीरदे हरिना आलस्या' एहि हरि का वंद ॥२६॥
 सो नरये †'वर भया जा नींछा न करे नीम ।
 हरी भजे ना निद्या "करे सा पुख्य सँ पशु तफीम ॥२७॥
 मूकर कूकर कागडू निब कहा मत बाय ।
 ए अपनी जीविका करे और न करे †'बवगाय ॥२८॥
 मन मैला मूरख करे †'तन छोले दिन रात ।
 तिन कू साइया दूर हे जाके मुलमा तांत ॥२९॥
 बितमू जो चोपग भला बेपग नीबुधी नास' ।
 बेपग बुध्य बड़ सु करयु चोपक' दिया दयाव ॥३०॥

१ तिन (सा) २ जेत हुये हरिबास (सा) ३ पय (सा) ४ उद्योग
 (सा) ५ जर (सा) ६ तयु हरिजन की निद्या करे (सा) ७ जोर
 (सा) ८ प्यार (सा) ९ आराधे (सा) १० / (सा) ११ बांध
 (सा) १२ भूल (सा) १३ पिछ (सा) १४ हरि नाथे भगा (सा)
 १५ मय (सा) १६ नहीं (सा) १७ को (सा) १८ और (सा)
 १९ बाहुय (सा) २० चोपय (सा) ।

* ता के अनुसार यहाँ से हरिजन अथ आरंभ होता है ।

हरी हरीजन तो एकहे त्यूम वेसो सोख्य बीचार ।
 सब बामा हे सार्हका तो एक कहा नीरधार ॥३१॥*
 हरीजन कू घाना वही एतो अरथी पेहेष्येना मेप ।
 जाकू जेसी बन गई दरसन देखा देख ॥३२॥*
 जाये पय चलना अखा सा सीग बनाव साज ।
 जे नेह रिस भट्या भर सीहा ताकू मही बछ बाज ॥३३॥*
 जिस मेवलकू मस्ती ता पर माइया का प्यार ।
 अखा औरत धारी आये हे लसकर का भार ॥३४॥*
 भूप चाहे अमृत भय और भूपन भूपिठ भग ।
 मोड न राजा द्वारका अखा साहच सौ रग ॥३५॥*



प्रेम प्रीछ को अंग

प्रेम प्रीछ नर का मन्त्री अच्छा सो जाने होय ।
 प्रेम मिलाव पोयु को प्रीछे समरस होय ॥१॥
 प्रेम अकेला क्या करे जो' प्रीछ न होवे साहाय' ।
 ज्यों बाँहे बस बाण बसे असा 'नीरस' नीसाम आय ॥२॥
 प्रेम पियाये पाइये और प्रीछ गुस्ते होय ।
 प्रेम प्रीछ से बाहरा तान न सेरे दोम' ॥३॥
 बोहात पसु बोपाइ में मेया मेय' बेसमाये' ।
 गवर्द' मरोसे मातके सबन तनो मुख 'बाये ॥४॥
 पसुपास ता' बछकू पकड़ि मिलावे मास ।
 त्यों अच्छा गुह ये हरि भीम महि तो छाता सबनि की सात ॥५॥
 अच्छा संसारो जीव कू न कहिए सीधी ठीर' ।
 प्रेम-प्रीछ बीना फीरे जे हरी बीन देखे और' ॥६॥
 अच्छा तमासा अजब हे जे' यकमत मा नहीं जाम ।
 देख न देखे देखे जे पकड़ि रह्या कौणा प्राण ॥७॥
 पवन पानी का पुठमा क्या क्या तामें रम' ।
 अच्छा ताकू पाय स जीत गबी के दुग' ॥८॥
 अग्य सब' गुहवेक का संसारा संत गाये ।
 ॥९॥ और बुनिया कू बह' आये ॥१०॥

) ३ बीर (मा) ४ कूरम (मा)

५ मयी मे- ६ महीप (मा)

(मा) ७ ८, १० मा

(मा) और—त्रैमा

(मा)

जेहि सबदकू खोजते संत पारागत जाये ।
 सोई सभ्य दुनिया अछा तान गीत में जाये ॥१०॥
 नेम कान भुजग का बोले भाव सुनि सीस ।
 असा बड़ा काम खरका कहा भया आंगस बीस ॥११॥
 तब धन ह्रीणा मी' भसा अछा हरि के जाण ।
 साकूत हरी आप्या नहीं [†] कहा भयो बहोत समान ॥१२॥
 विम मैधुन मार मोपजे अग रग मधुरे बेन ।
 माता मोई बिछुवा भया सवन कु दुस्त देन ॥१३॥
 हरीजन की नीपग्य असा सेहेजमा होइ जाये ।
 बेहेन बेन उपदेस कर जगत का मरद गमाये ॥१४॥
 बोहोत विद्या बोहो दिम पढ़े आसी कीना' सीस ।
 असा वाद करत मरया चीन्है नही जगदीस ॥ १५ ॥
 असा बिन देखा हंस क नामे सब कोई' सहराय ।
 प्रकट असुक के बचन ये सब कोई' मन भंग पाय ॥ १६ ॥
 ग्यी' साकूत सल के बचन ये सब कोई' हाये दिसगीर ।
 असा बचन हरीजन के सबकी भाव पीर ॥ १७ ॥



प्रेम प्रीछ को अग

प्रेम प्रीछ मर को मसी अखा सो जाने कोय ।
 प्रेम मिसावे पोयु को प्रीछे समरस होय ॥१॥
 प्रेम अकेसा क्या करे जो प्रीछ न हावे साहाय ।
 ज्यों बाहे बस बाण बसे अखा १ नीरख नीसाने आय ॥२॥
 प्रेम पियावे पाइये और प्रीछ गुस्ते होय ।
 प्रेम प्रीछ ते बाहरा ताकू न तेरे दाय ॥३॥
 बोहोत पसु चोपाड़ में मेधी मय बेसगाये ।
 गवर भरोसे मातके सबन तसो मुख बाये ॥४॥
 पसुपास ता' भखकू पकड़ि मिसावे मात ।
 र्यों अखा गुरु ये हरि मील नहि तो छाता सबनि की सात ॥५॥
 अखा ससारी जीव कूं न कहिए सीधी ठौर" ।
 प्रेम-प्रीछ बीना फीरे जे हरी बीन देख और" ॥६॥
 अखा समासा अजब हे जे" गफमत मा नही जान ।
 पेच न देखे पेड़में जे पकड़ि रखा कौणा प्राण ॥७॥
 पवन पानी का धुतसा क्या क्या तामें रग" ।
 अखा ताकू योज स जीस गवा के डंग" ॥८॥
 अखा सब" गुवदेव का ससारा संत गाये ।
 हरिजन के हिंदे रहें और दुनिया कू बह" जाये ॥९॥

१ जे (मा) २ राह (सा) ३ और (सा) ४ मूरत (मा)
 ५ अखा सो जवन न होय (सा) ६ मया मेव—मद्विपो महीय (सा)
 ७ बेसगाय—बिमयाय (सा) ८ गमह (म) ९ ब्याय (मा) १० मो
 (सा) ११ न ... ठौर—नहीं मुची पहिछान (मा) १२ ब. और—ईना
 बगद भवान (सा) १३ पग (सा) १४ डंग (सा) १५ रंग (सा)
 १६ डंग (सा) १७ बही (सा) ।

वेहि सबकु खाजते संत पारांगत जाये ।
 सोई सम्भ दुनिया अछा तान गीत में जाये ॥१०॥
 नेन कान भुजंग का जोसे नाद सुनि सीस ।
 असा बड़ा कान खरका कहा भया आंगल बीस ॥११॥
 तब मन हीना भी' भसा अछा हरि के जाण ।
 साकूत हरी जाण्या नहीं किहा भयो अहोत समाप ॥१२॥
 बिन मैथुन मोर नीपजे अग रग ममुरे बेन ।
 माता मोई बिछुवा भया सवन कु दुख देन ॥१३॥
 हरीजन की नीपज्य अछा सेहेजमा होइ जाय ।
 बेहेन बेन उपदेस कर जगत का दरद यमाय ॥१४॥
 बोहोत बिद्या बोहो दिन पढ़े खासी कीना' सीस ।
 असा वाव करत मरपा चीन्हे नही जगदीस ॥ १५ ॥
 भसा बिन दखा हस के नामे सब कोई' सहाराय ।
 प्रकट असूक के बचन ये सब कोई मन भग पाय ॥ १६ ॥
 ग्यो' साकूत खल के बचन ये सब कोई होय दिगगीर ।
 भला बचन हरीजन के सबही भाजे पीर ॥ १७ ॥



चेतन को अग*

भया भक्ति कैसे फले जो भीतर प्रेम' कपार ।
 मोलता' बुझ्या नहीं ना कैसे' होय सब पार ॥ १ ॥
 मोलता' बुझ्या जब तब पाया सब भेव ।
 असा सत्य करि मानिय बालता देव का देव ॥ २ ॥
 जीन भुवनमा चेतना रीतम्य की बीस' जाम्य ।
 जीनु परब्रह्मा पाया असा तहाँ भक्ति भई निरबाध ॥ ३ ॥
 समझन जैसा सार्हि हे और एकदम जैसा नाहि ।
 एकरे में आने असा अंते सो' बिलय आय' ॥ ४ ॥
 उपजे में जैसा होइ प्रेम भातुर बैराम्य ।
 सरताई' नीब हे असा सार्हि पुरुष ब्रह्मात्म्य ॥ ५ ॥
 मंद भागी मुख फरने दा दिन रहै मन सूर ।
 असा परब्रह्म का आसिया पसक बहे भरपूर ॥ ६ ॥
 असा प्रेम की गरजना सबकु आनंदकार ।
 सिंह अपन' अहंकार सु मर सा मोस पछार ॥ ७ ॥
 अणन अहंकारी अंतरा' अर सो अपनी भाग्य ।
 असा चार भग्या कपडा "उठे तूहास भाग्य" ॥ ८ ॥
 असा दुनिया कू बया बह जो कर बहोत सदा माह ।
 आ अघोमुख पानी बस' जार' तेज तछमुख' आय ॥ ९ ॥

१ अर्थ (ना) २ बीस ताका (ना) ३ कपोंकर (ना) ४
 (ना) ५ मे (ना) ६ नाहि (ना) ७ X (ना) ८ पूर ताहि (ना)
 ९ सो जान (ना) १० अगरे (ना) ११ उगु (ना) १२ भाव (ना)
 १३ पानी बर्से—जीर की (ना) १४ X (ना) १५ उपर्ये पति (ना) ।

* ना के अनुसार प्रती प्रीति अग इम 'अनन सप के अननन आता है ।

† 'ना का सेहज गति अग इमी अग के अननन चता है ।

पसू बास पृथ्वी चने जममत्^१ होत एहि धास्य ।
 प्रगट^२ होत उड भखा मेहेज विहगम बास ॥१०॥
 ना डूबे नाहीं तरे ना चाहे बार बार ।
 मीनकला अखा रम जीन पाया वस्तु विचार ॥११॥
 मीनकला सो माहाविसा^३ जान बाई एव भव ।
 एही कला चाहे ज अखा^४ साही^५ बने गुठ^६ सब ॥१२॥
 काम नाम ठीमर नहीं ना विछरन वियोग ।
 अखा मागर सहेज कु पीछे हि यार^७ प्रियोप^८ ॥१३॥
 देहका कुरप बुनियां सगे मनका कुरप मन साई ।
 अनुमे कुरप आगे अखा जहाँ मन और तम दोउ नाई ॥१४॥
 अनुभव जाब अनुभवो ओर बुनिया देख काम^९ ।
 तो अखा कसे बने जीन देखा दही चाम^{१०} ॥१५॥
 तममन सभ अनुमबी करखी आकी पास ।
 तहाँ मामव मत^{११} अटके सही^{१२} अखा उठे बहु जाल^{१३} ॥१६॥
 मामम ये उलटा चले अनुमबी पुरुष आसंग^{१४} ।
 ज्यों पडत प्रतिविम्य नीरमां अखा माकेसे^{१५} विहग ॥१७॥
 जगत बराबर देखतें लावे सोबे मर जाम ।
 ऊँच नीच देखें अखा सा मागा मन का बसाव ॥१८॥
 सुई माके ये मांकडा अखा हरी का द्वार ।
 'ताके मन में दोन हूँ जीनु पाई^{१६} वस्तु विचार ॥१९॥
 बुनिया दावा ल रहे अनुमबी सहेज सुभाये^{१७} ।
 ज्यों सबकु माछाई^{१८} मूरज^{१९} आ मूरज^{२०} को नहीं^{२१} छाये ॥२०॥

१ जममन—जगम (मा) २ प्रसव (सा) ३ वस्तु (मा) ४ महा
 बधा (सा) ५ एही—अखा—जिनहुं डूबन का डर अखा ! (मा)
 ६ गुठ (सा) ७ ठीमर की (मा) ८ प्रियोप (सा) ९ पार (मा)
 १० प्रयाप (सा) ११ कम (मा) १२ जीन—चर्च—बीच पडपा देह
 चर्च (मा) १३ मति (सा) १४ मही (सा) १५ जाम (सा) १६ आसंग
 (सा) १७ माकाये (सा) १८ गण (सा) १ पाया (मा) २ मपाई
 (मा) २१ उछाई (सा) २२ मूरज (मा) २३ आ मूरज को—पन मूर पर
 (मा) २४ कोई (मा) ।

पुनः तहाँ बाबा सही ओर गयीं का त्या तहाँ राम ।
 जया समझा सो सेहेजमा आप मध्ये नाराम ॥२१॥
 अप तप समय साधना सब मन का आपार ।
 अन्ना आत्मता एम ही तथा दिवस महि तिबिबार ॥२२॥
 समझ भली रे साधना सीवान की एक बात ।
 जया समझ तहाँ आप हे निम समझो सब जान ॥२३॥



१ देह का (सा) २ व्यापार (मा) ३ हे (मा) ४ तहाँ (मा)

५ माधुमा (मा) ६ अ (मा) ।

असत्ते को अग

मुकवि देखा' कुकवि जरे ज्या असूक रिसावे धन' ।
 भखा ह्यो' ज्ञान की बात सुनि साज अज्ञानी जन ॥१॥
 उसूक न समझ आप में हे मन मे का' शेष ।
 मूर देखावे अगत कु तासु भखा काहा रोप ॥२॥
 चाहत नहि का राम कु सब कोई चाहे मान ।
 भखा आप भड़ाई कुं सबका टूटत तान ॥३॥
 जस सागर के अगुवा' मात्यम' जाका नाम ।
 हरी सागर क अगुवा भखा ज्ञानी जन अकाम ॥४॥
 बिन मास मसीका' बुझी अंध घंघ कहि' जाय ।
 कहैत भखा भेद बिना जहाँ तहाँ उरसाय ॥५॥
 चाहे अधिकता गुरुपणा ए दुनिया की बान्य ।
 केहे भखा भरतार बिना चाहत हे सतान ॥६॥
 कवि दाता पंडित गुनी चतुर कुल" घनवत ।
 एह भखा माया गुन ताये न्यारा सत ॥७॥
 सबन कु खाय न भगे दो दिन रहे हरि जाय ।
 गुनातीत समझा भखा सा दिन दिन अधिक बढ़ाय ॥८॥
 सब रूप रंग रंग माया भखा मृत्यु" वेग भयाय ।
 जा घर में उपजे समे खोजत तू वहाँ जाय ॥९॥
 फुनी" उपज्या फुनी धप ' गया पसक रखा रंग कीम ।
 भखा सा सागर गोजस जाव है सब" पीन ॥१०॥

१ देखि (मा) २ हिम (मा) ३ ख (सा) ४ मेरेका (सा)
 ५ भाभूभा (मा) ६ भाभय (मा) ७ बागु (मा) ८ भर (मा) ९ मान
 मसीका—मासय मसीका (मा) १० जाही (मा) ११ कपीम (मा)
 १२ मत (सा) १३ पुनि (मा) १४ घर (मा) १५ ए 'मा) ।

गुणातीत आग्या विना सत्य^१ राखे समज्ये का मान ।
 अच्छा खजाना सीप का रूपा मोहे भीदाम ॥११॥
 पारब्रह्म पारस मणी परसत हि हेम होय ।
 केहेत अस्सा परराम बिना भोह रहे सब कोय ॥१२॥
 पारस^२ ब्रह्म का परसना अच्छा समझ स भेद ।
 सब सुण्या^३ सोना करे जौ गोटका सख्य वेष्ट ॥१३॥
 ऐसी भीपज्या से अस्सा पारब्रह्म का भेद ।
 ज्यों बंढा मचर भया त्यों पसदया अहमेव ॥१४॥
 पारब्रह्म का परसना सो पारब्रह्म का लख^४ ।
 अस्सा ज्यो ठूका नाब का रहेत उत्तर सन मूख^५ ॥१५॥
 के हरिजन दोहा दिस फिरे के कठा करे एक ठोर ।
 गण सख अच्छा माहि फिरे जाके मन नही ओर ॥१६॥



१ सत्य (सा) २ परि (मा) ३ सब सुण्या—सख्य घू त्यों (मा)
 ४ गोटका—मुटिका (मा) ५ मख (सा), ६ मूख (मा) ७ के ...
 दोहा—केहरीमन दठ (सा) ।

कपटि' को अंग

सो हरिजन साखा अखा भीतर तैसा बाहर ।
 ज बाहर भीतर' म्यारा बके सो कबहु न पाव पार ॥१॥
 कपटी भक्त स्वांगी अखा, धाना धधिक का जाल ।
 अक्त धिआवन' येहेजीआ तान दूर दयाल ॥२॥
 विषय' बजन मीठ अखा मार भीतर भर अगार' ।
 देखा साल मीठी १" जैसे ओपछी कुमार' ॥३॥
 एक लांडा बूझा कपटी नरा एक बाय हे दान ।
 आधा तेज देखिय अन्ना १" कटते न गिन कोम ॥४॥
 मूरज सीतल' नहि अखा अन्ना गरम न हाये ।
 स्त्री मन और' परमात्मा तन मेस" सब खोये ॥५॥
 मन क सिर मझा सब सज्जन" दूरी जन मन ।
 उमट फिरा प्रमात्मा' नहि ता अन्ना दूरी जन ॥६॥



१ कपटी भव (ना) २ बाहर भीतर—जगर बाह्य (सा)
 ३ धिआवन (ना), ४ लांडा (सा) ५ बैप (ना) ६ अगार (मा)
 ७ नही (मा) ८ कुमार—दुंदार (ना), ९ पण (सा) १० गिला (सा)
 ११ सज्जन (मा) १२ मेसा (ना) १३ मज्जन (ना) १४ परमात्मा
 (मा) ।

गुणातीत जाम्बा बिना सत्य^१ राखे समज्ये का मान ।
 अच्छा खजाना सीप का रूपा मोहे नीवान ॥११॥
 पारब्रह्म पारस मभी परसत हि हेम होय ।
 केहेत असा परराम बिना सोह रहे सब कोय ॥१२॥
 पारस^२ ब्रह्म का परसण अछा समझ से भेद ।
 सब सुण्या^३ सोमा करे जौ गोटका^४ सख्य बेध ॥१३॥
 एसी नीपज्या से अछा पारब्रह्म का भेद ।
 ज्यौ अछा मचर भया त्यों पसदया अहंमेव ॥१४॥
 पारब्रह्म का परमना सा पारब्रह्म का सख^५ ।
 अछा ज्यो हुवा नाब का रहेत उतर सन मूख^६ ॥१५॥
 के हरिजन दोहा दिस फिरे के बेठा करे एक ठार ।
 पण सख अछा नाहि फिरे जाके मन नही ओर ॥१६॥



१ मन (जा) २ परि (मा) ३ सब सुण्या—सख नू त्यों (मा)
 ४ मोटका—मुटिका (मा) ५ सख (मा), ६ मूख (मा) ७ के ...
 दोहो—केहरीवन बड (मा) ।

कपटि' की अंग

सो हरिजन साधा अखा भीतर सैसा बाहर ।
 अ बाहर भीतर' न्यारा बके सो कबहु न पारब पार ॥१॥
 कपटी भक्त स्थांगी अखा, जाना अधिक का आस ।
 कल धिजावन' येहेनीआ तारु दूर दयास ॥२॥
 विषय' बचन मीठ अखा आर भीतर भरे अगार' ।
 नेक्या सास मीठी १' जैसे आपसी कुमार' ॥३॥
 एक खांडा दुखा कपटी नरा एक आन्य हे दोन ।
 आछा सेज देखिये अखा १' कटस न गिन कोन ॥४॥
 सूरज सीतस' नहि अखा अगदा गरम न होये ।
 स्पी मन और' परमात्मा तन मेस' सब खाये ॥५॥
 मन के सिर मवार सब सज्जन' दूरी जन मन ।
 उसट फिरया प्रमातमा' नहि ता अखा दूरी जन ॥६॥



१ कपटी भव (सा) २ बाहर भीतर—अंतर बाह्य (सा)
 ३ प्रश्रवण (सा) ४ ताड़ (सा) ५ वेप (सा) ६ अगार (सा)
 ७ नदी (सा) ८ कुमार—कुमार (सा) ९ पस (सा) १० पिमा (सा)
 ११ उग्रज (सा) १२ मेसा (सा) १३ सब जन (सा) १४ परमात्मा
 (सा) ।

अनुभव को अंग

आर्य' ऊँची हरि ना मिले अनुभव ऊँच हरि भाय ।
 जी' सीह में मुख देखिये अछा कचन में न दिखाय ॥१॥
 अनुभव सो बड़ि बस्तु है अछा देख विचार ।
 जी' ताह की आरसी भई सा सोहो की भई तरवार ॥२॥
 छडग खपाव जगत कुं दरपण दरसाव आप ।
 एयो हरिजन अनुभव आरसी अछा जीव अनुभव पुन-पाप ॥३॥
 बस्तु विचार ऐसा अछा जैसा गगन मगन' ।
 पखास का पंथ है पंथ पंथा नहि जन ॥४॥
 पल जाया पत्नी उह पल मर पसु का नहि माग ।
 अण' गाय है लखरी जीव धरे क्युं पाग ॥५॥
 में भी इडा था अछा आइ अचानक पल ।
 अहंता माना छाड़िया उड़या जाइ निसर्क' ॥६॥
 अछा पंथ का आबना सा पसु का मुसबल बात ।
 प्राये' पन्थी को ईडला रय। अनुभव आतम-आर्य ॥७॥
 साव्या मूष्या ज्ञाना भया अछा साई सयान' ।
 जी' चींटी कू पंथ भई सा नही जात' का खान ॥८॥
 ना साधरो' उड़' अछा' ना ताहे परसी' चाल ।
 करजीम' ज्ञान एसा अछा दानु नहीं नीराल ॥९॥



१ जानि (गा) २ आई (सा) ३ अहो (गा) ४ < (गा)
 ५ > (गा) ६ मगन (गा) ७ पानाया का (गा) ८ पथ (गा)
 ९ अछा (गा) १० भगवन् (गा) ११ प्राय (गा) १२ मोई सयान—मो
 ऐना ज्ञान (गा) १३ जानि (गा) १४ ना लखरीमी (गा) १५ उह (गा)
 १६ मडे (सा) १७ लरीमी (सा) १८ कृत्रिम (सा) ।

प्रतीत की अंग

हरी भरषी अ को भखा सा सेवे' गुरुदेव ।
 वर्षाभ्रम देखे नहीं 'हरिजन' करे सेव ॥१॥
 वर्षाभ्रम जिन देखिया सो क्यों' दख राम ।
 भखा हरी कैसे मिले जिन देख्या देह नाम ॥२॥
 पिछ समेत परब्रह्म हैं अरु पी रूपवान ।
 ऐसा ज्ञान सेव अखा सोहि भक्त अमान ॥३॥
 ज्ञानी जन' कू भक्तगिने भक्त' बराबर अंत ।
 भखा संत तर साईं स ज्यों का नहीं आछने अंत ॥४॥
 भखा अब गणना मत करे ज्ञाना हरी नहीं भार ।
 ज हरी जन से उसटा फिरे ताहूँ तिनमोक्ष नहीं ओर ॥५॥
 हरी कू ज्ञान सा हरा हरीजन सिर मही सींग ।
 भखा सहजदा रामजन आक सिर 'हरी ठिंग' ॥६॥
 हरीजन गाँजा काई का आय नहीं नीरघार ।
 भखा ता बड़रामजन" मूरता का फिरतार ॥७॥
 भया" जग बहेकीया मत्स्य माय्या संसार ।
 भखा आठमन आसख्या तार नहीं बचपार ॥८॥



१ गाँजे (मा) २ मो (मा) ३ ज्ञानी (मा) ४ नहीं (सा)
 ५ कर (सा) ६ अयन (मा) ७ रचतन (मा) ८ गाहभारा (मा)
 ९ हरी (सा) १० भौन (मा) ११ ता बड़रामजन—ताबट रामजन (मा)
 १२ ए माया (सा) ।

अनुभव को अंग

आर्य' ऊँची हरि ना मिये अनुभव ऊँच हरि भाय' ।
 जी' लीह में मुख देखिये अछा बचन में न दिखाय ॥१॥
 अनुभव सा बड़ि बस्तु हे अछा दख बिचार ।
 जी' साह की आरसी भई सा साहो की भई तरवार ॥२॥
 छड़ग लपाव जगत कुं दरपण दरसावै आप ।
 त्यो' हरिजन अनुभव आरसी अछा जीव अनुभव पुण्य-पाप ॥३॥
 वस्तु विचार ऐसा अछा जैसा गगन ममन' ।
 पचास का पंच हे १ पग पेंडा नहि जन ॥४॥
 पन जाया पंखी उड़ पण नर पसु का नहि साग ।
 अण' गत्य हे लचरी जीव धरे बयुं पाग ॥५॥
 में भी इडा था अछा आइ अधानक पंख ।
 अहंता मासा छड़िया उड़पा जाइ निसंक' ॥६॥
 अछा पत्थ का आबना सा पसु का मुमकस बात ।
 प्राये' पत्रा का ई इसा त्या अनुभव आतम-आर्य ॥७॥
 साक्ष्या मूण्या जानी भया अछा साई सयोन' ।
 जी' चींटा कु पग भई सा नही जात' का बान ॥८॥
 ना साग्रो' उड़' अछा' ना ताहे परसी' बाल ।
 करनाम' ज्ञान एसा अछा दानु नहीं जोरास ॥९॥



-
- १ जानि (गा) २ आई (सा) ३ जही (मा) ४ × (ना)
 ५ × (ना) ६ ममन (मा) ७ पायापा का (मा) ८ पन (गा)
 ९ अणा (मा) १० अमन (मा) ११ प्राय (मा) १२ साई नयान-मो
 एना ज्ञान (मा) १३ जानि (मा) १४ सा लरामी (गा) १५ उड़ (मा)
 १६ पडे (मा) १७ लरीनो (सा) १८ कृषि (मा) ।

प्रतीति को अंग

हरी अरथी जे का अखा सा सब' गुरुदेव ।
 वर्णाभ्रम देख नहूँ 'हरिजान' कर सब ॥१॥
 वर्णाभ्रम जिन देखिया सो क्यों वख राम ।
 मखा हरी कसे मिले जिन देख्या देह नाम ॥२॥
 पिढ समेत परब्रह्म हैं अरु पी रूपवान ।
 ऐसा जान सेव अखा सोहि भक्त धमान ॥३॥
 जानी जम' कू मतगिम भक्त' धरावर जंत ।
 अखा रात तर सोई स जग का नहीं आछने अंत ॥४॥
 भजा अद गणना मत करे जाना हरी नहीं आर ।
 ज हरी जम जे उमग फिरे ताहे तिनमोक नहीं डार ॥५॥
 हरी कू जान सा हरा हरीजन सिर नहीं सींग ।
 भला सहजदा रामजन जाक सिर 'हरी ठिंग' ॥६॥
 हरीजन गांजा काई का जाय नहीं मोरधार ।
 अजा ता बडरामजन" मूरता का किरतार ॥७॥
 भया" जग डहेकीया मरय मान्या संसार ।
 भला आत्मम आसक्या तार नहीं भवपार ॥८॥



१ पात्रे (मा) २ मो (मा) ३ जानी (मा) ४ महो (सा)
 ५ नर (सा) ६ जयज (मा) ७ रणधर (मा) - तादृशा (मा)
 ८ हरी (सा) ९ भीम (मा) ११ ता बडरामजन—तावड रामजन (मा)
 १२ ए माया (सा) ।

अनुभव को अंग

जात्य' ऊँची हरि ना मिले अनुभव ऊँच हरि भाये' ।
 जी' सीह में मुख देखिये अखा कपन में न दिखाये ॥१॥
 अनुभव सो बड़ि बस्तु हे अखा दख विचार ।
 जी' लाह को आरसी भई सा माहो की भई तरवार ॥२॥
 लड़ग लपावे जगत कु दरपण दरसार्व आप ।
 एयी' हरिजन अनुभव आरसी अखा जीव अनुभव पुन्य-पाप ॥३॥
 वस्तु विचार ऐसा अथा जैसा गगन मगन' ।
 पखाल' का पंख हे पीपल पेंडा सहि जम ॥४॥
 पल जाया पंखी उड़े पण भर पसु का सहि लाग ।
 मम' गत्य हे अचरो जीव घरे बधु पाग ॥५॥
 में भी हडा था अखा आइ अचानक पक्ष ।
 अहता मोला छाडिया उड़या जाइ मिसक' ॥६॥
 अखा पल का आबना सा पसु का मुसकल बात ।
 प्राये" पंखी को ईडला त्या अनुभव आत्म-जात्य ॥७॥
 सीख्या मूण्या जानी भया अथा साई सयान" ।
 जी' चींटा कू पल भई सो नहीं जात" को दान ॥८॥
 ना साधरा' उठ" अथा" ना ताहे परसी" बात ।
 करजीम' जान एसा अथा दानु नहीं नीरस ॥९॥



१ जाति (ना) २ भाई (ना) ३ जही (ना) ४ < (ना)
 ५ > (ना) ६ समय (ना) ७ पायाया वा (ना) ८ पल (ना)
 ९ अथा (ना) १० अचर (ना) ११ प्राय (ना) १२ कोई सयान—को
 ऐना यान (ना) १३ जाति (ना) १४ सा नरामी (ना) १५ उठ (ना)
 १६ लड़े (ना) १७ गरीबी (ना) १८ करिज (ना) ।

भूत भेद भाडा' भया देखणहारा भ्रम ।
 अछा उसस्या आप ए ज्यों पा त्यो पद परम ॥१०॥
 भ्रम नहीं भ्रमी नहीं ज्यों का त्यो चिद आप ।
 अस तरंग केहेवे अछा नहीं ज्वझी नहीं साप ॥११॥
 जोड़ावा' कछु केहेवे कू नहीं तहाँ नहीं नहीं नीरधार ।
 अहा कछु केहेवे कू नहींआ' तहाँ अछा ससार ॥१२॥
 मंमे' संसेई' अठ' ह बुझ बुझावन हार ।
 अंतर मा उपजन' अछा साहि मूल ससार ॥१३॥
 उपजे नहीं सो आप चिद ओर उपजन का नाम माये ।
 ऐसा ममज्या के अछा सा नर सेहेअ समाये ॥१४॥
 अह कटा' भेदि चली आमी सुरत्य' अमय ।
 अछा उसटी' ना बाहोडी' पल पल न पलटे बग ॥१५॥
 नाही मुमा न जीवता छर्या कर्या कछु नाहि ।
 एतो ज्यों का त्यो असा कोण रहे बि समाहि" ॥१६॥
 ए वेब कसा गबी रमे' अछा आसमासी' अस ।
 एहि आन्य" उसजन भई' अंतर हुआ उकेल ॥१७॥
 अछा अजब गत्य उपजी एन मिसीया' आप ।
 भोम पाया भागी बिना बीहीमा चरित्र अपाय ॥१८॥
 गेबी जाने गेब गत्य गुह्या नहीं दरदाब ।
 अछा अमानक उपजी सेहेअ १" भया समाब ॥ १९ ॥

★

१ भाडा (भा) २ जोड़ा (भा) ३ हुआ (भा) ४ गमार (भा)
 ५ मंमे—मंसारी (भा) ६ अठ (भा) ७ उपज्या (भा) ८ उपज्या
 (भा) ९ कटाह (भा) १० मुरत (भा) ११ उसट (भा) १२ बाइ
 चरे (भा) १३ बि समाहि—बीज माहि (भा) १४ x (भा) १५ अममासी
 (भा) १६ आन्ये (भा) १७ गई (भा) १८ नछा (भा), १९ ही (भा) ।

अथ ज्ञान की अग

हेम के परवत जमे बिना घटा^१ घमघोर ।
 अखा^२ ऐसा ज्ञान की सुप्त^३ मई^४ हे मोर ॥१॥
 गेह अबाध अकास का सो घन बिना गरजे नाहि ।
 त्यो^५ हरिजन का पंड^६ घन असा आप अपने गुन गाये ॥२॥
 परब्रह्म अमल अरूप हे ऐसा भेद बर्धन ।
 सो सीब भास मता^७ पड़ जो धुल हरा अन ॥३॥
 परब्रह्म सागर के मध्ये मरजीबा कोई एक ।
 गड गहियर^८ मा बाहाड़े करे सा कर ज्ञान विषक ॥४॥
 परस्याता^९ क बचन कू पावनहार पठिआये ।
 ज रण जुध^{१०} मे राता रहे अखा सा अजब गत्य पाय ॥५॥
 आरागा सब कछु भग्य मोर^{११} रोगी रहता याय ।
 कछु ना भन्ते सा^{१२} अखा सो बाघ मुख मर जाये ॥ ६ ॥
 ज्ञानी क मन ब्रह्म सबे भीर भक्तम कू प्रतिमा राम ।
 ए वानु^{१३} नीरव^{१४} नहीं अखा साबू^{१५} नहीं आराम ॥ ७ ॥
 अपद^{१६} पद कोपदा पट पद आठ अनठ ।
 तस्वदरसी नर जे अखा सो जी का त्यो चिहीमंत ॥ ८ ॥
 जस बाण^{१७} को पुतसी घोडा^{१८} कीया अवेव ।
 दाह^{१९} ज्यों का त्यो अखा ए तस्व दरमी का भेव ॥ ९ ॥

१ घटा (मा) २ सुप्त (मा) ३ X (सा) ४ पड़ (सा) ५ मा
 मता—बाधम ता (मा) ६ गहर (मा) ७ बाधे (मा) ८ X (मा)
 ९ गहरा (मा) १० जय (मा) ११ X (मा) १२ जे का (ता)
 १३ बोट (मा) १४ पैहलम (मा) १५ ताने (मा) १६ मोरी (मा)
 १७ गार (जा) ।

भूत भेद भाडा' भया देखनहार भ्रम ।
 अखा उसस्या आप ए ज्यों था त्यो पद परम ॥१०॥
 भ्रम नहीं भ्रमी नहीं ज्यों का त्यो बिद आप ।
 अस तरंग केहेवे अखा नहीं जेवढी नहीं साप ॥११॥
 जाहावा' कछु केहेवे कू नहीं तहाँ नहीं नहीं नीरधार ।
 अहा कछु केहेवे कू नहींभा' तहाँ अखा ससार ॥१२॥
 मंसे संसेई' झठ' हे बुझ बुझावन हार ।
 अतर मा उपजन' अखा सोहि मूल ससार ॥१३॥
 उपजे तहीं सो आप बिद ओर उपजन का नाम माये ।
 ऐसा समझमा जे अखा सा मर सेहेज समाये ॥१४॥
 अइ कटा' भेदि जली ज्ञानी सुरत्य' अमग ।
 अखा उसटी" ना बाहोडी" पल पल न पसटे डग ॥१५॥
 ताही मुझा न जीवता छद्या कद्या कछु नाहि ।
 एतो ज्यों का त्यो अखा कोण रहे कि समाहि" ॥१६॥
 ए गेब कसा गेबी रमे' अखा आसमानी" खस ।
 एहि जान्य" उसजन भई' अंतर हुमा उफेस ॥१७॥
 अखा अजब गत्य उपजी एम मिसीया' आय ।
 भाग पाया मागी बिना चीहीना चरित्र अपाय ॥१८॥
 गेबी जाने गेव गत्य गुह्या नहीं बरबाव ।
 अखा अचानक उपजी सेहेज †" भया समाव ॥ १९ ॥

★

१ भाडा (सा) २ जाहा (ना) ३ हुजा (मा) ४ ममार (मा)
 ५ भंसेई—संतारी (मा) ६ झठ (मा) ७ उपज्या (मा) ८ उपज्या
 (मा) ९ बटाह (मा) १० मूरत (मा) ११ उसट (मा) १२ बाहा
 परे (मा) १३ कि नयाहि—बीज याहि (मा) १४ अ (मा) १५ असमानी
 (मा) १६ आये (मा) १७ गई (मा) १८ मखा (मा) १९ ही (मा) ।

असमानी' को अग

अवस दिवाना में अखा रीछे दिवाने सोक ।
 मुसकू एक भला भई जे' 'दुष्टि पडि सब फाक ॥ १ ॥
 जान जीया की जीब लग नही' अखा भई खीर ।
 जडिसा' परसा पार' से गया तोमा रही माहार ॥ २ ॥
 जीब जाम्याबा जाइगे परसाव प्रीया क पास ।
 अब तो अखा उसटी भई हुआ आपका नास ॥ ३ ॥
 जही जीया तोही पिया पिया जीया गल है नाम ।
 जल तरंग जेसा अखा चतन्य सागर राम ॥ ४ ॥
 पीया नेन में पुससो मो मन बेठी ठीक ।
 मनसा वाचा कर्मना अखा साह पर सीक ॥ ५ ॥
 ना मोहि' सिध्द स्वामीपणा ना माहे केहेर बरामात ।
 अखा अजब मरय उपजी हूतु' बिच गडजात ॥ ६ ॥
 जोग जाव बेराग्य अप सीध्द' सबा तप त्याग ।
 इस बीध्द का एके बिना बडभा भया का भाम ॥ ७ ॥
 कहेव पर आया जमे तबे अया एही बात ।
 ज्याहां जेसा तेमा तूही नाही अया पसपात ॥ ८ ॥
 अखा असमानी घुस पर भापा गहा भराए ।
 मेदी मिछि गरबाई की काईक माजा पाय ॥ ९ ॥
 भया गेब की गहेन मू एब मवन उड जाई ।
 बनहाना मनका मना लहा काई गहेन म पाई ॥ १० ॥

१ अनपदमी का अप (ना) २ (ना) ३ दुष्ट (ना) ४ पडपा
 (ना) ५ नही (ना) ६ उप पदना (ना) ७ चारल (ता) ८ जीया
 (ना) ९ माई (ता) १० मूज (ना) ११ घुचि (ना) ।

गेब गेब सबको कहे अल्ला पस गई वान ।
 भूत भविष की सुन्यसे गेबको दूर पेहेषान ॥११॥*
 भूत भवीस को जानवो वाग् सिद्ध ईष्ट आराध्य ।
 तन-मन साध्य होवे अल्ला पण मेव नहीं मन साध्य ॥१२॥*
 बहेत वाय अमनि खणे पुरुष मेजा बखशीश ।
 अधिक बीर समटे अल्ला पण पाग न पाये शीश ॥१३॥*
 ऐसे गेब की रहेण, अल्ला आवस नहीं अदबद ।
 आवे सो मनका भता तारें दूर बेहुद ॥१४॥*
 पिढसु परबहुआँ पर अजर अकल के पार ।
 सग करि गेब कहे अल्ला ! पण गेब सो अरूप अपार ॥१५॥*



* विस्तृत आतिथी—य से १३ तक आचार के रूप में स्वीकृत पंखों में नहीं है वे सा में से ही गई है ।

जानक को अंग

सासण आय रुखा फिरे जे रसकी ससार ।
 मन की रस्यवसना फिरे सो मर पाये पार ॥१॥
 मन की रस्य फिरती नहीं तो रस्य न सरे काम ।
 सिमा साफ हुए बिना बचा रहे कहीं राम ॥२॥
 सब सरीर में राम हैं ठोर न खाती काय ।
 ज्यों अग्नि काठ में दे सही पण मध्या सो प्रगट होय ॥३॥
 मचते मासम सब पढ़ होये दीपम ज्योत प्रकास ।
 बिन मध्या अंधर हे' राम न जानत पास ॥४॥
 राम मिले तब जानिए जब रुखा' फिरे उदास ।
 सरस' रहे हरीजन मु बरतत एके सास ॥५॥
 घर बढनी सत बित धरे ज्यू का तू हि प्यार ।
 बात बतावत राम की १' ठप्पा बाहुत संसार ॥६॥
 माया प्यारी मन में मुख प्यारी महाराज ।
 मन प्यारी आय पढ़ तम तो उपर का साज ॥७॥
 धनतन माया उपद्रव खरबत पाहोबत साह ।
 जो घरब हरि हेत कुं सो सिर ते उतारत दाया ॥ ८ ॥
 हरीजानि मन उध्यत तो हरि का उत्सत मन ।
 माया देखि उत्सत सो मेति' जाति सब धन ॥९॥
 माया आस में मन पढ़या का काढ़' सके बिरतार ।
 प्यार दिया कू ला उपग्ये जा करे तन मन धन बलिहार ॥१०॥

१ कहीं (ना) २ बचा रहे (ता) ३ लूना (ना) ४ मरना (डा)
 ५ मुन (ना) ६ बसा (ना) ७ स्हाक (ना) ८ उम्यते (ना) ९ मे
 (ना) १० बासी (ना) ।

धा बोज न डारत सीस मे तो कैसे हलका होय ।
 धन तन हे राम का बिज जीव बोधिया होय ॥११॥
 मास पराया जान के नेहेचा^१ करे जो जन ।
 नेहचा बोन फसता नहीं साथ^२ खासी मन ॥११॥
 फसता हे नेहेचा अछा आवर आतुर सग ।
 राम सदा भरपूर हे ज्यु साग मन कू रग ॥१३॥
 सुख सपत आनद में अछा कय बहु जान ।
 दुख आया सबे बेह गया जैसे छक का पान ॥१४॥
 हे धन बिद्या कुस चातुरी पण राम न जानत जन ।
 ज्यु बुदस^३ सज्या आभूषणा १ माहे नपुसक तन ॥१५॥
 आत्म जान्य बिन अछा ज्यु काठ की सग्वार ।
 बाहर सोना मुठ हे^४ पण काटे नहीं ससार ॥१६॥
 पण रामे पूरा अछा तो बनी आवे सब बात ।
 नहीं तो घम्या छुणा वायु कर साब बिना सब बात ॥१७॥
 प्रनु प्रसाद करमसे^५ रह्या जो से ब्यहार कोई होय ।
 प्रेम आतुरता जाहे कुं गाहक ताका सोय ॥१८॥
 रस बस होय के हरि मिले कछू न राखे ओट ।
 आतुरता भजन चाहिए अछा राम ओरे नहीं खोट ॥१९॥
 अछा रसीया राम का ताकू भावत बात ।
 आर सब सहेज्यु मुने आतुर सूनी सहारात ॥२०॥



१ निहचय (ना) २ साथ (ना) ३ बुद्धि (ना) ४ पय (ना)

५ मुठ हे—मु पहे (ना) ६ बरी (ना) ७ सबपहार (ना) ।

खोजी' को अंग

हरी पाइये हैं साजते उत्प टोस समुदाह ।
 प्ररक जे पथ्यी सका सली अखा सदाह ॥ १ ॥
 दूर जहीं देसातरे हे' पोत भाष्य के न्याई ।
 सदा' विचार्य के साध्य हे गुह गम्य जाग्या जाई ॥ २ ॥
 ममसि जसावे भक्ति कुं ए तन 'व्रत्य काल जलात ।
 आय मलेब' राम सु सो हि नर सासात ॥ ३ ॥
 रिष्य सिष्य ना ईछे अखा ज्युं दीप नहि चाहत सूर ।
 ईछक जे बीच में हि वा सा मिस गया गेबी नूर ॥ ४ ॥
 मोलने का मारग अखा अटपटा सा एन ।
 सिष्य' साधक स्वामी पणा चाहे नहीं कोई बेहेन ॥ ५ ॥
 मेम चुकावनि हे अथा जे हे अणछति अष्य ।
 आय मलावना आय सू बार सबे उपाध्य ॥ ६ ॥
 राम मिसन एसा अथा जसा अमक अंग ।
 भुपण भोग चाहत नहीं राष्य राम के रंग ॥ ७ ॥
 बतुराई बनिगाहि सब अथा कछु ना चाहे ।
 एक सान के भाग में दूजा रहेणा ना पाई ॥ ८ ॥
 मान लाभा बरते अथा तामे सब उपाध्य ।
 आमन' कू इच्छा नहीं ब्रध्य' नहीं नहीं इवाध्य ॥ ९ ॥

१ गीत अंग (गा) २ रहे (गा) ३ नद (गा) ४ इष्य (गा)
 ५ मिलावे (घा) ६ भाष्य (गा) ७ अमन (घा) ८ बडि (घा) ।

मुसकस पाइये ये धता खखा मुये की ठोर ।
 श्रीव विने का जीवर्णा खखा एक भा खीर ॥१०॥
 सही करपा साइया खखा फेस ये मन ना बाहे' ।
 मुसतान मता' पाया बिना सबको फेस बहामे ॥११॥



कजा को भग

काजी पटबरसन के के कोई ज्ञानी मन ।
 पक्षपात बोले नहीं अच्छा न राखे मन ॥१॥
 खडतम खांडा ज्ञान का भीर दावा भी राख ।
 सहेज उगदेस मुभाव मुस' ना स्वामी ना बाख ॥२॥
 कजा सो साखी ब्रवा कजा करे से कोफ' ।
 सांभा समाले आपणा आपा मिटपा सोहो सीक ॥३॥
 छोदे पड़ेवे' कछु नहीं किस पर करे हुँकम ।
 फोम किया फना हुआ मार सकत नहा हुम ॥४॥
 खुद कु सही करना ब्रवा एही जाणो बेर ।
 हक बिगर कछु हे नही हुन्दम हे ना जेर' ॥५॥
 बिना ईमा' काई से' नही किस पर करे जूमम ।
 काम हुआ फना हुआ भागी मन की गम्य ॥६॥
 रंब' बीगर रीवा नही तो किसे बताव राहा ।
 मकस सा मुझी एम में ब्रवा जय बित का बाहो ॥७॥
 ॥ भीत ब्रवा कजा करे ब्रवा एन की ओर ।
 हुकम बिन' रहमतता नहीं पीपस पान एक ठोर ॥८॥
 निम में दावा ना रख के हुआ के एक ।
 काम होठ फना हुई मत भिह' जय का टेक ॥९॥
 बुप रहे बोम सा कया जेजे करे मन बोर ।
 ठेहरा याना' टीक रहे अग्या होये कछु मार ॥१०॥

१ बुग्य (भा) २ गहकीक (भा) ३ बड़े से (भा) ४ भासिर (भा)

५ बार (भा) ६ मय (भा) ७ रख (का) ८ सलो एम में—मूर्तीग म
(भा) ९ बिपर (भा) १० यमद्वयी (भा) ११ ठेहरा याना—ठेहराया न
(भा) ।

(३२७)

क्या छोड़ क्या सही कई जेसा मेढक ताल ।
पकड़ पाँच भाजे पंजर ऐसा है' गाल गोस ॥११॥
अछा मजबूत गब्य एन की बेन में आबत नाय ।
हारे ये हाँजी कहूँ अगम पंच उरझाय' ॥१२॥



महा विचार को अंग

बार बार एकत्र भया सा नर पाया पार ।
 पार उतरणा एहि है अला सद्विचार ॥१॥
 रोटी कु मुख पुंछड़ा अला कहा न जाइ ।
 तू पुरन^१ ब्रह्म विचार तें बूझा रहेनेन पाइ ॥२॥
 कछु पराया ना रहे आद रूप^२ ते आप ।
 कछु न राख्या काठने तब स्वेहा नीमडपा ताप ॥३॥
 भक्त^३ पुरी तब भक्त कूं ज्ञान पुरा तब ज्ञान ।
 आपा जोट मीटे अला तब पुरा परम धाम ॥४॥
 बड़ी बस्त विचार है सद्गुरु सत समेत ।
 ग्यारा कछु न रहे अला सब आपा मंसेत ॥५॥
 बिन विचार अछनी भया हूँत भई हुई और ।
 महसोह परमोक्त की अछा करत सो दोर ॥६॥
 जंत और छापी नावड़ा आतम प्राप्त गमाइ ।
 छासी दुबंघ के हरे वापर कर्म बहाइ ॥७॥
 देव नर नाग वसु पंथी अला^४ सब भेल लिया करतार ।
 नजरबाज जामी अछा जुग जुग देखनहार ॥८॥
 सत जटा द्वार पर कसी न्यारे पास आचर्य ।
 जानी दुष्टा ताहे का सब किए के धर्य ॥९॥
 बुझापा मही कामकू दिनकर तिनहि रेन ।
 ताता^५ सोसा नय महा म्यू जामी कूं नहि चैन ॥१०॥

१ तू पुरन—नूरन (ता) २ बार बार—बारबूरेते (ता), ३ न (ता) ४ पंथी अला—गखीआ (ना) ५ सब किएके—सबही एके (ता) ६ बु (ना) ७ जटा (ता) ।

बोंग बोसत हे देह का ज्ञानी जासत माहि ।
 अखा मेर मासम पत्ता तजा माम घराभे ॥११॥
 अखा जस्त के पीव सब पच तत्त्व एक ठाठ ।
 मेर पाया 'मे' मटि गया भया गुरु बम्प पाठ ॥१२॥
 जोग जाग जप' तप दया अखा सब उरली बात ।
 हरो स्मरण की सेहेरियां पण वस्तु मीधु साक्षात् ॥१३॥
 अखा भया बेधातरी जवनी कीना अटाट ।
 अकल बर्सा आकाश मां तो दग मीन बेठा पाट ॥१४॥
 ज्यों मीन कसा जल निष्प में फिरन गयाया जाय ।
 पण दरीआ न नहि बाहिरा तम अखा समाय ॥१५॥
 तन-मन नीजा फिर्या अखा हनु दिस दीवया सीर ।
 आत्म म्यू का त्यू हि है मेरा नकल खरीर ॥१६॥
 घरया पीव हार अखा जघर न हारे अंत ।
 जागे करणा सा अब हुआ पाया अंतर तंत ॥१७॥
 हार जीत जाम नही नही मलय का ठोर ।
 मोई जाया समुझ में जाद केहेता ओर ॥१८॥
 तप त्याग पुजम बिना ध्यान धर्म बनवास' ।
 भया ना कछु कर सक्या मिल गया मासोसास ॥१९॥
 अपन जल अनुमान करण शीत साधन आर ।
 अखा हारया हास दिन जल महा मरी और ॥२०॥
 कमल उमर काळ न स्व नीजा नीर होये ।
 म्य कमल म्य है जला बहुत ह गर्बा ताये ॥२१॥
 पाल बिना उबल भया कोक बान कल जार ।
 मनमा बाधा कर्मणा में नहि अतर आर ॥२२॥
 काहा छोड कता यह भया अग्न आप बिचार ।
 अमल पराय माप पर कने सब बिना निवार ॥ ३॥

नेहेना पण तिरताज हे मला अतर नस्य येत । (१)
 बायो' तरम विमला' वीने पण अतर नाही येत ॥६४॥
 मला मापुः माय विम कोन कहाते हाए ।
 मंधेरा- सूर के आम में कसहुँ न कहे काए ॥६५॥
 परतीत पड्या पुरा हुमा और नहीं मटकाया ।
 मला समझत सो भया ज कोई है बेबाही ॥६६॥

चित्त विकार अंग

ब्रह्मा जन्म म उधर जा बस्ती का जंत ।
 कर्म धम कामु ना पड़े जा सेहजहिमा महत ॥१॥
 एकाएक वे संम ठ सीखत भ्रमना भेद ।
 दरसन मठ अजाण पना' काई कुराम काई बेद ॥२॥
 माहार निद्रा समय' मीधुना इतना बेह बेहमार ।
 एतने भावे ज करे सारा संग बीकार ॥३॥
 जा ब्रह्म सुण्या नहीं ता मुक्ति काहे का चाहै ।
 आप ब्रह्माना जान के ब्रह्मा मम सुटन जावे ॥४॥
 आप भ्रकरमी जान के करत कम पर होम ।
 संग दाप मदक जगा ब्रह्मा सो बरजे कोम ॥५॥
 मंग दाप सब क मगा विद्या अविद्या गन ।
 उदत बढ़ते बढ़ गया भूमे मबही भान ॥६॥
 काम मोक्ष माह मछरा बमबर क भी हाथ ।
 गल मामीनता संग त यही अन्ना सा बीहोत बिगोय ॥७॥
 ज काई मुक्ति चाहत अन्ना सो बस्ती छोड़ वन जात ।
 मग दोष मीठाबने भाव करत साक्षात् ॥८॥
 मनताई बीकार है तन ताई कष्टु माहि ।
 हम बढ़त है संग ते बढ़न बढ़त बढ़' जाए ॥९॥
 मम चाहत परमोक कू के ही मुनाया भोक ।
 मेहेग्य मम ममक्या बिना बह फिरत रूप माक ॥१०॥

जाण पणा विष पण का बतुराई सब बात ।
 ज्यु अपणी मात' करासिया उममत हे जजाम ॥११॥
 सब बोरासी सब मरे कोई न होवे भूत ।
 मनुष्य जात क सब' लग्या जा जान पणा भद्रभूत ॥१२॥
 मेहेज सहेज रहे बला तो तो हेत' चेतन ।
 मे मेरी सब छाड़ क' दे हरप सोक पाप पुन्य ॥१३॥
 अछना सरय हाय लगा देह कर्म बेहेवार ।
 ज्यु काम विना कंचुकी अहि क तनक' भार ॥१४॥
 जरा अही कू होन हे सो अग आछावत नेन ।
 त्पु जाण्य पणा जीव क बड़ा सा आट होत हे ऐन ॥१५॥
 ज्यु का त्पु ही आप हे नाम छरपा ना जाय ।
 नाम छरपा पूजा भया तब मावछा खीर उपाय ॥१६॥
 अचित आछारे बीठ हे सा बीत सेत हे सीस' ।
 आप सही कीना जमे सब माया रक ओर ईस ॥१७॥
 जाण पणा ससार का एहि जन क रोग ।
 जाण पणा समावणा इना ह प्रयास ॥१८॥
 जाण पण त जीव हुवा सो जाण त टरी जाय ।
 ज्यों अग्नि ज्दया अग अग्नि से सीतस हाय सहाराय ॥१९॥
 उसटी सी एही बात हे बला महाराजत काण ।
 भापु आपको भोगता सहेंज्य म नीगम होय ॥२०॥
 अच्यन ओर का ठाठ सब बित मानत ह कर्म ।
 तासे पार पावत नहीं ह कछु बीत का मर्म ॥२१॥
 गगन से केहता नहीं बीत सब सब बात ।
 बीत मानत अगनी कही बला जात उतपात ॥२२॥
 मेरी बीया हाता नहीं होता है सब येव ।
 अला "मनी समझ ले जाये सारी एव ॥२३॥

✽

राम रसिया अंग

राम रसीया भिसे बाहुला भाव कराइ काय ।
 भेय टेक क मानये ऐसे बाहातु होय ॥१॥
 न कोई रसिया राम का माहाटी मन की हाम ।
 ग्युं नर के सग सती बसी तब छन छन भया बेकाम ॥२॥
 रसिया ऐसे हाय रह्या ग्यों आसकां मेहेबुब ।
 भसा बुरा मेहेबुब का ठाक मन सब खुब ॥३॥
 बखो कहे रसिया राम का बड़ अमुनं छन' छन ।
 जैसे मरना समुद्र का बड़ता बाय गगन ॥४॥
 बखो कह रसीया राम का मीट गया बादविवाद ।
 ग्युं गरम धरि बीधरत नहि छासी क उनमाय ॥५॥
 भला कह रसिया राम का बेह का भाव्या भातो ।
 ग्युं भरभर मय्या आभूषण सो मात पिता का भाभा ॥६॥
 बखो केहे रसीया राम का सवा सीतम सम ।
 ग्युं भर दरिया की माछसी कु घाम न मागत अंग ॥७॥
 बखो केहे रसीया राम का मत दरसन नहीं मान ।
 ये धरती पाभा धरे नहीं ताहे बबन काम उपान ॥८॥
 बाकु हीरा मानक ना भिसे सी काज बधीर सहराय ।
 राम बीभा बाली नही कही त कहाकु जाय ॥९॥
 ये भर जम बुझ्या रह भावन मोवसत बास ।
 बकत किमारे कठ के बाहात करत गाल गोल ॥१०॥
 मय्यनार' की मन क मिथी समझत काय ।
 अंतर उरमो भीटी गई मय्या कहावत माय ॥११॥

राता माता रस भर्या सो मानत ही एही बात ।
 ज्युं सोदा' कृष्णागरा बाधा बुगत सासात ॥१२॥
 पद पोहोच्या सा मर मला माम मीट्या मयसीम ।
 अंतर आप मोटी मया को बाहे दुनिया हीन ॥१३॥
 जब पारा पुरा पुआ तब गई अपसता वेहेन ।
 तब बाग सेके मंग' कु करत मरागी ऐन ॥१४॥
 पका मेघ पूरा हूँमा तब सात' नकतर आम ।
 तब मुक्ताफस नीपज आसम साहि सहराये ॥१५॥
 ठा पस क्रिष्य आया ससी होय सकस कसा ममत ।
 पशापस में जे रहे सा सममत नहीं हरि हृत ॥१६॥
 पुराहुं काई पस नहीं सस ममासगाओ ।
 बाण नीसान तब सम जब होइ सकस अय एक ताओ ॥१७॥
 पुरा पाव मा छसछसे छाया छसकत जाई ।
 पुरा का ए पारया सकस सख पचाई ॥१८॥
 सकस नदा क मय र सकस मदी कू जसाई ।
 आप घटे बह नहीं ए पुरे का महिमाई ॥१९॥
 जबर ताता मीयरा बबह मय म हाय ।
 मय उपाध्य आप म पचें पुरा कहाये सोय ॥२०॥
 जब मे पुरा एकडा माछ करोडा गिणाई ।
 घटे बड़ मो टम कणा मवा एव रहाई ॥२१॥
 पुरा सस बाही मया नहीं और बात सू काम ।
 जब' कोसीस नाम अछा जब त भया राजम ॥२२॥
 पाट बेते सो पाटवी कूल न बैले कोए ।
 मुरा पुरा कोई हा पद पावे मा सोए ॥२३॥

(३३५)

कैसका ते माइया के हुवा सोह का हुम ।
सरीखा रंग मोस क जे पाया नीत्य जेम ॥२४॥
एब नहीं मेघ बिदु क जब सगी जघर माकास ।
त्पी पुरा आप जंघर रह करवा अया कपास ॥२५॥

*

शीघ्र आसुरता को अग

आसा न कर आर की आप करे उपमा ॥१॥
 ऐसा नर मानु अन्ध पर्चासमा अवतार ॥१॥
 अण सिंगी और अनुभवा निपुण निरत ॥२॥
 ऐसा गुरु करना अन्ध सो आमत सिध्य की वक्ष ॥२॥
 भाओ भरोसा भक्ति भल मात्र गुण गभीर ॥३॥
 ऐसा सीध्य मोपग्य अन्ध सुख सुभाव मतिधीर ॥३॥
 क्या न पलटे नित्य नवा गुरु व भाव भाव ॥४॥
 मावधान सेवा सम' पोछा न घर पाव ॥४॥
 मान बडाई चाह बिना करत गुरु की मव ॥५॥
 शर शर उपदण शर मा ममज्ञ गुरु भव ॥५॥
 गुरु मध्य में सीध्य ह क हे मवा क सीध ॥६॥
 बिन सेवा गुरु मा कले उग्र अग्नि बकमक व मध्य ॥६॥
 गुरु पूरा नहि ज्ञान बिना सिध्य ज्ञाता बिश्वास ॥७॥
 कहुँस बलि ममार में गर सिध्य स्वामी दास ॥७॥
 भल भरोसा भक्ति' क मरवा कर निहास ॥८॥
 अग्नि अमृत बकार क ज्ञान मग्नि दला मान ॥८॥
 गुरु करत मसार मव बहुम गहमा मव माव ॥९॥
 सिध्य मुरा पूरा गुरु राम अग्रा मिय राव ॥९॥
 अग्रा आसुरता दय मा बात की बात ॥१०॥
 जमद आहु देह घर बिन माता दिन तात ॥१०॥
 १ विप (मा) शर शर—शर नरे (मा) ३ अण (मा)
 (मा) ।

गुरु हीये गेहलावा' हाथरा पण सीप्य आसुरता लाग्य ।
 ज्यु तस पाग कपडा भरषा उठत हुआ' नाल आय्य ॥ ११ ॥
 भ्रष्टा स्वामी मिप्य निप गुफ मिछ्द ज्ञाना हाय ।
 स्वपन गम विनता घरे जा आतुग्ना हाय ॥ १२ ॥
 भ्रष्टा नापय्य गेब तें पण आतुग्ना मार भाग ।
 ज्यु अकुर रहे मही बीज म पण पाशा करत पमार ॥ १३ ॥



सती' को अंग

नर संगे बहु नारियाँ सब चाहत सुख सज ।
 पण अग्नि सेज में रमे अखा सो बड़ अमुमे बड़ हेज ॥ १ ॥
 अक्ष' सेज की सुंदरी भाठ पहें' हुँसियार ।
 मोना सेज वरावरी ताहे प्रीत नहिंयरी बार ॥ २ ॥
 प्रगट भाग की घाम्पनी अतरही गहे भोग ।
 पण एक अंग की अंगना अखा ताज दोनु जोग ॥ ३ ॥
 सोयन देख साल के ओर बोसे पीयु के बेन ।
 सो पतिव्रता पदमिनी या खन दिन रेन ॥ ४ ॥
 सती सोहागण हे सग बिभु जाण्या पित संग ।
 अमती राह हाथ रुए जाहे पस पस पसटे डग ॥ ५ ॥
 एक नर की सब नारियाँ का भाव्य हीष्य बड़ भाग ।
 असती का नर नित्य मर सती सग साहाय्य ॥ ६ ॥
 सती-सती सबको करे पण मति का दूर पहचान ।
 तन जारे मा मूरियाँ सती सो जउ' पीयु ग्याम ॥ ७ ॥
 तन जारे सा सती तही तन' जारे सो मन ।
 तन त्यागी बोहोन मिन पण मनरया भाग गत ॥ ८ ॥
 मन त्यागी माहा अंग में हुबो नीकस बाहर ।
 ताकी कुरू' फाटिए अब बोख्य' सब" द्वार ॥ ९ ॥
 अखा जानी जल पूकुडा उड़ बुरे तर चास ।
 बाह गरय अख महा ए जानी का ग्याम ॥ १० ॥

१ अक्ष अग्नि अंग (मा) २ अग्नि (मा) ३ पहोर (मा) ४ मोम न
 (मा) ५ अ (मा) ६ मन (मा) ७ मनरया मन—मनरयाणी अक्षमन
 (मा) ८ बहार (मा) ९ के (मा) १० बोमे (मा) ११ गज (मा) ।

भंसे सरप जग हस्या सपने में त्रिलाक ।
 अखा जगावे सत^१ और क्रम अम सब फाट ॥ ११ ॥
 मान जगावे गहेन ते अखा सखा में साध्य ।
 पक्ष जीव गरु जा मिल गया तो करे जड बुध्य ॥ १२ ॥
 जीव गुरु क्यों जानिये जे कर्म दिखाव रित ।
 सा सिध्य क्यों करे अखा जैसी निब परतीत ॥ १३ ॥
 अण स्वंगी कू^२ सहे अखा जे अणस्यगी हाय ।
 ज्यों हिरे हिरा बघिये ताहे घात न वेध न काय ॥ १४ ॥
 जीव जाना कू न सहे साधि आवे बाज ।
 खटी मापण कू खली अखा ज्यों गजगज ॥ १५ ॥
 पाइये पार जाना मिल तहाँ बनुषी कवेर ।
 अखा कहे-कह काहा करे जा साहब की नहीं मेहेर ॥ १६ ॥



जानी' का अंग

नराया शाय मा नव करे अरु जानी साथ जाग ।
 अछा जानी जात्रा कर जाव नहों कल रग ॥ ३ ॥
 मचन रागी न भवौ न्या जाव का भन बन ।
 कवन रागी नही अछा ना कहै न मृषय बन ॥ ४ ॥
 कम तहाँ जहाँ कामना नहि कामना जहाँ जोष ।
 कामना काम जहाँ न मल तहाँ महज्य अन्ना मव जाव ॥ ५ ॥
 जीव सीव का मोसान ए सीव पुण्य जीव पात्रा ।
 जीव नपत ताह नहा नृपत्य अन्ना हा बापा बाहा ॥ ६ ॥
 परग ॥ शाय मा परलम्बा ज बान बोसन हार ।
 क्ष अछा बाने महा तमा प्रह्य बिचार ॥ ७ ॥
 पभापक्ष प्रणव म जहाँ दुनिया दान धर्म ।
 अछा महेज्य आकाश ज्या नही मीमा महा गर्म ॥ ८ ॥
 अछा अकल का कमा बाहार मव मगार ।
 पण हरा हिरा ना पारखी १ काय न राज का मार ॥ ९ ॥
 ० कान कपीरा २ ना राग अछा जरी महाजन ।
 नव गुण नाच्य मीपत्र न आवा बह रतन ॥ १० ॥
 महाजन प्रकट घरनी त मा भवन मगारज ।
 मो प्रह्य बापा बर मा बन मा जामी क कात्र ॥ ११ ॥

१ जान बन (मा) २ सिव (मा) ३ नरानि (मा) ४ बाहारे (मा)
 ५ (मा) ६ न (मा) ७ X (मा) ८ रिजि (मा) ।

मुक्ता भोजन ए ह्य का अय पंथा मन पाहाण ।
 स्यो दुनिया ज्ञान सह नहा सह परमहस परमाण ॥ १० ॥
 साधु सय कीटे बहे' करे सतन्य पर जाट ।
 मृत्यक' भक्त शीयानिया त्यों दुनिया ज्ञान सह नही' ॥ ११ ॥

५

बेहद को अग

बहद मे ह^१ हुई हे बेह^२ भी हद मांहे ।
 ह^१ फटे फाटे अन्धा^३ बेहद जहाँ का तहि ॥
 बहद सा चेतन भरघा और दुनिया सा साक तीन ॥ २ ॥
 अन्धो सो आवे रहे मर सा चेतनसागर मीन ॥
 दुनिया सहेरी ब्रह्म की उत्पत्ति स्थिति लय ब्रह्म ।
 अन्धा धुआ^१ सब वस्तु का तहाँ बाणा^२ कर्म ॥ ३ ॥
 धुमा निकस्या अग्नि ते बसता देख आकाश ।
 ना ठहेरा ना पोछा फिरे सहेज्य अन्धा समास ॥ ४ ॥
 कोई गम्यासी अज्ञी व कोई सीपा निरधार ।
 कोई धूम हुआ अन्धा एतोन का बिधार ॥ ५ ॥
 धुमा स्थानि ता जीव हे और मोक्ष्या ईश्वर का धाम ।
 अग्नि आ कवस्य अन्धा ज्ञानी का आचम ॥ ६ ॥
 ए त्रीप^१ व छी माहामन्त्री साई ज्ञानी साई सत ।
 साही आय हरी अन्धा ए पद ठहरे माहत ॥ ७ ॥
 आगे पीछा नही बछू नाही नीमग मीराम ।
 भाप आय जान अन्धा जमा धाम बिधाम ॥ ८ ॥
 जीग धाम बाई ध्य नही ध्याता नही सखी मूर ।
 काल कर्म नही अन्धा नहीं मठा नहीं कूर ॥ ९ ॥
 दष्ट पदारथ जनना मूरत पदारथ जह ।
 बाबन मा बाप्पा अन्धा सम्य न मूख तह ॥ १० ॥

१ तप (ना) २ धुआ (ना) ३ कर्मा काव (ना) ।

आकार की हे' बासणा नीराकार की लग ।
 तहाँ' सूरत जाय भेसा करे ।' अस्ता पड़े न पग ॥ ११ ॥
 आ मूरत बसि ता निरख्य सुं जाई घासो हाम ।
 पण पग पेड़ा तहाँ नहीं जहाँ अस्ता आराम ॥ १२ ॥



धन नन मन क ना गण भवन जाहि का नाम ।
 माहाद व भागव मा माहव का नाम ॥ १ ॥
 उय मुख्य विप साहाया नहि आन जाय वि ॥ २ ॥
 मन मन अपना न गण मा माहव का नाम ॥ ३ ॥
 साया नुर निदान पर आधर भवन इतास ।
 राजर का मिय भागहे सा माहव का नाम ॥ ४ ॥
 ईद डोड़ क मति किया सब माहव हर नाम ।
 मोक्षम नजा गाहिया गा गाह्य का नाम ॥ ५ ॥
 तन न बाणी पुत्र शाना जग गन ममाय ।
 वाया न कामावन माणी क सो माहव का नाम ॥ ६ ॥
 दोन नना सातन नहि कगगात कीस काम ।
 गुपु पा ग्य रत मना मा माहव का नाम ॥ ७ ॥
 एह वाक परमाक का पश्या न धरन काम ।
 अग्यन्त जाया गण मा माहव का नाम ॥ ८ ॥
 गिघ्य मिघ्य र दया' न घर रर हा क भूताय ।
 मवन दगावर गव गण मा ताहन का नाम ॥ ९ ॥
 मान बडा' मिन उगा भना बुग सब शाय ।
 एह माई नाग नहा गा माहव का नाम ॥ १० ॥
 जगन यस्या एकमा वि भगवत माय ।
 मान बडा' व भगा मा माहव का नाम ॥ ११ ॥
 मान म (गा)

मात्र ५ (मा) ७ ८
 १) २ वारा (मा) ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

भय कू भापा मा गिने-धैसा भुस पयाल ।
 सब सरीर तू बैठ है सा साहेब का सास ॥११॥
 उनमत सा माता फिर फाया अदवद भास ।
 बाकी परीक्षा बा करे सो साहेब का सास ॥१२॥
 क्षिप्रत मा आवत नहीं क्या भी मन का ब्यास ।
 सखा' सखे में नहीं सो साहेब का सास ॥१३॥
 पानी मा पावक बरे जैसे बिजरी जुहू सास ।
 अकल भता ऐसा धखा सा साहेब का सास ॥१४॥
 भाते किए ना' सगे जरत नहीं बपार ।
 ऐसी रखी रह मखा सा साहेब का सास ॥१५॥
 सोना कु समता' नहीं बा बिच जात बहु कास ।
 बजब कसा सोही उपजी सा साहेब का सास ॥१६॥
 दूबा कू दाख नहीं आया आस पम्पास ।
 ऐसी नीबहत' ओढ़लु' सा साहेब का सास ॥१७॥
 ओपमा कू अटकत नहीं भापा नसिम नीरास ।
 कोई बाकू कैसा कही सा साहेब का सास ॥१८॥
 राज करे के रमनी रम के ओढ़त मृगछास ।
 ग्यु रह रमू सेहेग्य मां सा साहेब का सास ॥१९॥
 कहां न जात कैसा नरा सगे न सख बजास ।
 सोहे गुह मेरा मखा सा साहेब का सास ॥२०॥



१ निध्या (जा) २ जन्मे किए जा—अपत्ये कीरामा (जा)
 ३ ब्यामना (जा) ४ कोई (जा) ५ निमज्जत (सा) ६ आढलु (सा) ।

सर्वांग अंग

४ जेतना उचा बढ़ सूर्य सखरणे' आये ।
 अन्ना छाया ताहे करो' नाहि पड भ्रम' आये ॥१॥
 तस आत्म अक के भीकत जाब ज काय ।
 देह दरसन टर अन्ना हुतु सब य सोय ॥२॥
 अनुभव क धंग भिग नही अतर उपज का भव ।
 जी मरनक वा आनद अन्ना सा मत दुरसन देव ॥३॥
 नामा बानी मत मुन धन्द आन बहुमात्य ।
 नागि लागी बीचार अन्ना जैसे रई तात ॥४॥
 एव धन्द कू ग्रही रहे आया एव बीचार ।
 य नहि' हे हरि अन्ना सम्पत्तिहि' सम्पा संसार ॥५॥
 जयत पाट बैठ मही माना मात्य बहुबाध ।
 एत दरसन के मत अन्ना एक एक के अधिक मयाण ॥६॥
 जैसे तसा रोहेन दे अटपटा रूप अवाध्य ।
 बुद्ध मानम यक हे अन्ना पण मही अठ क साध ॥७॥
 गद का सल न रहे अन्ना सुरत नीरत मिढान्त ।
 सत्य मीध्या मही कहन क आवा नही आद्य अन्त ॥८॥
 जो आन में मय्य हुं पिड प्राण ममार ।
 महगुद का मद्य न अन्ना वरप अपना आघार' ॥९॥
 काह व भाग न हुआ जगत रूप मसार ।
 बाहु के भाग न टर ताका करा अन्ना नीरघार ॥१०॥

१ गरणे (ना) नादिकी (ना) २ भू (आ) ४ छा यत—विगत
 (ना) ५ नाहि भागी—लाग लाग (ना) ६ के बहि (ना) ७ नमस्त
 (ना) ८ बढ़ (ना) ९ उच्चार (ना) :

सब अनुमान' कसपी कहे पुर्व आचार ज' बात ।
 पन' ए तो ज्यों का त्यों अच्छा ना को आदिन साथ ॥११॥
 आये हा रहे अणसता करणहार किरतार ।
 आका कीया सब होत हे सो पिठ जसावण हार ॥१२॥
 अच्छा पीछे क्या रहा जब समझ्या ए मरम ।
 आप मेटे' से आप रहे भाग्या भारी' भ्रम ॥१३॥
 पढ़ते पढ़त पची मुआ व्याकरण पिंगलसार ।
 माया अधिक बढ़या अच्छा जास्ता जाय' ससार ॥१४॥
 मीप्या सरय सरय हाउ ह कण्ठै' कम धाय ।
 औ धुनत धुनत भरम भया अच्छा अरोगता जाय ॥१५॥
 मण्डपा पढ़या दोउ सारिखा जा नहीं आरम लक्ष ।
 सादी' पीतरी सल्या' अच्छा बराबर' बुद्धन' पक्ष ॥१६॥

*

१ जन मान (सा), २ ज (८) ३ य (मा) ४ मिटे (सा)
 ५ ने बरी (मा) ६ जाता जाय—जयम जायाई (मा) ७ कण्ठ (मा)
 ८ के (मा) ९ गिला (सा) १० सरली (सा) ११ बुद्धन (मा) ।

सर्वांग अंग

जे जेतना उचा चढ़ सूर्य सकयरजे^१ जाये ।
 जखा छाया ताहे करी नाहि पढ़ भ्रम^२ जाये ॥१॥
 नैम आत्म अक बे नीकट जाय ज काये ।
 रह दरसन टर अखा हनु सब ये माय ॥२॥
 अनुभव कू अंग मिग नही अतर उपज का भेव ।
 जी अरपक का आनद अखा सो गन दूरमम बेव ॥३॥
 नाना बानी मत मुम पण्य जान बहुभाष्य ।
 लागि सामी बीखरे अन्ना जैसे कई तांत ॥४॥
 एक पद कू ग्रही रहै जाया एन बीचार ।
 मे नहि^३ हे हरि अन्ना सम्पतहि^४ सम्पा संसार ॥५॥
 जगत घाट बैठ नहीं माना भाष्य बहुबाण ।
 गन दरसन के मन अखा^५ एक एक बे अग्रिक सपाय ॥६॥
 अम तता रेहेन दे अटपटा रूप अबाध्य ।
 बुद्ध मानन बक हे अन्ना पण नही झूठ के साच ॥७॥
 गद का सक्ष स रहे अन्ना सुरत नीरत सिद्धान्त ।
 सत्य मीथ्या नही कहन क जाना नही बाध अन्त ॥८॥
 जी जान मै गम्य है पिह प्राण ममार ।
 मदगुह का मक्ष स अन्ना वरप अपना आधार^६ ॥९॥
 काहू के जाय न हुआ जगत रूप समार ।
 काहू क भागे न गन ताका नरा अन्ना नीरछार ॥१०॥

१ गरज (ना) नाहिनी (ना) २ भू (ना) ४ सो गत—विपत

(ना) ५ नाहि नागो—साग माय (ना) ६ मैं बहि (ना) ७ नमस्त

(ना) ८ बहू (ना) ९ छधार (ना) ।

सब अनुमान^१ कलपी कहे पुर्व आधार ज^२ बात ।
 पन^३ ए तो ज्यों का त्यों अन्ना मा का आदिन साथ ॥११॥
 आये हा रह अणक्षता करणहार किरतार ।
 आका कीया सब होत हे सा पिंड जन्मावण हार ॥१२॥
 अन्ना पीछे क्या रहा जय समझ्या ए मरम ।
 आप भटे^४ ते आप रहे भाग्या भारी^५ भ्रम ॥१३॥
 पड़ते पड़ते पची मुआ व्याकर्ण^६ पिगलसार ।
 आया अधिक बढ़पा अन्ना आस्ता आय^७ समार ॥१४॥
 मीथ्या सत्य सत्य हाउ हे कष्टों^८ कम घाय ।
 जो घुनत घुनत भरम भया अन्ना अरागता आय ॥१५॥
 अवच्छा पक्का दाउ सारिखा जा नहीं भात्म लक्ष ।
 सारि^९ चीतरी सत्या^{१०} अन्ना बराबर^{११} बुद्धन^{१२} पक्ष ॥१६॥

★

१ जय मान (मा) २ ज (X) ३ > (मा) ४ भिटे (सा)
 ५ भे भरी (मा) ६ जाना जाय—जयन तायाई (मा) ७ पक्क (मा)
 ८ के (मा) ९ गिना (मा) १० सरसी (मा), ११ बुद्धन (मा) ।

सम्प्रदायीत अंग

दोमअहारा बाण्यका^१ ण्यो का त्यो ही सदावे ।
 कुर्म कयासी हे अथा तरब अकूर^२ समाये ॥१॥
 बोसता यया अवाध्य ये तात^३ सारी धाय ।
 आप अवासा बोस दे ज असा अवाच ॥२॥
 अबोसता की मोज हे बाल नाना बोस ।
 अना इसारत ताही की दव्यो आपा सास ॥३॥
 जान आवन का बीमही^४ जासु वचन बिबेक ।
 अथा ! पंच का कोहेडा बोसी चरिय अनेव ॥४॥
 चतुर बीयेकी युय जइ नैतन वचन मतिमंद ।
 तत्व भेद नाना असा ग्यारा परमानंद ॥५॥
 जही फछू नाही ताही जहे^५ जाहा कसू है ताहा हेज ।
 बालन ताई राम हे मठ बाघे अगा तु पेज ॥६॥
 बालन डोलन रामसू पच तत्व का जान ।
 जइ बेगन सब कोहडा अथा आप अमान ॥७॥
 ना कोई मुमा मजीबता नाता ह आवन जान ।
 रोहज छल आव अथा कहा बरे काई समान ॥८॥

✽

१ बाणीका (ना) २ कुर्म कयासी—कर्मसी कया दिले (ना)

३ तब अकूर—अकूरको ज (ना) ४ जाने (ना) ५ बो (ना) ६ हेम है (ना) ७ अ (ना) ।

नूगरा' को अग

नूगरा १' सबका गुरु भला बाली हीकमत' बार ।
 बिन नम्रुम सब किया करत न सागी बार ॥१॥
 नूगरा स भूमेरे सच' भक्त भेदू व कोय ।
 नाम नोमाना नहीं बला बाल बोसावे सोय ॥२॥
 नूगरा की गत अजब ह उहने आप' बेहेकाय ।
 दुई कम खल भला । ना कछु नूगरा भाये ॥३॥
 छन्द करे छाना रहू प्रपट पाकारे आप ।
 मोस तास जाको नहा ताका ठोस अह आप ॥४॥
 हाथ पाठ जाका नहीं ताका सीर मुख हाथ ।
 रूप रेहने बोले अरु बहुकपी हे नाथ ॥५॥
 स्व पद तहां' गुरु सीधय नहीं' क्या का स्पीहि सवाये ।
 भन्ना बीज मा नहीं कछु ब्रह्म मे भाव्य बनाये ॥६॥
 भन्ना दुई मो दुई नहीं भारत चेतन मोज ।
 यक्रमक रूपी हीरसा कोई भेदू पावे मोज ॥७॥
 भासम मारा" भाज ह हीरा अरूपी आप ।
 भाव भेद सर्व मोज ह भन्ना कछु व्यापा व्याप ॥८॥
 जगत हूँ के जगदीश हूँ कछु मी कछा न जाय ।
 भला कदमी स्वयं ज्यों सार फलत सदस्य ॥९॥
 ग्यारा करण का नहीं भन्ना" जैसा तसा आप ।
 कदली की सी गत्य हे पेढो पेढ हीत व्याप ॥१०॥

१ नम्रुम अग (सा) २ राम (सा) ३ हुकमत (सा) ४ तै (मा)
 ५ भवे (मा) ६ भी (सा) ७ करी (मा) ८ न (मा) ९ बडे (सा)
 १० ई मो (मा) ११ बन जाय (मा) १२ गीरा (सा) १३ x (सा) ।

भरपी रुप^१ हुआ फीरे रुप भरपी हाम ।
 पपर पपर^२ जमात है जैसे पाना तोय ॥५१॥
 भार्ये हूँ सुत^३ छाम में भक्त हेत अवतार ।
 एतो केस का मूत्र जयी अञ्जा परित्र बिहार ॥५२॥
 सूखे केस न नीपज नीपजत पेडा पेडा ।
 अञ्जा बीज अरु है जगत रुप का हेडा ॥५३॥
 मे हूँ सो ए हूँ अञ्जा हाजर प्रगट प्रभाव ।
 हाय गया के होयमा भापा मत परमात्मा ॥५४॥
 इत आह ता^४ ओय हूँ उने आह स्ने होय ।
 इत उत केहना देहे गया जन्मा^५ ज्यों का त्यौं जाम ॥५५॥



१ रुप (ना) २ पपर-पपर—बीगली पीपली (ना) ३ भार्ये
 पुत्र—भावन पुत्र (ना) ४ आह परमात्मा—दे हे जीवना गवाण (ना)
 ५ तो (ना) ।

अथ माया को अंग

ममता तेसी, मन बपम, माया घाणी फेर ।
 अखा पिलामे कामना और हाता आय उमेर ॥ १ ॥
 ए जीण जग जीब आ तर्मा कर्ता माया काल ।
 ताहां मुहमुखी मलिया भया अखा सा बप्प्या जाल ॥ २ ॥
 अखा शब्द कू मोज से शब्द ब्रह्म शब्द गाल ।
 जा बरते ए उपजे ताकी करो संभाल ॥ ३ ॥
 शब्द पहोबावे वस्त कू और शब्द ते पहिये जाल ।
 शब्द का पर नि-शब्द में, अखा सो घाम बिलास ॥ ४ ॥
 आपे माहब आपमें आधा रख्या ससार ।
 मन मानें लम अखा, ताहां कान दिन्नावनहार ॥ ५ ॥

अथ प्रीष्ठ अंग

राम ताम सो आसली जो अवसर पाम्या आज ।
 ए वन पाम्यो ठाका जसा, ता असा । ही रहे सेसाज ॥ १ ॥
 तत्पर वहने से करा जेम बहोने भावे बात ।
 ए हरि आम्हा विण सुग अखा । पया घसता गया हाथ ॥ २ ॥
 मानव देह पामे बक, मर्म न समज्यो एह ।
 जे हुते कोष ? कोण जातमा ? ए भाग्यो नहीं संदेह ॥ ३ ॥
 जातमा आम्हा विण अखा, बीजां मुहुत करे अनक ।
 ज्यम ओम विन्दु आन्तर करे घट न भराये एक ॥ ४ ॥
 आन्तर करी अंतर बको त्या उपासी राम ।
 मकस तीरथनु फल अम्हा । पामो एके ठाम ॥ ५ ॥
 गंगा प्रयाग गोदावरी माहातीर्थ तीरथराज ।
 ते नहाता फल तो प्रगटे जो अघा जपिये महाराज ॥ ६ ॥
 अखा आत्मवर्जने मेवा सबुद्ध मंत ।
 सरशास्त्रने गोष्ठते मघ टमीजे बत ॥ ७ ॥
 हेला माहे हरि मल जा मदुद्ध ने धर्मे आय ।
 ज्यम रत्नामरयी रिद्धि पामिय जा हरि हाथे माहि ॥ ८ ॥
 साधु संत एम कहो गया एम कह श्री महाराज ।
 हरि हरिजम ने तावता अग्रा समरे बाज ॥ ९ ॥
 जीव शिव जुवते प्रीष्टिये जा सेविज साध ।
 विचारे वस्तु पामिये भग्या जी बाध अघाध ॥ १० ॥
 मोटी बात महत्तमी न धार्धता मुमम पद ।
 कलाद्रुम जम कृष्णता मवनी मघ फल जद ॥ ११ ॥

અથ મનસોઢધ અગ

એક જ્ઞાનદ અભિસાક્ષ ફક્ત એક સામ સજ્જ કોટધ ।
 આત્મ પરમાત્મા જે મન યજ્ઞા મારે વહુ જ્ઞાનધ ॥ ૧ ॥
 અજ્ઞા જ્ઞાનન્દ છે લતે જે આખ્યો કહ્યો ન જાય ।
 ઘન તનના હપ જોકને રજે તુ પતિપામ ॥ ૨ ॥
 ઘન વારા સુત પદ્મ પિતા માતા વિભિધ વ્યાપાર ।
 અજ્ઞા જે જ્ઞાનન્દ પામશે છે મધુ જાટે જ્ઞાન ધાર ॥ ૩ ॥
 મૂરક્ષ મજ્જસાતો ફરે જાણ સૂદ્ધ સંક ।
 પગ જે ભોગ મૂપતિ ભોગવે સોજી રમતા વિસે રક ॥ ૪ ॥
 માહાર નિદ્રા મય મધુને સરજા છે સવ કોય ।
 અધિક મ્હૂન માને અજ્ઞા ! જ્ઞેષ્ઠાણા છે સોય ॥ ૫ ॥

अथ सहेज अंग

माया ठगणी, कास ठग तिन सब ठगिया संसार
 कामना दोरी कंठ में सब करठे फिरे पोकार
 राजा रक मागे सबे और मागे बतुर सुजाण
 एक न माये अन राम का जे अया नही हरि आन ।
 बाचंठां पुमो पड ए सुगरो जाण संघ ।
 मागे भाव्यो भूतमां असा मागध बंध ॥
 बनस्पति सब एक है स्थावर जंगम दाय ।
 सहज फले सुख सत्य अया सुखता बिचे बर्य हाय ? ॥४॥
 अया जोग सब सहज का हम तो किया विचार ।
 बिन कछा पहने करी काया ए किरतार ॥५॥
 पहने अपु हुमा पीछे हुमा पुमान ।
 जामपणा पीछे बढया तो असा । घरे बयू मान ? ॥६॥
 हम तो ऐसी जाणिये जैसी कही महत ।
 अया ऐसी जानतें मय टली जे जत ॥७॥
 मनुमा मठ उमटा फिरे, साची सुख से निव ।
 सहज जाप्या बिन अया बबहु न टले बीर ॥८॥
 आप अपी रहे इराम हरि माहीं मूक ठकार ।
 जयम का मर नीका बड, से अया । पामे पार ॥९॥
 *सहज बनी ता बन गई अया । गुरमी बाणि ।
 पण कहे त सागे मही ज्यु मोले सोहुहु पाणि ॥१०॥
 होमारा सा हा रखा जे इच्छा या हरिराय ।
 ज्यु नासा कण बेध अया । पण अन्य अंग बिद्या मय जाय ॥१०॥

* मूल ग्रंथ में यहाँ है दूसरे सहज अंग का प्रारम्भ होता है ।

ना होवे नर का किया, सब नारायण का जाण ।
 गुरु सारक पढ़ते सुने, कब बग कू उपजी वाण ॥१०॥
 ने कछु करे सो हरि करे नर का किया न होय ।
 नर का किया होवे ज्ञाना । ता कबहुँ न मरे कोय ॥११॥
 ग्यु नीर बिपे मोका रहे तो बहे काटि मण भार ।
 यम नारायणमा नर रहे, ते रहित सरे सुसार ॥१२॥
 नबनगो अतर भा खुमे तो कहते काहा होय । ।
 ग्यु पुतली के मेनां ज्ञाना । देखन के नहीं दोय ॥१३॥
 प्रथा ! अतरख ऊपजे सो अनुभव जान्वस्यमान ।
 न्यु मुरातन सिंह का, सो कुवरत की दान ॥१४॥
 सहज आमा शरीर सब, सहज ज्ञाना मर जाय ।
 सहज मोमेडा होत है, तो ताकु दवे बसाय ॥१५॥
 दाम चाम सब सहज के सहज हुमा परिवार ।
 बसा ! समजे सो सुखी, नहीं तो पिट पुकार ॥१६॥
 नर सरमा बहेरो, असा । ज नर ने अधिकुं ज्ञान ।
 गण अहार निद्रा, भय मैषुने, सपना पद्य समान ॥१७॥

अथ विप्र-स्य अंग

प्राप्ता नाम तु मित सुणे को वहे साहेब किस ठाम ।
अखा मयत ता मयरे पड़ जो समजी कहिये राम ॥१॥
समग्गे साई स्त्रे मिस अखा ! रहे नहीं मार ।
स्युं सामर के मण्ड कु नीर बिना नहीं ठार ॥२॥



अथ कृगुरु को अंग

गुरु - गोविंद साधू मिल्या, तबते भाग्या भम ।
 पण कृगुरु पंथ बतादया सो अस्त्रा न समस्त मर्म ॥१॥
 सो बल्हा भाजे भमघी, जाने नहि गुरु भेष ।
 सा चेतन कू समजे नही, माने जडकू देव ॥२॥
 कृगुरु मारग दूर है जग्न कोट पर गाम ।
 सदगुरु मारग सोहेता क्रमे क्रम निज धाम ॥३॥



अथ हरिजन को अंग

हरि हरिजन तो एक है, तुम देखो सोष विचार ।
 सब बहाना है साईं का तो एके कहा निरधार ॥१॥
 हरिजन को बहाना नहीं, ए तो अर्थ पहन्या देय ।

आको जैसी बन गई दान देयादेय ॥२॥
 बाहे पर्य चलना बसा ! सो सांग बनावे साज ।
 जिने हरि समरा लया, ताको नहीं कष्ट काज ॥३॥
 जिस मेगस को मस्तो बया ! ता पर साईं का प्यार ।
 बसा ! और सदारिया, बहे लफ्फर का मार ॥४॥
 मुख चासे अमृत भव और भूषण भूषण धंग ।
 मांडण राजद्वार का, बसा ! साहेब सुरंग ॥५॥

अथ सप्तहीण अंग

बहुधा निपजे को भस्मा ! मस ज्ञानी कुछ सिद्ध ।
और बेचुकी कैसे फटा होवे सुंदर सुगन्ध ॥१॥

जाका मत्ता अगाध है, सो वीरला जग बीच ।
और भस्मा उपजे मरे, ज्युं कीड़ा भाई कीच ॥२॥

भस्मा ! कयनी तैं राम कु, जाणो दूर वराज ।
ज्युं निधान कहौ मि रह्या, कहीं हुवा सोप का अवाज ॥३॥

हीरा छटे सिंहा टांक का, पूजा हे हरिजन ।
दोव दुलस ससार में, अछे ! बिचार्या मन ॥४॥

कबतें गातें हरि भिसे, सो भांड डूब सरी जाय ।
प्रेमे गुह सेव्या बिना, हाटे हाट बेधाय ॥५॥

कयणी कुकस कुटसे, छेप न पामे पार ।
मुद सेवा बिण सुग अछा, ज्युं जंगल का होय दार ॥६॥

पसकृपी हरि उदरे, जो छोड़े छस बान ।
खनवा छूट्या बिन भस्मा राम नहीं नावान ॥७॥

छाईया साह्य हुवा बिना, नो पावे सुख सीहोर ।
हूदे होठे जुबवा, सो बेकिम्मत बेपीर ॥८॥

मन मृगी मारग बिना, अछा कधी कहां जाय ?
ज्युं अंध बहोणा धरण्य में बिन रोष्या रोघाय ॥९॥

मन मृगी भेसा अछा ! जो कयणी कये बिन रात ।
छे भोष्या तनप्या उजसा, रूपा कमी ना जात ॥१०॥

(१६०)

मनमुखी दुःख से बचा ! जे को करे उपकार ।
ज्युं बगिन नरम करे सोहकु ताहे देवरावे मार ॥११॥
माहात्म म सहे मनमुखी बीर माम बड़ाई प्हाय ।
ज्युं पहेसा डोहम नीरकु तो पीछे पीया ज्युं जाय ? ॥१२॥

अप मरद को अंग

मर्द मला ! सो जानिये, जे मरवे अपना मान ।
 और सब मरवानगी, ते होय साहेब का जान ॥१॥
 दावा घरे मन मरद का और भीतर मरीया दर्द ।
 मया ! कहा मरवानगी, जो दावे कीम्हा र्द ॥२॥
 बदा ! साहेब सुं मिला रहे नैन बेन कर एष ।
 और कर्म के पेट में भरीया विघन अनेक ॥३॥
 सा मर साहेब कु मिला, जे आप न रहबे रष ।
 प्यु माता के गर्म में अया न लागे अप ॥४॥

अथ अनुभव वाक्य को अंग

सर्वम सत्त्वं राजा पीए, ताह कृपा सहेंन यमाई ।
 त्पु अनुभवी अर्थ अपना सध, पाछे पाठर फेसाई ॥१॥
 स्वाति बुद्धी सीहीरका, जाने सीप सबाद ।
 रस पडपा मुक्ता भया ताते पावे जगत माहसाठ ॥२॥
 राम छेन्नी ओयछि भक्त, मर्थ समीपनी आप ।
 ताके मुख फिचर्ते बाहारा भया तासु जाये जगत दुखठाप ॥३॥
 त्पु ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मरस अचे मनसा बाचा काया ।
 मछा ! सोहि डकार स जगत पारपत आमा ॥४॥
 मछा ! जीव की बानि ए, जे मान बडाई बाह्य ।
 जिन हुं आप पहेंचानीआ सो सहेअहि सहैअ समाय ॥५॥
 भय भाति मज्जा अछा ! स्तुति निदा जीवधर्म ।
 जा पटर्ते ए पच गये सोहि रामपद पर्य ॥६॥

अथ एक साल अग

अगत कहो अगवीश कहा माया कहो कोइ काल ।
 भखा । मते विज्ञान के, सब चिररूप एक साल ॥१॥
 सत् बना द्वारपर, कलि चार स्यार बाल ।
 भखा । मते विज्ञान के राम रमन एकसाल ॥२॥
 उत्तम मध्यम अधमाधम गी ब्राह्मण बडाल ।
 भखा । पारस के मते, सात घात एकसाल ॥३॥
 मद्र, मरवाड, बनारसी स्वपक्षगुह, दवाल ।
 भखा । मते भाषाण के, सुदृढ अशुद्ध एकमास ॥४॥
 आठम, बीरग एकादशा नाहि गणत देशकाम ।
 भखा । मते ज्यु मृत्यु के मकल सिधि एकसाल ॥५॥
 माणक, मोती हेम बट, उत्तम मध्यम निर्माल ।
 भखा । अगवके मते त्याग जोग एकसाल ॥६॥
 गन दवानल हेमगिरि घाट जीपट जालमास ।
 भखा । बनन के मते सब अवनि एकमास ॥७॥
 पट पड हीय दिन रेम की, प्रीपम ऋतु शीतकाल ।
 भखा । मते ज्यु अरु के, सकल ऋतु एकमास ॥८॥
 नील पीत मरत मणि देवत मिथ और साल ।
 भखा । स्फाटिक के मते अर्धगता एक साल ॥९॥
 रिपु हितकारी सबको रहे घट धायमा बाल ।
 भखा । हुताग्नि के मने मकल करत एकमास ॥१०॥

अथ कुमति अंग

हरिजन के भावे अछा । कुरा न भासत कोय ।
 ज्युं बालक पनइत खनि कुं करजे स्वभाव साय ॥ १ ॥
 हरिजन सत् भावे कह कुजन सेंट एकाइ ।
 ज्युं मन मरज तन हेत कु शिष एक मग्जाइ ॥ २ ॥
 कुबुद्धि मानत नही अछा । सबगुरु का उपकार ।
 दूध पइया ज्युं नाम मुत्र सो होत हलाहल महर ॥ ३ ॥
 कुबुद्धि भसा नीपजे सबगुरु केरे संप ।
 ज्युं मुख पचाया यंगजस सा होता आवे तंग ॥ ४ ॥
 कुबुद्धि महिमा ना लहे सबगुरु का उपदेश ।
 ज्युं मुखा भी दुःख देखरा पादुम के वेद ॥ ५ ॥
 क्लाना के यम मत मरे मत मासो ये यात ।
 ज्युं बाज न छाड़त बेसरा भूत जसाबें सात ॥ ६ ॥
 कुबुद्धि की मति ना किये जो सत्संग में भव साय ।
 अछा । संव का मज्ज ज्युं छाड़त नही बचाय ॥ ७ ॥
 तन पातक है नास करि पण अछा । न पावन मन ।
 हाव पीवरा इन्द्रफल कइवा हाव दिन दिन ॥ ८ ॥
 कुबुद्धि काड़ा भर का सत्संग मिसरी मिसाय ।
 रे मरे के सठ खने पण मोलत नही स्वभाव ॥ ९ ॥
 कुबुद्धि पीजब बागडा अग यम दुःख पात्र ।
 निरदोष ना मोपज जो बुझा हाव गान ॥ १० ॥
 कुबुद्धि नैकण काज का सत्संग म गह का पाय ।
 पटो पटो जाना रहे पूरा न हात निभाय ॥ ११ ॥
 साणो पावो निरम बहे कुबुद्धि गुबुद्धि दय ।
 गुबुद्धि भयं उपर रहे कुबुद्धि पाद हि छोय ॥ १२ ॥

मुबुद्धि मानत है अन्धा । सारा गुरु उपदेश ।
 कुबुद्धि कहे समझे नहीं दोनु पारा वेश ॥ १३ ॥
 एक पेड़ में सपने जसा काँटा धोर ।
 एवं एक गुरु के शिष्य अन्धा । कोई गुण ग्राही गुण धोर ॥ १४ ॥
 मक्षण दिन साफा सही सूझा न आवत घाट ।
 गुदमुक्ती भल नीपजे ना तो बाधघाट ॥ १५ ॥
 कुमति जीव समरे नहीं साख बात की बात ।
 कुमति एतना भी करे बिनु हरि कुमारी सात ॥ १६ ॥
 कुमति समर्या गेवतें ज्युं सुमति समर्या गेव ।
 फर फार हावे अन्धा । ता जने किरतार कृ एव ॥ १७ ॥
 चार बडाल कुमति नहीं सो तो है रोजगार ।
 कुमति का आचरण अन्धा । सो मन ही का व्यापार ॥ १८ ॥
 खडग समार्या सोड का तोहू न बाटे भग ।
 मोह की मूर्ति मारते तो भी करे अग भग ॥ १९ ॥
 कुमति का मन कठन है कुल कसा ही जात ।
 ज्युं बादल छाया दिन बना उमरी लाभी रात ॥ २० ॥
 ईवो अमुरी मृष्ट नहीं जात भात ना काम ।
 ज्युं सरातर जगत भला बुरा चार ना नाम ॥ २१ ॥
 कुबुद्धि पडित भी बुरा अपद भला बुद्धि घुट ।
 ज्युं गल्या दुआवे चातरी तारे तूबा म्हों बघ ॥ २२ ॥
 उमवन अष्टा कुमति सुमति भला होय ।
 ज्युं उमसा सामल प्राणहर कासी मणि सहेर पाय ॥ २३ ॥
 सुमति कुल हीणा भला कुमति बुरा कुमीन ।
 सुगंध कस्तुरी भीष कुल दुग्ध यग ने मीन ॥ २४ ॥
 कुमति अधिपारी बुरा सुमति गराब ताहे देव ।
 बिछु छातरीआ पानगर शम हरे सत गव ॥ २५ ॥
 कुमति हाथ 'सहोदरा' सो हिन में करे कुहेन ।
 ज्युं नाथ देव उपासनें अने मुग्धू जेन ॥ २६ ॥
 कुमति धनवना सोन ना न होय मनोहर पल ।
 पत्थरा रहेणा निपादिना माँतो करे पसेल ॥ २७ ॥

कुमति बोल सहेज में सहोत को करे अकाज ।
 ज्युं यहकत छानो पंसीआ सुणते बंदूक अवाज ॥२८॥
 कुमति कु काइ शिष्य करे ता गुरु कुं करे खराज ।
 ज्युं अग्नि अगी किया साह कु तो पीटाणा ताप ॥२९॥
 कुमति माया बारण बहुत अपणा रूप दिताय ।
 ज्युं उत्पूक का बोंसणा हुकमी फिर कराव ॥३०॥
 कुमति पूजा कर बसा संय ते समरत नाहि ।
 तयां न जावे ताय कु सदा पबत जल मांदि ॥३१॥
 कछुआ कुमति एक गत घरत घूरनु होठ ।
 पानी में पछ्या रहे करडा होय पेट पीठ ॥३२॥
 कुमति माया संग में तो सारा बिगाड़त पंथ ।
 घनिदबर दृष्ट ज देग पर त्यां बस्ती न रहे अथ ॥३३॥
 जब वांछन फूला बन में तब वांछन की जड जाय ।
 दर्शन दुनिया सबन को, कुमति रह्या पजार्ई ॥३४॥
 बिछुवा साप उरजण भयी सो दुख देन को काज ।
 ठाठ दूर तें बरजया अवा । संग करी त्याज्य ॥३५॥

અથ જાગૃત્ત અંગ

ગર્હ ધયો વાસે જહે રૂઝુ જહ જ્યમ કાસ ।
 કનસી મહ સીંગિ જહે જ્યમ રામ રહે પોતા પાસ ॥૧॥
 અસમાધ્ય-સી જાત એ જે કહ્યાં ત્રણ દષ્ટાંત ।
 રીઝો માછી ઘો મ ઘો જાણે તો જો એ બેદાન્ત ॥૨॥
 જામ વળૂં પિંહે ઠંજમે પિંહ પહચે તે જાય ।
 તે પિંહ જુએ પાકી પરેણું તો આત્મા પરગટ થાય ॥૩॥

अथ विदेह अंग

ए तो बिदेही विस्तर्या देह को किया जमान ।
 खेलत विघसा देखोए होय ज्युं का त्युं समाव ॥१॥
 बड़ के बड़ाने है अजब मत कोई भूली मर्म ।
 बड़ दृष्टे बड़ भासीए है चेतन नहीं चर्म ॥२॥
 चर्म नाम चेतन घर्षा और चेतन के सब नाम ।
 ए अहमेवे आप होत है वण अघा । रमे सब राम ॥३॥
 राम हाई रमे अघा ! ताको पीहीने कोय ।
 सो सदगुरु का बालका जे सम्यक् जने होय ॥४॥
 सबरखी को सैन है जो देख बिस के नैन ।
 ए सदगुरु की नीपुत्र, अगा ! देहदर्शी देखे चैन ॥५॥
 देहदर्शी बुनिया अघा ! और आत्मदर्शी कोय ।
 आको नैन सदगुरु दिए, ताका आत्मदर्शन होय ॥६॥
 आत्मदर्शन बिन अघा ! संत न छोड़े द्याम ।
 जो हरिहर प्रभू हाइए ताये बढ़ता जाय हमान ॥७॥
 जो सब समानी ने सके, तो साँसा न रहे सेध ।
 अघा ! सो सो राटक न नीसरे जो हरिहर करे उपदेश ॥८॥
 अघा ! जिन सदगुरु मिल्या सा ठहर्या निर्याम ।
 वण जीब गुरु जाको मिल्या सा ताको पापो पहान ॥९॥
 अघा ! कुबुद्धि जीबयो नहीं चेतन पर प्रीति ।
 फिरी फिरी ताके देह को, ए मदमति की रीति ॥१०॥
 अघा ! बंटी गुण को, हरिहर भज ताई दाप ।
 सदगुरु नैन निमल करे तो पोर बढ़ासा मोल ॥११॥
 हरि गुरु संत को सेवते निरमल होये नेत्र ।
 मही तो जीब रह्या, अगा ! ज्यं बढ़्या अपारा खेठ ॥१२॥

इन्द्रजीत उसधे, ब्रह्मा ! न उदयो आसम सूर ।
 आपोर्ध्व उभयते, मर्म पहीभो भूर ॥१३॥
 ब्रह्मा ! उमट भेद है, सनज्या सो है सहेल ।
 कनकधा सो ससप्तम बड़े गहेन न छाड़े गेम ॥१४॥
 ब्रह्मा ! मरण का मैं नहीं और जीवन का भी नहि ।
 मरण जीवन दो मोज हैं जेतन सागर महि ॥१५॥
 सेहेन सेहेन बनी ब्रह्मा ! भूमा माया टोर ।
 खटकी खप्पट छपगई, कोइ पेंडा पाया और ॥१६॥
 जिस पेंड चीजे ना बसे, और उठ न सके विहग ।
 सो पेंडे गुरु से चल्या, होशर एक ही भग ॥१७॥
 सते पीणा घाम है जहाँ रज तज भी न समाय ।
 ता मग्य तुरी वोड़ाइए, जा सदगुरु से जाय ॥१८॥
 वम पेंडे विमु ना मिले, जो जाये पृथ्वी पार ।
 सुरत भल ता सौई है अखबही खोजा । न खाननहार ॥१९॥

अथ नैराश अंग

माया करणी काटके, निज मोय निरघाग ।
 बसा ! सो पूरण काम नर, जाव रहो संसार ॥१॥
 प्रभु पाया सब आमीए, अब निमय मया निरास ।
 रहसोक परसोक की, आशा तोलु दास ॥२॥
 तन मन के सुख कारणे, पराधीन सब सोच ।
 तन-मन सौंप्या कासवर, सब हरि बाणा योंक ॥३॥
 माया भूभावत आवको, जे चैतन्य बिद्रूप ।
 बसा ! पड़त ज्युं केसरी छाया देखिये रूप ॥४॥
 अघा ! उद्गुद रोचना जानी, पूष निरास ।
 और भले संसार भं भति माया के नास ॥५॥
 बसा ! एक मदगुद बिना संग सबस उपाध ।
 परतप मान बिटबना, बडता तेनी व्याध ॥६॥
 ज्युं नन्दमीरस्या अंगकु सावे मीया मविहार ।
 सकस अंग मपन कीया, होत प्राण परिहार ॥७॥
 समजे से दोसत बहु पन राग्या बोडि में एक ।
 मन बचने निमसा, होय दरसन मया छरु ॥८॥
 ऐसे बहात मीस, अघा ! ज्युं छाती करे भूमि नाय ।
 भाग भूस्या नगर मग ता करी मभुका होग ॥९॥
 बाह्याम्यंतर निर्मसा नेन बेष रस दप ।
 एसा नर नारायणा जामे नहा अहंघूप ॥१०॥
 पूराकु है उपमा पूरापु है सीध ।
 और सो राजा रनांग के, एते मीय की भीय ॥११॥
 पड़े गये पुनि रनांग ते, अहम्माय ना जाम ।
 जामिस रोग मिटे तजे, अब पम समीय मिटाय ॥१२॥

कपनी धावे ज्ञान की कोई ज्ञानी जन के संग ।
 पण अहम्माधि मोटे नहीं, भीतर वासना लिंग ॥१३॥
 अगसा जन को सीख दे, पण मन परमादे नाहि ।
 ज्युं दोष देखाबत और का, पण तसे अंधारा नाहि ॥१४॥
 उरनिपद के अय करे, श्लोक सुभाषितसार ।
 रसना निर्मल देखीए, पण अंतर घोर अघार ॥१५॥
 जैसे फटक की काठही भीतर भरी बहु रिघ ।
 दूर से दखी अछा ! पण जाय न पेठा मध्य ॥१६॥
 पूरण पद पहुँच्या बिना, अछा ! सब उरसी बात ।
 आयुष वपड़े कहा मड़े ? दूर बिना साक्षात ! ॥१७॥
 पूरण पद ऐसा अछा ! अग लिंग समयनीन ।
 आप नहीं और कहा कहे ? पूरा पद की भीहीन ॥१८॥
 बिन पढ़पा कोई नीपज्यो, के पढ़पा नीपज्या बोय ।
 दाप दरशन अब गया तब पूरण पद होय ॥१९॥
 नैराशी ऐसा अछा ! जैसे सूत निरास ।
 अरोगी सबको करे, आसी माया दास ॥२०॥
 आया से बोलत नहीं, और न पापत आप ।
 सोही नर नीपज्या अछा ! जे देखे अपना व्याप ॥२१॥
 पुष ज्ञानी काइक अछा ! महान सो ताकी पद ।
 बित्र सिंह सारे अछा ! छावे सिंह की बस ॥२२॥

अथ उदय कवस्य अंग

- अथा ! विचारी देखते सृष्टि सफल है राम ।
 ज्युं सानुं घात अन्नो मध्ये पणायारी कीया भावे काम ॥ १ ॥
 ज्ञान उदय कवस्य अथा ! ना तो मुप-दुन्द पात्र ।
 ज्युं मर उध्या और जायता सरदा है त्रि राम ॥ २ ॥
 ज्ञान उदय कवस्य, अथा ! ज्युं सोह तावा पट घात ।
 पारस परस्या हेम है ना तो काई छात ॥ ३ ॥
 ज्ञान उदय कवस्य अथा ! ज्युं भृगी होत कीट ।
 भूवर से छेवर भया नां तो भोगी पीट ॥ ४ ॥
 ज्ञान उदय कवस्य अथा ! ज्युं सींग की कनसी कमान ।
 कनसी जगत सहराइए धनुष करत जग जान ॥ ५ ॥
 ज्ञान उदय कवस्य अथा ! सफल दोष जल जाइ ।
 ज्युं रामछेत्री मुख कीण तें जगत को सहैर गमाइ ॥ ६ ॥
 ज्ञान उदय कवस्य अथा ! ज्युं बिना सूर नित्य रात ।
 यात आजा नहीं कछु मन का सदा गतटात ॥ ७ ॥
 ज्ञान उदय कवस्य अथा ! ज्युं हीरा बिन ज्योत ।
 पापर पतटा जाये था सो ही भया उद्यत ॥ ८ ॥
 ज्ञान उदय कवस्य अथा ! ता बिन सब सगार ।
 ज्युं दर्शन परविष्ट नित्य ! या रहपा निमलता हार ॥ ९ ॥
 ज्ञान उदय कवस्य अथा ! ज्युं पुनम का चंद ।
 एताया एता मेरतें तब भया सारा इन्द ॥ १० ॥
 ज्ञान उदय कवस्य अथा ! ज्युं सागर का नीर ।
 गगन मित्या भीटा भया ना ता पारी सँ हीर ॥ ११ ॥
 ज्ञान उदय कवस्य अथा ! कृत निमल भव माह्य ।
 कनक रजु भाव म पड़ता भाजन दुप पाय ॥ १२ ॥

(३७३)

ज्ञान उदय कैवल्य अखा ! ता दिन कासका अहार ।
 और कृत्य अमृत दूषणा प्राण हाण सरार ॥ १३ ॥
 ज्ञान उदय कैवल्य अखा ! रिघसिघ ग्यारी बात ।
 मोका तें सेवा बका खाटु दिशा बहात ॥ १४ ॥
 ज्ञान उदय कैवल्य अखा ! खंग लिंग ग्यारा सल ।
 ज्युं सक्त मेन में सूर है पण आप ग्यारा जगजल ॥ १५ ॥

अथ फोम को अग

भया ! जो चाहे राम कु तो सु टस जा मत मूक ।
 सा तुवा तारे तरे अब गम गया विष मूक ॥ १ ॥
 हरि मोलन काहु न बड़ा सोन बात की हार ।
 मनसा बाबा कर्मणा जान रखा किरदार ॥ २ ॥
 हरि तो सग है दि है कहाँ जाय ? को ठीर ?
 भजा ! ए अंतर पड्या आप सड़ा होत बीर ॥ ३ ॥
 मायास नहीं मगु भी भया । राम मीनन आसान ।
 पण मोंपा सबसे सो गया विष पड्या हुमान ॥ ४ ॥
 अहंता टारन कु भया मक्ति मजन बराय ।
 सोव मूम मीठा भया अब इत्या जान का माग ॥ ५ ॥
 जाग्रत अवस्था राम है स्वप्न अवस्था जीव ।
 अहंता निद छोडो भया ! तब जाग्रत राम स-ब ॥ ६ ॥
 दूजा पावना बाहसा पण आया पावना सहेल ।
 अंग तो गेरा है अया । पण उत्तरा चाहीए मत ॥ ७ ॥
 राम बिना रीठा नहीं मुई स्वभाव तें ठीर ।
 अता ए उपडी भयो वे आपा माग्या बीर ॥ ८ ॥
 कुग्गन काई ना लगे कुद्गन काई पाय ।
 भया ! अहंता दूखये ताकु काई पाय ॥ ९ ॥
 जसा तसा राम है बीर न दूजा कोष ।
 सटका करते सट गया जोक कर्पा यो साय ॥ १० ॥
 भाव अत मम्म राम है तो विष मनु कहु बीर ?
 भगा ! ईतनी समझ स तब भागे सब दार ॥ ११ ॥
 राम जान यिन भया ! करेगा बीर उपाय ।
 मनु मादर भयते भ्रम भया परवश आप गमाय ॥ १२ ॥

अथ भजन अंग

राम भिन्न तब जानीए अब देखे सर्वावास ।
 ज्यहाँ जैसा तैसा अछा ! पोते प्रभु प्रकास ॥ १ ॥
 राम जानी सब बंदना नहीं निदण ठौर ।
 सब मूरत है राम की अछा ! न जाने और ॥ २ ॥
 सक्ष घोरासी आत है बुरा भना बहु भेद ।
 बहु फेस किरतार है अछा ! करे मत बंद ॥ ३ ॥
 हामर रहेषा हर धड़ी मत चूके तुं दाव ।
 येस सतासती राम की मुरिहस टिकना पाव ॥ ४ ॥
 भमणा दमणा देह का लोग जाग सब सहेस ।
 पम कठण हाजरी राम की हाथ न आवे फेस ॥ ५ ॥
 सहेसो मूरति सेवणा मन गोज की सेव ।
 मन मारेखें पूबीए अछा ! जे चेतन देव ॥ ६ ॥
 मन मोज की सेवतें, मन का पूजन होय ।
 मनातीत महाराज है, त्यहाँ सम - मन न रहे दोय ॥ ७ ॥
 बहु मुख बीसे बीस जे, सब पचणा दिस माह्य ।
 नराश पण की बाजरी, कछु भी बाहे नाहि ॥ ८ ॥
 बही जागी कहीं भोगीया, बहीं दाना, नादान ।
 परित सकस है एक के अछा ! न देखना आन ॥ ९ ॥
 बय पहिछाने नैं अछा ! पहेन अस साहाग ।
 नित्य भोग होवे नाथ तुं, ताके माये भाग ॥ १० ॥

अय फोम को अंग

अखा ! जो चाहे राम कु तो तु टन जा मत नूक ।
 सा तुबा तारे तरे जब गर्म गया बिष सूक ॥ १ ॥
 हरि मोहन काहु न यड़ा तीन बाठ की हार ।
 मनसा बाधा कर्मजा आप रखा किरतार ॥ २ ॥
 हरि तो सश है हि है कहां आय ? को ठीर ?
 मजा । ए अंतर पड़या आप लड़ा होत भीर ॥ ३ ॥
 बापास नहीं मनु भी अखा । राम मोहन बासान ।
 पन मोंपा सबसे हो गया बिष पड़या हुमान ॥ ४ ॥
 अहंता टारन कु अखा भक्ति भजन परग ।
 मोक्ष मूग मोडा मया जब इत्या शान का नाग ॥ ५ ॥
 आपत अवस्था राम है स्वप्न अवस्था जीव ।
 अहता निद छोडो अखा । तब आपत राम स-व ॥ ६ ॥
 दूजा पावणा दोहला पन भाया पावणा सहेम ।
 अंग तो गोरा है अया । पन उत्तर्मा पाहीए मेस ॥ ७ ॥
 राम बिना रीता नहीं गुई स्वभाव से ठीर ।
 अला ए उन्दी भयी जे आपा माग्या भीर ॥ ८ ॥
 कुम्हन काई ना सगे कुम्हन काई घाय ।
 अया ! अहता दूसरी तापु काई घाय ॥ ९ ॥
 जैता सदा राम है भीर न दूजा फोय ।
 सटका परते सट गया जीव कया यो साय ॥ १० ॥
 आध भव मय्य राम है तो बिष कयुं कहुं भीर ?
 भगा । ईतनो समझ से तय भागे सब दोर ॥ ११ ॥
 राम जान बिन अया ! करेगा भीर उपाय ।
 मनु मादक भयउ भय भया परबउ आप गमाय ॥ १२ ॥

अथ भजन अंग

राम मिसे तब जानीए अब देख सदावास ।
 जगहीं असा तैसा असा । पोते प्रभु प्रकास ॥ १ ॥
 राम जानो सब वंदना नहीं निदण ठौर ।
 सब भूरत है राम की अछा । न जाने और ॥ २ ॥
 सब ओरसी बात है घूरा मला बहु भेद ।
 बहु केन विस्तार है अछा । करे मत बंद ॥ ३ ॥
 हाजर रहेना हर घड़ी मत भूके तुं दाव ।
 गेस सदाससी राम की मुश्किल टिकना पाव ॥ ४ ॥
 भमना दमना देह का जोग जाग सब सहेल ।
 पण कठण हाजरी राम की हाथ म आवे कैल ॥ ५ ॥
 सहेला भूरत सेवना मन मोत्र की सेव ।
 मन मारेयें पूजीए अछा । जे सेवन देव ॥ ६ ॥
 मन मोत्र की सेवते, मन वा पूजन होय ।
 मनासीत महाराज है, त्यही तन मन न रहे ब्रह्म ॥ ७ ॥
 बहु मुख बोसे बोस जे, सब पपना दित माहि ।
 मरास पण की वाजरी कछु भी जाहे माहि ॥ ८ ॥
 कहीं जोगी कहीं मागीया कहीं दाना नादान ।
 परित सकल है एक के अगा । न देखना आन ॥ ९ ॥
 कप पहिछाने न अछा । पहन जस साहाय ।
 निरय भोग होवे माय तुं ताके माये जाग ॥ १० ॥

आवेस अंग

कोई को साग्या भूत ज्यों त्यों मो को साग्या राम ।
 सुख मया साइया सबे रह्या अला का नाम ॥ १ ॥
 भाठो पोहार बग माई है पसक न छोड़त पास ।
 भसा एतने ते रह्या साइया साथ उसास ॥ २ ॥
 बितबू और होवे कछू कछू मेरे हाथ कराई ।
 हवा हाथ बाजे नहीं मेक गेबी राई ॥ ३ ॥
 सरत सरत बायो परे टुटे लोह की पात ।
 अब अला ना जीवना घ सू मिस गई घात ॥ ४ ॥
 तारो न बाजे मीरम मुखा न बाजे बोल ।
 भैंसो अलाको योसगो कोई बोंग करो कि भमोस ॥ ५ ॥
 बासी कोई समस्त नही अला देस की बाग्य ।
 समस्त उतका भाइया के समस्त तन जान ॥ ६ ॥

